



की पचीसवीं निर्वाण शताब्दी के उपलक्ष में

# सूत्राणि

३

शाओ • उवासगदसाओ •  
। • अणुत्तरोववाइयदसाओ •  
गगरणाइं विवागसुयं

वाचना प्रमुख  
आचार्य तुलसी

संपादक  
मुनि नथमल

प्रकाशक  
वैन विश्व भारती  
लाडनूं (राजस्थान)

श्री मान्द उमरचन्द जी गहटा  
को उमरचन्द जी गहटा  
अरुत गहटा  
श-उमरचन्द

प्रबंध सम्पादक :

श्रीचन्द रामपुरिया,

निदेशक

भागम और साहित्य प्रकाशन

(जैन विश्व भारती)

आर्थिक सहायक

श्री रामलाल हंसराज गोलछा

विराटनगर (नेपाल)

प्रकाशन तिथि :

विक्रम संवत् २०३१

कार्तिक कृष्णा १३

(२५०० वां निर्वाण दिवस)

पृष्ठांक । ६२५

मूल्य : ५०/

मुद्रक :—

एम. नारायण एण्ड संस (प्रिंटिंग प्रेस)

७११७/१८, पहाड़ी धीरज, दिल्ली-६

# ANGA SUTTĀNI

## III

NAYĀDHAMMAKAHĀO . UWĀSAGADASĀO .  
ANTAGADADASĀO . ANUTTAROWAWĀIYADASAO .  
PANHAWAGARANAIN . VIVĀGASUYAM .

(Original text Critically edited)

Vācānā PRAMUKHA  
ĀCĀRYA TULASI

EDITOR  
MUNI NATHAMAL

Publisher  
JAIN VISWA BHĀRATI  
LADNUN (Rajasthan)



*Managing Editor*  
**Shreechand Rampuria.**

**Director :**  
Āgama and Sahitya Publication Dept.  
**JAIN VISHWA BHARATI, LADNUN**

**Financial Assistance**  
**Sri Ramlal Hansraj Golchha**  
**Biratnagar (Nepal)**

V.S. 2031  
Kārtic Kṛishnā 13  
2500th Nirvaṇa Day

Pages 925

Rs. 80/-

**Printers :**  
**S. Narayan & Sons (Printing Press)**  
**7117/18, Pahari Dhiraj,**  
**Delhi-6**

## समर्पण

पुट्टो वि पण्णा-पुरिसो सुदबलो,  
 थाणा-पहाणो जणि जत्त निच्चं ।  
 सच्चप्पओगे पवरासयस्स,  
 निवणुस्स तत्त प्पणिहाणपुट्ठं ॥

जिनका प्रमा-गुरुय पुट्ट पद,  
 होकर भी आगम-प्रधान था ।  
 मत्त्व-योग में प्रवर चित्त था,  
 उतरी भिक्षु को विमल भाव से ।

वित्तोद्धियं आगमबुद्धमेव,  
 तद्धं सुसद्धं णवणीयमच्छं ।  
 सग्गहाय - सग्गहाण - रयस्स निच्चं,  
 जयस्स तत्त प्पणिहाणपुट्ठं ॥

जिसने आगम-बौद्धन कर कर,  
 पाया प्रवर प्रचुर नवनीत ।  
 श्रुत-नादधान लीन विर चिन्तन,  
 जयाचार्य को विमल भाव से ।

पपाहिया जेण सुयत्त घारा,  
 गणे समत्थे मम भाणसे वि ।  
 जो हेउभूओ - स्स पपायणरत्त,  
 शानुत्त तत्त प्पणिहाणपुट्ठं ॥

जिसने श्रुत की घार चहाई,  
 सकल संग में मेरे मन में ।  
 हेनुभूत श्रुत - सम्पादन में,  
 शानुत्त को विमल भाव से ।



## अन्तस्तोष

अन्तस्तोष अनिर्वचनीय होता है उस मानी का जो अपने हाथों में उष्ट और गिनित द्रुम-निर्गुण को पल्लवित, पुष्पित और फलित हुआ देगता है, उन कलाकार का जो अपनी मूर्तिका में निराकार को साकार हुआ देगता है और उस कल्पनाकार का जो अपनी कल्पना को अपने प्रयत्नों में प्राणवान् बना देगता है। चिरकाल में मेरा मन इस कल्पना से भरा था कि जैन आगमों का दोष-पूर्ण सम्पादन हो और मेरे जीवन के बहुश्रमी क्षण उसमें लगे। संतुल्य फलवान् बना और वैसा ही हुआ। मुझे केन्द्र मान मेरा धर्म-परिचार इस कार्य में संलग्न हो गया। अतः मेरे इस अन्तस्तोष में मैं उन सबको समभागी बनाता चाहता हूँ, जो इस प्रवृत्ति में संविभागी रहे हैं। संक्षेप में यह संविभाग इस प्रकार है—

संपादक :		मुनि नथमल
पाठ-संशोधन :	सहयोगी :	मुनि तुलहराज
	"	मुनि मुदमंज
	"	मुनि मधुकर
	"	मुनि हीरालाल

संविभाग इतना धर्म है। जिन-जिनके इस सुन्दार प्रवृत्ति में सम्मुक्त भाव में अपना संविभाग समर्पित किया है, उन सबको मैं आर्त्तापीर देता हूँ और कामना करता हूँ कि उनका भविष्य इस महान् कार्य का प्रविश्य बने।

आचार्य तुलसी

## ग्रन्थानुक्रम

१. प्रकाशकोय
२. सम्पादकोय
३. सूक्तिका (हिन्दी)
४. सूक्तिका (अंग्रेजी)
५. विषयानुक्रम
६. संकेत निर्देशिका
७. नायाधम्मकहाओ
८. उवासगदसाओ
९. अंतगडदसाओ
१०. अणुत्तरोववाइयदसाओ
११. पण्हावागरणाइ
१२. विवागसुधं

## परिशिष्ट

१. संक्षिप्त-पाठ, पूर्व-स्यल और पूर्ति आधार-स्यल
२. पूरक पाठ
३. शुद्धिपत्रम्

## प्रकाशकीय

सन् १९६७ की बात है। आचार्यश्री बम्बई में विराज रहे थे। मैंने कलकत्ता में पहुँचकर उनके दर्शन किए। उन समय श्री कृष्णभद्राजी रांका, श्रीमती इन्दु जैन, मोहनलालजी कठोतिया आदि आचार्यश्री की सेवा में उपस्थित थे और 'जैन विश्व भारती' की बम्बई के आस-पास किमी स्थान पर स्थापित करने पर चिन्तन चल रहा था। मैंने सुभाव रखा कि सरदारवाहूर में 'गांधी विद्या-मन्दिर' जैसा विद्यालय और उत्तम संस्थान है। 'जैन विश्व भारती' उन्हीं के समीप सरदारवाहूर में ही क्यों न स्थापित की जाये? दोनों संस्थान एक दूसरे के पूरक होंगे। सुभाव पर विचार हुआ। श्री कन्हैयालालजी दूगड़ (सरदारवाहूर) को बम्बई बुलाया गया। गान्धी ज्यो उनके नामने रत्नी गर्द और निर्णय हुआ कि उनके साथ जाकर एक बार दूरी दृष्टि में 'गांधी विद्या-मन्दिर' संस्थान को देखा जाए। निश्चित तथि पर पहुँचने के लिए कलकत्ता में श्री गोपबन्धुजी चाँपड़ा और मैं तथा दिल्ली में श्रीमती इन्दु जैन, तारूलालजी आद्या सरदारवाहूर के लिए रवाना हुए। श्री कन्हैयालालजी दूगड़ दिल्ली में हम लोगों के साथ हुए। श्री रांकाजी बम्बई में पहुँचे। सरदारवाहूर में भावमीना स्थापित हुआ। श्री दूगड़जी ने 'गांधी विद्या-मन्दिर' की प्रबन्ध समिति के सदस्यों को भी आमन्त्रित किया। 'जैन विश्व भारती' सरदारवाहूर में स्थापित करने के विचार का उनकी ओर से भी हार्दिक स्वागत किया गया। सरदारवाहूर 'जैन विश्व-भारती' के लिए उपयुक्त स्थान बना। आगे के कदम दली और बढ़े।

आचार्यश्री गंतमण व साधिनियों के मूल्य महित कर्नाटक में नदी पहाड़ों पर आयोजन कर रहे थे। आचार्यश्री ने धीरे धीरे और मुझ से कहा "जैन विश्वभारती के लिए प्रवृत्ति की ऐसी सुन्दर मौक उपयुक्त स्थान है। देखो, कौता सुन्दर स्थान सातावरण है।"

'जैन विश्व भारती' की योजना की कार्य-क्रम में आगे बढ़ाने की दृष्टि में समार के हुए और विचारणीय स्थिति को नदी पहाड़ी पर आय गे। श्री कन्हैयालालजी दूगड़ भी थे। (सरदारवाहूर) प्रतिक्रमण के बाद का समय था। पहाड़ों की गणहटों में दोपक और जाकावा में गाँदे लग-गमा रहे थे। आचार्यश्री निरि-निमग्न पर बीच महल में दुर्वाभिमुख होकर विचारित थे। मैं उनके सामने बैठे था। कचकबद्ध हुआ कि यदि 'जैन विश्व भारती' सरदारवाहूर में स्थापित होती है, तो उसके लिए मैं अपना जीवन समर्पणता। उन समय 'जैन विश्व भारती' की जैन संस्थापक संस्थाओं महागमा के एक विभाग के रूप में परिवर्तनता की गई थी। महागमा ने स्वीकार किया और

में उसका संयोजक चुना गया। सरदारशहर में स्थान के लिए श्री कन्हैयालालजी दूगड़ और मैं प्रयत्नशील हुए। आचार्यश्री ऊटी (उटकमण्ड) पधारे। वहाँ महागभा के सभापति श्री हनुमान-मलजी वैंगाणी तथा अन्य पदाधिकारी भी उपस्थित थे। जैन विश्व भारती की स्थापना प्राकृतिक दृष्टि से साधना के अनुकूल रम्य और शान्त स्थान में होने की बात टहरी। इस तरह नंदी गिरि की मेरी प्रतिज्ञा से मैं मुक्त हुआ, पर मन ने मुझे कभी भुगत नहीं किया। आचार्य 'जैन विश्व भारती' की मातृ-भूमि बनने का सौभाग्य सरदारशहर से ६६ मील दूर लाटनू (राजस्थान) को प्राप्त हुआ, जो संयोग से आचार्यश्री का जन्म-स्थान भी है।

आचार्यश्री ने आगम-संशोधन का कार्य सं० २०११ की चैत्र शुक्ला त्रयोदशी को हाथ में लिया। कुछ समय बाद उज्जैन में दर्शन किए। सं० २०१३ में लाटनू में आचार्य श्री के दर्शन प्राप्त हुए। कुछ ही दिनों बाद सुजानगढ़ में दसवैकालिक सूत्र के अपने अनुवाद के दो फार्म अपने ढंग से मुद्रित कराकर सामने रखे। आचार्यश्री मुग्व हुए। मुनिश्री नथमलजी ने फरमाया—“ऐसा ही प्रकाशन ईप्सित है।” आचार्यश्री की वाचता में प्रस्तुत आगम वैशाली से प्रकाशित हो, इस दिशा में कदम आगे बढ़े। पर अन्त में प्रकाशन कार्य महासभा से प्रारम्भ हुआ। आगम-सम्पादन की रूपरेखा इस प्रकार रही—

१. आगम-सुक्त ग्रन्थमाला : मूलपाठ, पाठान्तर, शब्दानुक्रम आदि सहित आगमों का प्रस्तुतीकरण।
२. आगम-अनुसन्धान ग्रन्थमाला : मूलपाठ, संस्कृत छाया, अनुवाद, पद्यानुक्रम, सूत्रानुक्रम तथा मौलिक टिप्पणियों सहित आगमों का प्रस्तुतीकरण।
३. आगम-अनुशीलन ग्रन्थमाला : आगमों के समीक्षात्मक अध्ययनों का प्रस्तुतीकरण।
४. आगम-कथा ग्रन्थमाला : आगमों से सम्बन्धित कथाओं का संकलन और अनुवाद।
५. वर्गीकृत-आगम ग्रन्थमाला : आगमों का संक्षिप्त वर्गीकृत रूप में प्रस्तुतीकरण।

महासभा की ओर से प्रथम ग्रन्थमाला में—(१) दसवेवालियं तह उत्तरज्भयणाणि, (२) आयारो तह आयारचूला, (३) निसीहज्भयणं, (४) उववाइयं और (५) समवाओ प्रकाशित हुए। रायपसेणइयं एवं सूयगडो (प्रथम श्रुतस्कन्ध) का मुद्रण-कार्य तो प्रायः समाप्त हुआ पर वे प्रकाशित नहीं हो पाए।

दूसरी ग्रन्थमाला में—(१) दसवेवालियं एवं (२) उत्तरज्भयणाणि (भाग १ और भाग २) प्रकाशित हुए। समवायांग का मुद्रण-कार्य प्रायः समाप्त हुआ पर प्रकाशित नहीं हो पाया।

तीसरी ग्रन्थमाला में दो ग्रंथ निकल चुके हैं : (१) दसवैकालिक : एक समीक्षात्मक अध्ययन और (२) उत्तराध्ययन : एक समीक्षात्मक अध्ययन।

चौथी ग्रंथमाला में कोई ग्रंथ प्रकाशित नहीं हुआ ।

पाँचवीं ग्रंथमाला में दो ग्रंथ निकल चुके हैं : (१) दशवैकालिक वर्गीकृत (धर्म-प्रभक्ति स. १) और (२) उत्तराध्ययन वर्गीकृत (धर्म-प्रभक्ति स. २) ।

उक्त प्रकाशन-कार्य में सरावगी चेरिटिवल फण्ड, कलकत्ता (इस्टी रामकुमारजी सरावगी, गोविंदलालजी सरावगी एवं कमलनयनजी सरावगी) का बहुत बड़ा अनुदान महासभा को रहा । अनुदान स्वर्गीय महादेवलालजी सरावगी एवं उनके पुत्र पन्नालालजी सरावगी की स्मृति में प्राप्त हुआ था । भाई पन्नालालजी के प्रेरणात्मक शब्द तो आज भी कानों में ज्यों-के-त्यों गूँज रहे हैं—  
“धन देने वाले तो मिल सकते हैं, पर जो इस प्रकाशन-कार्य में जीवन लगाने का उत्तरदायित्व लेने को तैयार हैं, उनकी बराबरी कौन कर सकेगा ?” जहाँ सग्रा समाज के अन्य उत्साहवर्धक सदस्यों के स्नेह-प्रदान से कार्य-शीलक बनता रहा ।

कार्य के द्वितीय चरण में श्री रामलालजी हंसराजजी गोलछा (विराटनगर) ने अपना उत्सर्ग हाथ प्रसारित किया ।

आचार्यश्री की वाचना में सम्पादित आगमों के संग्रह और मुद्रण का कार्य अब 'जैन विश्व भारती' के अंचल में हो रहा है । प्रथम प्रकाशन के रूप में ११ अंगों की तीन खण्डों में 'अंगमुत्तारिण' के नाम से प्रकाशित किया जा रहा है :

प्रथम खण्ड में आचार, सृष्टकृत, रसान, समवाय—ये प्रथम चार अंग हैं ।  
दूसरे खण्ड में भगवती—पाँचवाँ अंग है ।

तीसरे खण्ड में शाखाप्रभंकथा, उपासककथा, अन्तर्हनाथका, अनुत्तरोपपातिककथा, प्रत्यक्षकरण और विपाक—ये ९ अंग हैं ।

एक तरह ग्यारह अंगों का तीन खण्डों में प्रकाशन 'आगम-मुक्त प्रथमाना' की योजना की बहुत आगे बढ़ा देना है ।

टापाने अनुवाद संस्करण का मुद्रण-कार्य भी प्रारम्भ में हो रहा है और यह आगम-अनुसन्धान संस्थावा के तीसरे ग्रंथ के रूप में प्रस्तुत होगा ।

केवल हिन्दी अनुवाद के संस्करण के रूप में 'धर्मवैकालिक और उत्तराध्ययन' का प्रकाशन हुआ है; जो एक बड़ी योजना के रूप में है । इसमें सभी आगमों का केवल हिन्दी अनुवाद प्रकाशित करने का विचार है ।

धर्मवैकालिक एवं उत्तराध्ययन मूल पाठ मात्र की मूक्तियों के रूप में दिया जा रहा है । 'जैन विश्व भारती' भी एक अंग पूर्व अन्य आगम प्रकाशन योजना की पूर्ण करने में मिल महासभाओं के उत्सर्ग अनुदान का हाथ रहा है, उन्हें संग्रहण की और से हिन्दू संस्कार है ।



मुद्रण-कार्य में एस० नारायण एण्ड संस प्रिंटिंग प्रेस के मालिक श्री नारायणसिंह जी का वित्त, श्रद्धा, प्रेम और सीजन्य से भरा जो योग रहा उसके लिए हम कृतज्ञता प्रगट किए बिना नहीं रह सकते। मुद्रण-कार्य को द्रुतगति देने में श्री देवीप्रसाद जायसवाल (कलकत्ता) ने रात-दिन सेवा देकर जो सहयोग दिया, उसके लिए वे धन्यवाद के पात्र हैं। इस सम्बन्ध में श्री मन्नालाल जी जैन (भूतपूर्व मुनि) की समर्पित सेवा भी स्मरणीय है।

इस अवसर पर मैं आदर्श साहित्य संघ के संचालकों तथा कार्यकर्त्ताओं को भी नहीं भूल सकता। उन्होंने प्रारम्भ से ही इस कार्य के लिए सामग्री जुटाने, धारने तथा अन्यान्य व्यवस्थाओं को क्रियान्वित करने में सहयोग दिया है। आदर्श साहित्य संघ के प्रवन्धक श्री कमलेश जी चतुर्वेदी सहयोग में सदा तत्पर रहे हैं, तदर्थ उन्हें धन्यवाद है।

'जैन विश्व भारती' के अध्यक्ष श्री खेमचन्दजी सेठिया, मंत्री श्री सम्पत्तरायजी भूतोड़िया तथा कार्य समिति के अन्यान्य समस्त वन्धुओं को भी इस अवसर पर धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकता, जिनका सतत सहयोग और प्रेम हर कदम पर मुझे बल देता रहा।

इस खण्ड के प्रकाशन के लिए विराटनगर (नेपाल) निवासी श्री रामलालजी हंसराजजी गोलछा से उदार आर्थिक अनुदान प्राप्त हुआ है, इसके लिए संस्थान उनके प्रति कृतज्ञ है।

सन् १९७३ में मैं जैन विश्व-भारती के आगम और साहित्य प्रकाशन विभाग का निदेशक चुना गया। तभी से मैं इस कार्य की व्यवस्था में लगा। आचार्यश्री यात्रा में थे। दिल्ली में मुद्रण की व्यवस्था बैठवाई गई। कार्यारंभ हुआ, पर टाइप आदि की व्यवस्था में विलंब होने से कार्य में द्रुतगति नहीं आई। आचार्यश्री का दिल्ली पधारना हुआ तभी यह कार्य द्रुतगति से आगे बढ़ा। स्वल्प समय में इतना आगमिक साहित्य सामने आ सका उसका सारा श्रेय आगम संपादन के वाचनाप्रमुख आचार्यश्री तुलसी तथा संपादक-विवेक मुनि श्री नयमलजी को है। उनके सहकर्मी मुनि श्री सुदर्शनजी, मधुकरजी, हीरालालजी तथा दुलहराजजी भी उस कार्य के श्रेयोभागी हैं।

ब्रह्मचर्य आश्रम में ब्रह्मचारी का एक कर्त्तव्य समिधा एकत्रित करना होता है। मैंने इससे अधिक कुछ और नहीं किया। मेरी आत्मा हर्षित है कि आगम के ऐसे सुन्दर संस्करण 'जैन विश्व भारती' के प्रारंभिक उपहार के रूप में उस समय जनता के कर-कमलों में आ रहे हैं, जबकि जगत्वंश श्रमण भगवान् महावीर की २५००वीं निर्वाण तिथि मनाने के लिए सारा विश्व पुलकित है।

४६८४, अंतारी रोड

२१, दरियागंज

दिल्ली-६

श्रीचन्द रामपुरिया

निदेशक

आगम और साहित्य प्रकाशन

जैन विश्व-भारती

## सम्पादकीय

### ग्रन्थ-दीर्घ—

आगम सूत्रों के मौलिक विभाग दो हैं—अंग-प्रविष्ट और अंग-प्राप्त। अंग-प्रविष्ट सूत्र महावीर के मुख्य विनय गणधर द्वारा रचित होने के कारण सर्वाधिक मौलिक और प्रामाणिक माने जाते हैं। उनकी संख्या बारह है—१. आचार्यांग २. सूत्रकृतांग ३. रथानांग ४. नमस्कारांग ५. ध्यानाभ्यासप्रवृत्ति ६. ज्ञाताधर्मव्यवस्था ७. उपासकव्यवस्था ८. अंतकृतव्यवस्था ९. अनुत्तरीयपातिकाव्यवस्था १०. प्रश्नव्याकरण ११. विमानकृत १२. दृष्टिवार। बारहवां अंग अभी प्राप्त नहीं है। शेष ग्यारह अंग तीन भागों में प्रकाशित हो रहे हैं। प्रथम भाग में चार अंग हैं—१. आचार्यांग २. सूत्रकृतांग ३. रथानांग और ४. नमस्कारांग, दूसरे भाग में केवल ध्यानाभ्यासप्रवृत्ति और तीसरे भाग में शेष बारह अंग।

प्रस्तुत भाग अंग साहित्य का तीसरा भाग है। इसमें नायागममकराश्री, उपासकव्यवस्था, अंगव्यवस्था, अंगसूत्रोपदेशव्यवस्था, पण्डित्यांगरत्नाकर और विभागसूत्र—इन ६ अंगों का पाठान्तर साहित्य मूल पाठ है। प्रारम्भ में संक्षिप्त भूमिका है। विस्तृत भूमिका और शब्द-सूची इनके साथ सम्बद्ध नहीं है। उनके लिए दो स्वतन्त्र भागों की परिकल्पना है। उसके अनुसार शेष भाग में ग्यारह अंगों की भूमिका और पाँचवें भाग में उनकी शब्द-सूची होगी।

### प्रस्तुत पाठ और सम्पादन-पद्धति

इस पाठ-संशोधन की सर्वोत्तम पद्धति के अनुसार किसी एक ही प्रति को मुख्य मानकर नहीं चलते, किन्तु अर्ध-मीमांसा, पूर्वनिर्णय, पूर्ववर्ती पाठ और अन्य आगम-सूत्रों के पाठ तथा वृत्तिगत अन्वयों को ध्यान में रखकर मूलपाठ का निर्धारण करते हैं। विस्तृत भाग में कुछ वृत्तियाँ हट गई हैं। कुछ वृत्तियाँ मौखिक निदानों से सम्बद्ध हैं। वे सब हट गई हैं विस्तृत-उपदेश नहीं कहा जा सकता। पाठ के संशोधन का विस्तार करने में हुई है, जो संभावना की जा सकती है। 'नायागममकराश्री' ११५५६ में बारह अंग और दोष संशोधनों का उल्लेख है। ध्यानांग ४।१२६, उपासकव्यवस्था २३।२३-२४ के अनुसार यह पाठ सुद्ध नहीं है। जार्ज नीडहर्से के मूल में पाठपूर्विक भागों हीना है, पूर्व महावीर और आचार्य का रूप नहीं मिलता। ऐसा दलील होता है कि अंग-विनय और अंगव्यवस्था-विनय का पाठ अंगव्यवस्था मूल के अंगव्यवस्था और अंगव्यवस्था के अंगव्यवस्था पर प्राप्त किया गया है। दलील को सर्वत्र अंग का मूल भाग है। हमारे इस पाठ की वृत्ति संशोधन-सूत्र के अंगव्यवस्था

पर की है, देखें—नायाधम्मकहाओ पृष्ठ १२२ का सातवां पाद-टिप्पण । इस प्रकार के आलोच्य पाठ नायाधम्मकहाओ १।१२।३६, १।१६।२१, १।१६।४६ में भी मिलता है । प्रश्नव्याकरण सूत्र १०।४ में 'कायवर' पाठ मिलता है । वृत्तिकार ने इसका अर्थ 'काचवर'—प्रधान काच दिया है, किन्तु यह पाठ शुद्ध नहीं है । लिपि-दोष के कारण मूलपाठ विकृत हो गया । नियोज्यायनके चारहवें उद्देशक (सूत्र १) में 'कायपायाणिवा और वइरपायाणिवा' दो स्वतन्त्र पाठ हैं । वहाँ भी पात्र का प्रकरण है और वहाँ भी पात्र का प्रकरण है । काँचपात्र और वज्रपात्र—दोनों मुनि के लिए निषिद्ध हैं । इस आधार पर यहाँ भी 'वर' के स्थान पर 'वइर' पाठ का स्वीकार औचित्यपूर्ण है । लिपिकाल में इस प्रकार का वर्ण-विपर्यय अन्यत्र भी हुआ है । 'जात' के स्थान पर 'जाव' तथा 'पचकमण' के स्थान पर 'एवंकमण' पाठ मिलता है । पाठ-संशोधन में इस प्रकार के अनेक विचित्र पाठ मिलते हैं । उनका निर्धारण विभिन्न स्रोतों से किया जाता है ।

## प्रतिपरिचय

### १. नायाधम्मकहाओ—

क. ताडपत्रीय (फोटोग्रिफ) मूलपाठ—

यह प्रति जेसलमेर भंडार से प्राप्त है । यह अनुमानतः बारहवीं शताब्दी की है ।

ख. नायाधम्मकहाओ (पंचपाठी) मूल पाठ वृत्ति सहित—

यह प्रति गर्घैया पुस्तकालय, सरदारशहर की है । पत्र के चारों ओर हासियों (Margin) में वृत्ति लिखी हुई है । इसके पत्र १८६ तथा पृष्ठ ३७२ हैं । प्रत्येक पत्र १० $\frac{३}{४}$  इंच लम्बा तथा ४ $\frac{३}{४}$  इंच चौड़ा है । पत्र में मूलपाठ की १ से १३ तक पंक्तियाँ हैं । प्रत्येक पंक्ति में ३२ से ३८ तक अक्षर हैं । प्रति स्पष्ट और कलात्मक है । बीच में तथा इधर-उधर वापिकाएँ हैं । यह अनुमानतः १४-१५ शताब्दी की होनी चाहिए । प्रति के अंत में टीकाकार द्वारा उद्धृत प्रशस्ति के ११ श्लोक हैं । उनमें अन्तिम श्लोक यह है—

एकादशसु गतेष्वथ विशत्यधिकेषु विक्रमसमानां ।

अणहिलपाटकनगरे भाद्रवद्वितीयां पञ्जुसणसिद्धयं ॥१॥

समाप्तेयं ज्ञाताधर्मप्रदेशटीकेति ॥२॥ ४२५५ ग्रंथाग्रं ॥ वृत्ति । एवं सूत्र  
वृत्ति ६७५५ ग्रंथाग्रं ॥१॥६॥

ग. नायाधम्मकहाओ (मूलपाठ)

यह प्रति गर्घैया पुस्तकालय, सरदारशहर की है । इसके पत्र ११० तथा पृष्ठ २२० हैं । प्रत्येक पत्र १० $\frac{३}{४}$  इंच लम्बा तथा ४ $\frac{३}{४}$  इंच चौड़ा है । प्रत्येक पत्र में १५ पंक्तियाँ हैं और प्रत्येक पंक्ति में ४८ से ५३ तक अक्षर हैं । प्रति जीर्ण-सी है । बीच में वावड़ी है ।

निधि संवत् १५५४ है। अंतिम प्रमस्ति में लिखा है—संवत् १५५४ वर्षे प्रथम भाषण  
 यदि २ रवी। श्री श्री श्री श्रीरोही नगरे। नया राठ श्रीजगन्नाथराज्ये ॥ श्रीन पागच्छे  
 गच्छनायकश्रीमुमतिसागमुरि। तदपट्टे श्रीहमविमलनूरिराज्ये। महोपाध्याय श्रीजनंत-  
 हंगमधीनां उपदेशेन ॥ नाम्ने श्री मूरा निम्नापितं ॥ जोसी पोपा निमित्तं ॥ भ्राति उज्ज्वल  
 संजुवन श्रीआ निम्नापितं ॥४॥४॥१ ॥ इसके अंगे १२ पृष्ठों लिखे हुए हैं।

घ. टक्का

यह प्रति १२वें लक्ष्यवन में अंगे काम में ली गई है।

## २. उवागदस्ताओ—

क. उवागदस्ताओ—मूल पाठ (गाठपत्रीय फोटो प्रिंट)—

इसकी पत्र संख्या २० व पृष्ठ ४० है। पत्र क्रमांक संख्या १८२ से २०२ तक  
 है। फोटो प्रिंट पत्र संख्या ६ है व एक पत्र में ८ पृष्ठों या फोटो है। इसकी सम्बन्धि  
 १४ हंज, चौड़ाई ११ हंज है। प्रत्येक पत्र में ४ ने ६ तक पंक्तियां व प्रत्येक पंक्ति में ४५  
 के करीब अक्षर हैं।

प्रति के अन्त में 'सन् ८१२' इतना ही लिखा हुआ है। संवत् वर्षगृह नहीं है पर  
 विनासक मूल पत्र संख्या २८५ में निधि संवत् ११८६ है। अतः इसके आधार पर यह  
 ११८६ में पहलू की ही मान्यता पड़ती है।

ख. उवागदस्ताओ—द्वयोमुख्य पाठ (हस्तलिखित)—

यह प्रति वर्षेया सुमनराज्य, सन्नामगत की है। इसके पत्र ३६ तथा पृष्ठ ७२  
 है। प्रत्येक पत्र में पाठ की आठ पंक्तियां व प्रत्येक पंक्ति में करीब ५२ अक्षर हैं। पाठ के  
 नीचे नववर्षानी में ४वें लिखा हुआ है। प्रत्येक पृष्ठ १० हंज लम्बा व ४१ हंज चौड़ा है।  
 प्रति के अन्त में वेणक की निम्न प्रमस्ति है—

संवत् १७७८ वर्षे निधि सापमाने कृष्णपत्रे संवत्सीतिथी सुधनारे मुनिना निवेना-  
 दिशि सप्तमभाषणे श्रीमन्महोदयराज्ये श्रीराम्भु नन्दानमस्सु वेणकपाठकयोः श्रीः।

## ३. अंतगदस्ताओ—

क. अंतगदस्ताओ (फोटो प्रिंट)। पत्र संख्या २०३ से २२२ तक। विनासक मूल के अंत में (पत्र  
 संख्या २८५ में) निधि संवत् ११८६ अन्तिम मुद्रि ३ है। अतः अंतगदस्ताओ पत्रों से यह  
 प्रति भी ११८६ में पहलू की होनी चाहिए।

ख. अंतगदस्ताओ—द्वयोया सुमनराज्य, सन्नामगत के प्रायः गीत सुनों की संसुद्ध प्रति  
 (उवागदस्ताओ, अंतगद, अंतगदोअंतगद) संश्लेषण—१वें अंतगदस्ताओ पत्र प्रति—अंतगद  
 संवत् १५५४ है।

ग. हस्तलिखित—गर्धैया पुस्तकालय, सरदारशहर से प्राप्त ।

यह प्रति पंचपाठी है । इसके पत्र २६ तथा पृष्ठ ५२ हैं । प्रत्येक पृष्ठ में १३ पंक्तिया तथा प्रत्येक पंक्ति में ४२ से ४५ तक अक्षर हैं । प्रति की लम्बाई १०<sup>३</sup>/<sub>४</sub> इंच तथा चौड़ाई ४<sup>३</sup>/<sub>४</sub> इंच है । अक्षर बड़े तथा स्पष्ट हैं । प्रति 'तकार' प्रधान तथा अपठित होने के कारण कहीं-कहीं अद्युद्धियां भी हैं । प्रति के अंत में लेखन संवत् नहीं है । केवल इतना लिखा है—॥छ॥ ग्रंथाग्रं ८६० ॥०॥ ॥०॥ पुण्यतनूरीणा ॥

घ. यह प्रति गर्धैया पुस्तकालय सरदारशहर से प्राप्त है । इसके पत्र २० हैं । प्रत्येक पत्र में पाठ की पांच पंक्तियां हैं । प्रत्येक पंक्ति के बीच में टक्का लिखा हुआ है । प्रति सुन्दर लिखी हुई है । पत्र की लम्बाई १० इंच व चौ० ४<sup>३</sup>/<sub>४</sub> इंच है । प्रति के अंत में तीन दोहे लिखे हुए हैं ।

धली हमारी देश है, रिणी हमारो ग्राम ।  
 गोत्र वंश है माहातमा, गणेश हमारो नाम ॥१॥  
 गणेश हमारा है पिता, मैं सुत मुन्नीलाल ।  
 बड़ी गच्छ है खरत्तरो, उजियागर पोसाल ॥२॥  
 वीकानेर व्रतमान है, राजपुतानां नाम ।  
 जंगलघर वादस्या, गंगासिहजी नाम ॥३॥  
 श्रीरस्तु ॥छ॥ कल्याणमस्तु ॥छ॥

#### ४. अणुत्तरोचवाइयदसाओ—

क. ताडपत्रीय (फोटो प्रिंट) । पत्र संख्या २२३ से २२८ तक । विपाक सूत्र पत्र संख्या २८५ में लिपि संवत् ११८६ आश्विन सुदि ३ है । अतः क्रमानुसार यह प्रति ११८६ से पहले की है ।

ख. गर्धैया पुस्तकालय, सरदारशहर से प्राप्त तीन सूत्रों की (उपासकदशा, अन्तकृत और अनुत्तरोपपातिक) संयुक्त प्रति है । इसके पत्र १५ तथा पृष्ठ ३० हैं । प्रत्येक पत्र १३<sup>३</sup>/<sub>४</sub> इंच लम्बा तथा ५<sup>३</sup>/<sub>४</sub> इंच करीब चौड़ा है । प्रत्येक पत्र में २३ पंक्तियां तथा प्रत्येक पंक्ति में करीब ८२ अक्षर हैं । प्रति पठित तथा स्पष्ट लिखी हुई है । प्रति के अन्त में लेखक की निम्नोक्त प्रशस्ति है । उसके अनुसार यह प्रति १४६५ की लिखी हुई है :—

ऊकेशवंशो जयति प्रशंसापदं सुपर्वा चलित्तशोभः ।

डागाभिवा तत्र समस्ति शाखा पात्रावली वारितलोकतापा ॥१॥

मुक्ताफलतुलां विभ्रत् सद्वृत्तः सुगुणास्पदं ।

तस्यां श्रीशालभद्राख्यः सम्यग्श्चिरजायत ॥२॥

तदन्ययस्याभरणं यभूव वांगभिधानः सुविमुद्धुद्धिः ।  
 विवेकगतलंगतिवोचनान्यां दृष्ट्वा गुमार्ता य उगीषकार ॥३॥  
 तदंगजन्मादनि वाहृदाभ्यः नद्वर्मकर्मार्जनवदकदाः ।  
 वधो यदीयं गुरुरेयमभिदरदंवाग्रादज्जमिवाविराजो ॥४॥  
 क्रमेण तद्वर्तनविद्यायकेतुः कर्मविग्नः श्रावकतुंगयोभूत् ।  
 विद्वं कत्तावानपि यः प्रकामं बुधप्रमोदापंपहेतुमुत्सर्जः ॥५॥  
 तरेणभुरभून्नाभु महणो द्रष्टिषोपमः ।  
 राजदंममतिः शर्यचतुगुरानततो दधत् ॥६॥  
 तस्याहंवेदित्तुगुनवाहजमभुववन्व यामादिभूरिमुहृतोच्ययकारकम् ।  
 आनीदगामकममः किल माकृणाया देविप्रिया प्रणमिनी गिरिजेव संभोः ॥७॥  
 तत्पुमिप्रभवावभुवुरभिनीमुद्योतयंतः कुलं,  
 पत्न्यास्त्वानता नयाश्चिपना नाभ्यर्चना भीरवः ।  
 आश्रयत्र गुनारपात्र इति विन्यातः परो वदंत-  
 म्नात्तोपिनिप्रभुवाभिषयवदपने गेनतात्त्वोना भुवि ॥८॥  
 पत्न्यासीति व्यचुरप्रणितां मार्यमाश्रीरहृणे,  
 स्वोदापेणातनृपनभूतो वाधया धर्मकर्म ।  
 वन्योत्सं मर्यसेय प्रतिदिनमनयाप्नेत् मेलाभ्य भार्ता,  
 गंगा देवीति गंगावदमलहृदयान्नीहं त्रैमाहिलीना ॥९॥  
 तत्पुमिभूः श्रावक ऊदगाह, आधो द्वितीयः किल बूढ नामा ।  
 श्रावकभूता गुरुरेयमहरी संयोर्ग्री नाम गुता तस्यान्ति ॥१०॥  
 ऊदगावतव गभीरीति माऊ दूदग्य न प्रिया ।  
 आश्रयतेः संपमःश्च तयो पुत्री तयाकमम् ॥११॥  
 तमुवा पत्न्यादेव, शर्येण गर्भिता पुत्रा ।  
 गंगादेवी गुर्गेवंवातुर्देवमाहृतं पत्नी ॥१२॥  
 आश्रयकप्रमं कर्मणि तत्प्रायसो विरंभरं ।  
 एतदवगातुर्वादि नेशयामास धर्मतः ॥१३॥  
 विद्वन्विदि पत्न्यावर्जं विद्वन्मदुग्निासत्तले ।  
 कुतो विदि 'दासीतु' मिते विद्वन्मदुग्निर् पत्निते वर्ये ॥१४॥  
 पत्न्यादेवो मुदोपेता, तिमर्तययंयपुनक ।  
 पत्नीयं मीगपेययोनाभ्यवेभ्य, पत्नीयः ॥१५॥

॥३३॥ श्री. ॥

५. हृदयविशेष इति सपेया गुरुरावतन, सरदावगाह, मे वराह । इत्येव एव २ तथा पुनः १०  
 है । प्रदीपक वर्ये १३ पदविशेषः ॥३॥ पदविशेष पदविशे १३ मे ४० एव वराह है । इति

की लम्बाई १० $\frac{1}{2}$  इंच तथा चौड़ाई ४ $\frac{1}{2}$  इंच है। अक्षर बड़े तथा स्पष्ट हैं। प्रति शुद्ध तथा 'त' प्रधान है। अंत में लेखन-संवत् तथा लिपिकर्ता का नाम नहीं है, केवल निम्नोक्त वाक्य है—

॥छा॥ अणुत्तरोववाइयदशांगं नवमं अंगं समत्तं छा॥ श्रीः श्रीः श्रीः श्रीः श्रीः श्रीः  
छ छः प्रति का अनुमानित समय १६०० है।

## ५. पण्हावागरणाई—

क. ताडपत्रीय (फोटो प्रिंट) मूलपाठ—

पत्र संख्या २२८ से २५६

ख. पंचपाठी । हस्तलिखित अनुमानित संवत् १२वीं सदी का उत्तरार्ध ।

यह प्रति गधैया पुस्तकालय, सरदारशहर की है। इसके पत्र ६८ हैं। प्रत्येक पत्र १० × ४ $\frac{1}{2}$  इंच है। मूलपाठ की पंक्तियां १ से १२ तथा पंक्ति में लगभग २३ से ३५ अक्षर हैं। चारों ओर वृत्ति तथा बीच में वावड़ी है। अन्तिम प्रशस्ति की जगह—  
ग्रंथाग्र १२५० शुभं भवतु कल्याणमस्तु ॥ लिखा है। लेखन कर्ता तथा लिपि-संवत् का उल्लेख नहीं है किन्तु अनुमानतः यह प्रति १३वीं शताब्दी की होनी चाहिए।

ग. त्रिपाठी (हस्तलिखित)—

गधैया पुस्तकालय, सरदारशहर से प्राप्त। इसके पत्र १११ हैं। प्रत्येक पत्र १० × ४ $\frac{1}{2}$  इंच है। मूल पाठ की पंक्तियां १ से ८ तथा प्रत्येक पंक्ति में ३६ से ४६ तक लगभग अक्षर हैं। ऊपर नीचे दोनों तरफ वृत्ति तथा बीच में कलात्मक वावड़ी है। प्रति के उत्तरार्ध के बीच बीच के कई पन्ने लुप्त हैं। अंत में सिर्फ ग्रंथाग्र १२५० ॥छा॥ श्री ॥ छा॥०॥ लिखा है। लिपि संवत् अनुमानतः १६वीं शताब्दी होना चाहिए।

घ. मूलपाठ (सचित्र)—

पूनमचंद दुधोड़िया, छापर द्वारा प्राप्त। इसके पत्र २७ हैं। प्रत्येक पत्र १२ × ५ इंच है। प्रत्येक पत्र में १५ पंक्तियां तथा प्रत्येक पंक्ति में ५१ से ६० तक अक्षर हैं। बीच में वावड़ी है तथा प्रथम दो पत्रों में सुनहरी कार्य किए हुए भगवान् महावीर और गौतम स्वामी के चित्र हैं। लेखन संवत् नहीं है पर यह प्रति अनुमानतः १५७० के लगभग की होनी चाहिए। अशुद्धि बहुत है।

च. मूलपाठ तथा टक्का की प्रति—

गधैया पुस्तकालय, सरदारशहर से प्राप्त। पत्र संख्या ८३।

द्व. यह प्रति वर्तमान में जैन विद्वत् भारती, लाडवू में है। इसके पत्र १०३ तथा पृष्ठ २०६

है। बालावधोय पंचपाठी। पंचिकाओं नीचे में १ ऊपर में ११ तक हैं। अक्षर २८ से ३५ तक हैं। लेखन संवत् १६६७। लेखक मुद्रार्थन। प्रति कापी शुद्ध है।

६. विवागसुयं—

क. मदनमन्दजी गोठी सन्दारपाट्ट द्वारा प्राप्त (ताडपक्षीय फोटो प्रिंट) २६० से २८५ तक। (मूलपाठ) पंचिकाओं ५ से ६ तक। शुद्ध पंचिकाओं अधूरी तथा कुछ अक्षर हैं। प्रति प्रायः शुद्ध है। लेखन संवत् ११८६ आश्विन सुदि ३ सोमवार। पुष्पिका कापी नम्बरी है पर अक्षर है। प्रति की नम्बरी १४ एवं तथा चौड़ाई ११ इंच है और तीन कोठकों में लिखी हुई है।

ख. मूलपाठ—

यह प्रति गर्भया पुस्तकालय, मद्रासपाट्टर की है। इसके पत्र ३२ तथा पृष्ठ ६४ हैं। पत्रों की नम्बरी १०१ तथा चौड़ाई ४१ इंच है। प्रत्येक पत्र में १५ पंचिकाओं तथा प्रत्येक पंचिका में ४० से ४५ तक अक्षर हैं। कहीं-कहीं भाषा का अर्थ निम्न हुआ है। प्रति प्रायः शुद्ध है। अन्तिम प्रसंग में लिखा है—

शुभं भवतु मेराकपाठार्याः ॥ संवत् १६३३ वर्षे भाग्ये यदि = रवि विधितं ॥ ॥

ग. मूलपाठ—

यह प्रति हनुमानजी गोपीनाथजी सेनाली बीरामर से प्राप्त हुई। इसके पत्र ३५ तथा पृष्ठ ७० हैं। प्रत्येक पत्र १६१ इंच तथा तथा ४१ इंच चौड़ा है। प्रत्येक पत्र में १२ पंचिकाओं तथा प्रत्येक पंचिका में ४५ से ४६ तक अक्षर हैं। प्रति अशुद्धि बहुत है। अन्तिम प्रसंग में—

एकदास्य अग तमर्ग ॥ उभाय १२१६ ॥ टीका ६०० एतन्मा ॥ यदि संवत् नहीं है, पर पत्रों की अक्षरों तथा अक्षरों की विन्यास से यह प्रति कभी ४०० वर्ष पूर्व की होनी चाहिए।

७. एव० की मोदी तथा श्री० टी० श्रीरामजी द्वारा सन्तानिका तथा मुद्रेशसंवरण भाष्यसंभव, अक्षरसंवरण द्वारा प्रकाशित प्रथम संस्करण १९३५, विवागसुयं।

सहयोगानुमति

श्री० यमनाथ से वाच्यता का इतिहास बहुत प्राचीन है। आज से १५०० वर्ष पूर्व का समय की आज वाच्यता ही हुई है। इतिहासों के अक्षरों में सुविधायित्वात् वाच्यता-वाच्यता नहीं हुई। अक्षरों का प्रयोग-प्रयोग से ही वाच्यता विधि का है, वे इस प्रकार अक्षरों से वाच्य की वाच्यता-वाच्यता ही का है अक्षरों वाच्यता-वाच्यता के लिए का



आचार्यश्री तुलसी ने सुनियोजित सामूहिक वाचना के लिए प्रयत्न भी किया था, परन्तु वह पूर्ण नहीं हो सका। अन्ततः हम इसी निष्कर्ष पर पहुँचे कि हमारी वाचना अनुसन्धानपूर्ण, तटस्थ-दृष्टि-समन्वित तथा सपरिश्रम होगी तो वह अपने आप सामूहिक हो जायगी। उम्मी निर्णय के आधार पर हमारा यह आगम-वाचना का कार्य प्रारम्भ हुआ।

हमारी इस वाचना के प्रमुख आचार्यश्री तुलसी हैं। वाचना का अर्थ अध्यापन है। हमारी इस प्रवृत्ति में अध्यापन-कर्म के अनेक अंग हैं—पाठ का अनुसंधान, मापान्तरण, समीक्षात्मक अध्ययन आदि-आदि। इन सभी प्रवृत्तियों में आचार्यश्री का हमें सक्रिय योग, मार्ग-दर्शन और प्रोत्साहन प्राप्त है। यही हमारा इस गुरुतर कार्य में प्रवृत्त होने का शक्ति-बीज है।

मैं आचार्यश्री के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित कर भार-मुक्त होऊँ, उसकी अपेक्षा अच्छा है कि अग्रिम कार्य के लिए उनके आशीर्वाद का शक्ति-संचलन पा और अधिक भारी बनूँ।

प्रस्तुत पाठ के सम्पादन में मुनि सुदर्शनजी, मुनि मधुकरजी और मुनि हीरालालजी का पर्याप्त योग रहा है। मुनि बालचन्द्रजी, इस कार्य में क्वचित् संलग्न रहे हैं। प्रति-शोधन में मुनि डुलहराजजी का पूर्ण योग मिला है। इसका ग्रंथ-परिमाण मुनि मोहनलाल (आमेट) ने तैयार किया है।

कार्य-निष्पत्ति में इनके योगका मूल्यांकन करते हुए मैं इन सबके प्रति आभार व्यक्त करता हूँ।

आगमविद् और आगम-सम्पादन के कार्य में सहयोगी स्व० श्री मदनचन्द्रजी गोठी को इस अवसर पर विस्मृत नहीं किया जा सकता। यदि वे आज होते तो इस कार्य पर उन्हें परम हर्ष होता।

आगम के प्रबन्ध-सम्पादक श्री श्रीचन्द्रजी रामपुरिया प्रारम्भ से ही आगम कार्य में संलग्न रहे हैं। आगम साहित्य को जन-जन तक पहुँचाने के लिए वे कृत-संकल्प और प्रयत्नशील हैं। अपने सुव्यवस्थित कालतः कार्य से पूर्ण निवृत्त होकर अपना अधिकांश समय आगम-सेवा में लगा रहे हैं। 'अंगमुत्ताणि' के इस प्रकाशन में इन्होंने अपनी निष्ठा और तत्परता का परिचय दिया है।

'जैन विश्व-भारती' के अध्यक्ष श्री खेमचन्द्र जी सेठिया, 'जैन विश्व-भारती' तथा 'आदर्श साहित्य संघ' के कार्यकर्त्ताओं ने पाठ-सम्पादन में प्रयुक्त सामग्री के संयोजन में बड़ी तत्परता से कार्य किया है।

एक लक्ष्य के लिए समान गति से चलने वालों की समप्रवृत्ति में योगदान की परम्परा का उल्लेख व्यवहारपूर्ति मात्र है। वास्तव में यह हम सब का पवित्र कर्त्तव्य है और उसी का हम सबने पालन किया है।

अणुव्रत विहार

नई दिल्ली

२५०० वां निर्वाण दिवस।

मुनि नथमल

## भूमिका

### नायाधम्मकहाओ

#### नाम-बोध—

प्रस्तुत आगम द्वादशांगी वा द्वादश अंग है। इसके दो श्रुतसंग्रह हैं। प्रथम श्रुतसंग्रह का नाम 'नाया' और दूसरे श्रुतसंग्रह का नाम 'धम्मकहाओ' है। दोनों श्रुतसंग्रहों का एकीकरण करने पर प्रस्तुत आगम का नाम 'नायाधम्मकहाओ' बनता है। 'नाया' (ज्ञान) का अर्थ उदाहरण और 'धम्मकहाओ' का अर्थ धर्म-आख्यायिका है। प्रस्तुत आगम में चरित्र और कर्मित—दोनों प्रकार के दृष्टान्त और कथान् हैं।<sup>1</sup>

जयाधम्मना में प्रस्तुत आगम का नाम 'नायाधम्मकहा' (नायाधर्मकथा) मिलता है। नाया का अर्थ है स्वामी। नायाधर्मकथा अर्थात् तीर्थंकर द्वारा प्रतिपादित धर्मकथा। कुछ संस्कृत ग्रन्थों में प्रस्तुत आगम का नाम 'आतृधर्मकथा' उपलब्ध होता है। आचार्य अत्थक ने प्रस्तुत आगम का नाम 'आतृधर्मकथा' बतलाया है।<sup>2</sup> आचार्य मन्वन्ति और धनपदेवमूर्ति ने उदाहरण-प्रधान धर्मकथा को नायाधर्मकथा कहा है। उनके अनुसार प्रथम अध्याय में 'आत' और दूसरे अध्याय में 'धर्म-कथा' है। दोनों ने ही आत पर के शीर्षकत्वा का उल्लेख किया है।<sup>3</sup>

दीक्षाचर्य मार्तण्ड ने भगवान् महावीर के योग का नाम 'आत' और दिनचर्य साहित्य में 'आत' बतलाया गया है। इन आधार पर कुछ विद्वानों ने प्रस्तुत आगम के नाम के साथ भगवान् महावीर का सम्बन्ध जोड़ने का प्रयत्न किया है। उनके अनुसार 'आतृधर्मकथा' या 'नायाधर्मकथा'

१. धम्मकहाओ, पदपठपरिचय, पृष्ठ १५।

२. नायाधर्मकथा, पृष्ठ १० पर : आतृधर्मकथा।

३. (क) मन्वन्ति, पृष्ठ १०-११ : आतृधर्मकथा—उदाहरणानि धर्मकथा आतृधर्मकथा, मन्वन्ति आचार्य—आतृधर्मकथा धर्मकथा, धर्मकथा शिर्षकपुस्तकको नाम उदाहरण-प्रधान धर्मकथा, दीक्षाचर्य—विश्वाम्बरचर्य शीर्षकत्वा।

(ख) मन्वन्ति, पृष्ठ १०-११ : आतृधर्मकथा—उदाहरणानि धर्मकथा आतृधर्मकथा, दीक्षाचर्य—आतृधर्मकथा धर्मकथा शिर्षकपुस्तकको नाम उदाहरण-प्रधान धर्मकथा, मन्वन्ति—विश्वाम्बरचर्य शीर्षकत्वा।

का अर्थ है—भगवान् महावीर की धर्मकथा<sup>१</sup>। वेबर के अनुसार जिस ग्रंथ में जानुवंशी महावीर के लिए कथाएं हों उसका नाम 'नायाधम्मकहा'<sup>२</sup> है। किन्तु समवायांग और नदी में जो अंगों का विवरण प्राप्त है उसके आधार पर 'नायाधम्मकहा' का 'जानुवंशी महावीर की धर्मकथा'—यह अर्थ संगत नहीं लगता। वहां बतलाया गया है कि ज्ञाताधर्मकथा में ज्ञाता (उदाहरणभूत व्यक्तियों) के नगर, उद्यान आदि का निरूपण किया गया है। प्रस्तुत आगम के प्रथम अध्ययन का नाम भी 'उत्खिन्नता' (उत्क्षिप्त ज्ञात) है। इसके आधार पर 'नाय' शब्द का अर्थ 'उदाहरण' ही संगत प्रतीत होता है।

### विषय-वस्तु—

प्रस्तुत आगम के दृष्टान्तों और कथाओं के माध्यम से अहिंसा, अस्वाद, श्रद्धा, इन्द्रिय-विजय आदि आध्यात्मिक तत्त्वों का अत्यन्त सरस शैली में निरूपण किया गया है। कथावस्तु के साथ वर्णन की विशेषता भी है। प्रथम अध्ययन को पढ़ते समय कादम्बरी जैसे गद्य काव्यों की स्मृति हां आती है। नवें अध्ययन में समुद्र में डूवती हुई नौका का वर्णन बहुत सर्जिव और रोमांचक है। बारहवें अध्ययन में क्लुपित जल को निर्मल बनाने की पद्धति वर्तमान जल-शोधन की पद्धति की याद दिलाती है। इस पद्धति के द्वारा पुद्गल द्रव्य की परिवर्तनशीलता का प्रतिपादन किया गया है।

मुख्य उदाहरणों और कथाओं के साथ कुछ अवान्तर कथाएं भी उपलब्ध होती हैं। आठवें अध्ययन में कूप-मंढूक की कथा बहुत ही सरस शैली में उल्लिखित है। परिव्राजिका चोखा जितशत्रु के पास जाती है। जितशत्रु उसे पूछता है—'तुम बहुत धूमती हो, क्या तुमने मेरे जैसा अन्तःपुर कहीं देखा है?' चोखा ने मुस्कान भरते हुए कहा—'तुम कूप-मंढूक जैसे हो।'

'वह कूप-मंढूक कौन है?' जितशत्रु ने पूछा।

चोखा ने कहा—'कूप में एक मेंढक था। वह वहीं जन्मा, वहीं बड़ा। उसने कोई दूसरा कूप, तालाब और जलाशय नहीं देखा। वह अपने कूप को ही सब कुछ मानता था। एक दिन एक समुद्री मेंढक उस कूप में आ गया। कूप-मंढूक ने कहा—तुम कौन हो? कहां से आए हो? उसने कहा— मैं समुद्र का मेंढक हूँ, वहीं से आया हूँ। कूप-मंढूक ने पूछा—वह समुद्र कितना बड़ा है? समुद्री मेंढक ने कहा—वह बहुत बड़ा है। कूप-मंढूक ने अपने पैर से रेखा खींचकर कहा—क्या समुद्र इतना बड़ा है? समुद्री मेंढक ने कहा—इससे बहुत बड़ा है। कूप-मंढूक ने कूप के पूर्वी तट से पश्चिमी तट तक फुदक कर कहा—क्या समुद्र इतना बड़ा है? समुद्री मेंढक ने कहा—इससे भी बहुत बड़ा है। कूप-मंढूक इस पर विश्वास नहीं कर सका। इसने कूप के सिवाय कुछ देखा ही नहीं था।'

इस प्रकार नाना कथाओं, अवान्तर-कथाओं, वर्णनों, प्रसंगों और शब्द-प्रयोगों की दृष्टि से प्रस्तुत आगम बहुत महत्वपूर्ण है। इसका विश्व के विभिन्न कथा-ग्रन्थों के साथ तुलनात्मक अध्ययन करने पर कुछ नए तथ्य उपलब्ध हो सकते हैं।

१. जैन साहित्य का इतिहास, पूर्व-मीठिका, पृष्ठ ६६०।

२. Stories From the Dharma of NAYA इ० एं० जि० १९, पृष्ठ ६६।

३. (क) समवायो, पद्मसंवायो, सूत्र ६४।

(ख) नदी, सूत्र ८५।

४. नायाधम्मकहाओ ८।१५४, पृ० १८६, १८७।

## उवात्सगदसाओ

### नाम-बोध—

प्रभुनु आगम ब्राह्मणाङ्गी का नामवाँ अंग है। इसमें एक उपासकों का जीवन बचिा है। उपासिा उपासक नाम 'उवात्सगदसाओ' है। श्रमण-परम्परा में श्रमणों की उपासना करने वाले गुरुओं की श्रमणोपासक का उपासक कहा गया है। भगवान महावीर के अनेक उपासक थे। उनमें से एक मुला उपासकों का वर्णन करने वाले एक अन्यत्रण इसमें संकलित हैं।

### विषय-वस्तु—

भगवान् महावीर ने मुनि-धर्म और उपासक धर्म—एक द्विविध धर्म का उपदेश दिया था। मुनि के लिए पांच महाधर्मों का विधान किया और उपासक के लिए बारह धर्मों का। प्रथम अन्यत्रण में उन बारह धर्मों का विधान वर्णन मिलता है। श्रमणोपासक आनन्द भगवान् महावीर के पास उनकी सीखा जाता है। धर्मों की गह कृषी धार्मिक या नैतिक जीवन की प्रकृत आचार-मतिना है। इसकी भाव भी उसकी ही उपयोगिता है जिसकी दाईं हजार वर्ष पहले थी। मनुष्य स्वभाव की दुर्बलता तब तक नहीं रहती तब तक उसकी उपयोगिता समाप्त नहीं होती।

मुनि का आचार-धर्म अनेक आगमों में मिलता है, किन्तु गुरुधर्म का आचार-धर्म मुख्यतः इसी आगम में मिलता है। उपासिा आचार-धर्म में प्रकृत मुख्य स्थान है। इसकी रचना का मुख्य प्रयोजन ही गुरुधर्म के आचार का वर्णन करना है। प्रसंगगत इसमें नियतिवाद के पक्ष-निपात की सूचना वर्णन हुई है। उपासकों की पारमिा कसौटी की पटभार्य भी मिलती है। भगवान महावीर उपासकों की साधना का विधान अत्रण रहती के और उन्हें समय-समय पर धर्म प्रोत्साहित करने के लिये भी आदेशों की मिलता है।

उपासकों के अनुसरण प्रभुनु आगम उपासकों के ग्यारह प्रकार के धर्म का वर्णन करता है। उपासक-धर्म के सामान्य अंग में हैं—धर्म, धन, स्वसाधिका, पीर्योपासना, मन्त्रविधि, मन्त्र-श्रेण्य विधि, ब्रह्मचर्य, सारभूतिविधि, अनुमति विधि और उद्दिष्ट विधि'। आनन्द आदि साधकों में एक स्वयं प्रसिद्धाओ का उपासक विधा था। धर्मों की साधना स्वयंसेवक रूप में भी की जाती है और उपासकों के पालन के समय भी की जाती है। धन और प्रसिद्धा—ये दो पदविध हैं। स्वसाधिका और मन्त्री रूप में एक और प्रसिद्धा दोनों का उपासक है। उपासकों में केवल प्रसिद्धाओं का उपासक है।

## अंतगडदसाओ

### नाम-बोध—

प्रस्तुत आगम द्वादशाङ्गी का आठवां अंग है। इसमें जन्म-मरण की परम्परा का अंत करने वाले व्यक्तियों का वर्णन है, तथा इसके दस अध्ययन हैं इसलिए इसका नाम 'अंतगडदसाओ' है। समवायांग में इसके दस अध्ययन और सात वर्ग बतलाए गए हैं। नंदी सूत्र में इनके अध्ययनों का कोई उल्लेख नहीं है, केवल आठ वर्गों का उल्लेख है। अभयदेवमूरि ने दोनों में सामञ्जस्य स्थापित करने का प्रयत्न किया है। उन्होंने लिखा है कि प्रथम वर्ग में दस अध्ययन हैं इस अपेक्षा से समवायांग सूत्र में दस अध्ययन और अन्य वर्गों की अपेक्षा से सात वर्ग बतलाए गए हैं। नन्दी सूत्र में अध्ययनों का उल्लेख किए बिना केवल आठ वर्ग बतलाए गए हैं। किन्तु इस सामञ्जस्य का अंत तक निर्वाह हो नहीं सकता, क्योंकि समवायांग में प्रस्तुत आगम के शिवा-काल (उद्देशन-काल) दस बतलाए गए हैं। नंदीसूत्र में उनकी संख्या आठ है। अभयदेवमूरि ने लिखा है कि उद्देशनकालों के अन्तर का आशय हमें ज्ञात नहीं। नंदीसूत्र के चूर्णिकार श्री जिनदास महत्तर और वृत्तिकार श्री हरिभद्रसूरि ने भी यह लिखा है कि प्रथम वर्ग में दस अध्ययन होने के कारण प्रस्तुत आगम का नाम 'अंतगडदसाओ' है। चूर्णिकार ने दसा का अर्थ अवस्था भी किया है।

प्रस्तुत आगम का वर्णन करने वाली तीन परम्पराएँ हैं—एक समवायांग की, दूसरी तत्त्वार्थवार्तिक आदि की और तीसरी नंदी की।

प्रथम परम्परा के अनुसार प्रस्तुत आगम के दस अध्ययन हैं। इसकी पुष्टि स्थानांग सूत्र से होती है। स्थानांग में प्रस्तुत आगम के दस अध्ययन और उनके नाम निदिष्ट हैं, जैसे—नमि, मातंग, सोमिल, रामगुप्त, सुदर्शन, जमाली, भगाली, किकप, चित्तवक और फाल अंबडपुत्र। तत्त्वार्थवार्तिक में कुछ पाठ-भेद के साथ ये दस नाम मिलते हैं, जैसे—नमि, मातंग, सोमिल, रामगुप्त, सुदर्शन, यमलीक, बलीक, कंबल, पाल और अंबडपुत्र। समवायांग में दस अध्ययनों का उल्लेख है, किन्तु उनके नाम निदिष्ट नहीं हैं। तत्त्वार्थवार्तिक के अनुसार प्रस्तुत आगम में प्रत्येक

१. समवाओ, पद्मणगसमवाओ, सूत्र ६६ :.....दस अज्जयणा सत्त वग्गा ।
२. नंदी, सूत्र ८८ :.....अट्ठ वग्गा ।
३. समवायांगवृत्ति, पत्र ११२ : दस अज्जयण त्ति प्रथमवगपिक्खयैव घटन्ते, नन्धां तथैव व्याख्यातत्वात्, यच्चेह पठ्यते 'सत्त वग्ग' त्ति तत् प्रथमवर्गादन्यवगपिक्खाया, यतोऽप्यष्ट वर्गाः, नन्धामपि तथा पठितत्वात् ।
४. समवायांगवृत्ति, पत्र ११२ : ततो भणितं—अट्ठ उद्देशनकाला इत्यादि, इह च दश उद्देशनकाला अधीयन्ते इति नास्याभिप्रायमवगच्छामः ।
५. (क) नन्दीसूत्र, चूर्णिसहित पृ० ६८ : पढमवग्गे दस अज्जयण त्ति तत्सकवतो अंतकडदस त्ति ।  
(ख) नन्दीसूत्र, वृत्तिसहित पृ० ८३ : प्रथमवर्गे दशाध्ययनानि इति तत्सङ्ख्याया अन्तकडदसा इति ।
६. नन्दीसूत्र, चूर्णिसहित पृ० ६८ : दस त्ति—अवत्था ।
७. टाणं, १०।११३ ।
८. तत्त्वार्थवार्तिक १।२०, पृ० ७३ ।

नीमंकर के समय में होने वाले दस-दस अंतकृत केवलियों का वर्णन है। वातिक के वर्णन का समर्थन मिलता है। नंदी सूत्र में दस अध्यायनों का उल्लेख नहीं है। इन आधार पर अनुमान किया जा सकता है कि समवायों प्राचीन परम्परा सुरक्षित है और नंदी सूत्र में प्रस्तुत आगम के वर्तमान यत्नमान में उपलब्ध आठ वर्णों में प्रथम वर्ण के दस अध्यायन हैं, किन्तु उ नववां भिन्न है, जैसे—गोवामगमुद्र, नागर, गम्भीर, म्निमित्त, अचल, यति और विष्णु। अभयदेवमुद्रि ने स्वायों वृत्ति में इसे वाचनान्तर माना है कि नंदी में जिस वाचना का वर्णन है वह समवायों में वर्णित वाचना ने।

'अंतगड' शब्द के दो संस्कृत रूप प्राप्त होते हैं—अंतकृत और अंत दोनों में कोई अन्तर नहीं है, किन्तु 'गड' का 'गु' रूप द्वाया की दृष्टि में

**विषय-वस्तु--**

वासुदेव कृष्ण और उनके परिवार के सम्बन्ध में इस आगम में विद वासुदेवकृष्ण के छोटे भाई मलमुहुमान की दीक्षा और उनकी साधना का काही है।

छठे वर्ण में अर्जुनमायाचार की घटना उल्लिखित है। एक आर्यवि बन विना और एक प्रयोग में उसे साधु बना दिया। परिवर्तित और वा विगृह्यता है—इसे स्वीकार न करें फिर भी यह स्वीकार किया जा सकता विगृह्ये में वे निर्मित करने है।

अधिसूक्तक सूत्रि के अध्यायन में आन्तरिक साधना का महत्त्व इस आगम में परम्परा ही परम्परा दृष्टिगोचर होती है। ध्यान के उन्मेष सूत्र उपवास और ध्यान—दोनों की स्थापन किया था। उपवास के रगीकरण के ध्यान आन्तरिक तर है। भगवान् महावीर ने अपने साधना-रत्न में ध्यान का प्रयोग किया था। यह अनुसंधान है कि प्रस्तुत आगम में केवल उपवास किया गया ? विरक्ति और महाविर्षा की शृंखला में क्या हुआ प्रस्तुत महाव्रतों और अनुसंधान है।

१. वासुदेवकृष्ण ११११, पृ. ५३ उपलब्ध है। यह वासुदेवकृष्णकृत है। इसके अन्तर्गत है वह उपलब्ध है। यह वासुदेवकृष्णकृत है।
२. वासुदेवकृष्ण ११११, पृ. ५३ उपलब्ध है। यह वासुदेवकृष्णकृत है। इसके अन्तर्गत है वह उपलब्ध है। यह वासुदेवकृष्णकृत है।
३. वासुदेवकृष्ण ११११, पृ. ५३ उपलब्ध है। यह वासुदेवकृष्णकृत है। इसके अन्तर्गत है वह उपलब्ध है। यह वासुदेवकृष्णकृत है।

## अणुत्तरोववाइयदसाओ

### नाम-बोध—

प्रस्तुत आगम द्वादशाङ्गी का नवां अंग है। इसमें अनुत्तर नामक स्वर्ग-समूह में उत्पन्न होने वाले मुनियों से सम्बन्धित दस अध्ययन हैं, इसलिये इसका नाम 'अणुत्तरोववाइयदसाओ' है। नंदी सूत्र में केवल तीन वर्गों का उल्लेख है। स्थानांग में केवल दस अध्ययनों का उल्लेख है। राजवार्तिक के अनुसार इसमें प्रत्येक तीर्थंकर के समय में होंगे वाले दस-दस अनुत्तरोपपातिक मुनियों का वर्णन है। समवायांग में दस अध्ययन और तीन वर्ग—दीनों का उल्लेख है। उसमें दस अध्ययनों के नाम उल्लिखित नहीं हैं। स्थानांग और तत्त्वार्थवार्तिक के अनुसार उनके नाम इस प्रकार हैं।

(१) स्थानांग के अनुसार—

ऋषिदास, धन्य, सुनक्षत्र, कार्तिक, स्वस्थान, शालिभद्र, आनंद, तैतली, दशार्णभद्र और अतिमुक्त<sup>१</sup>।

(२) राजवार्तिक के अनुसार—

ऋषिदास, वान्य, सुनक्षत्र, कार्तिक, नन्द, नन्दन, शालिभद्र, अभय, वारिषेण और चिलातपुत्र<sup>१</sup>।

उक्त दस मुनि भगवान् महावीर के शासन में हुए थे—यह तत्त्वार्थवार्तिककार का मत है। धवला में कार्तिक के स्थान पर कार्तिकेय और नंद के स्थान पर आनंद मिलता है।

प्रस्तुत आगम का जो स्वरूप उपलब्ध है वह स्थानांग और समवायांग की वाचना से भिन्न है। अभयदेवसूरि ने इसे वाचनान्तर वतलाया है<sup>२</sup>। उपलब्ध वाचना के तृतीय वर्ग में धन्य,

१. नंदी, सूत्र ८६ :.....तिष्णि वरगा ।

२. ठाणं १०।११४

३. (क) तत्त्वार्थवार्तिक १।२०, पृ० ७३ ।

.....इत्येते दश वर्धमानतीर्थंकरतीर्थे । एवमूपभादीनां त्रयोविंशतेस्तीर्थेऽप्येऽप्ये च दश दशानगारा दश दश दारुणानुपसर्गान्निजित्य विजयाद्यनुत्तरोपूत्पन्ना इत्येवमनुत्तरोपपादिकः दशास्यां वर्ण्यन्त इत्यनुत्तरोपपादिकदशा ।

(घ) कसायपाद्दुड भाग १, पृ० १३० ।

अणुत्तरोववाइयदसा णाम अंगं चउब्विहोवसग्गे दारणे सहियुण चउवीसण्हं तित्थेसु अणुत्तर-विमाणं गदे दस दस मुणिवसहे वण्णेदि ।

४. समवाओ, पद्दणगसमवाओ ६७ ।

.....दसं अज्जमणा तिष्णि वरगा..... ।

५. ठाणं १०।११४ ।

६. तत्त्वार्थवार्तिक १।२० पृ० ७३ ।

७. पद्दण्णआगम १।१।२ ।

८. स्थानांगवृत्ति पत्र ४८३ :

उदेवनिहापि वाचनान्तरापेक्षयाऽध्ययनविभाग उच्यते न पुनरुपलभ्यमानवाचनापेक्षयेति ।

सुनसप्त और श्रुतिदाग—ये तीन अक्षयन प्राप्त हैं। प्रथम वर्ग में वाग्दिय और अभाव—ये दो अक्षयन प्राप्त हैं, अन्य अक्षयन प्राप्त नहीं हैं।

**विषय-वस्तु—**

प्रस्तुत आगम में अनेक राजकुमारों तथा अन्य व्यक्तियों के वैभवपूर्ण और तपोमय जीवन का सुन्दर वर्णन है। अन्य अनेकानेक के तपोमय जीवन और तप से कृम धने हुए शरीर का जो वर्णन है वह नाहित्य और तप दोनों दृष्टियों से महत्वपूर्ण है।

**पद्मावागरणाई**

**नाम-चौघ**

प्रस्तुत आगम हावनागुड़ी का दसवां अंग है। समयायांग मूत्र और नदी में इसका नाम 'पद्मावागरणाई' मिलता है। स्थानांग में इसका नाम 'पद्मावागरणायाओ' है। समयायांग में 'पद्मावागरणायागु'—यह पाठ भी उपलब्ध है। इससे जाना जाता है कि समयायांग के अनुसार स्वायांग-निर्दिष्ट नाम भी सम्मत है। जयपद्मा में 'पद्मावागरण' और तत्त्वार्थशास्त्र में 'प्रत्यावाकरणा' नाम मिलता है।

**विषय-वस्तु**

प्रस्तुत आगम के विषय-वस्तु के बारे में विभिन्न मत प्राप्त होते हैं। स्थानांग में इसके दस अक्षयन उपलब्ध हुए हैं—उपमा, संख्य, श्रुति-भाषित, आचार्य-भाषित, महावीर-भाषित, धीमक प्रजन, कोमक प्रजन, आत्म प्रजन, अंगुल प्रजन और बाहू प्रजन। इनमें शक्ति विषय का नवैत अक्षयन के नामों में मिलता है।

समयायांग और नदी के अनुसार प्रस्तुत आगम में नाना प्रकार के प्रयत्नों, विद्याओं और दिव्य-व्यवहारों का वर्णन है। नदी में इसमें वैशालिक प्रयत्नों का वर्णन है। स्थानांग में उपमा

१. (क) समयाओ, पद्मावागरणाओ गुण १० ।

(ख) नदी, गुण १० ।

२. (क) गुण १०-११-१२ ।

३. (क) पद्मावागरण, नाम १ गुण १११ ; पद्मावागरण नाम १११ ।

(ख) तत्त्वार्थशास्त्र ११२० ; पद्मावागरणायागु ।

४. नाम १०-११-१२ ।

पद्मावागरणायागु दस अक्षयन उपलब्ध, १ उपमा—उपमा, संख्य, श्रुतिभाषित, आचार्यभाषित, महावीरभाषित, धीमकप्रजन, कोमकप्रजन, आत्मप्रजन, अंगुलप्रजन और बाहूप्रजन ।

५. (क) समयाओ, पद्मावागरणाओ गुण १० ।

समयायांग में उपमा, संख्य, श्रुतिभाषित, आचार्यभाषित, महावीरभाषित, धीमकप्रजन, कोमकप्रजन, आत्मप्रजन, अंगुलप्रजन और बाहूप्रजन ।

(ख) नदी, गुण १० ।



कोई संगति नहीं हैं। समवायांग में इसके अध्ययनों का उल्लेख नहीं है, किन्तु उसके 'पण्ड्यावाकरण-दसामु' इस आलापक (पैराग्राफ) के वर्णन से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि समवायांग में प्रस्तुत आगम के दस अध्ययनों की परम्परा स्वीकृत है। उक्त आलापक में बतलाया गया है कि प्रश्नव्याकरणदसा में प्रत्येक बुद्ध भाषित, आचार्य भाषित, वीरमहर्षि भाषित, आदर्श प्रश्न, अंगुष्ठ प्रश्न, बाहु प्रश्न, असि प्रश्न, मणि प्रश्न, क्षीम प्रश्न, आदित्य प्रश्न आदि-आदि प्रश्न वर्णित हैं। इन नामों की स्थानांग में निर्दिष्ट दस अध्ययन के नामों के साथ तुलना की जा सकती है। यद्यपि उद्देशनकाल पेंतालिस बतलाए गए हैं फिर भी अध्ययनों की संख्या का स्पष्ट निर्णय नहीं किया जा सकता। गंभीर विषय वाले अध्ययन की शिक्षा अनेक दिनों तक दी जा सकती है।

तत्त्वार्थवातिक के अनुसार प्रस्तुत आगम में अनेक आक्षेप और विक्षेप के द्वारा हेतु और नय से आश्रित प्रश्नों का उत्तर दिया गया है, लौकिक और वैदिक अर्थों का निर्णय किया गया है।

जयघबला के अनुसार प्रस्तुत आगम आक्षेपणी, विक्षेपणी, संवेजनी और निर्वेदनी—इन चारों कथाओं तथा प्रश्न के आधार पर नष्ट, मुष्टि, चिन्ता, लाभ, अलाभ, सुख, दुःख, जीवन और मरण वा वर्णन करता है।

उक्त ग्रंथों में प्रस्तुत आगम का जो विषय वर्णित है वह आज उपलब्ध नहीं है। आज जो उपलब्ध है उसमें पांच आश्रवों (हिंसा, असत्य, चौर्य, ब्रह्मचर्य और परिग्रह) तथा पांच संवरों (अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह) का वर्णन है। नदी में उसका कोई उल्लेख नहीं है। समवायांग में आचार्य भाषित आदि अध्ययनों का उल्लेख है तथा जयघबला में आक्षेपणी आदि चारों कथाओं का उल्लेख है। इससे अनुमान किया जा सकता है कि प्रस्तुत आगम का उपलब्ध विषय भी प्रश्नों के साथ रहा हो, बाद में प्रश्न आदि विद्याओं की विस्मृति हो जाने पर वह भाग प्रस्तुत आगम के रूप में बचा हो। यह अनुमान भी किया जा सकता है कि प्रस्तुत आगम के प्राचीन स्वरूप के विच्छिन्न हो जाने पर किसी आचार्य के द्वारा नए रूप से रचना की गई हो। नदी में प्रस्तुत आगम की जिस वाचना का विवरण है, उसमें आश्रवों और संवरों का वर्णन नहीं है, किन्तु नदी चूर्ण में उनका उल्लेख मिलता है। यह संभव है कि चूर्णकार ने उपलब्ध आकार के आधार पर उनका उल्लेख किया है।

१. तत्त्वार्थवातिक १।२०, ५० ७३, ७४ :

आक्षेपविक्षेपहेतुनयाश्रितानां प्रश्नानां व्याकरणं प्रश्नव्याकरणम् । तस्मिन्लौकिकवैदिकानामर्थानां निर्णयः ।

२. कस्यपाठदृष्ट, भाग १, पृ० १३१, १३२:

पण्ड्यावरणं नाम अंगं अक्षेपणी-विक्षेपणी-संवेजनी-निर्वेदनीनामाद्यो चतुर्विधं कथाओ पण्ड्यादो णट्ट-मुट्ठि-चिन्ता-लाभालाह-सुखदुःख-जीवियमरणाणि च वर्णोदि ।

३. नदी मूल, चूर्ण सहित पृ० ६६ ।

## विद्यागमुयं

### नाम-बोध

प्रस्तुत आगम द्वादशाङ्गी का स्यादृश्वो अंग है। इसमें मुक्त और युक्त कर्मों के विपाक का वर्णन किया गया है, इसलिए इसका नाम 'विद्यागमुयं' है। स्यातांग में इसका नाम 'कम्म विद्यागदना' है।

### विषय-वस्तु

प्रस्तुत आगम के दो विभाग हैं—दुःख विपाक और सुख विपाक। प्रथम विभाग में दुःखमं करने वाले व्यक्तियों के जीवन प्रसंगों का वर्णन है। जिन प्रसंगों को पढ़ने पर लगता है कि कुछ व्यक्ति हर युग में होते हैं। वे अपनी कृत् मनीषि के कारण भयंकर अपराध भी करते हैं। दुःखमं व्यक्ति की भौतिक और मानसिक स्थितियों को किस प्रकार प्रभावित करता है, यह भी जानने का मिलता है। दूसरे विभाग में सुखमं करने वाले व्यक्तियों के जीवन-प्रसंग है। जैसे कृत् कर्म करने वाले व्यक्ति हर युग में मिलते हैं, जैसे ही उपजान्त मनीषि के जाने लोग भी हर युग में मिलते हैं। अन्तर्द्वै और कुराई का योग आकस्मिक नहीं है।

स्यातांग सूत्र में कर्म विपाक के दस अध्ययन बतलाए गए हैं—मृगायुत, गोवान, बंड, पचर, माहूत, नन्दीयेन, धीरिक, उदुम्बर, मरुतोद्गह-श्रामरक और कुमार विच्छावी। ये नाम किसी दुमरी भाषणा के हैं।

### उपसंहार

अंग सूत्रों की विषय और उपलब्ध स्वरूप में पूर्ण संवादित नहीं है। इस आधार पर यह अनुमान किया जा सकता है कि अंग सूत्रों का उपलब्ध स्वरूप केवल प्राचीन नहीं है, प्राचीन और अर्धप्राचीन दोनों संस्करणों का सम्मिश्रण है। इस विषय का अनुसन्धान कृत ही मरुत्पुर्ण हो सकता है कि अंग सूत्रों के उपलब्ध स्वरूप में कितना प्राचीन भाग है और कितना अर्धप्राचीन तथा किम आधुनिक के कथ उमरी रहता है। भाषा, प्रतिपाद, विषय और प्रतिपादन संज्ञा के आधार पर यह अनुसन्धान किया जा सकता है। यद्यपि यह कार्य बहुत ही भय, माध्य है, पर अनुसन्धान नहीं है।

१ (क) पञ्चमाली, पञ्चमालीसुत्र १.१।

(ख) कौ. सुत्र १.१।

(ग) पञ्चमालीसुत्र १.१।

(घ) पञ्चमालीसुत्र, भाग १ सू. १.१२।

२. पञ्चमालीसुत्र १.१।

३. पञ्चमालीसुत्र १.१।

## कार्य-संपूर्ति

प्रस्तुत आगमों के पाठ-संशोधन में अनेक मुनियों का योग रहा है। उन सबकों में आशीर्वाद देता हूँ कि उनकी कार्यजा शक्ति और अधिक विकसित हो।

इसके सम्पादन का बहुत कुछ श्रेय शिष्य मुनि नयमल को है, क्योंकि इस कार्य में अर्हनिश वे जिस मनोयोग से लगे हैं, उसी से यह कार्य सम्पन्न हो सका है। अन्यथा यह गुह्यतर कार्य बड़ा दुर्लभ होता। इनकी वृत्ति मूलतः योगनिष्ठ होने से मन की एकाग्रता सहज बनी रहती है। सहज ही आगम का कार्य करते-करते अन्तर्ग्रहस्य पकड़ने में इनकी मेधा काफी पनी हो गई है। विनय-शीलता, श्रम-परायणता और गुरु के प्रति पूर्ण समर्पण भाव ने इनकी प्रगति में बड़ा सहयोग दिया है। यह वृत्ति इनकी बचपन से ही है। जब से मेरे पास आए, मैंने इनकी इस वृत्ति में क्रमशः वर्धमानता ही पाई है। इनकी कार्य-क्षमता और कर्तव्य-परता ने मुझे बहुत संतोष दिया है।

मैंने अपने संघ के ऐसे शिष्य साधु-साध्वियों के बल-बूते पर ही आगम के इस गुह्यतर कार्य को उठाया है। अब मुझे विश्वास हो गया है कि अपने शिष्य साधु-साध्वियों के निरुवार्य, विनीत एवं समर्पणात्मक सहयोग से इस वृहत् कार्य को असाधारण रूप से सम्पन्न कर सकूंगा।

भगवान् महावीर की पचीसवीं निर्वाण शताब्दी के अवसर पर उनकी वाणी को जनता के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अनिर्वचनीय आनन्द का अनुभव हो रहा है।

अणुव्रत विहार, नई दिल्ली-१

२५००वां निर्वाण दिवस

आचार्य तुलसी

## Preface

### NĀYĀ DHAMMAKAHĀO

#### The title

The present Āgama is the sixth Anga of Dwādaśāṅgī. It has two Śrutaskandhas. The first is called as 'NĀYĀ' and the second as 'DHAMMAKAHĀO'. On combining both the Śrutaskandhas, the present Āgama has the title as 'NĀYĀDHAMMAKAHĀO'. 'NĀYĀ' (Jnāta) means examples and 'DHAMMAKAHĀO' means religious fables. The present Āgama has both of historical illustrations and imaginary fables.<sup>1</sup>

In the Jayadhawalā the title of this Āgama is found as 'Nāhadhāmma-kahā' (Nāhadharma-kathā). 'Nātha' means the Lord. 'Nāhadhāmma-kahā' i.e. the dharmakathā expounded by the Tīrthankara. In some Sanskrit works the title of this Āgama is given as 'Jnātipdharmakathā'. Āchārya Akalanka too has given the title of this Āgama as 'Jnātadharmakathā'. Āchārya Malayagiri and Abhayadeva Sūri give the title of 'Jnātadharmakathā'. It is a treatise mainly containing illustrative religious stories. According to them, the first Śrutaskandha has illustrations and the second Śrutaskandha has religious stories. Both of them mention the lengthening of the word 'Jnāta'.<sup>2</sup>

The family name of lord Mahāvīra has been given as 'Jnāta' and 'Nātha' in the Śwetamber and Dīyamber literature respectively. On this basis, some scholars have tried to relate this Āgama with lord Mahāvīra.<sup>3</sup> They hold that 'Jnātadharmakathā' or 'Nāthadharmakathā' means the 'Dharmakathā by lord Mahāvīra'. Weber says that the work, having fables pertaining to the religion of Jnātiprānī Mahāvīra, is titled as NĀYĀDHAMMAKAHĀ.<sup>4</sup> But, on the account found in the Samvāyāṅga and the Nandi, the meaning

1. Samantva, pāṇinīyāgamaśāstra, Sūtra 94

2. Tattvārtha Vidyā, 127.

3. (a) Nandīśrūtī, paper 210-11.

(b) Samvāyāṅga Vārtā, page 109.

4. Journal of the Asiatic Society, Calcutta, 1854, page 663.

5. Journal of the Asiatic Society, Calcutta, 1854, page 663.

'Dharmakathā of Jnātṛiwansī Mahāvīra' does not seem to be appropriate. It has been told there that in the 'Jnātadharmakathā', the cities and gardens etc. of the 'Jnātas' (the persons cited) have been described.<sup>1</sup> The title of the first Adhyayana of this Āgama is 'Ukkhittanāye' (Utkshiptajñāta). On this basis also, the word 'Nātha' seems to go with the meaning as an 'illustration' only.

### The content

The spiritual elements such as non-violence, palate control, faith, restraint of senses etc. have been expounded in an excellent style through the illustrations and fables in the present Āgama. Besides that of a plot, it has the elegance of description also. While going through the first Adhyayana, we have the reminiscence of the poetical prose-work such as the Kādambari. In the ninth Adhyayana, the description of the boat sinking in the sea, is very lively and horripilating. In the twelfth Adhyayana, the process of purifying water reminds us of the modern method. The changability of the Pudgala substance has been expounded by this illustration.

Along with the main illustrations and fables, some subsidiary fables are also found. In the eighth Adhyayana the fable of a well-frog has been recorded in an excellent style. Parivrājikā Chokha goes to Jitaśatru. Jitaśatru enquires of her—You wander a lot. Have you ever seen a harem like that of mine? With a smile Chokha said—You are like a Kūpa-Mandūka.

Who is that Kūpa Mandūka ?

Chokha said—There was a frog in a well. He was born and brought up there. He considered his well everything. One day an ocean-frog came down in that well. The well-frog said to him—Who are you ? He answered—I am a frog from the ocean. I have come from there. The well-frog asked him—How big is the ocean ? The ocean-frog said—It is very big. The well-frog, drawing a boundry with his foot, asked him—Is the ocean as big as this ? The ocean-frog answered—Far more greater than this. The well-frog had a jump, from the eastern to the western end of the well, and said—Is the ocean so big ? The ocean-frog answered—It is far more bigger than this too. The well-frog could not believe it as it had never seen any thing except the well<sup>2</sup>.

1. (a) Samwao, painnagasamawao, Sutra 94.  
(b) Nandi, Sutra 85.

2. Nayadhammakahao, 8/154, pages 186-87.

In this way, from the view point of various fables, insertions, illustrations, descriptions, anecdotes and word-usages, this Āgama has a great value. A comparative study of it with that of the different fable-works found the world over may well give some new facts.

## UWĀSAGADASĀO

### The title

The present Āgama is the seventh Anga of the Dwādaśāṅgi. It has the biographies of ten Upāsakas (lay devotees), therefore, it is called as 'Upāsagadasāo'. In the Śramāṇū order the laymen serving the Śramāṇas are called Śramāṇopāsakas or Upāsakas. Lord Mahāvira had large number of Upāsakas. It comprises of ten 'Adhyāyanas' depicting the life of ten principal Upāsakas.

### The Content

Lord Mahāvira has given twofold code of conduct, such as laws of conduct for Munis and laws of conduct for Upāsakas. Five Mahāvratas (great vows) were postulated for a Muni and twelve Vratas (vows) for a Upāsaka. Śramāṇopāsaka Anand was consecrated and initiated to his cult by him. The list of the Vratas is an excellent code of conduct pertaining to religious or ethical life. Even today, it has the same utility as it had 2500 years ago. As long as the weakness of human nature is there, its utility will always exist.

The code of conduct for Muni is found in many Āgamas but the code of conduct for laymen is found in this Āgama only. It has, therefore, its own place in the codes of conduct. The object of its composition is only to put forth the code of conduct for a layman. Incidentally, Niyatīvāda has also been discussed nicely with its arguments for and against. Incidents, proving the religious touch-stone for the Upāsakas, are also found. It also throws light on the fact as to how lord Mahāvira took care of the accomplishment of the Upāsakas, and encouraged them to higher spiritual life from time to time.

According to the Jayadhawala the present Āgama narrates eleven-fold practices of the Upāsakas. They are—Darśan, Vrat, Śrāmpika, Pannadhupawā, Saṅgīta-Vratā, Ratā-Bhojana-Vratā, Brahmacārya, Ārambha-Vratā, Pariprahā-Vratā, Arambh-Vratā, and Uddāya Vratā. The Śāśvat, beginning from

1. Jayadhawala, part I, pages 124-25.

Ananda, had practised above said eleven Pratimās. The Vratas are practised indenpedently, and at the time of fulfilment of Pratimās also. These Vratās and Pratimās are the two religious codes for an Upāsaka. In the Samawāyānga and the Nandi Sūtra, Vratā and Pratimā both are mentioned. The Jayadhawalā gives an account of Pratimās only.

## ANTAGADADASĀO

### The title

The present Āgama is the eighth of the Dwādaśāngī. The illustrious ones who put an end to the cycle of death and birth, have been narrated in it, and it has ten Adhyayanas. Hence the title 'Antagadadasāo'. The Samwāyānga tells us that it contained ten Adhyayanas and seven Vargas<sup>1</sup>. The Nandi Sūtra says nothing about its Adhyayanas and only eight Vargas have been accounted for and in it<sup>2</sup>. Sri Abhayadeva Sūri has tried to find consistency in these both. He tells us, that the first Varga has ten Adhyayanas, therefore the Samawāyānga Sūtra mentions ten Adhyayanas and seven Vargas only. The Nandi Sūtra gives eight Vargas only with no mention of Adhyayanas<sup>3</sup>. But this consistency cannot be maintained to the end, because the Samawāyānga gives us ten Śiksha-kālas (Uddeśan kālas) of this Āgama and the Nandi Sūtra gives only eight. Sri Abhayadeva Sūri admits that he does not understand the purpose behind the difference in the number of the Uddeśan-kālas<sup>4</sup>. The Chūrṇikār of the Nandīsūtra, Sri Jinadas Mahattar and the Vrittikār, Śri Haribhadra Sūri also write that the present Āgama is given the title 'Antagaḍadasāo' as it has ten Adhyayanas in the first Varga<sup>5</sup>. The Chūrṇikār takes the meaning of 'Daśā' as 'Awasthā' (condition) also<sup>6</sup>.

Three traditions are found to narrate the present Āgama : firstly, that of the samawāyānga; secondly, that of the Tatwārtha Vārtika, and thirdly, that of the Nandi Sūtra.

- 
1. Samawao, painnagasamawao, Sutra 96.
  2. Nandi Sutra, 88.
  3. Samwayanga Vritti, page 112.
  4. Samawayanga Vritti, page 112.
  5. (a) Nandi with Churni, page 68.  
(b) Nandi with Vritti, page 83.
  6. Nandi with the Churnipage 68. Dasatti Awastha.

According to the first tradition, the present Āgama has ten Adhyāyanas. The Sthānāṅga Sūtra supports it. The Sthānāṅga mentions the ten Adhyāyanas and their headings, such as Nami, Mātanga, Somila, Ramagupta, Sudarśana, Jamāli, Bhagāli, Kimkaṣa, Ālawaḥa, Pāla, and the Ambaśthaputtra.<sup>1</sup> These headings are found in the Tatwārthavarttika also with some variance, such as, Nami, Mātang, Somila, Ramaguptā, Sudarśana, Yamalika, Kambala, Pāla and Ambaśthaputtra. Samawayāṅga mentions ten adhyāyanas without giving their names. The present Āgama gives an account of the Antakṛta Kewalis, in groups of ten contemporaries of each Tirthankara.<sup>2</sup> The Jayadhawala, too, supports this statement of the Tatwārthavarttika. In the Nandisūtra mention is found neither of the ten Adhyāyanas nor of their headings. On this basis, it can be inferred that the Samawayāṅga and the Tatwārthavarttika maintain the old tradition and the Nandi-Sūtra gives the Āgama in the form found at present. There are ten Adhyāyanas of the first Varga out of the eight Vargas found at present, but their headings altogether differ from the above-said headings, i.e., Gautama, Samudra, Sāgara, Gambhīra, Stanita, Acāla Kāmpilya, Akṣetra, Prasenjit and Viṣṇu. In the 'Sthānāṅgavritti' Sri Abhaya-deva Suri acknowledges it as a variant 'Vācā'.<sup>3</sup> This shows that the 'Vācā' of the 'Nandi' is different from the 'Vācā' found in the 'Samawayāṅga'.

The word 'Antapada' has two Sanskrit forms—Antakṛta and Antakṛit. Both have the same sense but 'ḥṛta' goes more with the Sanskrit version 'Kṛta' so far as morphology is concerned.

### The Content

This Āgama gives an excellent account of Vāsudeva Kṛṣṇa and his family. The Dīkṣā (initiation) and accomplishment of Gajasukamāla, the younger brother of Vāsudeva Kṛṣṇa has been horripiliatingly narrated.

In the sixth Varga, is found an account of the incident occurred with Arjuna, the gardener. An accident turned him to be a murderer and the other association made him a saint. It may not be admitted that a man changes with the circumstances and atmosphere, but, even then, it may be accepted that they are the cause of the rise and fall of a man.

1. Tatwārthavarttika 129

2. Tatwārthavarttika 129

3. Vācā Vācā.



By the Adhyayana of Atimuktaka Muni, the value of spiritual accomplishment can be well understood. Fasting alone is seen in this Āgama through out. The narrations of meditations are scanty. Lord Mahavira had laid stress upon both—the fast and the meditation. In the classification of penance, fast is the outer penance and meditation is the inner one. Lord Mahavira in his penance-period, had observed both, fast and meditation. It is worth investigating why this Āgama lays so much stress on fasting only. This Āgama, a remanent in the succession of oblivion and reproduction, is valuable and worthy of research work from many points of view.

### ANUTTAROWAWĀIYA-DASĀO

#### The title

This Āgama is the ninth Anga of the Dwādaśaṅgī. As it contains ten Adhyayanās regarding the Munis born in the Anuttara Swarga class, its title is given as 'Añuttarowawāiya-Dasāo'. The Nandi Sūtra mentions only three Vargas<sup>1</sup>. The Sthānāṅga quotes only ten Adhyayanās.<sup>2</sup> According to the Rajavārttika groups of ten Anuttaropapātika Munis, contemporaries of each Tīrthanker, have been narrated in it.<sup>3</sup> The Samawāyāṅga mentions the ten Adhyayanās and the three Vargas too.<sup>4</sup> But the headings of the ten Adhyayanās have not been given in it. According to the Sthānāṅga and the Tattwārthavārttika they read as, Rīṣidasa, Dhanya, Sunakṣatra, Kārttika, Swasthan, Śālibhadra, Ānanda, Tetali, Daśārṇabhadra and Atimukta<sup>5</sup>, and as Rīṣidasa, Dhanya, Sunakṣatra, Kārttika, Nandanandana, Śālibhadra, Abhaya, Wāriṣeṇa, and Cilattaputra respectively. The above said Munis were the contemporaries of Lord Mahāvira, such is the opinion of the author of the Tattwārthavārttika.<sup>6</sup> In the Dhawalā we find Kārttikeya instead of Kārttika and Ānand instead of Nanda<sup>7</sup>.

The present form of the Āgama is different from the 'Vaēna' of the Sthānāṅga and the Samawāyāṅga. Abhayadeva Sūrī holds that it is a different 'Vaēna'. In the form of the Āgama, that is available, three Adhyayanās, such

1. Nandi, Sutra, 89.

2. Thanam, 10/114.

3. Tattawarth varttikas 1/20, Kasayapahuda I, page 130.

4. Samawao, painnagasamawao, Sutra 97.

5. Thanam 10/114.

6. Tattwarthvarttika 1/20.

7. Satkhundagama 1/1/2.

as Dhanya, Sunakshtra and Rīśidasa, are found. In the first Varga, only two Adhyayanās, named as Wārisṣeṇa and Abhaya, are seen.

### The contents

This Āgama beautifully narrates the luxury and ascetic lives of many princes. The narration of the ascetic life of Dhanya Anagāra and his body emaciated due to the penance is noteworthy both from the literary and spiritual viewpoints.

## PANHĀWĀGARANĀIN

### The title

The present Āgama is the tenth Anga of the Dwādaśāṅgī. Its title has been mentioned as 'Panhāwāgaranāin' in the Samawāyānga Sūtra and the Nandī.<sup>1</sup> Its name is found as 'Panhāwāgaradasāo'<sup>2</sup> in the Sthānānga and the same reads as 'Panhāwāgarapadasāsu' in the Samawāyānga. It is, therefore inferred that the title mentioned in the Sthānānga is also in concurrence with the Samawāyānga. The Jayadhwala and the Tattvārthavarttika note it as Panhāwāyāraṇa or Praśna-Vyākaraṇā.<sup>3</sup>

### The Contents

Opinions differ regarding the contents of the present Āgama. The Sthānānga cites its ten Adhyayanās, such as, Upamā, Saṃkhyā, Rīśibhāṣitā, Ācāryabhāṣitā, Mahāvīra-bhāṣitā, Kyaumaka-Praśna, Komala-Praśna, Ādarśa-Praśna, Anguṣṭha-Praśna and Bāhu-Praśna.<sup>4</sup> The headings of the Adhyayanās indicate well the contents they have.

According to the Samawāyānga and the Nandī, the present Āgama has various types of queries, sciences (vidyās) and the dialogues of the Devas dealt with.<sup>5</sup>

The Nandī notes fortyfive Adhyayanās of it, which do not accord with the Sthānānga. The Samawāyānga makes no mention of its Adhyayanās.

1. (a) Samawāyāngasūtra, Sūtra 97.  
(b) Nandī, Sūtra 97.
2. The same, 10110.
3. (a) Jayadhwala, pt. 1, page 131.  
(b) Tattvārthavarttika 1, 23.
4. The same 10 116.
5. (a) Samawāyāngasūtra, Sūtra 98.  
(b) Nandī, Sūtra, 98.

But, from its 'Pañhāvāgaranaśāsū' paragraph, it may be inferred that the Samawāyānga accepts the traditional ten Adhyayanas of the present Āgama. The said paragraph tells us that Pratyeka Buddhabhāṣita, Ācāryabhāṣita, Vīramaharṣi-Bhāṣita, Ādarśa-Praśna, Anguṣṭha-Praśna, Bāhu-Praśna, Asi-Praśna, Maṇi-Praśna, Kṣauma-Praśna, Āditya-Praśna etc. have been dealt with in the 'Praśna-Vyākaraṇa-Dasū'. These headings can well be compared with those of ten Adhyayanas mentioned in the Sthānānga. Though the Uddeśana-Kālas have been mentioned as fortyfive, the exact number of the Adhyayanas cannot be decided definitely. The teaching of the Adhyayana on a deep topic could be spread over for many days.

According to the Tattwārthavārttika many queries have been expounded in this Āgama, depending on cause and inference by 'Ākṣepa' and 'Vikṣepa'. Also the Laukika (secular) and Vedic Arthas have been ascertained in it.<sup>1</sup>

The Jayadhawalā notes that this Āgama narrates the Naṣṭa, Muṣṭi, Ācintā, Lābha, Alābha, Sukha, Dukkha, Jīvan and Maraṇa with the help of the four kinds of fables, i.e. Ākṣepaṇī, Prakṣepaṇī, Samvejaṇī, and Nirvedanī, as well as purporting a query.<sup>2</sup>

The contents of the Āgama, as mentioned in the said works, is not found today. What is found covers the five Āśrawas (Hinsā, Asatya, Ācārya, Ābrahmaçārya and Parigraha) and the five Samwaras (Ahimsa, Satya, Ācārya, Brhmaçārya, and Aparigraha) only. The Nandi does not make mention of it at all. The Samawāyānga mentions the Adhyayanas beginning from Ācārya-Bhāṣita, while the Jayadhawala gives an account of the four kinds of fables beginning from Ākṣepaṇī. It may be inferred that the known contents of the Āgama formerly were in the form of the queries and subsequently, the learning of query etc. being lost, the remanent part formed the present Āgama. It is also likely that the old form of the present Āgama being lost, some Ācārya composed it a fresh. The 'Vacna' of this Āgama given in the Nandi, does not narrate the Āśrawas and the Samwaras, but the Ācūṛṇī of the Nandi does it.<sup>3</sup> Likely it is that the Ācūṛṇīkāra did it on the basis of the present form of the Āgama.

- 
1. Tattwārthavārttika 1/20.
  2. Kasayapahuda part I, page 131.
  3. Nandi Sutra with the Curni on page 12.

## VIVĀGASUYAM

### The title

The present Āgama is the 11th Anga of the Dwādaśāṅgī. The Vipāka (fruit) of the Sukṛita and Duṣkṛita deeds has been dealt with in it, therefore the title 'Vivāgasuyam.' The Sthānāṅga gives its title as 'Kāmma Vivāgadaśā.'

### The Contents

This Āgama has two divisions, i.e. the Dukha Vipāka and the Sukha Vipāka. The first division contains the topics on the lives of the individuals doing bad deeds. On going through the said contents, it appears that in every age, there are some individuals who commit horrible crimes on account of their cruel mentality. It is also gathered how the criminal deeds affect their physical and mental states. The second division has the life-contents of those individuals who perform good deeds. As the committant of cruel deeds are found in every age, so are the persons having the tranquil mentality. Conjunction of goodness and badness is not without cause.

### Conclusion

The Sthānāṅga Sūtra enumerates ten Adhyayanās of the Karma-Vipāka such as, Mṛgāputra, Goṛāṇa, Andā, Sakata, Māhan, Nandiṣena, Śaurika, Udumbara, Sahasoddāha-Āmaraka, and Kumar Licchavi. These headings have been taken from some other 'Vācna'.

The account of the Anga-Sūtras and the peculiar form they are presently found in are not fully harmonic. On this basis, it may be inferred that the obtained form of the Āgama Sūtras is not ancient only, but it is a mixture of the editions of old and new, both. This will form an important subject of investigation as to how much of the present form of the Anga-Sūtra is ancient and how much modern, as well as who of the Ācāryas composed it and when. The language, the subject-matter and the style of expression will surely form the basis of investigation. This is of course, highly welcome, but not impossible.

1. (a) Śāstrān, pāṇḍyapāṇḍyā, Sūtra 22  
 (b) Nāndī, Sūtra 21,  
 (c) Jāyāntī, Sūtra 21, 22  
 (d) Nāndī, Sūtra 21, 22.
2. The same [?]

### Accomplishment of the work

In the accomplishment of this task, there has been the contribution of many a Muni. I bless them that their devotedness to the performance be ever more developed.

For the editing of this Āgama major amount of credit goes to my learned disciple Muni Shri Nath Mali. Day in and day out he has devoted himself to this arduous task. It is because of his concentrated efforts that the work has got such a nice accomplishment. Otherwise, it would not have been an easy job. On account of his in-born Yogic temperament he was capable of attaining that concentration of mind which was essential for achieving the end. On account of his constant devotion to the work of research in the field of Āgamic literature his intellect has achieved sufficient sharpness in finding out immediately the hidden meaning and mysteries of Āgamic expositions. His keen sense of obedience, perseverance and absolute dedication have contributed much in developing his personality. The above qualities are seen in him since his early age. Right from the time when he joined the Sangha I have been an observer of these qualities of his, which have so developed. His capacity to undertake to a big task has given me ever increasing satisfaction.

I have undertaken this hard and tremendous task of editing the Āgamas relying on the strength of such learned disciples in the Sangha. I am now, quite confident that I shall be able to complete this hazardous work with the help and assistance of my obedient, selfless and devout disciples.

On the holy occasion of this 25th centenary of Lord Mahavira, I have a feeling of great pleasure in presenting to the people the teachings of the Lord.

Anuvrata Vihar  
Delhi

Āchārya Tulasi

# विसयाणुक्कम

## नायाधम्मकहाओ

पदमं अज्जमयणं

सू० १-२१३

पृ० १-७३

कालीय-परं १, मेत्तय्य मगरप्रवित्तादि-वृत्तम-परं ११, धारिणीए मुमिणदंमण-परं १८  
 मेणियम्य मुमिणनिवेदण-परं १९, मेणियम्य मुमिणमहिम-निदंमण-परं २०, धारिणीए  
 मुमिणमग्निय्या-परं २१, मुमिणपाठम-निमवण-परं २२, मेणियम्य मुमिणकव-पुण्य-परं  
 २७, मुमिणकवराण-परं २९, मुमिणपाठम-विमवण-परं ३०, मेणियम्य मुमिणपवंसा-परं  
 ३१, धारिणीए दोहण-परं ३२, धारिणीए विता-परं ३४, पडिच्चानियाण विताकारण-  
 पुण्य-परं ३३, पडिच्चरियाण मेणियम्य विवेदण-परं ३९, मेणियम्य चित्ताकारण-पुण्य-परं  
 ४०, धारिणीए विताकारणविवेदण-परं ४१, मेणियम्य आमासण-परं ४६, अज्जमयणम्य  
 मेणिय पद विताकारणपुण्य-परं ४७, मेणियम्य चित्ताकारणविवेदण-परं ४९, अज्जमय्य  
 आमासण-परं ५०, अज्जमय्य देवासाण-परं ५२, देवात्मण-परं ५४, देवम्य अज्जमय्य-  
 विवदण-परं ५९, धारिणीए दोहण-पुण्य-परं ६०, अज्जमय्य देवम्य परिचियमवण-परं ७०,  
 धारिणीए मण्यपरिण-परं ७२, मेत्तय्य मण्य-वण्यवण-परं ७३ । मेत्तय्य मण्यमण्यवण-  
 परं ७६, मेत्तय्य मासासणवण (मोसास) वण्य-परं ८१, मेत्तय्य मासासणवण-  
 परं ८२, मेत्तय्य मण्यवण-परं ८४, मेत्तय्य धारिणवण-परं ८९, वीटवण-परं ९१,  
 मण्यवणमण्यवण-परं ९४, मेत्तय्य विवदण-परं ९५, कंबुदण-पुट्टियम्य विवेदण-परं ९६,  
 मेत्तय्य मण्यवण मण्ये विवदण-परं ९७, मण्यवण-परं १००, मेत्तय्य मण्यवणवण-परं  
 १०१, मेत्तय्य मण्यवणवण विवदण-परं १०२, धारिणीए मीमांसणवण-परं १०४, धारि-  
 णीए मेत्तय्य मण्यवणवण-परं १०६, मेत्तय्य मण्यवणवण-परं ११४, मेत्तय्य विवदण-  
 धारिणवणवण-परं ११६, मण्यवण मेत्तय्य मण्यवणवण-परं ११९ मेत्तय्य मण्यवण-  
 परं १२०, मेत्तय्य मण्यवणवणवणवण-परं १२१, मण्यवणवणवण-परं १२४, मेत्तय्य  
 मण्यवणवणवण-परं १२६, मेत्तय्य मण्यवणवण-परं १२७, मेत्तय्य मण्यवण-परं १२८,  
 मण्यवण मण्यवणवणवणवण-परं १२९, मण्यवण मण्यवणवणवण-परं १३३, मेत्तय्य  
 मण्यवणवणवण-परं १३६, मण्यवणवणवणवण-परं १३७, मेत्तय्य मण्यवण-परं १३८,  
 मेत्तय्य मण्यवणवण-परं १३९, मण्यवण मण्यवणवणवण-परं १४०, मेत्तय्य मण्यवण-  
 परं १४०, मण्यवण मण्यवणवणवण-परं १४१, मेत्तय्य मण्यवण-परं १४२, मेत्तय्य

भिवक्षुपडिमा-पदं १६६, मेहस्त गुणरयणमं वच्छर-पदं १६६, मेहस्त मरीच्यमा-पदं २०२, मेहस्त विपुलपव्वए अणसण-पद २०३, मेहस्त समाहिमरण-पदं २०८, थरेहि मेहस्त आयाणभंडसम्पण-पदं २०९, गीयमपुच्छाण भगवओ उत्तर-पदं २१०, निगोव-पदं २१३ ।

### द्वीयं अज्झयणं

सू० १-७७

पृ० ७४—६२

उक्खेव-पदं १, धणसत्यवाह-पदं ७, विजयनक्कर-पदं ११, भद्दाण मंगाणमणोरह-पदं १२, भद्दाए देवदिन्न-पुत्तपसव-पदं १६, देवदिन्नस्स कीडा-पदं २५, देवदिन्नस्स अणहार-पदं २८, देवदिन्नस्स गवेसणा-पदं २९, विजयतक्करस्स निग्गह-पदं ३३, देवदिन्नस्स नीत्तरण-पदं ३४, धणस्स निग्गह-पदं ३५, धणस्स घराओ आहाराणयण-पदं ३७, विजयनक्करेण संविभाग-मरण-पदं ३९, धणस्स तन्निसेध-पदं ४०, आयाधितस्स धणस्स विजयतक्करावेकत्ता-पदं ४३, विजयतक्करेण तन्निसेध-पदं ४५, धणेण पुणो कथिते विजयण संविभागमरण-पदं ४७, धणेण विजयस्स संविभागदाण-पदं ५२, पंथगस्स भद्दाण साटोवं तन्निवेदण-पदं ५५, भद्दाए कोव-पदं ५७, धणस्स चारमुत्ति-पदं ५८, धणस्स सम्माण-पदं ५९, भद्दाए कोवोव-सम्पुव्वं सम्माण-पदं ६१, विजय-णायस्स निगमण-पदं ६७, धण-णायस्स निगमण-पदं ६९, निक्खेव-पदं ७७ ।

### तच्चं अज्झयणं

सू० १-३५

पृ० ६३—१०२

उक्खेव-पदं १, मयूरीअंड-पदं ५, सत्यवाहदारग-पदं ६, देवदत्ता गणिया-पदं ८, सत्यवाह-दारगाणं उज्जाणकीडा-पदं ९, सत्यवाहदारगेहि मयूरी अंडगाणयण-पदं १७, सागरदत्त-पुत्तस्स संदेहेण अंडयविणास-पदं २१, जिणदत्तपुत्तस्स सद्दाए मयूर-तद्धि-पदं २५, निक्खेव-पदं ३५ ।

### चउत्थं अज्झयणं

सू० १-२३

पृ० १०३—१०८

उक्खेव-पदं १, पावसियालग-पदं ६, कुम्भ-पदं ७, पावसियालगाणं आहारगवेसण-पदं ८, कुम्माणं साहरण-पदं १०, अगुत्तकुम्मस्स मच्चु-पदं १३, गुत्तकुम्मस्स सोक्ख-पदं १९, निक्खेव-पदं २३ ।

### पंचमं अज्झयणं

सू० १-१३०

पृ० १०९—१३९

उक्खेव-पदं १, थावच्चापुत्त-पदं ७, अरिद्धनेमि-समवसरण-पदं १०, कण्हस्स पज्जुवासणा-पदं १२, थावच्चापुत्तस्स पव्वज्जासंकप्प-पदं १८, कण्हस्स थावच्चापुत्तस्स यपरिसंवाद-पदं २२, कण्हस्स जोगक्खेम-धोसणा-पदं २६, थावच्चापुत्तस्स अभिनिक्खमण-पदं २७, सिस्सभिव्खा-दाण-पदं ३०, थावच्चापुत्तस्स पव्वज्जागहण-पदं ३४, थावच्चापुत्तस्स अणगारचरिया-पदं ३५, थावच्चापुत्तस्स जणवयविहार-पदं ३९, सेलगराय-पदं ४२, सेलगस्स गिहिधम्म-पडिवत्ति-पदं





वणसंडगमण-पदं २१, सेलगजवण-पदं २९, रणदीगरेवणा-उत्तमगण-पदं ३७, त्रिपरनिग-  
यविवक्ति-पदं ४१, जिणपालियस्सा चंपागमण-पदं ४५, निगोव-पदं ५४ ।

दसमं अज्भयणं सू० १-६ पृ० २२१-२२३

उक्खेव-पदं १, परिहायमाण-पदं २, परिवृद्धमाण-पदं ४, निगोव-पदं ६ ।

एक्कारसमं अज्भयणं सू० १-१० पृ० २२४-२२६

उक्खेव-पदं १, देसविराहय-पदं २, देसाराहय-पदं ४, सब्बविराहय-पदं ६, सब्बाराहय-पदं  
निक्खेव-पदं १० ।

वारसमं अज्भयणं सू० १८६ पृ० २२७-२३६

उक्खेव-पदं १, फरिहोदग-पदं ३, जियसत्तुणा पाणभोयणपसंगा-पदं ५, सुवुद्धिस्स उवेहा-पदं,  
६, जियसत्तुणा फरिहोदगस्स गरहा-पदं ११, सुवुद्धिस्स उवेहा-पदं १५, जियसत्तुस्स विरोध-  
पदं १८, सुवुद्धिणा जलसोधण-पदं १९, सुवुद्धिणा जलपेसण-पदं २०, जियसत्तुणा उदगर-  
यणपसंसा-पदं २१, जियसत्तुणा उदगाणयणपुच्छा-पदं २४, सुवुद्धिस्स उत्तर-पदं २७,  
जियसत्तुणा जलसोधण-पदं ३०, जियसत्तुस्स जिण्णासा-पदं ३१, सुवुद्धिस्स उत्तर-पदं ३२,  
जियसत्तुस्स समणोवासयत्त-पदं ३४, पव्वज्जा-पदं ३८, निक्खेव-पदं ४९ ।

तेरममं अज्भयणं सू० १-४५ पृ० २३७-२४७

उक्खेव-पदं १, गोयमस्स पुच्छा-पदं ४, भगवओ उत्तरे ददुदुरदेवस्स नंदभव-पदं ७, नंदस्स  
धम्मपडिवक्ति-पदं ९, मिच्छत्तपडिवक्ति-पदं १३, पोक्सरिणी-निम्माण-पदं १५, वणसंड-पदं  
१८, चित्तसभा-पदं २०, महाणससाला-पदं २१, तिगिच्छियसाला-पदं २२, अलंकारिय-  
सभा-पदं २३, नंदस्स पसंसा-पदं २४, नंदस्स रोगुप्पत्ति-पदं २८, तिगिच्छा-पदं २९,  
भगवओ उत्तरे ददुदुरदेवस्स ददुदुरभव-पदं ३२, ददुदुरस्स जाइसरण-पदं ३५, भगवओ  
रायगिहे समवसरण-पदं ३७, ददुदुरस्स समवसरणं पइ गमण-पदं ३९, ददुदुरस्स मच्चु-  
पदं ४१, निक्खेव-पदं ४५ ।

चोदुसमं अज्भयणं सू० १-८९ पृ० २४८-२६५

उक्खेव-पदं १, पोद्विलाए कीडा-पदं ८, तेयलिपुत्तस्स आसत्ति-पदं ९, पोद्विलाए वरण-पदं १२  
पोद्विलाए विवाह-पदं १८, कणगरहस्स रज्जासत्ति-पदं २१, पउमावईए अमच्चेणमंतणा-  
पदं २२, अवच्च परिवत्तण-पदं २४, दारियाए मयकिच्च-पदं ३१, अमच्चपुत्तस्स उत्सव-पदं  
३३, पोद्विलाए अप्पियत्त-पदं ३६, पोद्विलाए दाणसाला-पदं ३८, अज्जा-संधाडगस्स  
भिक्खायरियागमण-पदं ४०, पोद्विलाए अमच्चपसायोवाय-पुच्छा-पदं ४३, अज्जा-संधाड-  
गस्स उत्तर-पदं ४४, पोद्विलाए सावया-पदं ४५, पोद्विलाए पव्वज्जा-पदं ५०, कणगरहस्स



कण्ठेण पराजय-हेड-कहणपुर्व्वं जुज्जम-पदं २५४, पडमनाभरम पलायण-पदं २६०, कण्ठरम  
 नरसिहरूव-पदं २६१ पडमनाभरस सरण-पद २६३, सद्योवर्ण-पडवरम वण्णस पञ्चावट्टण-पदं  
 २६६, वासुदेव-जुयलस्स संससहेण मिलण-पद २६८, कथिनेण पडमनाभरस मिठ्ठानण-पदं  
 २७८, अपरिवखणीयपरिवखा-पदं २८१, कण्ठेण पडवाण निव्वाण-पदं २८६, पंतुमट्टरा-  
 निवेसण-पदं ३०३, पंतुसेण जम्म-पद ३०४, पडवाण द्योवर्ण म पच्चज्जा-पदं ३१०,  
 अरिट्ठनेमिस्स निव्वाण-पदं ३१८, पडवाण निव्वाण-पद ३२३, द्योवर्ण देवत्त-पदं ३२५,  
 निक्खेव-पदं ३२७ ।

### सत्तरसमं अज्झयणं

सू० १-३७

पृ० ३३६-३४६

उक्खेव-पदं १, कालियदीव-जत्ता-पदं ५, कालियदीवे आग-पेच्छण-पद १४, मंजत्तियाणं  
 पुणरागमण-पदं १६, आसाण आणयण-पदं १७, अमुच्छिय-आसाणं नायत्त-विहार-पदं २४,  
 निगमण-पदं २५, मुच्छिय-आसाणं परायत्त-पदं २६, निगमण-पदं ३६ ।

### अट्ठारसमं अज्झयणं

सू० १-६२

पृ० ३४७-३५८

उक्खेव-पदं १, चिलाय-दासचेडस्स विग्गह-पदं ६, चिलायस्स गिहाओ निक्कासण-पदं १०,  
 चिलायस्स दुव्वसण-पवत्ति-पदं १६, चोरपल्ली-पदं १८, चिलायस्स चोरपल्ली-गमण-पदं  
 २३, विजयस्स मच्चु-पदं २६, चिलायस्स चोरसेणावइत्त-पदं २८, चिलायस्स धणस्स गिहे  
 चोरिय-पदं ३३, नगरगुत्तिएहि चोरनिग्गह-पदं ३६, चिलायस्स चोरपल्लीतो पलायण-पदं  
 ४४, निगमण-पदं ४८, धणस्स संसुमाकए कंदण-पदं ४६, धणेण अडवि-लंघणट्ठं सुया-  
 मंससोणियाहार-पदं ५१, निगमण-पदं ६० ।

### एगूणवीसइमं अज्झयणं

सू० १-४६

पृ० ३५९-३६७

उक्खेव-पदं १, कंडरीयस्स पव्वज्जा-पदं ८, कंडरीयस्स वेयणा-पदं २०, कंडरीयस्स  
 तिगिच्छा-पदं २२, कंडरीयस्स पमत्त-विहार-पदं २७, पुंडरीएण पडिवोह-पदं २६, कंडरी-  
 यस्स पव्वज्जा-परिच्चाय-पदं ३२, पुंडरीयस्स पव्वज्जा-पदं ३८, कंडरीयस्स मच्चु-पदं ३६,  
 निगमण-पदं ४२, पुंडरीयस्स आराहणा-पदं ४३, निगमण-पदं ४७, निक्खेव-पदं ४८,

### बीओ सुयक्खंधो

पडमो वग्गो

### १-५ अज्झयणाणि

सू० १-६३

पृ० ३६८-३८०

उक्खेव-पदं १, कालीदेवी-पदं १०, कालीए भगवओ वंदण-पदं ११, गोयमस्स पसिण-पदं १३,  
 भगवओ उत्तरे काली-पदं १५, कालीए पव्वज्जा-पदं १६, कालीए वाउसियत्त-पदं ३४,  
 कालीए पुटो विहार-पदं ३८, कालीए मच्चु-पदं ३६, निक्खेव-पदं ४५ । १-५ अज्झयणाणि

उवासागदसाओ

पदमं अत्रभयणं

सू० १-८६

पृ० ३६५-४२०

उपनिषद्-पदं १, आर्षदत्तमाहायद्-पदं ८, महावीर-समवसरण-पदं १७, आर्षदत्तम विहित्पद्म-परिचयि-पदं २३, अग्निपार-पदं ३१, आर्षद-अभिगह-पदं ४५, त्रियणदाण् कश्चनद्रु-मन-पदं ४६, त्रियणदाण् विहित्पद्म-परिचयि-पदं ५१, गोयम-पुत्रा-पदं ५३, भगवतो उवाच-विहार-पदं ५४, आर्षदत्तम समनीवासाण-परिचय-पदं ५५, त्रियणदाण् समनीवासाण-परिचय-पदं ५६, आर्षदत्तम धम्मजागरिया-पदं ५७, आर्षदत्तम उवासाणपरिचय-परिचयि-पदं ६१, आर्षदत्तम अणमण-पदं ६५, आर्षदत्तम ओहिनाणु-पति-पदं ६६, गोयममम आगम-पदं ६७, आर्षद-गोयम-संवाद-पदं ७६, भगवतो उत्तर-पदं ८१, गोयममम सामणा-पदं ८३, भगवतो उवाच-विहार-पदं ८३, आर्षदत्तम समाहिमरण-पदं ८४, त्रियण-पदं ८६ ।

दीयं अत्रभयणं

सू० १-५७

पृ० ४२१-४३६

उपनिषद्-पदं १, कामदेवमाहायद्-पदं ३, महावीर-समवसरण-पदं ७, कामदेवस्य विहित्पद्म-परिचयि-पदं १३, भगवतो उवाच-विहार-पदं १५, कामदेवस्य समनीवासाण-परिचय-पदं १६, महाण् समनीवासाण-परिचय-पदं १७, कामदेवस्य धम्मजागरिया-पदं १८, काम-देवस्य पितामह-पद-उपसर्ग-पदं २०, कामदेवस्य श्रुतिश्रव-कर्म-उपसर्ग-पदं २८, कामदेवस्य शरण-पद-उपसर्ग-पदं ३४, देवक-विउवाण-पदं ४०, कामदेवस्य परिचय-पद-पदं ४६, कामदेवस्य भगवतो पञ्चुवासाण-पदं ४८, भगवता कामदेवस्य उपसर्ग-वासरण-पदं ४५, भगवता कामदेवस्य परंसा-पदं ४६, कामदेवस्य परिचय-पद-पदं ४८, भग-वतो उवाच-विहार-पदं ४९, कामदेवस्य उवासाणपरिचय-परिचयि-पदं ५०, कामदेवस्य उवाच-पदं ५१, कामदेवस्य समाहिमरण-पदं ५५, त्रियण-पदं ५७ ।

सदयं अत्रभयणं

सू० १-५३

पृ० ४४०-४५३

उपनिषद्-पदं १, सुवर्णीयमाहायद्-पदं २, महावीर-समवसरण-पदं ७, सुवर्णीयस्य विहित्-पद्म-परिचयि-पदं १३, भगवतो उवाच-विहार-पदं १५, सुवर्णीयस्य समनीवासाण-परिचय-पदं १६, सामाण् समनीवासाण-परिचय-पदं १७, सुवर्णीयस्य धम्मजागरिया-पदं १८, सुवर्णीयस्य पितामह-उपसर्ग-पदं २०, श्रुतिश्रव २१, शरणमपुत्र २३, शरण-उपसर्ग २६, शरण-उपसर्ग ३१, सुवर्णीयस्य शरण-पद-पदं ४०, महाण् परिचय-पदं ४१, सुवर्णीयस्य उवाच-पदं ४५, शरण-पद-पदं ४५, सुवर्णीयस्य उवासाणपरिचय-पदं ४८, सुवर्णीयस्य उवाच-पदं ५१, सुवर्णीयस्य समाहिमरण-पदं ५५, त्रियण-पदं ५७ ।

वाच्यं अत्रभयणं

सू० १-५३

पृ० ४५४-४६६

उपनिषद्-पदं १, सुवर्णीयमाहायद्-पदं २, महावीर-समवसरण-पदं ७, सुवर्णीयस्य विहित्-पद्म-परिचयि-पदं १३, भगवतो उवाच-विहार-पदं १५, सुवर्णीयस्य समनीवासाण-परिचय-पदं १६,

धन्नाए समणोवासिय-चरिया-पदं १७, सुरादेवस्स धम्मजागरिया-पदं १८, सुरादेवस्स देव-  
कय-उवसग्ग-पदं २०, °जेठ्ठपुत्त २१, °मज्झिमपुत्त २७, °कणीयसपुत्त ३३, °सालस-  
रोगायकं ३६, सुरादेवस्स कोलाहल-पदं ४२, धन्नाए पसिण-पदं ४३, सुरादेवस्स उत्तर-पदं  
४४, पायच्छित्त-पदं ४५, सुरादेवस्स उवासागपटिमा-पदं ४७, सुरादेवस्स अणसण-पदं ५१,  
सुरादेवस्स समाहिमरण-पदं ५२, निक्खेव-पदं ५३ ।

### पंचमं अज्झयणं

सू० १-५४

पृ० ४६७-४१६

उक्खेव-पदं १, चुल्लसययगाहावइ-पदं २, महावीर-समवसरण-पदं ७, चुल्लसययस्स गिहि-  
धम्म-पडिवत्ति-पदं १३, भगवओ जणवयविहार-पदं १५, चुल्लसययस्स समणोवासग-चरिया-  
पदं १६, बहुलाए समणोवासिय-चरिया-पद १७, चुल्लसयय-धम्मजागरिया-पदं १८,  
चुल्लसययस्स देव-कय-उवसग्ग-पदं २०, °जेठ्ठपुत्त २१, °मज्झिमपुत्त २७, °कणीयसपुत्त  
३३, °हिरण्णकोडीविप्पकिरण ३६, चुल्लसययस्स कोलाहल-पदं ४२, बहुलाए पसिण-पदं  
४३, चुल्लसययस्स उत्तर-पदं ४४, पायच्छित्त-पदं ४५, चुल्लसययस्स उवासागपटिमा-पदं ४७,  
चुल्लसययस्स अणसण-पदं ५१, चुल्लसययस्स समाहिमरण-पदं ५२, निक्खेव-पदं ५४ ।

### छट्ठं अज्झयणं

सू० १-४२

पृ० ४८०-४८६

उक्खेव-पदं १, कुंडकोलियगाहावइ-पदं २, महावीर-समवसरण-पदं ७, कुंडकोलियस्स  
गिहिधम्म-पडिवत्ति-पदं १३, भगवओ जणवयविहार-पदं १५, कुंडकोलियस्स समणोवासग-  
चरिया-पदं १६, पूसाए समणोवासिय-चरिया-पदं १७, देवेण नियतिवाद-समत्थण-पदं १८,  
कुंडकोलिएण नियतिवाद-निरसण-पदं २१, देवेण नियतिवाद-समत्थण-पदं २२, कुंडको-  
लिएण नियतिवाद-निरसण-पदं २३, देवस्स पडिगमण-पदं २४, महावीर-समवसरण-पदं  
२५, महावीरेण पुव्ववुत्तंत-परुवण-पद २८, महावीरेण कुंडकोलियस्स पसंत्ता-पद २६,  
भगवओ जणवयविहार-पदं ३२, कुंडकोलियस्स धम्मजागरिया-पदं ३३, कुंडकोलियस्स  
उवासागपटिमा-पदं ३५, कुंडकोलियस्स अणसण-पदं ३६, कुंडकोलियस्स समाहिमरण-पदं  
४०, निक्खेव-पदं ४२ ।

### सत्तमं अज्झयणं

सू० १-८६

पृ० ४९०-५१३

उक्खेव-पदं १, सद्दालपुत्त-पदं २, सद्दालपुत्तस्स देवसंदेस-पदं ८, सद्दालपुत्तस्स संकप्प-पदं  
११, महावीर-समवसरण-पदं १२, महावीरस्स देवसंदेस-विरुवण-पदं १७, सद्दालपुत्तस्स  
निवेदण-पदं १८, महावीरेण सद्दालपुत्त-संबोधण-पदं १९, सद्दालपुत्तस्स गिहिधम्म-पडिवत्ति-  
पदं २८, अग्गिमित्ताए वंदणट्ठ-गमण-पदं ३३, अग्गिमित्ताए गिहिधम्म-पडिवत्ति-पदं ३७,  
भगवओ जणवयविहार-पदं ३६, सद्दालपुत्तस्स समणोवासगचरिया-पदं ४०, अग्गिमित्ताए  
समणोवासियचरिया-पदं ४१, गोसालस्स आगमण-पदं ४२, गोसालेण महावीरस्स गुण-  
कित्तण-पदं ४४, विवाद-पट्टवणा-पसिण-पदं ५०, सद्दालपुत्तस्स धम्मजागरिया-पदं ५४,

महावपुत्रस्य देवकीय-नव-उपसर्ग-परं ५६, ० जेठुपुत्र ५७, ० मन्त्रिमणुज ६३, ० तृतीय-  
गुण ६६, ० अग्निमित्राभांगिया ७५, महावपुत्रस्य कौशाह्व-परं ७८, अग्निमित्रात्  
पत्निय-परं ७९, महावपुत्रस्य कनक-परं ८०, पापच्छिन्न-परं, ८१, महावपुत्रस्य उषास-  
पत्न्या-परं ८३, महावपुत्रस्य अश्वत्थ-परं ८३, महावपुत्रस्य महाहिमन्त-परं ८८,  
निशनेव-परं ८९ ।

षट्ठमं अक्षरम्

सू० १-५४

पृ० ५१४-५२६

उषास-परं १, महावपुत्रस्य महावपुत्र-परं २, महावीर-भगवत्पर-परं ८, महावपुत्रस्य मित्रि-  
धम्म-पत्निय-परं १५, महावपुत्रस्य महावीर-भगवत्पर-परं १६, भगवतीं जलदरपिता-  
परं १७, देवकीय-पत्न्या-परं १८, देवकीय-नवगती-उदर-परं १९, देवकीय-संभवा-  
परं २०, अमात्या-परं २१, महावपुत्रस्य भगवत्पर-परं २५, महावपुत्रस्य अणुपुत्र-  
उपसर्ग-परं २७, महावपुत्रस्य उषासपत्न्या-परं ३०, महावपुत्रस्य अश्वत्थ-परं ३६,  
महावपुत्रस्य श्रीहिमन्तपत्न्या-परं ३७, महावपुत्रस्य पुत्रदत्ति अणुपुत्र-उपसर्ग-परं ३८,  
महावपुत्रस्य निशनेव-परं ४१, महावीर-भगवत्पर-परं ४४, महावपुत्रस्य अश्वत्थ-  
पत्न्या-परं ४६, मोक्षस्य भागवत्पर-परं ४७, महावपुत्रस्य उदर-परं ४८, महावीर-भगवत्पर-  
परं ४९, महावपुत्रस्य पापच्छिन्न-परं ५०, मोक्षस्य पत्न्या-परं ५१, भगवतीं  
जलदरपिता-परं ५२, महावपुत्रस्य अश्वत्थ-परं ५३, निशनेव-परं ५४ ।

नवमं अक्षरम्

सू० १-२७

पृ० ५२७-५३१

उषास-परं १, अग्निमित्राभांगिया-परं २, महावीर-भगवत्पर-परं ३, अग्निमित्रास्य  
मित्रिधम्म-पत्न्या-परं ११, भगवतीं जलदरपिता-परं १५, अग्निमित्रास्य महावीर-भ-  
गवती-परं १६, अग्निमित्रास्य महावीर-भगवत्पर-परं १७, महावीर-भगवत्पर-  
परं १८, अग्निमित्रास्य उषासपत्न्या-परं २०, अग्निमित्रास्य अश्वत्थ-परं २४, अग्निमि-  
त्रास्य निशनेव-परं २५ ।

दशमं अक्षरम्

सू० १-२७

पृ० ५३२-५३७

उषास-परं १, अश्वत्थपिता-परं २, महावीर-भगवत्पर-परं ३, अश्वत्थपितास्य  
मित्रिधम्म-पत्न्या-परं ११, भगवतीं जलदरपिता-परं १५, अश्वत्थपितास्य महावीर-भ-  
गवती-परं १६, अणुपुत्रस्य महावीर-भगवत्पर-परं १७, अश्वत्थपितास्य अश्वत्थ-  
पत्न्या-परं १८, अश्वत्थपितास्य उषासपत्न्या-परं २०, अश्वत्थपितास्य अश्वत्थ-  
पत्न्या-परं २५, अश्वत्थपितास्य निशनेव-परं २६ ।

अंतिमदशमो

षट्ठमो अक्षरम्

सू० १-२६

पृ० ५४१-५४५

उषास-परं १, मोक्ष-परं २, निशनेव-परं ३, महावपुत्र-परं ३१ ।

## वीओ वग्गो

सू० १-३

पृ० ५४५

उक्खेव-पदं १, अक्खोभादि-पदं ३ ।

## तइओ वग्गो

सू० १-११८

पृ० ५४६-५६६

उक्खेव-पदं १, अणीयसादि-पदं ४, सारण-पदं १६, उग्गोव-पदं १७, छण्ढं अणगाराणं तव-संकप्प-पदं १६, छण्ढं पि देवईए गिहे पवेस-पदं २२, देवईए पुणरागमणसंका-पदं २६, संकासमाधाण-पदं ३०, पुत्त-बोह-पदं ३१, देवईए हग्गि-पदं ४२, देवईए पुत्ताभिलासा-पदं ४३, कण्हस्स चिंताकारणपुच्छा-पदं ४४, देवईए निंताकारणनिवेदण-पदं ४६, कण्हस्स देवाराहण-पदं ४७, कण्हेण देवईए आसासाण-पदं ५१, गयसुकुममालस्य जम्म-पदं ५२, सोमिलधूयाए कण्णतेउर-पक्खेव-पदं ५५, धम्मदंसणा-पदं ६२, गयसुकुमालस्य पव्वज्जासंकप्प-पदं ६३, गयसुकुमालस्स अम्मापिऊणं निवेदप-पदं ६४, देवईए सोमाकुलदमा-पदं ६७, देवईए गयसुकुमालस्स य परिसंवाद-पदं ६८, गयसुकुमालस्य एकदिवस-रउज-पदं ७७, गयसुकुमालस्स पव्वज्जा-पदं ८४, गयसुकुमालस्य महापटिमा-पदं ८८, सोमितकय-उवसग्ग-पदं ८९, गयसुकुमालस्स सिद्धि-पदं ९०, कण्हेण बुद्धस्य साहिज्जकरण-पदं ९४ कण्हस्स गयसुकुमाल-दंसणाभिलासा-पदं ९८, गयसुकुमालस्स सिद्धि-भूयणा-पदं ९९, सोमितस्स अकालमच्चू-पदं १०८, निक्खेव-पदं १११, उक्खेव-पदं ११२, सुमुहादि-पदं ११३ ।

## चउत्थो वग्गो

सू० १-७

पृ० ५७०, ५७१

उक्खेव-पदं १, जालिपभित्ति-पदं ४, निक्खेव-पदं ७ ।

## पंचसो वग्गो

सू० १-४३

पृ० ५७२-५७८

उक्खेव-पदं १, पउमावई-पदं ४, गोरिपभित्ति-पदं ३३, मूलसिरो-मूलदत्ता-पदं ३६ ।

## छट्ठो वग्गो

सू० १-१०२

पृ० ५७८-५९३

१, २ अज्झयणाणि

उक्खेव-पदं १, मकाइ-किंकर-पदं ४, अज्जुण-मालागार-पदं १०, अज्जुणस्स जक्खपणु-वासणा-पदं १६, गोट्टीए अणाचार-पदं १७, अज्जुणस्स पडिसोव-पदं २५, रायगिहे आतंक-पदं २८, भगवओ समवसरण-पदं ३३, सुदंसणस्स वंदणट्ठं गमण-पदं ३५, सुदंसणस्स अज्जु-णकय-उवसग्ग-पदं ४०, उवसग्गनिवारण-पदं ४३, सुदंसणस्स अज्जुणस्स य भगवओ पज्जुवासणा-पदं ४६, अज्जुणस्स पव्वज्जा-पदं ५१, अज्जुणअणगारस्स तित्तिवखा-पदं ५३, अज्जुणअणगारस्स सिद्धि-पदं ५६, कासवादि-पदं ६०, अइमुत्त कुमार-पदं ७१, गोयमस्स भिक्खायरिया-पदं ७५, गोयम-अइमुत्तकुमार-संवाद-पदं ७७, अइमुत्तकुमारस्स पव्वज्जा-पदं ८५, अलक्क-पदं ९७, निक्खेव-पदं १०२ ।

सप्तमो योगो

सू० १-७

पृ० ५६४

उत्तमेय-पदं १, नैयति-पदं ४ ।

अष्टमो योगो

सू० १-३८

पृ० ५४६-६१२

उत्तमेय-पदं १, वानोष्णं रज्ज्वावलिखन-पदं ४, मुखासीष्णं कण्ठावलिखन-पदं १८, महाकासीष्णं मुहुतासीष्णं निवर्तनीयविलयन-पदं २१, कण्ठाष्णं महाकासीष्णं निवर्तनीयविलयन-पदं २२, मुखासीष्णं निवर्तनीयविलयन-पदं २३, महाकासीष्णं मुहुतासीष्णं निवर्तनीयविलयन-पदं २७, यौग्यकणाष्णं महाकासीष्णं निवर्तनीयविलयन-पदं २८, रामकणाष्णं भद्रोत्तरपट्टिमा-पदं ३०, विजयेणकणाष्णं मुखावलिखन-पदं ३१, महाकासीष्णं आयविलयवद्धमाज्जव-पदं ३२, निवर्तनीय-पदं ३८, पत्तिमो ।

अणुत्तरोववाह्यवसाओ

पट्टमो योगो

सू० १-१६

पृ० ६१३-६१६

उत्तमेय-पदं १, जाति-पद ६, निजमेय-पदं १४, नैयातिपभिति-पदं १५, निजमेय-पद १६ ।

द्वितीयो योगो

सू० १-६

पृ० ६१७-६१८

उत्तमेय-पदं १, नैयति-पदं ४, निजमेय-पदं ६ ।

तृतीयो योगो

सू० १-७५

पृ० ६१९-६३३

उत्तमेय-पद १, धनस्य भिन्नता-पदं ४, धनस्य धन्यता-पदं १०, धनस्य धन्यता-पदं २२, धनस्य धन्यता-पदं ३१, नैयति-पदं महाकासीष्णं निवर्तनीयविलयन-पदं ५३, धनस्यो धन्यता-पदं ५७, नैयति-पदं धनस्य धन्यता-पद ५८, धनस्य मुखावलिखन-पदं ५९, निवर्तनीय-पद ६३, मुखावलिखन-पद ६४, पत्तिमाविति-पद ७४, निवर्तनीय-पद ७५, पत्तिमो ।

पण्चावागरणांदि

पद्यमं अठममणं

सू० १-४०

पृ० ६३५-६५०

उत्तमेय-पद १, वायव्यहृत्तं वायव्य-पद २, वायव्यहृत्तं विजयविलयन-पद ३, वायव्यहृत्तं वायव्य-पद ४, वायव्यहृत्तं वायव्य-पद ११, वायव्यहृत्तं वायव्य-पदं २०, वायव्यहृत्तं वायव्य-पद २१, विजयविलयन-पद ४० ।

द्वितीयं अठममणं

सू० १-१८

पृ० ६५१-६५६

उत्तमेय-पद १, उत्तमेयविलयन-पद २, उत्तमेयविलयन-पद ३, उत्तमेयविलयन-पद ४, उत्तमेयविलयन-पद १५, उत्तमेय-पदं १६ ।



## तद्वयं अज्भयणं

सू० १-२६

पृ० ६५७-६६७

उक्त्वेव-पदं १, अदिष्णादाणस्स तीसनाम-पदं २, चोरिय-चोरगमार-पदं ३, ण्णो परमण-  
हरण-पदं ४, घणत्थं जुद्ध-पदं ५, लूटान-पदं ६, सामुद्रियनोर-पदं ७, दासणनोर-पदं ८,  
अदिष्णादाणस्स फलविवाग-पदं ९, निगमण-पदं २६ ।

## चउत्थं अज्भयणं

सू० १-१५

पृ० ६६८-६७७

उक्त्वेव-पदं १, अवंभस्स तीसनाम-पदं २, मुरगणस्स अवंभ-पदं ३, चक्कवट्टिस्स अवंभ-पदं  
४, बलदेव-वासुदेवस्स अवंभ-पदं ५, मंडलिय-नरवरेंदस्स अवंभ-पदं ६ जुगलियाणं  
लावण्णनिरूवणपुरस्सरं अवंभ-पदं ७, जुगलिणीणं नावण्णनिरूवणपुरस्सरं अवंभ-पदं ८,  
अवंभस्स फलविवाग-पदं ९, निगमण-पदं १५ ।

## पंचमं अज्भयणं

सू० १-१०

पृ० ६७८-६८२

उक्त्वेव-पदं १, परिग्गहस्स तीसनाम-पदं २, देवाणं परिग्गह-पदं ३, मणुस्साणं परिग्गह-पदं  
४, परिग्गहत्थं सिकखा-पदं ५, परिग्गहीणं पवित्ति-पदं ६, परिग्गहस्स फलविवाग-पदं ८,  
निगमण-पदं १० ।

## छट्ठं अज्भयणं

सू० १-२५

पृ० ६८३-६८८

उक्त्वेव-पदं १, अहिंसा-पज्जवनाम-पदं ३, अहिंसा-धुइ-पदं ४, अहिंसा-माहप्प-पदं ६,  
उंछगवेसणा-पदं ७, अहिंसाए पंचभावणा-पदं १६, निगमण-पदं २२ ।

## सत्तमं अज्भयणं

सू० १-२५

पृ० ६८९-६९३

उक्त्वेव-पदं १, सच्चस्स माहप्प-पदं २, सच्चस्स धुइ-पदं १०, सावज्जसच्च-पदं १२,  
अणवज्जसच्च-पदं १४, सच्चस्स पंचभावणा-पदं १६, निगमण-पदं २२ ।

## अट्ठमं अज्भयणं

सू० १-१७

पृ० ६९४-६९७

उक्त्वेव-पदं १, अदत्तस्स अग्गहण-पदं २, अदत्तादाणवेरमणस्स अजोग्गता-पदं ५, अदत्तादा-  
णवेरमणस्स जोग्गता-पदं ६, अदत्तादाणवेरमणस्स पंचभावणा-पदं ८, निगमण-पदं १४ ।

## नवमं अज्भयणं

सू० १-१५

पृ० ६९८-७०३

उक्त्वेव-पदं १, वंभचेरमाहप्प-पदं २, वंभचेरथिरीकरण-पदं ४, वंभचेरस्स पंचभावणा-पदं  
६, निगमण-पदं १२ ।

## दसमं अज्भयणं

सू० १-२३

पृ० १००४-७१३

अक्त्वेव-पदं १, अकप्पदब्बजाय-पदं ३, असण्णिहि-पदं ६, अकप्पभोयण-पदं ७, कप्पभोयण-



## सत्तमं अज्भयणं

सू० १-३६

पृ० ७७४ से ७८२

उक्खेव-पदं १, गोयमेण उंवरदत्तस्स पुव्वभवपुच्छा-पदं ७, उंवरदत्तस्स भज्जग्गिभव-वण्णग-पदं १३, उंवरदत्तस्स वत्तमाणभव-वण्णग-पदं १८, उंवरदत्तस्स आगामिभव-वण्णग-पदं ३८, निक्खेव-पदं ३६ ।

## अट्ठमं अज्भयणं

सू० १-२८

पृष्ठ ७८२-७८७

उक्खेव-पदं १, सोरियदत्तस्स पुव्वभवपुच्छा-पदं ८, सोरियदत्तस्स विरीयभव-वण्णग-पदं ६, सोरियदत्तस्स वत्तमाणभव-वण्णग-पदं १४, सोरियदत्तस्स आगामिभव-वण्णग-पदं २७, निक्खेव-पदं २८ ।

## नवमं अज्भयणं

सू० १-६०

पृ० ७८८-७९७

उक्खेव-पदं १, देवदत्ताए पुव्वभवपुच्छा-पदं ६, देवदत्ताए सीहमेणभव-वण्णग-पदं ७, देवदत्ताए वत्तमाणभव-वण्णग-पदं ३०, देवदत्ताए आगामिभव-वण्णग-पदं ५६, निक्खेव-पदं ६० ।

## दसमं अज्भयणं

सू० १-२०

पृ० ७९८-८०१

उक्खेव-पदं १, अंज्जए पुव्वभवपुच्छा-पदं ४, अंज्जए पुढविसिरीभववण्णग-पदं ५, अंज्जए वत्तमाणभव-वण्णग-पदं ६, अंज्जएआगामिभव-वण्णग-पदं १६, निक्खेव-पदं २० ।

## वीओ सुयक्खंधो

## पढमं अज्भयणं

सू० १-३७

८०२-८०६

उक्खेव-पदं १, सुवाहुकुमार-पदं ४, सुवाहुस्स पुव्वभवपुच्छा-पदं १५, सुवाहुस्स सुमुहभव-वण्णग-पदं १६, सुवाहुकुमारस्स पव्वज्जा-पदं ३१, सुवाहुकुमारस्स आगामिभव-वण्णग-पदं ३५, निक्खेव-पदं ३७,

## २-१० अज्भयणाणि ।

पृ० ८१०-८१३

## संकेत निर्देशिका

- ० ने दोनों विन्दु पाठ्युक्ति के लोचक हैं। पाठ्युक्ति के प्रारम्भ में भग्न विन्दु [०] और उसके समान में कित्त विन्दु [०] रसा गया है। देखें—पृष्ठ २ सू ६।
- [१] गौणत्ववर्ती प्रथमविध [१] अक्षरों में अव्यय विन्दु आसन्नक पाठ के अन्वित्त वा सूचक है। देखें—पृष्ठ ३, सूत्र ७।
- ' ने दो वा इनसे अधिक अक्षरों के स्थान में पाठान्त होने वा सूचक है। देखें पृष्ठ २ सू ४। 'अप्यसो' व 'दाप' शब्द के स्थान में इनके प्रति स्थान वा निर्देश है। देखें—पृष्ठ १ टिप्पण ३ और पृष्ठ ३ सूत्र ८।
- < चान्न [ X ] पाठ वा होने वा लोचक है। देखें—पृष्ठ ३ टिप्पण ४।
- ० पाठ के पूर्व वा अन्त में गौणी विन्दु [०] प्रमुख पाठ का लोचक है। देखें—पृष्ठ ३ सूत्र ७ टिप्पण ५।  
'जिहा' 'गोत्र' आदि चर टिप्पण में विष्णु यद् सूचक इनकी प्रति के सूचक हैं। देखें—पृष्ठ २०३ सूत्र ७ तथा पृष्ठ २७८ सूत्र ५०।
- क, घ, ग, ङ, च, ट, ड, देवों—असन्नकरीय में 'अति-अन्वित्त' आदि ।
- 'अन' 'नि' अत्यन्त निमित्त । देखें—पृष्ठ ३२६ टिप्पण ६।
- 'अन्' 'वर्' इत् प्रत्ययवर्तनी ।
- मन् वा० अन्वित्त पाठ का सूचक है। देखें—पृष्ठ ५ टिप्पण ६।
- मुन् वा० अन्वित्त पाठ का सूचक है। देखें—पृष्ठ १० टिप्पण ३।
- पू० सूत्र का सूचक है। देखें—पृष्ठ ६ टिप्पण १०।
- पू० अन्वित्तवर्ती अत्यन्तम् । देखें—पृष्ठ ३२२ टिप्पण ६।
- पू० अत्यन्तवर्तनी ।
- पू० अत्यन्तवर्तनीयानि । सूत्र० सूत्रवर्ती ।
- पयन् अत्यन्तवर्तनी । सूत्र० अत्यन्तवर्तनी ।
- प्री० लीलावन्त ।
- प्री० अत्यन्तवर्तनीयानि ।
- प्री० अत्यन्तवर्तनी ।
- प्री० अत्यन्तवर्तनी ।
- प्री० अत्यन्तवर्तनी ।
- प्री० अत्यन्तवर्तनी ।
- प्री० अत्यन्तवर्तनी ।
- प्री० अत्यन्तवर्तनी ।
- प्री० अत्यन्तवर्तनी ।
- प्री० अत्यन्तवर्तनी ।



# नायाधम्मकहाव्री

पढमं अज्जवयणं

उपिखत्तणाए

उपमेव-पदं

१. वेणं ववणिणं वेणं नमण्णं चंवा नामं नवरी होत्था—वण्ययो' ॥
२. नीमं णं चंवाए नवरीए वड्डिया उच्चरपुरदिभमे दिस्सोभाए पुण्णभट्टे नामं चेट्ठए' होत्था—वण्ययो' ॥
३. नत्थ णं चंवाए नवरीए चोथिए नामं राया होत्था—वण्ययो' ॥
४. वेणं ववणिणं वेणं नमण्णं नमण्णस भगवयो महावीरस्स अंतेवायी अज्जमुत्तममे नामं मेरे जानिणंपण्णे पुत्तणंपण्णे वल्ल-रुच-विणाय-नाण-वंसण-चरित्त-नायव-सपण्णे सोपंणी मेयंणी वज्जंणी जज्जंणी जियकोट्टे जियमाणे जियमाणे जियकोट्टे 'जिह्दियि' जियभिट्टे' जियपरीसट्टे जीवियान' मरुणभय्यावपमुत्तरे नयणत्ताणे मुत्तणत्ताणे पयं—अरण-अरण-निग्गह-निग्गह-अज्जय-मत्त-नायव-अग्नि-मुत्ति-मुत्ति-विज्जा-मत्त-यंभं-येय-अय-मियम-मत्त-सोव-नाण-वंसण-चरित्त-पत्ताणे सोरान्ते' पीरे पीरुत्तए' सोरान्तेस्सो सोरान्तेभन्तेस्सोस्सो उच्चरुत्तरीरे नंगिन-विट्ठ-वेयवेस्सो चोत्तमुत्तरी' अट्ठमाजोवण्णं पंचट्टि वयणमाग्गाएट्टि सट्टि नंपरि-पुत्ते पुत्तणत्तुत्तरे वरमाणे नामात्तुनामं अज्जमाणे' मुत्तमुत्तरेण विट्ठमाणे

१. वेणं पु० १ ।	८. चोत्तरे (म, प) । वृत्तो 'उत्त' उपमेवपथा-
२. चोत्त (म, प, प) ।	मथरमणि, मया—उत्त—उत्तमेवं सर्वमेव वा
३. वेणं पु० २-३ ।	वृत्तान्तमुत्तमम् । अग्नि-उत्तरे 'वंसण'
४. वेणं पु० १ ।	एति मुत्तमात्तरेण विट्ठिविज्जमुत्त ।
५. अग्नि-उत्तरे (म, प) ।	९. वज्जंणी (म, प) ।
६. जिह्दियि (म) ।	१०. चोत्तमुत्ते (म, प) पु० १-२ ।
७. जियभिट्टे' जियभिट्टे (म, प) पु० ३-४ ।	११. चोत्त २ (म); अरण्ण १ (म)
८. जीवियान (म, प) ।	१२. इणियज्ज (म, प) ।

'जेणेव चंपा नयरी', जेणेव पुण्णभद्दे चेतिण्' तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिह्वं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरति ॥

५. 'तए णं' चंपाए नयरीए परिसा निग्गया' । धम्मो कट्ठिण्णो । परिसा जामेव दिस्सि पाउव्भूया, तामेव दिस्सि पडिगया ॥
६. तेणं कालेणं तेणं समएणं अज्जसुहम्मस्स अणगारस्स जेट्ठे अंतवासी अज्जजंठु नामं अणगारे कासव' गोत्तेणं सत्तुस्सेहे' •समचउरंसा-संठाण-संठिण्ण वड्डरिस्सह-णाराय-संघयणे कणग-पुलग-निघस-पम्ह-गोरे उग्गतवे दित्ततवे तत्ततवे महातवे उराले घोरे धोरगुणे धोरतवस्सी धोरवंभचेरवासी उच्छूहसारीरे संवित्त-विउल-तेयलेस्से ° अज्जसुहम्मस्स थेरस्स अदूरसामंते उड्ढंजाणू अहोसिरे भाणकोट्टो-वगए संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥
७. तए णं से अज्जजंठुनामे अणगारे जायसड्ढे जायसंसए' जायकोउहल्ले 'संजायसड्ढे संजायसंसए संजायकोउहल्ले उप्पणसड्ढे उप्पणसंसए उप्पणकोउहल्ले' समुप्पणसड्ढे समुप्पणसंसए समुप्पणकोउहल्ले' उट्टाए उट्टेइ, उट्टेत्ता जेणामेव अज्जसुहम्मे थेरे, तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता 'अज्जसुहम्मे थेरे' तिक्खुत्तो 'आयाहिण-पयाहिणं' करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता अज्ज-

१. नगरी (ग) ।

२. क्वचिद् 'राजगृहे गुणसिलके' इति दृश्यते स चापपाठ इति मन्यते (वृ) ।

३. तेणं कालेणं (ख); तेणं (घ) ।

४. निग्गया । कोणितो निग्गतो (ग); निग्गया । कोणितो निग्गतो (घ) । वृत्तौ—परिप्ल-कूणिकराजादिको लोको निर्गता—निःसृता—एवं व्याख्यातमस्ति । अनेन 'परिसा निग्गया' इत्येव मूलपाठः संभाव्यते । 'कोणितो निग्गतो' इति व्याख्यांशो मूल-पाठत्वेन परिवर्तितो भूत् । उपासकदशासु (१।१६) राजनिर्गमस्य स्वतंत्र सूत्रमपि दृश्यते ।

५. विभक्तिरहितं पदम् । काश्यपो गोत्रेण इति वृत्तिः ।

६. सं० पा०—सत्तुस्सेहे जाव अज्जसुहम्मस्स ।

७. °संसते (ख, ग) ।

८. औपपातिक (८३) सूत्रे क्रमभेदो विद्यते, यथा—जायसड्ढे° उप्पणसड्ढे° संजाय-सड्ढे° समुप्पणसड्ढे° ।

९. °कोउहल्ले (ख) ।

१०. अज्जसुहम्मं धेरं (वृषा) । औपपातिक (८३) सूत्रे तथा रायपसेणइय (१०) सूत्रेपि एतत्सदृशप्रकरणे 'समणं भगवं महावीरं' इति द्वितीयान्तपदं लभ्यते । अत्र सप्तम्यन्तपदं लभ्यते । वृत्तिकृता एतदेव प्रमाणीकृतम्—'अज्जसुहम्मे थेरे' इत्यत्र पण्ठ्यर्थे सप्तमी (वृ) ।

११. आताहिणपदाहिणं (ग), आयाहिणं (घ) ।

गुह्यमग्नये धेरस्य नमनासणे नातिदूरे मुद्गमृगभाणे नमसभाणे अभिमुद्गे पञ्चमिडले  
 विष्णुपते पञ्जुवागभाणे एवं वयामी—जट् पं भंते ! समयेणं भगवत्या  
 महावीरेणं 'आडगरेणं गिरधगरेणं गहसंमुद्धेणं' लोगतोत्रेणं लोगतद्विषं  
 लोगतपञ्जोयगरेणं अमयदणं सरणदणं चयमुदणं भगदणं धम्मदणं  
 धम्मदेशणं धम्मनायणेणं 'धम्मधरत्ताडरेणचतत्तद्विणा' अण्णद्विधवरनाण-  
 वंनवररेणं जियेणं जाणणं' मुद्धेणं बोद्धणं मुत्तेणं मोयणेणं विष्णंणं  
 तारणं निवणयणमण्यमणंनमणयमव्वावाहमणुणरावत्तयं' तासयं  
 टानमुदणणं' [ 'गिद्धिनटानमधेज्जं टाणं संपत्तेणं ? ] 'पंचमत्त अंगरस' अयमट्टे  
 पण्णत्ते, छट्टस्य णं भंते ! अंगरस' नावाधम्मवत्ताणं के अट्टे पण्णत्ते ?

- ८. जंनु त्ति अज्जमुद्गणे धेरे अज्जजंनुनासं अणगारं एवं वयामी— एवं सन्जंनु !  
 समयेणं भगवत्या महावीरेणं जाय' संपत्तेणं छट्टस्य अंगरस दो मुदकसंथा  
 पण्णत्ता, तं जहा—गायाणि य धम्मवत्तासो य ॥
- ९. जट् पं भंते ! समयेणं भगवत्या महावीरेणं जाय' संपत्तेणं छट्टस्य अंगरस दो  
 मुदकसंथा पण्णत्ता, तं जहा—गायाणि य धम्मवत्तासो य । पद्धमस्य णं भंते !  
 मुदकसंथस्य नमयेणं भगवत्या महावीरेणं जाय' संपत्तेणं नायाणं कट्ट अण्णवणा  
 पण्णत्ता ?



## संगहणी-गाहा

१. उक्खित्तणाए २. संघाडे, ३. अंटे ४. कुम्मे य ५. गेलगे ।  
 ६. तुंवे य ७. रोहिणी ८. मल्ली, ९. मायंदी १०. 'चंदिमा इ' य ॥१॥  
 ११. दावद्दवे १२. उदगणाए, १३. मंडुक्के' १४. तैयली वि य ।  
 १५. नंदीफले १६. अवरकंका' १७. आइण्णे' १८. सुंमुमा इ य ॥ २॥  
 १९. अवररे य पुंडरीए, नाए एगूणवीसमे' ॥

## मेहस्स नगरपरिवारादि-वण्णग-पदं

११. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं नायाणं एगूणवीसं  
 अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा—उक्खित्तणाए जाव' पुंडरीए त्ति य । पढमस्स णं  
 भंते ! अज्झयणस्स के अट्टे पण्णत्ते ?  
 १२. एवं खलु जंजू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंजूदीवे दीवे भारहे वामे  
 दाहिणइढभरहे रायगिहे नामं नयरे होत्या—वण्णओ' ॥  
 १३. गुणसिए च्चेतिए—वण्णओ' ॥  
 १४. तत्थ णं रायगिहे नयरे सेणिए नामं राया होत्या—महताहिमवंत-महंत-मलय-  
 मंदर-महिदसारे वण्णओ' ॥  
 १५. तस्स णं सेणियस्स रण्णो नदा नामं देवी होत्या—सूमालपाणिपाया" वण्णओ" ॥  
 १६. तस्स णं सेणियस्स पुत्ते नंदाए देवीए अत्तए अभए नामं कुमारे होत्या—अहीण"  
 \*पडिपुण्ण"-पंचिदियसरीरे लवखण-वंजण-गुणोववेए माणुम्माण-प्पमाण-  
 पडिपुण्ण-सुजाय-सव्वंगसुंदरगे ससिसोमाकारे कंते पियदंसणे° सुरुवे, साम-  
 दंड-भेय-उवप्पयाणनीति-सुप्पउत्त-नय-विहण्णू", 'ईहा-वूह"'-मग्गण-गवेसण-  
 अत्थसत्थ-मइविसारए, उप्पत्तियाए वेणइयाए कम्मयाए" पारिणामियाए—  
 चउव्विहाए बुद्धीए उववेए, सेणियस्स रण्णो वहूसु कज्जेसु य" [कारणेसु य ?]

१. चंदमाई (घ) ।  
 २. मंडुक्के (ख) ।  
 ३. अमर° (घ) ।  
 ४. आतिण्णे (ख, ग) ।  
 ५. °वीसइमे (ग) ।  
 ६. ना० १।१।७ ।  
 ७. ना० १।१।१० ।  
 ८. ओ० सू० १ ।  
 ९. ओ० सू० २-१३ ।  
 १०. ओ० सू० १४ ।  
 ११. सुकुमाल° (घ) ।  
 १२. ओ० सू० १५ ।

१३. सं० पा०—अहीण जाव सुरुवे ।  
 १४. प्रस्तुतसूत्रस्य वृत्तौ 'पडिपुण्ण' पदं व्याख्यातं  
 नास्ति ।  
 १५. विहिज्जा (ख) ।  
 १६. ईहापूह (ग); ईहापोह (घ) ।  
 १७. कम्मइयाए (ख, घ); कम्मियाए (ग) ।  
 १८. अतोन्तरं उपासकदशामु (१।१३) राय-  
 पसेणइय (६७५) सूत्रे 'कारणेसु य' इति  
 पाठो विद्यते । प्रस्तुतसूत्रस्य पंचमाध्ययने  
 (६०) सूत्रेपि कज्जेसु य कारणेसु य इति  
 पाठो लभ्यते । अत्रापि तथैव युज्यते ।

कुटुंबेभ्यु य मनेभ्यु य गुग्गुलेभ्यु य रज्जुसोभ्यु य निच्छदभ्यु य श्रापुच्छण्डिज्जे  
 पट्टिच्छण्डिज्जे, मेही पमार्यं श्राह्मि श्राह्मं वषणं चकम्, मेहीभूग, पमाचभूग  
 श्राह्मंभूग श्राह्मंभूग, चकम्भूग, सव्यकज्जेभ्यु सव्यभूमिभ्याभ्यु लक्ष्यचक्र  
 विरण्यादियारे रज्जुवर्णनित्तम् वावि होत्वा, मेणियस्त रण्यो रज्जं च रज्जुं च  
 कोमं च कोट्टुगारं च वत्तं च वाहणं च पुरं च अत्तेउरं च सयमेव समुपेयमाणे-  
 नमुपेयमाणं विहरत् ॥

१७. नस्त पं मेणियस्त रण्यो धारिणो नामं देवो होत्वा—\*गुकुमाल-पाणिपाया  
 श्रहीण-पंचेदियसरीरा लक्ष्य-चंद्रण-गुणोवधेया भाषण-माण-प्यमाण-मुजाय-  
 नुपवंगसुंदरंभी मनितीभाषार-रंन-पियदंमणा मुख्या करयान-परिमित्त-तिव-  
 न्निव' नलिसमस्ता 'कोमुट-रयणियर-विमज-पट्टिष्ण-सोमवयना कुटुमुक्ति-  
 द्वि-मज्जेहा' निगारागार-चाग्नेया संगय-गय-हृमिय-भणिय-विहिय-विनाम-  
 नान्दिय-मंलाग-निडण-मुनोवयारकुयला पासादीया दरिणज्जा अमित्वा  
 पट्टिष्वा, मेणियस्त रण्यो द्वा कंता पिया मयुण्या नामवेज्जा' देनाभिया  
 नम्मया कट्टमया खलुमया भडकरंउमसभाया तेल्लकेया इव नृगंभोदिया  
 वेत्तंभया इव मुनपरिमित्तोमा रण्यकरंणो विव मुत्तारणियया, मा पं सोमं  
 मा प उणं मा पं देमा मा पं मसमा मा पं यान्ता मा पं चोरा मा पं वाडय-  
 पिसिय-निभिय-नग्निपाडय' विविहा रोनासका कुंभुं ति कट्टु मेणियण रण्यो  
 मंदि विज्जाइं भोगभोगाउं पचनपुभवमाणो \* विहरत् ॥

धारिणीय मुमिणदंसण-पदं

१८. नस्त पं मा धारिणी देवो अण्णदा कदाइ तंति धारिसगंनि—उपकट्टुग-रट्टुगट्ट-

संठिय-खंभुगय-पवरवर-सालभंजिय-उज्जलमणिकणगरयणशृभिय-विडंकाजालद्व-  
चंदनिज्जहंत रकणयालिचंदसालियाविभक्तिकालिग, 'सरसच्छधाऊवल-वण्णरइए,"  
वाहिरओ दूमिय-घट्ट-मट्टे अट्ठिभत्तरओ परात्त-मुविलिहिय'-चिराकम्मै नाया-  
विह-पंचवण्ण-मणिरयण'-कोट्टिमत्ते पउमलय-फुल्लवलि-वरपुक्कजाइ-  
उल्लोय-चित्तिय-तले वंदण'- वरकणगकलसगुणिम्मिय- पाटिपूजिय'- सरसपउम-  
सोहंतदारभाए पयरग'-लंवंत-मणिमुत्तदाम-गुविरइयद्वारगोहं गुगं'-वरकुमुम-  
मउय-पम्हलसयणोवयार-मणहिययनिव्वुयरे कप्पूर- लवंग-मलय-चंदण-  
कालागरु-पवरकुंदुरुक्क-तुरुक्क-ध्रुव-डज्जंत-गुरभि-मघमवेंत'- गंधुद्धुयाभिरामे'  
सुगंधवर [गंध ?] गंधिए गंधवट्टिभूए मणिकिरण-पणासियंधयारे किव्वहणा ?  
जुइगुणेहिं सुरवरविमाण-विडंधियवरघरग', तसि नारिसंगसि सयणिज्जंति-  
सालिगणवट्टिए उभओ विव्वोयणे दुइओ उण्णाए 'मज्जे णय गंभीरे"  
गंगापुलिणवालुय-उद्दालसालिए ओयविय-खोम-दुगुल्लपट्ट'-पडिच्छयणे अत्तरय-  
मलय-नवतय-कुसत्त-लिव'-सीहकेसरपच्चुत्थिए" सुविरइययत्ताणे रत्तंसुयसंघुए  
सुरम्मे आइणग-ह्य'-वूर"-नवणीय-तुल्लफासे पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि  
सुत्तजागरा ओहीरमाणी-ओहीरमाणी 'एगं महं सत्तुस्सेहं रययकूड-सन्निहं  
नहयलंसि सोमं सोमागारं लीलायंतं जंभायमाणं मुहमतिगयं गयं पासित्ता  
णं पडिबुद्धा"<sup>१०</sup> ।

१. सरसच्छधाऊवल ° (घ); कैश्चित्पुनरेवं संभा- ६. गंध ° (ख घ) ।  
वितमिदम्—सरसच्छधाऊवलरत्तरए (वृ) । १०. वेलंववर ° (ग, घ) ।  
२. सर्वासु प्रतिपु 'मुवि' इति पठ्यमानमस्ति । ११. मज्जेण व गंभीरे (वृपा) ।  
वृत्तो 'मुचि—पवित्र' इति व्याख्यातमस्ति । १२. खोमदुगुल ° (घ) ।  
प्राचीनलिप्यां चकारवकारयोः प्रायः १३. लिव्व (ख, ग) ।  
सादृश्येनात्र वर्णविपर्ययो जातः । वृत्तिकारेण १४. °पच्चुत्थिए (ख); °पच्चुत्थिए (व्य०) ।  
तथैव व्याख्यातः । १५. ह्य (ख) ।  
३. मणिरतण (ग) । १६. पूर (ख) ।  
४. चंदण (ख, घ); अत्र वकारस्थाने चकारो १७. वाचनान्तरे त्वेवं दृश्यते—जाव सीहं सुविणे  
जातः । पासित्ता णं पडिबुद्धा । यावत्करणात् इदं  
५. पडिपूजिय (ख, ग, घ, वृपा) । द्रष्टव्यम्—एगं च णं महंतं पंडुरं धवलं  
६. पयरग (ग, घ); एकस्मिन् वृत्त्यादर्शे सेयं संखउल-विमलदहि-धरागोखीर-फेण-  
'प्रतरकाणि', अपरस्मिंश्च 'प्रवरकाणि' रयणिकरपगासं [अथवा—हार-रजत-  
इति संस्कृतरूपं लभ्यते । खीरसागर-दगरय- महासेल -पंडुरतरोरु- रम-  
७. सुगंधि (वृ) । णिज्ज-दरिसणिज्जं] थिर-लद्ध-पउद्ध-पीवर-

सेविष्यस्य सुमिषनिषेधण-पदं

१८. नमः पं ना धारिणो देवीदेवमेयाह्वं उदात्तं कल्पाणं शिवं धर्मं मंगलं सस्मिरीयं  
 महासुमिषं पाशिता पं पशिवुद्धा समाणो हृद्गुद्गु-नित्तमाणदिया पीडमणा  
 परभसोमपरिसया' ह्रिसवस-विसप्यमाणदियया 'धाराहय-कर्मवपु'कर्मं पिय  
 समुससिय-रोमक्या" नं सुमिषं शोमिष्युद, श्रोमिष्युत्ता समपिज्जायो उद्वेद,  
 उद्वेत्ता पायपीडयो पचोरोद्वेद, पचोरोद्वेत्ता अतुरिवभक्तयसमसंभंताम् शयिनं-  
 विसाणं रायहंसमरिसीम् गद्वेणं जेणामेव मे मेणिए राया तेणामेव उवागच्छद,  
 उवागच्छता मेणियं रायं ताहि इद्वेहि कंवाहि पियाहि मणुत्ताहि मणाभाहि  
 उवागच्छाहि कल्पाणाहि मिषाहि धर्म्याहि मंगलाहि सस्मिरीयाहि हियममपि-  
 ज्जाहि शिवयपक्यामपिज्जाहि मिय-मदुर-रिभिय-गभीर-मरिसरीयाहि मिराहि  
 संलवभायी-संलवभायी पशिवोहेद, पशिवोहेत्ता सेविष्यं रण्णा अथभयुप्याया  
 समाणी नाणा-माणकणमद्यणभस्तिचिसंसि अहानणमि मिसीयद, मिसिदत्ता  
 पावन्था पीमत्या सुदानपयवमया करयन्परिगहियं सिरसावत्तं मत्स्यं यंत्रनि  
 कद्वे मेणियं रायं एयं यमासी-एयं मनु अहं देवाणुपिया ! मय्यं वंसि  
 सास्मिमासि समपिज्जमि मानिगयद्विम् जाय' मियमवयपमद्वयसंतं गयं  
 सुमिषो पाशिता पं पशिवुद्धा-नं मयस्त पं देवाणुपिया ! उवागच्छ'

•कल्लाणस्स सिवस्स धण्णस्स मंगल्लस्स सरिस्सरीयस्स ° सुमिणस्स के मण्णे कल्लाणे फलवित्तिविसेसे भविस्सइ ?

सेणियस्स सुमिणमहिम-निदंसण-पदं

२०. तए णं से सेणिए राया धारिणीए देवीए अंतिए एयमद्धं सोच्चवा निसम्म हट्टतुट्ट-<sup>१</sup>°चित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाण ° हियए धाराहयनीवसुरभिकुसुम-चुंचुमालइयतणू ऊसवियरोमकूवे तं मुमिणं ओगिण्हइ', ओगिण्हत्ता ईहं पविसइ, पविसित्ता अप्पणो साभाविणं मइपुच्चाएणं वुद्धिविण्णाणेणं तस्स सुमिणस्स अत्थोग्गहं करेइ, करेत्ता धारिणिं देवि ताहि जाव' हिययपल्हायणिज्जाहिं मिय-महुर-रिभिय-गंभोर-सस्सरीयाहि वग्गुहिं' अणुवूहमाणे-अणुवूहमाणे एवं वयासी—उराले णं तुमे देवाणुप्पिए ! सुमिणे दिट्ठे । कल्लाणे णं तुमे देवाणुप्पिए ! सुमिणे दिट्ठे । सिवे धण्णे मंगल्ले सस्सरीए णं तुमे देवाणुप्पिए ! सुमिणे दिट्ठे । आरोग्ग-तुट्ठि-दीहाउय'-कल्लाण-मंगल्लकारेणं तुमे देवि ! सुमिणे दिट्ठे । अत्थलाभो ते' देवाणुप्पिए ! पुत्तलाभो ते देवाणुप्पिए ! रज्जलाभो ते देवाणुप्पिए ! भोग-सोकखलाभो ते देवाणुप्पिए !

एवं खलु तुमं देवाणुप्पिए ! नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं अट्ठट्ठमाणं राइंदियाणं वीइक्कंताणं अम्हं कुलकेउं कुलदीवं कुलपच्चयं कुलवडिसयं' कुलतिलकं कुलकित्तिकरं कुलवित्तिकरं' कुलनंदिकरं कुलजसकरं कुलाधारं कुलपायवं कुलविवद्धणकरं सुकुमालपाणिपायं जाव"सुरूवं दारयं पयाहिसि । से वि य णं दारए उम्मुक्कवालभावे विण्णय'<sup>२</sup>-परिणयमेत्ते जोच्चवणगमणप्पत्ते सुरे वीरे विक्कंते" वित्थिण्ण-विपुल-वलवाहणे रज्जवइ" राया भविस्सइ । तं उराले णं तुमे देवाणुप्पिए ! सुमिणे दिट्ठे" । •कल्लाणे णं तुमे देवाणुप्पिए ! सुमिणे दिट्ठे । सिवे धण्णे मंगल्ले सस्सरीए णं तुमे देवाणुप्पिए ! सुमिणे दिट्ठे । °

१. सं० पा०—हट्टतुट्ट जाव हियए ।

२. चुंचु° (ख, घ) ।

३. ओगिण्हत्ति २ (ख) ।

४. ना० १।१।१६ ।

५. १।१।१६ सूत्रे अत्र 'गिराहि' पाठो विद्यते ।

६. दीहाउ (ख) ।

७. X (ग, घ) सर्वत्र ।

८. कुलहेउं (वृपा) ।

९. °वडंसयं (ख) ।

१०. नासोपाठः वृत्तिसम्मत्तः, यथा—क्वचिद् वृत्तिकरमित्यपि दृश्यते ।

११. ओ० सू० १४३ ।

१२. विण्णाय (क, ख, घ) ।

१३. वित्तिकंते (क); वियक्कतं (ख) ।

१४. रज्जयती (क) ।

१५. सं० पा०—दिट्ठे जाव आरोग्ग ।

आरोग्य-तुष्टि-वीहा-उद्य-कल्लाण-मंगल्लकारणं णं तुमे देवि ! मुमिणे दिट्ठे ति कट्ठं भुज्जी-भुज्जी अण्वूहेइ ।

**धारिणीं मुमिणजागरिया-पदं**

२१. नए णं ना धारिणी देवी मेणिणं रण्णा एयं वुत्ता नमाणी हट्ठुत्तु-चिलमाणदिया जाव' हरिणवत्त-विमलमाणदियाया करयत्त-परिणहिव'•तिरस्तावत्तं मत्तए'• अत्रानि कट्ठं एयं ययासी—एवमेयं देवाणुप्पिया ! नहमेयं देवाणुप्पिया ! अनित्तमेयं देवाणुप्पिया ! अगंदिद्धमेयं देवाणुप्पिया ! उच्छियमेयं देवाणुप्पिया ! पटिच्छियमेयं देवाणुप्पिया ! उच्छियपटिच्छियमेयं देवाणुप्पिया ! तच्चे णं एममट्ठे जं तुमे वयह ति कट्ठं तं मुमिणं मम्मं पटिच्छट, पटिच्छत्ता मेणिणं रण्णा अत्तभण्णयावा नमाणी नाथामणिकणगरयण-भत्तिचित्तायां भट्टानणाओ अत्तभट्ठेइ, अत्तभट्ठेत्ता जेणेव सए सयणिज्जे तेणेव उवागच्छट, उवागच्छत्ता सयंमि सयणिज्जनि निमीयट, निमीयत्ता एयं ययासी— 'मा मे' मे इत्तमे वट्ठणे मंगल्ले मुमिणे अण्णेहि पावमुमिणेहि पटिहम्मिहि ति कट्ठं देवय-गुग्गजयमं वट्ठाहि' एमत्ताहि धम्मिवाहि वट्ठाहि मुमिणजागरियं पटिजागरयाणी-पटिजागरयाणी विहरइ ॥

**मुमिणपाटन-निमंतण-पदं**

२२. नए णं मे' मेणिणं रासा एववुत्ताकालममयंमि कोहुदियपुरिणे' महावेइ, महावेत्ता एयं ययासी—'निष्पामेय भो देवाणुप्पिया ! वाहिरियं उयट्ठानगायं अज्ज 'मविमंमं एवममम्म' मंधोदकानिज-मुत्तं-मम्मदिज्जसोवदिनं पंचयण-भरत्तमुत्तं-मुत्त-पुत्त-होपकारकायं कायायसयसकदुत्तक-मुत्त-भूय-उत्तं-मुत्तं-मुत्तं-सपमंथं-मंथं-याभिनासं मुत्तं-मंथं (मंथं ?) मंधियं' मंधियं-भूयं करिइ, कायं-सयं स, एवमानुप्पिया' एवमानुप्पिया ॥

२३. तए णं ते कोडुंविद्यपुस्सिा सेणिएणं रण्णा ण्वं युत्ता समाणा हट्टुट्टु-  
 •चित्तमाणंदिया पीड्ढणा परमसोमणरिसया इस्सवना-विद्यपपमाणहियया  
 तमाणत्तियं० पच्चप्पिणंति ।।
२४. तए णं से सेणिए राया कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए कुल्लुण्णल-कगल-कोमलु-  
 म्भिलियम्मि अहंपंडुरे' पभाए रत्तासोगप्पनाय-किंमुय-मुसमुद्द-गुंजद्ध-बंधुजीवग-  
 पारावयचलणनयण - परहृयसुरत्तलोयण-जानुमणगुमुम-जलियजलण-तयणिज्ज-  
 कलस-हिंगुलयनिगर-ह्वाइरेगरेहंत-सस्सिरीए दिवायरे अहकमेण उट्ठिए तस्स  
 'दिणकर-करपरंपरोयारपरद्धमि' अंधयारे बालातव'- कुंकुमेण 'सचित्तच्च'  
 जीवलोए लोयण-विसयाणुयास'-विगसंत-विसददंसियम्मि लाए कमलागर-  
 संडवोहए उट्ठियम्मि मूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयया जलंते सयणिज्जाओ  
 उट्ठेइ, उट्ठेत्ता जेणेव अट्टणसाला, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता अट्टणसालं  
 अणुपविसइ ।  
 अणगवायाम-जोग'-वगण-वामट्टण-मल्लजुद्धकरणेहि संते परिस्संते सयपागसह-  
 स्सपागेहि सुगंधवरतेल्लमादिएहि पीणाणज्जेहि दीवणिज्जेहि दप्पणिज्जेहि  
 मयणिज्जेहि विंहणिज्जेहि सविंदियगायपल्हायणज्जेहि अअभंगेहि' अअभंगिए  
 समाणे, तेल्लचम्मंसि पडिपुण्ण-पाणिपाय-सुकुमालकोमलतलेहि पुरिसेहि छेएहि  
 दक्खेहि पट्टेहि कुसलेहि मेहावीहि निउणेहि निउणसिप्पोवगएहि जियपरिस्स-  
 मेहि अअभंगण-परिमट्टणुवल्लण-करणगुणनिम्माएहि, अट्टिसुहाए मंससुहाए  
 तयासुहाए रोमसुहाए--चउच्चिहाए संवाहणाए संवाहिए समाणे अवगयपरिस्समे  
 न्निरेदे अट्टणसालाओ पडिनिक्खमइ, पडिणिक्खमिता जेणेव मज्जणघरे तेणेव  
 उवागच्छइ, उवागच्छिता मज्जणघरं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता समत्तजाला-  
 भिरामे' विचित्त-मणि-रयण-कोट्टिमतले रमणिज्जे ण्हाणमंडवंसि नाणामणि-  
 रयण-भत्तिचित्तंसि ण्हाणपीठंसि सुह्निसण्णे सुहोदएहि 'गंधोदएहि पुप्फोदएहि'"

१. सं० पा०—हट्टुट्टु जाव पच्चप्पिणंति ।  
 २. अहंपंडुरे (क, ख); अहा० (ग) ।  
 ३. दिनकरपरंपरोयारपरद्धमि (क, ख, ग, घ,  
 वृपा) ।  
 ४. बालायव (अवचित्त) ।  
 ५. खइय व्व (ख); खच्चियंमि (घ) ।  
 ६. ०तास (क, ख); ०वास (घ) ।  
 ७. जोग (क, ख, ग, घ) । प्रयुक्तासु सर्वास्वपि  
 प्रतिपु 'जोग' इति पाठो लभ्यते, किन्तु वृत्ती
- 'योग्या' इति व्याख्यातमस्ति तथा औप-  
 पातिक (६३) सूत्रे 'जोग' इति पाठोऽस्ति ।  
 असौ च समीचीनः तेन मूले स्वीकृतः ।  
 ८. अअभंगिएहि (ख) ।  
 ९. समंत (वृ); समत्त, समुत्त (वृपा) ।  
 १०. पुप्फोदएहि गंधोदएहि (क, ख, ग, घ) ।  
 वृत्ती पूर्वं गंधोदकं ततश्च पुष्पोदकं व्याख्यात-  
 मस्ति । औपपातिक (६३) सूत्रे पि एष  
 एव क्रमो दृश्यते ।

मुद्रोद्यमनि च पुणो पुणो कल्पजापने-पथर-मज्जजापिदोण, मज्जिण मन्व कोउय-  
 मग्निं सद्धविदोदि कल्पजापने-पथर-मज्जजापिदोण पन्हुन-मुद्रुमान-मरतामाट-  
 कुदियेणे अहय-मुद्रुमान-द्वयस्यण-मुद्रुमा, मरत-मुरभि-मोसीसा-संयणापुदिन-  
 मने मुद्रुमान-कण्ठमदिलेयने आविद-मणिमुद्यणे कण्ठम-हाराद्धार-विगस्य-  
 पालंय-पालंयसाप-उपभुग-मुद्रुमोहे पिपाहमेवज्ज-अंगुणेउज्ज-नानियंगस-  
 नानियकयाभरणे नाणामणि-कण्ठ-मुद्रिय-संभियभा, अहिमस्यसमिरोण  
 मुद्रुमज्जाउयाणे मउउ-विस्मिरण हारोत्थय-मुद्रुम-स्यस्यस्ये 'मुद्रुमा-पिपयं-  
 मुद्रुमा, पालंय-पालंयसाप-मुद्रुम-पउउससिउजे' नाणामणि-कण्ठम-विमल'-  
 मद्रुम-विदुविदिय-सिस्मिनिव-विस्मिरण-मुद्रुमिद्रु-विमिद्रु-नद्रु-नद्रिय-पमत्य-  
 आविद-सोयस्य, कि सयथा ? कण्ठमकण्ठ, येव मुद्रुमकिय'-विभूमिण नरिदे  
 मज्जोरेटमन्वसापेणे' उभेणे परिउज्जमाणेण मउउमरवात्तयोउयेणे मंगल-उय-  
 मद्रुमज्जापणे' कण्ठमकण्ठम-संयणापण-सोमर-नलवर-माटविद-कोउविद-  
 मनि-मज्जामि-मणम - योससिय-अमस्य-सिउ-योउमद्रु-मगर-मिगम-मेट्टि-मेषाअ-  
 मन्वसाप-दूय-मेषिवात्तस्यि सपस्येउ अयत्तमद्रुमिदोउमण, विव मद्रुमण-विपंन-  
 निवतासमणाय मउउे सांय अ पिपयंसाणे मरस्ये मज्जजापयस्यो पविनिव-  
 मद्रु, पविनिवसिमसा केमेव' आहिमिया उयट्टापसाया, तेषेव उयामउउ, उयामिउत्ता सोहोसमवरणं पुरतथासिमुद्रु मणिमण्ये ॥

२४. यत् पं मे भेषिणं यथा आपणो अट्टरजामेवे उयत्तुसियेमे विगोभाणं सद्रु मद्रु-  
 मपस्ये-मेवस्य-पण्डु-पुसा' मिसस्य' -मंगलोयसाप-कण' -संभियकमाट-  
 सयस्ये, सयस्येया नाणामणि-कण्ठमदियं अहिमोउउपिउज्जस्यं मद्रुमपस्येपु-  
 मणे मद्रु-पुभमिसम-विवाहाणे ईहामिद-उयम-मुद्रुम-मर-मगर-विद्रुम-वापम-



खलु सामी ! धारिणी देवी नवण्हं मासाणं नङ्गणट्टिपुण्णाणं जाव' धारणं पयाहिइ । से वि य णं दारणं उम्मुत्तकत्रालभावे विण्णय'-परिणयमिसे जोव्यणग-मणुप्पत्ते सूरे वीरे विक्कंते वित्थिण्ण-विपुल-वल्लवाहणे रज्जवई राया भविससइ, अणगारे वा भावियप्पा ।

तं उराले णं सामी ! धारिणीए देवीए सुमिणे दिट्ठे जाव' आरोग्ग-तुट्ठि'-दीहा-उय-कल्लाण-मंगल्लकारणं णं सामी ! धारणीए देवीए सुमिणे ° दिट्ठे त्ति कट्ठु भुज्जो-भुज्जो अणुवूहेत्ति ॥

### सुमिणपाढग-विसज्जण-पदं

३०. तए णं से सेणिए राया तेसि सुमिणपाढगणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिए जाव' हरिसवस-विसप्पमाणहियाए करयल'°परिगहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्यए अंजलि कट्ठु ° एवं वयासी -एवमेयं देवाणुप्पिया ! जाव' जं णं तुव्भे वयह त्ति कट्ठु तं सुमिणं सम्मं पडिच्छइ, ते सुमिणपाढए विपुलेणं असण-पाण-खाइम-साइमणं वत्थ-गंध-मल्लालंकारेण य सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता विपुलं जीवियारिहं पीतिदाणं दलयति, दलइत्ता पडिविसज्जेइ ॥

### सेणियस्स सुमिणपसंसा-पदं

३१. तए णं से सेणिए राया सीहासणाओ अवभुट्ठेइ, अवभुट्ठेत्ता जेणेव धारिणी देवी, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता 'धारिणि देवि'° एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिए ! सुमिणसत्थंसि वायालीसं सुमिणा'°तीसं महासुमिणा—वावत्तिरि सव्वसुमिणा दिट्ठा जाव' तं उराले णं तुमे देवाणुप्पिए ! सुमिणे दिट्ठे । कल्लाणे णं तुमे देवाणुप्पिए ! सुमिणे दिट्ठे । सिवे घण्णे मंगल्ले सस्सिरीए णं तुमे देवाणुप्पिए ! सुमिणे दिट्ठे । आरोग्ग-तुट्ठि-दीहाउय-कल्लाण- मंगल्ल-कारणं तुमे देवि ! सुमिणे दिट्ठे त्ति कट्ठु ° भुज्जो-भुज्जो अणुवूहेइ ॥

प्रतिपु चात्र पाठस्य क्रमविपर्ययो दृश्यते—  
अत्यलाभो सामी ! सोक्खलाभो सामी !  
भोगलाभो सामी ! पुत्तलाभो रज्जलाभो  
(क, ख, ग, घ) ।

१. ना० १।१।२० ।

२. विण्णाय (वृ); विण्णय (वृपा) ।

३. ना० १।१।२० ।

४. सं० पा०—आरोग्ग-तुट्ठि जाव दिट्ठे ।

५. ना० १।१।१६ ।

६. सं० पा०—करयल जाव एवं ।

७. ना० १।१।२१ ।

८. संपडिच्छइ (ग, घ) ।

९. दलइ (क) ।

१०. धारणी देवी (क); धारणीए देवीए (ख, ग),  
धारणीं देवीं (घ) ।

११. सं० पा०—सुमिणा जाव भुज्जो २ अणु-  
वूहति ।

१२. ना० १।१।२६ ।

धारिणीयं दोहृत-पदं

३२. तत्र पं ता धारिणी देवी मेणियस्त रण्यो श्रित्ति एतमद्वं मोच्या निगम्य  
हृदमुद्र-चित्तमार्गदिया जाव' हृदिसवस-विमलमार्गदियया तं नृमिषं नम्यं  
परिच्छिन्नि, जेणेव तत्र यामपरे नेणेव उवागच्छउ, उवागच्छिता प्ताया कयवनि-  
कम्मा' \*कय-कोटय-मंगल-पानच्छिता विपुलाटं भोगभोगाटं भंजमानो'   
विहस्य ॥

३३. तत्र पं नीमे धारिणीयं देवीयं योनु मासेनु योउवकोनेनु तत्र माये हृदनाये  
तन्म गवमन्त दोहृतकालसमयति धर्ममेवार्थे अकालमेहेनु योहने  
पाउकभित्तया --

धन्याश्रो पं ताश्रो धर्मयाश्रो, नंपुण्याश्रो पं ताश्रो धर्मयाश्रो,  
कयव्याश्रो पं ताश्रो धर्मयाश्रो, कयपुण्याश्रो पं ताश्रो धर्मयाश्रो,  
कयवकयाश्रो पं ताश्रो धर्मयाश्रो, कयविह्वयाश्रो पं ताश्रो धर्मयाश्रो, नन्दले  
पं ताशि मापुग्मए, धर्मजीवियफये, जाश्रो पं मेहेनु अहमृगाएग अहमृज्जएग  
अहमृपणएग अहमृट्टिणएग नगज्जिणएग मदिज्जणएग सपुण्णिएग मयणिएग  
पययोव-पयपट्ट-यक-संत-पंद-कुंद-आलिपट्टरासिनमार्गभेग निवृत्त-हृदि-याव-  
भेद-नंपम-मप-होरेट-गरिणए-पउमन्तमार्गभेग लकामन्त-मन्त-रत्ताकिसुन्-  
यान्मप-मपसंप्रधीयव-आविहिमुवय-मन्त - कुकुम-उरधमन्तमृतिर - र्दिगोपम-  
ममन्तभेग' यरुहिण-मोव-मुणिय' भावभासिच्छ-भिगपत-सासम' मीचुपयनियर-  
नदसिरीमृणुम - नदमृन्तममार्गभेगु जन्तवय-भिसभेय-रुद्रुम-ममरायनि-  
मममृणुनिय-कयज्जमम'भेगु पूरुण-विज्जव-ममृज्जिणएग योपयम-मिचुवममप-  
यवयपरिसविकरेनु, निमन्त-पन्तारिभयत-पर्यान्त-वयउमत्त यममाहय-  
समोभयत-उवागच्छरिनु'उययानं पमार्गिएगु,  
पारा-पुक्क-निवय-निवय'दियं मेरुजिणले हृदिसमणकंयुए पन्तवियं' पायव-

गणेषु वल्लिवियाणेषु' पसरिणसु उन्नपसु' सोभगमुवगणसु' वेभारगिरि-  
प्पवाय-तड-कडगविमुक्केसु उज्जारेसु, तुरियपद्दाविय-गल्लोत्तुकेणाउत्तं सक्तुसु  
जलं वहंतीसु गिरित्तेसु राज्जज्जुण-नीव-कुट्टय-कंदल-मिनिध'-कल्लिणसु  
उववणेषु,

मेहरसिय - हट्टुत्तुच्चिट्ठिय - हरिसवरापमुयककंठकेकारत्रं मुयंतेसु वरहिणंसु'  
उज्जवस'-मयजणिय-तरुणराहयारि-पणच्चिणसु नवसुरभि-सिल्लिव-कुट्टय-कंदल-  
कलंब-गंधद्वणि मुयंतेसु उववणेषु ।

परहुय-रुय-रिभिय-संकुलेसु उट्टाउत्त-रत्तउदगोवय-ओविय-कारुण्णविलविणसु  
ओणयतणमंडिणसु दट्टुरपयंपिणसु संपिट्ठिय-दरिय-भमर-महुयारिपट्टकर-  
परिलित-मत्त-छप्पय-कुसुमासवलोल-मट्टर-गुंजंतदेसभागसु उववणेषु ।

परिसामिय'-चंद-सूर-गहगण-पणट्टनक्कत्तारागपहे' 'उंदाउह-वद्ध-चिचपट्टम्मि'  
अंवरत्ते उट्टीणवल्लगपति'-सोभंतमेहवंदे कारउग-चक्कवाय-कलहंस-उस्सुयकरे  
संपत्ते पाउसम्मि काले ण्हायाओ' कयवलिकम्माओ कय-कोउय-मंगल-पायच्छि-  
त्ताओ 'किं ते?' 'वरपायपत्तनेउर-मणिमेहल-हार-रउय-ओविय'-कडग-'खुडुय'-  
विचित्तवरवलयथंभियभुयाओ कुंडलउज्जोवियाणणाओ' 'रयणभूसियंगीओ,  
नासा'-नीसासवाय-वोज्जं चक्खुहरं वणणफरिससंजुत्तं ह्यलालापेलवाइरेयं

१. °सुं (क, ख); अन्यत्रापि यत्र क्वचित्  
एतत् दृश्यते ।

२. पाठान्तरे - नगेपु पवंतेपु नवेपु वा ह्रदेपु १३.  
(वृ) ।

३. सोहग° (क) ।

४. सिल्लिद्ध (ख, ग) ।

५. वरिहणंसु (क) ।

६. उदु° (ख); उडु° (ग, घ) ।

७. परिष्णामिय (क, ग, घ, वृपा) ।

८. °तारागपहे (क); °तारागणपहे (ग) ।

९. °पट्टंसि (ख, घ) ।

१०. °वलागवंति (ख) ।

११. किभूता श्रम्मयाओ इत्याह—ण्हायाओ  
इत्यादि (वृ) ।

१२. किन्नो (क); किन्ने (ग); किं रो (घ) ।  
किं तत् 'यत् करोति' इति शेषः । किं च

[भ० ६।१४४ नूयस्य पादटिप्पणं] असी

पाठः व्याख्यादृष्ट्या सरतोस्ति ।

उचिय (ग, घ) । वृत्तिकारेणापि 'उचिय'  
पदं व्याख्यातमस्ति—उचितानि योग्यानि  
(वृ) । किन्तु अत्र 'ओविय' पदं समीचीन-  
मस्ति । संभवतो लिपिदोषेण परिवर्तनं  
जातम् । २४ सूत्रे 'ओविय' इति पाठो  
लभ्यते । तत्र वृत्तिकारेण 'ओविय' इति  
परिकर्मितानि इति व्याख्या कृतास्ति । अत्र  
वृत्तिकारेण 'उचिय' पाठो लब्धः तेन तथा  
व्याख्यातः ।

१४. खडुय (घ); खडुय (घ) ।

१५. खडुय- एगावलि- कंठमुरज- तिसरय-वरवलय-  
हेमसुत्त-कुंडलुज्जोवियाणणाओ (वृपा) ।

१६. नास (क) ।

धवल्कलपय-नाचियंतकम्भं आगासफालिह-सरिसप्यभं संमुखं पवर' परिह्वियायो,  
 सुभ्रुवमुकुमान उत्तरिज्जालो' 'सव्योऽय-गुरभिभुमुम-पवरमल्लनोभियसिरासो'  
 गालागन्धवृवियायो निरी-मनापवेसायो, मेयणव'-गंधहृत्पिरयणं वृत्तयासो  
 ममापीयो, सकोरेंदमल्लदागेणं छतेणं परिज्जभाणेणं 'वंदप्पभवदरेरयनिय-  
 विमलदंड- संसकंड- इगरगधमयमहियकेणपूजसन्निगास- चउत्तामरवानयोजियं-  
 नीसो' वेणिएणं रण्णा सद्धिहृत्पिरयंघवरगणं पिट्टुसो-पिट्टुसो समणुगच्छमापीयो  
 चाडरंनियोणं मेयाणं-महया ह्वयाणीणं गवाणीणं रह्याणीणं पायत्ताणीणं-  
 मधियद्रीणं सव्यज्जुईणं \*सव्यवत्तेणं सव्यसमुदणं सव्यादरेणं सव्यविभूईणं  
 सव्यविभूणाणं सव्यमंभमेणं सव्यपुण्णगंधमल्लापेकारेणं सव्यतुट्टिय-नाह-सन्नि-  
 णाणं महया इडुईणं महया जूईणं महया वलेणं महया समुदणं महया वरतु-  
 ट्टिय-जमगममग-पवाडणं संय-पणप-पट्टह-भेरि-भल्लरि-तरमुट्टि-शुभ्रुवक-सुरय-  
 मुडंग-इडुट्टि-निगंमनाडवरणेणं रायगिहं नवरं निपाडग-तिग-वाडक-वत्तर-  
 चउत्तमुट्ट-महापहाणेणु खानितसित्त-मुट्टय-सम्मज्जिसोचनित्तं \*पंचयत्त-सम्म-  
 सुरभि-भुवत्त-पुण्णं ज्ञायारायनियं गालागन्ध-पवरगंधुभ्रुवक-सुभ्रुवक-धूव-उज्जंत-  
 सुरभि-मपमपेण-संधुत्तयाभिराणं \* सुगंधपर (गंध ?) गंधियं गंधवट्टिभूयं  
 जवयोण्णमापीयो नागरजणेणं अभिनंदिज्जमापीयो' सुत्त-सया-सव्य-सुम्म-  
 सन्नि-सुत्तं-सयायं सुरम्मं वेभारगिरिकडग'-पायभूतं सव्यसो समंता  
 'आदिपमापीयो-आदिपमापीयो शोहत्तं' चिणित्तं ।  
 नं जउ पं अट्टमयि मेहेणु श्वभुग्गएणु जाव शोहत्तं चिणित्तजामि" ॥

धारिणीए चिंता-पदं

३४. तए णं सा धारिणी देवी तंसि दोहलंसि अविणिज्जमाणंसि अंगपत्तादोहला असंपुण्णदोहला असम्माणियदोहला सुवत्ता भुवत्ता निम्मंगा ओलुग्गा ओलुग्ग-सरीरा पमइलदुव्वला किलंता ओमथियवयण-नयणकमला पंडुइयमुही करयल-मलिय व्व चंपगमाला नित्तेया दीणविवण्णवयणा जहोणिय-पुण्ण-गंध-मल्लालं-कार-हारं' अणभिलसमाणी किट्टारमणकिरियं' परिहावेमाणी दीणा दुम्मणा निराणंदा भूमिगयद्विद्वीया ओह्यमणसंकप्पा' \*करतलपल्लहथमुही अट्टज्जाणोव-गया° भियाइ ॥

पडिचारियाणं चिंताकारणपुच्छा-पदं

३५. तए णं तीसे धारिणीए देवीए अंगपडिचारियाओ अट्ठिभतरियाओ दासचेडियाओ' धारिणिं देवि ओलुग्गं' भियायमाणं' पासंति, पासित्ता एवं वयासी—किण्णं तुमे देवाणुप्पिए ! ओलुग्गा ओलुग्गसरीरा जाव भियायसि ?
३६. तए णं सा धारिणी देवी ताहिं अंगपडिचारियाहिं अट्ठिभतरियाहिं दासचेडि-याहिं' य एवं वुत्ता समाणी ताओ दासचेडियाओ' नो आडाइ नो परियाणइ', 'अणाढायमाणी अपरियाणमाणी' तुसिणीया संचिट्टइ' ॥
३७. तए णं ताओ अंगपडिचारियाओ अट्ठिभतरियाओ दासचेडियाओ धारिणिं देवि दोच्चं पि तच्चं पि एवं वयासी—किण्णं तुमे' देवाणुप्पिए ! ओलुग्गा ओलुग्ग-सरीरा जाव' भियायसि ?
३८. तए णं सा धारिणी देवी ताहिं अंगपडिचारियाहिं' अट्ठिभतरियाहिं दासचेडि-

वाचनान्तरत्वेन उल्लेखः कृतः, तस्य संगतत्वमपि प्रदर्शितम्—आहेंडज्ज त्ति आहिंढंते । अनेन चैव मुक्तव्यतिकरभाजां सामान्येन स्त्रीणां प्रशंसाम्भारेणात्मविषयेऽकालमेघदोहदो धारिण्याः प्रादुरभूत् इत्युक्तम् । वाचनान्तरे तु—ओलोयमाणीओ २ आहिंडे-माणीओ २ डोहलं विण्णति । तं जइ णं अहमवि मेहेसु अब्भुग्गएसु जाव डोहलं विणिज्जामि । संगतश्चायं पाठ इति ( वृ ) ।

१. मल्लालंकाराहारं (क, ख, ग) ।  
 २. कीडा (क, ख, घ) ।  
 ३. सं० पा०—ओह्यमणसंकप्पा जाव भियाइ ।  
 ४. चेडीमो (क, ग) ।

५. ना० १।१।३४ ।

६. अत्र पाठसंक्षेपकरणे सुवत्तं भुवत्तं निम्मंसं इति विशेषणत्रयी न विवक्षितास्ति । एवमग्रेपि ।

७. किं नं (क); किं णं (ख); किण्हं (ग) ।

८. °चेडीहिं (ख, ग) ।

९. चेडियाओ (ख, ग) ।

१०. परियाणाइ (ग); परियाणेति (घ) ।

११. °माणा अपरियाणमाणा (ख, घ) ।

१२. चिट्टइ (क) ।

१३. तुमं (क, ग) ।

१४. ना० १।१।३४ ।

१५. °परियारियाहिं (क) ।

साहिं दोरुवं पि तच्चं पि एवं वृत्ता समाप्ती नो आहाह नो परियाण्ट, अणाहाय-  
माणी अपरियाणमाणी नुनितोता मंनिट्ट ॥

पडिच्चारियाणं मेणियस्स निवेदण-पदं

३६. तए णं ताओ अंगपडिचारियाओ अट्ठित्तारियाओ दासनेट्टियाओ धारिणीए  
देवीए अणाहाहज्जमाणीओ अपरिजाणिज्जमाणीओ ततेव मंभंवाओ नमाणीओ  
धारिणीए देवीए अट्टियाओ पडिनिक्कमंनि, पडिनिक्कमित्ता जेणिय मेणिए  
राया नेणिय उवागच्छंनि, उवागच्छिता करयत्तपरिगट्ठियं \*उत्तणं निग्गतवत्तं  
मत्थए अंजंनि ० कट्टे अणं विज्जणं वदावेनि, वदावेत्ता एवं दयामी—एवं  
एवुं मामो ! किं पि अज्ज धारिणी देवी ओनुत्ता ओनुत्तसरीरा जाव' मट्टज्जा-  
णीयगया भियायट ॥

धारिणीए चिंताकारणनिवेदन-पदं

४५. तए णं सा धारिणी देवी सेणिएणं रण्णा सव्वह-माविया ममाणी सेणियं रायं एवं वयासी—एवं खलु सामी ! मम तस्स उरालस्स जाव' महाग्गुमिणस्स तिण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं अयमेयाह्वे' अकालमेहेसु दोहले पाउव्वभूए— धण्णओ णं ताओ अम्मयाओ कयत्याओ णं ताओ अम्मयाओ जाव' वेभारगिरि-कडग'-पायमूलं सव्वओ समंता आहिंइमाणीओ-आहिंइमाणीओं' दोहलं विणित्ति । तं जइ णं अहमवि मेहेसु अव्वभुग्गएसु जाव' दोहलं विणेज्जामि । 'तए णं अहं' सामी ! अयमेयाह्वेसि अकालदोहलंसि अविणिज्जमाणंसि ओलुग्गा जाव' अट्टज्झाणोवगया भियामि ॥

सेणियस्स आसासण-पद

४६. तए णं से सेणिए राया धारिणीए देवीए अंतिए एयमट्टं सोच्चा निम्मम धारिणिं देवि एवं वयासी—मा णं तुमं देवाणुप्पिए ! ओलुग्गा जाव' अट्टज्झाणोवगया भियाहि । अहं णं तह' करिस्सामि" जहा णं तुअं अयमेयाह्वस्स अकाल-दोहलस्स मणोरहसंपत्ती भविस्सइ त्ति कट्टु धारिणिं देवि इट्ठाहि कंताहि पियाहि मणुन्ताहि मणामाहि वग्गूहि समासामेइ, समासारेत्ता जेणेव वाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे सणिसण्णे धारिणीए देवीए एयं अकालदोहलं वहीहि आएहि य उवाएहि य, उप्पत्तियाहि य वेणइयाहि य कम्मियाहि य पारिणामियाहि य—'चउव्विहाहि बुद्धीहि'" अणुचितेमाणे-अणुचितेमाणे तस्स दोहलस्स आयं वा उवायं वा 'ठिइं वा उप्पत्तिं वा'" अविंदमाणे ओहयमणसंकप्पे जाव'" भियायइ ॥

अभयकुमारस्स सेणियं पइ चिंताकारणपुच्छा-पदं

४७. तयाणंतरं च णं अभए" कुमारे 'ण्हाए कयवलिकम्मे" • कयकोउय-संगल-पायच्छित्ते" सव्वालंकारविभूसिए पायवंदए पहारेत्थ गमणाए ॥

- |  |   |
|--|---|
| १. ना० ११११६ ।                               | १०. तथा (घ) ।                                       |
| २. अतमेया० (ग) ।                             | ११. घत्तीहामि (वृ); करिस्सामि (वृपा) ।              |
| ३. ना० १११३३ ।                               | १२. चउव्विहाए बुद्धीए (ग) ।                         |
| ४. वेभार० (ख, ग) ।                           | १३. उप्पत्तिं वा ठिइं वा (क); उप्पत्तिं वा (वृपा) । |
| ५. द्रष्टव्य : १११३३ सूत्रस्यासी पाठः ।      | १४. ना० १११३४ ।                                     |
| ६. ना० १११३३ ।                               | १५. अभय (क, ग, घ) ।                                 |
| ७. तए ण हं (क); तते णं हं (ख); तेणा हं (घ) । | १६. सं० पा०—कयवलिकम्मे जाव सव्वालंकार०              |
| ८, ९. ना० १११३४ ।                            |   |

४८. ताम् षं मे ब्रह्मणु कुमारे' मेधेय मेधियम्, राया मेधेय उवागच्छद, उवागच्छिता मेधियं रायं श्रोत्रयमणमंकणं जाय' भियायमाणं पासद, पासिता अयमेवायमे अदभविभम्, चित्तिम्, पयियम्, मयोनाम्, मंकणे मनुष्यज्जिह्वा अण्णवा' ममं मेधियम्, राया एज्जमाण पासद, पासिता आदाह पयियाणह मवकारेह सम्माणेह [ इट्ठाहि कंताहि पिवाहि मणुन्नाहि मणानाहि श्रोत्राहाहि वग्गुहि ? ] आनवद मंनवद अदानाणेण' उयनिमतेह मय्ययनि अण्णाह । इयापि मम मेधियम् राया नो आदाह नो पयियाणह नो मवकारेह नो सम्माणेह नो इट्ठाहि कंताहि पिवाहि मणुन्नाहि मणानाहि श्रोत्राहाहि वग्गुहि आनवद मंनवद नो अदानाणेण उयनिमतेह नो मय्ययनि अण्णाह', कि पि श्रोत्रयमणमंकणे जाय' भियायह । तं भविमय्यं षं एय्य कादणेणं । तं मेयं मनु ममं मेधियं रायं एयमद्वं पुच्छिताम्— एयं मेधेह, मेधेहता विपामेय' मेधियम्, राया मेपामेय' उवागच्छद, उवागच्छिता कय्यकपरिमोदियं सिरमायनं मय्यण् अयनि कद्वं जणं विज्जणं वदायेद, वग्गयेत्ता एयं वपायो— नुव्भे षं ताद्यो ! अण्णया ममं एज्जमाणं पासिता आदाह पयियाणह' •मवकारेह सम्माणेह' आनवद मंनवद अदानाणेणं उयनिमतेह मय्ययनि अण्णायह' । इयापि ताद्यो ! नुव्भे ममं नो आदाह जाय 'नो मय्ययनि अण्णायह' कि पि श्रोत्रयमणमंकणे जाय' भियायह । तं भविमय्यं षं ताद्यो ! एय्य कादणेणं । ताद्यो नुव्भे मम ताद्यो ! एयं कादणं अण्णायाणा' अयकमाणा मनिच्छयमाणा अण्णच्छामाणा जग्गुभूतामवित्ताणमविद्वं एयमद्वं आदयसा । तए पाहं मय्य कादणम अण्णमणं मयिरतामि ॥



दोहले पाउटभवित्या—धणायो णं नाय्यो अम्मयायो तत्तेव निरत्तमेमं भाणियव्वं जाव' वेभारगिरिकडग-पायमूलं सव्वयां समंता आहिउमाणीयो-आहिउ-माणीयो दोहलं विणिति । तं जइ णं अहमति भेहेमु अत्तमग्गएणु जाव दोहलं विणिज्जामि ।

तए णं अहं पुत्ता धारिणीए देवीए तस्स अकालदोहलस्स वड्हिं आण्हि य उवाएहि य जाव' उप्पत्ति अविदमाणे आहयमणसंकप्पे जाव' भियामि, तुमं आगयं पि न याणामि । तं एतेणं कारणेणं अहं पुत्ता ! आहयमणसंकप्पे जाव भियामि ॥

### अभयस्स आसासण-पदं

५०. तए णं से अभए कुमारे सेणियस्स रण्णो अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्टुट्टु-चित्तमाणंदिए जाव' हरिसवरा-विसप्पमाणहियए सेणियं रायं एवं वयासी—मा णं तुब्भे ताओ ! आहयमणसंकप्पां जाव' भियायह । अहं णं तहा करिस्सामि जहा णं मम चुल्लमाउयाए धारिणीए देवीए अयमेयारूवस्स अकालदोहलस्स मणोरहसंपत्ती भविस्सइ त्ति कइट्टु सेणियं रायं ताहिं इट्ठाहिं \*कंताहिं पियाहिं मणुन्ताहिं मणामाहिं वग्गूहिं ° समासासेइ ॥
५१. तए णं से सेणिए राया अभएणं कुमारेणं एवं वुत्ते समाणे हट्टुट्टु-चित्तमाणंदिए जाव' हरिसवरा-विसप्पमाणहियए अभयं कुमारं सवकारेइ समाणेइ, पडिविसज्जेइ ॥

### अभयस्स देवाराहण-पदं

५२. तए णं से 'अभए कुमारे' 'सवकारिए सम्माणिए'° पडिविसज्जिए समाणे सेणियस्स रण्णो अंतियाओ पडिनिकखमइ, पडिनिकखमिता जेणामेव सए भवणे, तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीहासणे निसण्णे ॥
५३. तए णं तस्स अभयस्स" कुमारस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए"° चित्तिए पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था—नो खलु सक्का माणुस्सएणं उवाएणं मम

१. ना० १११३३ ।

२. ना० १११४६ ।

३. ना० १११३४ ।

४. ना० ११११६ ।

५. तोहय ° (क) ।

६. ना० १११३४ ।

७. सं० पा०—इट्ठाहिं जाव समासासेइ ।

८. ना० ११११६ ।

९. अभयकुमारे (ख, ग, घ) ।

१०. सवकारिय ° (क); सवकारिय सम्माणिय (ख, ग) ।

११. अभय (ख, ग, घ) ।

१२. सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था ।

सुन्दरमाड्याए' धारिणीए देवीए अकालदोहणमणोरुसंपत्ति करिस्ताए, नमस्तए  
 दिव्येण उवाण्ये । अरिषेणं मन्मथे' मोहम्मकण्यवार्गे पुत्रसंगदए देवे महिष्टोए'  
 •महाज्जुए महापरयकमे महाज्जमे महच्चले महापुभावे' महामोर्गे । मं मं  
 गनु मं पौनहमात्ताए पौनहियरम वंभचारिस्ता' उम्मुवकमपिमुवण्णरस  
 वचणयमात्तावण्णयिलेवणरस निक्किरसतत्तमूंनलरस पणम्म अवीरस वदभ-  
 नंभारोवमयस अट्टमभन्नं पणिण्ठिस्ता' पुत्रसंगदए देवे मण्णीकरेमापरस  
 विहरिस्ताए ।

एए पं पुत्रसंगदए देवे मं सुन्दरमाड्याए धारिणीए देवीए अपमेवारायं अकाल-  
 मेहेसु सोहले विण्हिनि-एयं संपेहेद, संपेहेता जेणव पौनहमात्ता वेणामेव'  
 उवाण्णद, उवाण्णित्ता पौनहमात्ता पमज्जद, पमज्जिता उच्चारणपरवणभूमि  
 पण्णोहेद, पण्णोहेता' वदभभारसं दुरुद, दुरुहिता अट्टमभन्नं' पणिण्ठि-  
 पणिण्ठिस्ता पौनहमात्ताए पौनहिए वंभचारो जाय पुत्रसंगदए देवे  
 मण्णीकरेमाणे-मण्णीकरेमाणे" चिट्ठे ॥

समोहणइ', समोहणित्ता संसेज्जाइं जोयणाइं रंइं' निगिरइ, तं जहा—रयणाणं वडराणं' वेसलियाणं लोहियवखाणं मरारगल्ल्याणं इंसगइभाणं पुनगाणं सोगंवि-याणं जोईरसाणं अंकाणं अंजणाणं रययाणं' जायस्वयाणं अंजणपुलगाणं फलि-हाणं रिद्धाणं अहावायरे पोग्गले परिसाडेइ, परिसाडेत्ता अहागुहुमे पोग्गले परिगिण्हइ, परिगिण्हित्ता अभयकुमारमणुकांपमाणे देवे 'पुव्वभवर्जणिय-नेह-पीइ-वहुमाणजायसोगे" तत्रो विमाणवरपुंउरीयात्रो रयणुत्तमाओ 'धरणीयल-गमण-तुरिय-संजणिय-गमणपयारो' 'वाघुणिय-विमल-कणग-पयरग-वडिसगमउडुक्क-डाडोवदंसणिज्जो अणेगमणि-कणगरयणपहकरपरिमडिय-भत्तिचित्त-विणि-उत्तग-मणुगुणजणियहरिसो पिखोलमाणवरललियकुंडलुज्जलिय-वयणगुणजणिय-सोम्मरुवो' उदिओ विव कोमुदीनिसाण राणिच्छरंगारुज्जलियमज्झमागत्यो नयणाणंदो सरयचंदो दिव्वासाहिपज्जलुज्जलियदंराणाभिरामो उदुलच्छिमत्त-जायसोहो पइट्टगंधुद्धयाभिरामो मेरु विव नगवरो विगुव्वियविचित्तवेसो दीवसमुद्दाणं असंखपरिमाणनामवेज्जाणं मज्झकारेणं वीइवयमाणो उज्जोयंतो' पभाए विमलाए जीवलोयं रायगिहं पुरवरं च अभयस्स पासं ओवयइ दिव्व-रूवधारी ।

५७. तए णं से देवे अंतलिकखपडिवण्णे दसद्धवण्णाइं सत्तिखिणियाइं पवर वत्याइं परिहिए' अभयं कुमारं एवं वयासी—अहं णं देवाणुप्पिया ! पुव्वसंगइए

१. समोहणति (क, ख, घ) ।
२. दंडं उडुं (ग) ।
३. वयराणं (ग, घ) ।
४. रयणाणं (ग, घ) इत्यपपाठः ।
५. वाचनान्तरे—पूर्वभवजनितस्नेहप्रीतिवहुमान-जनितशोभः (वृ) ।
६. वाचनान्तरे—धरणीतलगमनसंजनितमनः प्रचारः (वृ) ।
७. °सोमरुवो (ख, घ); वाचनान्तरे पुनरेवं विशेषणत्रयं दृश्यते—वाघुनिय-विमलकणग-पयरग-वडेंसगपकंपमाण - चललोल - ललिय-परिलंबमाण-नर-मगर-तुरग-मुहसय-विणिग्ग-ओगिण्ण - पवरमोत्तियविरायमाणमउडुक्क-डाडोवदरिसणिज्जो अणेगमणिकणगरयण-पहकरपरिमडिय-भाग भत्तिचित्त-विणिउत्तग-मणुगुणजणिय-पेखोलमाणवरललियकुंडलुज्ज-

- लियअहियआभरणजणियसोभे गयजलमल-विमलदंसणविरायमाणरुवे (वृ) ।
८. उज्जोयंतो (क, ग) ।
९. 'परिहिए' इतिपाठानन्तरं आदर्शेषु 'एवको ताव एसो गमो । अन्नो वि गमो' इत्युल्लेखोस्ति । तदनन्तरं द्वितीयोः गमः साक्षाल्लिखितोस्ति, तेनादर्शेषु गमद्वयस्य सम्मिश्रणं जातम् । वृत्तावपि अस्म्य सूचना लभ्यते, यथा—एकस्तावदेप गमः पाठोन्वो पि द्वितीयो गमो वाचनाविशेषः पुस्तकान्तरेषु दृश्यते । अस्योल्लेखस्यानुसारेण द्वितीयगमस्य पाठः इत्थं भवति—“तएणं से देवे ताए उक्किट्ठाए तुरियाए चवलाए चंडाए सीहाए उद्धुयाए जयणाए छेयाए दिव्वाए देवगईए जेणामेव जंबुदीवे दीवे मारहे वासे जेणामेव दाहिणइडभरहे

सोऽहम्मकल्पवानी देवे महिद्वीपे' जं णं तुमं पोसहत्तात्वाए अट्टमभन्नं पविण्डितां  
 णं ममं मणसोकरेमाणे-मणसोकरेमाणे चिट्ठमि, तं एम णं देवाणुणिया ! अहं  
 इहं हवमानए । संविताहिं णं देवाणुणिया ! किं करेमि ? किं दव्वामि ?  
 किं पव्वत्तामि ? किं वा ते हियइच्छियं ?

५. नए णं मे अभाए कुमारे तं पुव्वसंगदयं देवं संतत्तिमत्तपडिययणं पासित्ता इट्टुनुट्टे  
 पोसहं पारेइ, पारेत्ता करयत्त' •परिग्गहिं संवितावनं मत्थए' अज्जलि कट्ट  
 एवं वयानी -- एवं मनु देवाणुणिया ! मम चुल्लमाडयाए धारिणीए देवीए  
 अवमेत्ताहवे अकालदोहने पाडव्भूए—धन्नायो णं मायो अम्मयायो तह्वेव  
 पुव्वसमेणं जाव' वेभारनिरिक्कत्त-पायमूलं सव्वयो सग्गंता आहिउत्ताणोयो-  
 आहिउत्ताणोयो दोहलं विणोणि । तं जइ णं अहमवि मेहेसु अट्टभुग्गएणु जाव'  
 दोहलं विणोणजामि -- तं णं तुमं देवाणुणिया ! मम चुल्लमाडयाए धारिणीए  
 देवीए अयमेत्ताहवे अकालदोहलं विणोहि ॥

अभयं कुमारं एवं वयासी—एवं ननु देवाणुप्पिया ! मण तत्र पियट्टुयाए  
‘सगज्जिया सफुसिया सविज्जुया’ दिव्वा पाउसासिरी विउच्चिया, तं विणेऊ णं  
देवाणुप्पिया ! तव चुल्लमाउया धारिणी देवी अगमंगास्वं अकालदोहलं ॥

धारिणीए दोहद-पूरण पदं

६०. तए णं से अभए कुमारे तस्स पुच्चसंगइयस्स ‘सोहम्मकप्पवाग्गिस्स देवस्स’  
अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्टुट्ठे रायाया भवणाया पडिनिगमड, पडि-  
निकखमित्ता जेणामेव सेणिए राया तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छिता करयल’  
•परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए° अंजलि कट्ठु एवं वयासी—एवं ननु तायाओ !  
मम पुव्वसंगइएणं सोहम्मकप्पवाग्गिणा देवेणं खिप्पामेव सगज्जिया सविज्जुया  
(सफुसिया ?) पंचवण्णमेहनिणायावसोभिया दिव्वा पाउसासिरी विउच्चिया ।  
तं विणेऊ णं मम चुल्लमाउया धारिणी देवी अकालदोहलं ॥
६१. तए णं से सेणिए राया अभयस्स कुमारस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म  
हट्टुट्ठे कोडुवियपुरिसे सदावेइ, सदावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो !  
देवाणुप्पिया ! रायगिहं नगरं सिघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-  
पहेसु आसित्तसित्त-सुइय-संमज्जिओवलित्तं जाव’ सुगंधवर [गंध ?] गंधियं  
गंधवट्ठिभूयं करेह य कारवेह य, एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह ॥
६२. तए णं ते कोडुवियपुरिसा’ •सेणिएणं रण्णा एवं वृत्ता समाणा हट्टुट्ठ-चित्त-  
माणदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवसविसप्पमाणहियया तमाण-  
त्तियं° पच्चप्पिणंति ॥
६३. तए णं से सेणिए राया दोच्चंपि कोडुवियपुरिसे सदावेइ, सदावेत्ता एवं वयासी—  
खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! हय-गय-रह-पवरजोह’-कलियं चाउरं गिणि सेणं  
सन्नाहेह, सेयणयं च गंधहत्थियं परिकप्पेह । तेवि तहेव करेति जाव पच्च-  
प्पिणंति ॥
६४. तए णं से सेणिए राया जेणेव धारिणी देवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता

१. सगज्जिय सफुसिय सविज्जुया (क, ख, ग, घ); पूर्वपंचती ‘सफुसिय’ अंतिमं पदमस्ति अत्र च ‘सविज्जुया’ इत्यंतिमं पदम् । कथ-  
मसौविपर्ययो जातः इति न निश्चयपूर्वकं  
वक्तुं शक्यते ।
२. देवस्स सोहम्मकप्पवासिस्स (क, ख, ग, घ) ।
३. सं० पा०—करयल अंजलि ।
४. हट्टुट्ठे (क, ग, घ) ।
५. ना० १।१।३३ ।
६. सं० पा०—कोडुवियपुरिसा जाव पच्चप्पि-  
णंति ।
७. जोहपवर (क, ख, ग, घ) । अट्टमाध्यय-  
नस्य १६१ सूत्रानुसारेण असौ पाठः  
परिवर्तितः ।
८. सेन्नं (क, ख, ग, घ) ।

धारिणि देवि एवं वयानी - एवं मनु देवाणुषिण ! सगञ्जिया' •सविञ्जया  
नकुसिया दिव्या •पाञ्जसिरी पाञ्जभूसा । नं षं नुमं देवाणुषिण ! एषं अकान-  
दोदृत्तं विणेहि ॥

६१. नम षं सा धारिणी देवी सेणिएणं रण्णा एवं वृत्ता समाणी हट्टुट्टा जेषामेव  
मज्जणधरे तेषेव उवागच्छट, उवागच्छिता मज्जणधरं अणुणविमस, अणुण-  
विमिता शंसो मनेउरंमि पहाया कयवनिक्कम्मा कय-कोउय-मंगल-पावच्छिता  
'कि ने' वरुणायपरानेउर-मणिमेह्ल-हार-रुय-ओविच-कडग-रुदुय-विचित्र  
वरुणयथंभियभुवा जाय' 'आगास-फालिन-समपपनं' अंगुयं नियरथा', गेयणवं  
गंधहृत्विं वुट्टा समाणी अगय-महिय-फेणपूज-सन्निगाताहि गेयचामरवाल-  
वीचणीहि वीउज्जमाणी-वीउज्जमाणी संपलिया ॥

६६. नम षं मे सेणिए नया पहाए कयवनिक्कमे' •कय-कोउय-मंगल-पावच्छित्तं  
अणमहृथाभरणात्तिकव-मरीरे हृदिभक्तेधवरणम गकोरेंटमल्लयामेणं उत्तेणं  
परिउदमाणेणं चउचामराहि वीउज्जमाणे धारिणि देवि पिट्ठो अणमच्छट ॥

६७. नम षं सा धारिणी देवी सेणिएणं रण्णा हृदिभक्तेधवरणम पिट्ठो-पिट्ठो  
समणमममाण-मग्गा हृय-भय-रह-यदरजोहृत्तियाए चाउरंणिणीए मेणाम्  
सति संपरियवटा मग्गा भउ-चउगर-चउपरिक्कणा मल्लिवृद्धीए मल्लवज्जुए  
जाय' हृदिभक्तेधवरणम उवागच्छे मयरे निघाउम-निग-चउमक-चउवरं-  
•सउभुट्टु' -महापहाणेसु नागवज्जपेणं अभिनदिउज्जमाणी-अभिनदिउज्जमाणी  
जेषामेव 'विभारिणि-पण्णा' नेषामेव उवागच्छट, उवागच्छिता विभारिणि-  
पण्णा-सपणमग्गे यारामेसु य 'उज्जामेसु य' काणणेसु य मग्गेसु य वणमग्गेसु य  
'भग्गेसु य' 'गुग्गेसु य' मग्गेसु य मग्गाम य कल्लीसु य कल्लेणाम य धनीसु य  
'वीसु' य वृग्गेसु' य कग्गेसु य नवीसु य मग्गंनु य 'वियण्णसु य' अणउमाणी

य पेच्छमाणी य मज्जमाणी य गच्छाणि य पुण्णाणि य फल्लानि य पत्तवाणि य  
गिण्हमाणी य माणेमाणी य अग्घाएमाणी' य परिभुंजमाणी' य परिभाएमाणी  
य वेभारगिरिपायमूले 'दोहलं विणेमाणी' गव्वयां समंता आहिउइ ॥

६८. तए णं सा धारिणी देवी सम्माणियदोहला' विणीयदोहला संपुण्णदोहला'  
संपत्तदोहला' जाया यावि होत्या ॥

६९. तए णं सा धारिणी देवी सेयणयगंधद्विं दुच्छा' समाणी मेणिणं हृदियसंघ-  
वरगएणं पिट्ठओ-पिट्ठओ समणुगम्ममाण-मग्गा ह्य-गय'-●रह-पवरजोहकलियाए  
चाउरगिणीए सेणाए संहि संपरिवुद्धा महया भउ-चउमर-वंदपरिविखत्ता  
सव्विड्डीए सव्वज्जुईए जाव' दुंदुभिनिग्घोसगाएय'-रवेणं जेणेव रायगिहे नयरे  
तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता रायगिहं नयरं मज्जमज्जेणं जेणामेव सए  
भवणे तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छिता विउलाइं माणुसगाइं भोगभोगाइं"  
●पच्चणुभवमाणी० विहरइ ॥

अभएण देवस्स पडिविसज्जण-पदं

७०. तए णं से अभए कुमारे जेणामेव पोसहसाला तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छिता  
पुव्वसंगइयं देवं सवकारेइ सम्माणेइ, सवकारेत्ता सम्माणेत्ता पडिविसज्जेइ ॥

७१. तए णं से देवे सगज्जियं [सविज्जुयं सफुसियं ? ] पंचवण्णमेहोवसोहियं दिव्वं  
पाउससिरि पडिसाहरइ, पडिसाहरित्ता जामेव दिसिं" पाउवभूए तामेव दिसिं"  
पडिगए ॥

धारिणीए गढभचरिया-पदं

७२. तए णं सा धारिणी देवी तंसि अकालदोहलंसि विणीयंसि सम्माणियदोहला  
तस्स गव्वस्स अणुकंपणट्ठाए" जयं चिट्ठइ जयं आसयइ" जयं सुवइ, आहारं पि

१. × (क); आग्घाएमाणी (ख) ।

२. परिभुंजमाणी (ख, ग) ।

३. विणेमाणी (क, ख, ग); दोहलं विणेमाणी  
(घ); वृत्तिकारेणापि 'दोहलं' इति पाठो  
मूलतया नैव व्याख्यातः ।

यथा—विणेमाणी ति—दोहलं विनयंती  
(वृ) ।

४. १।१।३३ सूत्रानुसारेण 'सम्माणियदोहला'  
इति पाठो युज्यते, यद्यपि प्रयुक्तादर्शेषु  
नोपलभ्यते । यवचित्प्रयुक्तेषु आदर्शेषु  
लभ्यते ।

५. संपन्नदोहला (घ) ।

६. संपन्नदोहला (क, ख) ।

७. दुच्छा (क) ।

८. सं० पा०—हयगय जाव रवेणं ।

९. ना० १।१।३३ ।

१०. सं० पा०—भोगभोगाइं जाव विहरइ ।

११. दिसं (क, घ) ।

१२. दिसं (क, घ) ।

१३. °ट्ठयाए (क) ।

१४. आसति (घ) ।

यत् न आहारेभाषी—नाह्वित्तं नाह्वकटुयं नाह्वकत्वायं नाह्वप्रथितं नाह्वमहूरं, जं नमस गच्छभरस हियं मियं पत्थयं देवे य काले य आहारं आहारेभाषी, नाह्वचित्तं नाह्वमोगं नाह्वमोहं नाह्वभयं नाह्वपरिनामं' यवगयाचित्त-मोय-मोह-भय-परिनामा उह्वे-भयजमायं-मुहोहं भोयण-व्यायण-गंध-मन्त्रालंकारोहं तं' गहनं मुहोमुहोयं परिबद्धं ॥

**मैह्वस जन्म-यद्धावण-परं**

७३. तत् न ना भारिणी देवी नवयत् मानायं बहुपटिपुण्यायं बद्धुमायं यं राट्टियायं योद्धकनायं अदरनयानमयनि' मुकुनालपाणियायं जायं सध्वंगमंदरं दारयं पयायः ॥

७४. तत् न नाथी संभवदियारियायो भारिणि देवि नवयत् मानायं बहुपटिपुण्यायं जायं सध्वंगमंदरं दारयं पयायं पानति, पानिना मियं मुरियं नवयत् देवयं' देवेभ्य मेजित् दामा मेवेभ्य उवागच्छति, उवागच्छिता मेपियं दायं जगलं पिज्-पुण्य पदावेति, पदावेना कल्पयारिण्यदियं निरनादसं मय्यत् अर्जति कट्टु-एवं ययाती—एवं सत्तु देवापुत्रिया ! भारिणी देवी नवयत् मानायं बहुपटि-पुण्यायं जायं सध्वंगमंदरं दारयं पयाया । मे णं अग्ने देवापुत्रियायं पियं निवेपमी, पियं मे" भयज ॥

७५. तत् न मे मेजित् दामा दामि संभवदियारियायं मेजित् एवमुहं मोयचा निगमन-पट्टमुहं नाथी संभवदियारियाया मुहोहं यममोहं विजयेण य पुण्य-पत्त-भय-भयानादेवारेण भयकारेण सम्भाषेण, मत्पयपोयसी" कट्टे, पुनापुपुणियायं यिणि कट्टे, मपीना पट्टिदिमज्जेण ॥

**मैह्वस जन्मुनयकरण-परं**

६७. तत् न मे मेजित् दामा [पत्तुमकालमयनि" ? ] मोहदियपुत्रिये सदापेट, सदावेना एवं ययाती—पित्तभाभेय भो देवापुत्रिया ! दायंनिग् नयत् पानियं"-  
 •मन्म(उत्सोवदित्तं मिथादग-दिय - भयजक-वयव - भयजग-मत्पयपोय



ऊसिय-ऊभय-गडागाइपद्म-गन्धियं नाड्कलोडग-गन्धियं गोर्गीम-सरग-रत्न-  
चदण-ददूर-दिण्णपंचगुलितलं उच्चनिमन्तणकलमं नन्दणचय-मुकग-तोरण-  
पडिदुवारदेसभायं आसत्तोरात्तविडल-वट्ट-वग्गारिय-भल्लदाम-कलावं पंचवण्ण-  
सरस-सुरभिमुक्क-पुष्कपञ्जोवयार-कलियं कालामुग्-पवर-कण्ठक-तुल्लक-धूव-  
डज्जन्त-मघमघेत्त-गंधुद्ध्याभिरामं मुग्गधवग्गंभग्गंभयं भग्गवट्टिभूयं नट-णटग-  
जल्ल-मल्ल-मुट्टिय-वेलंबग-कहकहग-पवग-नासग-आट्ठमग-त्तंत्त-मंग- नृणत्तल्ल-  
तुंववीणिय-अणगतालायर ° परिणीयं करेह, कारवेह ग, चारगपरिसोहणं करेह,  
करेत्ता माणुम्माणवद्धणं करेह, करेत्ता एयमाणत्तियं पच्चपिण्हणं ॥

७७. \*तए णं ते कोडुवियपुरिसा सेणिएणं रण्णा एवं वृत्ता समाणा हट्टनुट्ट-चित्त-  
माणदिया पीडमणा परमसोमणस्सिया हरिसवत्त-विदाप्पमाणहियया तमाण-  
त्तियं ° पच्चपिण्हंति ॥

७८. तए णं से सेणिए राया अट्टारससेणि-प्पसेणीओ सट्टावेड, सट्टावेत्ता एवं वयासी-  
गच्छह णं तुव्भे देवाणुप्पिया ! रायगिहे नगरे अट्टिभत्तरवाहिरिए उस्सुंको  
उवकरं अभडप्पवेसं अदंडिम-कुदंडिमं अघरिमं अघारणज्जं अणुद्धयमुड्डं  
अमिलायमल्लदामं गणियावरनाडड्ज्जकलियं अणेगतालावराणुच्चरियं पमुड्डय-  
पक्कीलियाभिरामं जहारिहं 'ठिड्वडियं दसदेवसियं' करेह, कारवेह य,  
एयमाणत्तियं पच्चप्पिण्ह ॥

७९. तेवि तहेव' करेत्ति, तहेव पच्चप्पिण्हंति ॥

८०. तए णं से सेणिए राया वाहिरियाए उवट्टाणसालाए सीहासणवरगए पुरत्थाभि-  
मुहे सण्णसण्णे 'सत्तिएहि य साहस्सिएहि य सयसाहस्सिएहि य दाएहि दलय-  
माणे दलयमाणे' पडिच्छमाणे-पडिच्छमाणे एवं च णं विहरइ ॥

मेहस्स नामादिसवकार (संस्कार) करण-पदं

८१. तए णं तस्स अम्मापियरो 'पढमे दिवसे ठित्तिपडियं' करेत्ति, त्रितिए दिवसे

१. चारगारसोहणं (क); चारगसोहणं (ख, घ);  
चारगारपरिसोहणं (ग) एकस्मिन् हस्त-  
लिखितवृत्त्यादर्शे 'चारगपरिशोधनं' इति  
व्याख्यातमस्ति अपरस्मिंश्च 'चारगारशोधनं'  
इति लभ्यते ।
२. सं० पा०—पच्चप्पिण्ह जाव पच्चप्पिण्हंति ।
३. उस्सुक्कं (क, ग, घ) ।
४. ठिड्वडियं (वृ); वाचनान्तरे—दसदिवसियं  
ठिड्वडियं ।
५. × (ख, ग, घ) ।
६. सएहि साहस्सिएहि य सयसाहस्सिएहि य  
दाएहि भागेहि ° (क); ° जाएहि दाएहि  
भागेहि ° (ख, घ), ° दलमाणे २ (ग);  
वाचनान्तरे—शतिकांश्च इत्यादि यागान्—  
देवपूजा; दायान्—दानानि, भागान्—लब्ध-  
द्रव्यविभागान् इति (वृ) ।
७. जायकम्मं (क, ख, ग, घ, वृ.); निरयाव-  
लियाओ १।१।६० 'ठित्तिपडियं च जहा  
मेहस्स' इति संकेतितमस्ति, तस्याधारेणासौ  
पाठः स्वीकृतः ।

जागरित्यं करेति, तन्निष् दिवसे चंदसुरद्वयं पिपिं" करेति, एवामेव 'निष्पत्ते  
 श्रममुदजायकम्मकरणे' संपत्ते वाग्नाहे' विपुलं अक्षर-वाच-वाचम-नाचमं  
 उच्यतेवाचयेति, उच्यतेवाचयेना मित्त-नाच-निदय-ननय-संवेधि-परियणं वरं च  
 वक्ष्ये गणनायगं-•संज्ञनायग-वाग्नि-नलवर-माच-विच-कोच-विच-मंति-मत्तामंति-  
 गणय-दोवारिय-अमन्त-वेड-पीडमह-नगर-निगम-मेट्टि-मेणावड-सथवाह-दूय-  
 मंधियाने० आसंवेति । तत्रो पन्था एवावा कयवन्तिकम्मा कयकोडये-•संवेन-  
 पायविक्रमा० मथ्यापेकारयिभूनिदा' महामहादयसि भौदयमंदयैम तं विपुलं  
 अमणं पाणं वाचमं माचमं मित्त-नाच-•नियम-नयण-संवेधि-परियणोहि वरं  
 च वक्ष्ये गणनायग-संज्ञनायग-वाग्नि-नलवर-माच-विच-कोच-विच-मंति-मत्तामंति-  
 गणय-दोवारिय-अमन्त-वेड - पीडमह - नगर-मिगम-मेट्टि-मेणावड-सथवाह दूय-  
 मंधियानेहि० नाच अन्नाएमाणा 'विज्ञाएमाणा परिभाएमाणा' परिभुंजमाणा  
 एवं च षं विहरति । जिमित्तननुत्तरागयावि ष षं समाणा धार्यता चाकसा  
 परममुदभूता न मित्त-नाच-निदय-ननय-संवेधि-परियणं वरं च वक्ष्ये गणनायग  
 जाय मंधियाने विपुलेष पुष्प-मंय-मन्नापंकारेणं मवत्तरेति मन्मापेति,  
 मवत्तरेता मन्मापेता एवं वयसी -

अत्रा षं वरं वरम वारयन् मन्मत्परम वेव समाकरय वरवत्तरेणु दोहं  
 पाचभूम्, तं होच षं अरं वाग्म मेहे नामेणं । मन्म वारयन् अन्नापियरो  
 अदमेवात्यं गोपं मुपनिषत्तं नामधेय्य करेति मेहे इ ॥

## मेहस्स लालणपालण-पव

८२. तए णं से मेहे कुमारे पंचवाईपरिगहिए, [तं जहा—गोरवाईए मज्जणवाईए कीलावणवाईए मंडणवाईए अंकवाईए] 'अण्णाहिं ग वड्डीहिं—गुज्जाहिं चिला-ईहिं' 'वामणीहिं वडभीहिं वड्वरीहिं वडसीहिं' 'जोणियाहिं पल्हवियाहिं डिसिणियाहिं' 'थारुणियाहिं' 'लासियाहिं लउसियाहिं' 'दामिलोहिं' 'मिहलोहिं' 'आरवीहिं' 'पुलिदीहिं' 'पवकणीहिं' 'वहलोहिं' 'मुहंडीहिं' 'सवरीहिं' 'पारसीहिं'—'नानादेसीहिं' 'विदेसपरिमंडियाहिं' 'इंगिय-चित्तिय-पट्थिय-वियाणियाहिं' 'सदेस-नेवत्थ-गहिय-वेसाहिं' 'निउणकुसलाहिं' 'विणीयाहिं', 'चेटियानयकवाल-वरिसावर-कंचुउज्ज-महयरग'—'वंद-परिक्खत्ते हत्थाओ हत्थं साहरिज्जमाणे' 'अंकाओ अंकं परि-भुज्जमाणे परिगिज्जमाणे उवलाज्जमाणे' 'रम्मसि मणिकोट्टिमत्तलंसि परंगिज्जमाणे' 'निव्वाय-निव्वाघायंसि गिरिकंदरमल्लीणे व चंपगपायवे मुहंसुहेणं वड्ढइ' ॥

८३. तए णं तस्स मेहस्स कुमारस्स अम्मापियरो अणुपुट्टेणं' नामकरणं च पजेमणं' च पंचकमणं च चोलोवणयं च महया-महया इड्ढी-सक्कार-समुदएणं करंमु ॥

## मेहस्स कलागहण-पदं

८४. तए णं तं मेहं कुमारं अम्मापियरो साइरेगट्टवासजायगं चैव' सोहणंसि तिहि-करण-मुहुत्तंसि कलायरियस्स उवणंति ॥

- |   |  |
|---|--|
| १. असी कोष्ठकवर्ती पाठः व्याख्यांशः प्रतीयते ।  | ११. साहिज्जमाणे (ख, ग, घ) ।  |
| २. चिलाइयाहिं (क, ख, ग, घ, रायपसेणइयं सू० ८०४) ।  | १२. अतोप्रे वृत्ती पाठान्तरस्योल्लेखो विद्यते—<br>उवनच्चिज्जमाणे २ उवगाइज्जमाणे २<br>उवलाज्जमाणे २ उवगूहिज्जमाणे २<br>अवयासिज्जमाणे २ परिवंदिज्जमाणे २<br>परिचुंविज्जमाणे २ । इट्ठव्यम्—(श्रीवाइय-<br>सूत्रस्य परिशिष्टं पृ० १५१); रायपसेणइयं<br>सूत्र ८०४ । |
| ३. पउसियाहिं (ओ० सू० ७०) ।  | १३. परिगिज्जमाणे २ (क, ग) ।  |
| ४. इसिणियाहिं (क, ख, ग) ।   | १४. वद्धति (घ) ।   |
| ५. थारुइणियाहिं (ओ० सू० ७०) ।   | १५. अणुपुट्टं (ख) ।  |
| ६. मुहंडीहिं (ओ० सू० ७०); मुहंडीहिं (राय० सू० ८०४) ।  | १६. एवं जेमणं च एवं चंकमणं च (ख, ग) ।  |
| ७. वामणि [वावणि (ख, ग)] वडभिवव्वरि-<br>वउसिजोणियपल्हविइसिणियाहणिलासिय-<br>लउसियदमिलिसिह्लिआरविपुलिदिपवकणि-<br>वहलिमुहंडिसवरिपारसीहिं (क, ख, ग, घ) । | १७. अतोप्रे 'गवभट्टमे वासे' इति पाठो विद्यते,<br>किन्तु एतत् पाठान्तरं प्रतीयते । 'साइरेगट्ट-  |
| ८. नानादेसी (क, ख, ग) ।   |  |
| ९. युक्त इति गम्यते (वृ) ।  |  |
| १०. महत्तरंग (घ) ।  |  |

८५. तद् यं मे कन्वापरिणु मेतं कुमारं मेहाऽव्यासो गणियमपहाणासो सउपगम्य-  
पञ्चवशासासो वावर्त्तारि कन्वासो मुत्तसो य अत्यसो य कन्वासो य मेहाऽवेऽ निवत्ता-  
वेऽ, तं जहा —

१. मेतं २. गणियं ३. स्यं ४. नद्वं ५. गोयं ६. वाऽयं ७. मन्मयं ८. पौन्यव-  
गयं ९. नमवात्तं १०. ज्वं ११. जणवायं १२. पाणयं १३. अट्टायं  
१४. पौरेक्यं १५. वगमद्वियं १६. यन्निविदि १७. पाणविदि १८.  
नत्तविदि १९. विवेरपविदि २०. नवणविदि २१. अज्जं २२. पतेनियं  
२३. मागदियं २४. गाहं २५. गोहयं २६. निलोयं २७. द्विरणवृत्ति  
२८. नृवणवृत्ति २९. नृणवृत्ति ३०. धामरजविदि ३१. मन्मोपदिक्कमं  
३२. इत्तिकावयं ३३. पुरिसनवयं ३४. इयववयं ३५. मयववयं  
३६. गोणववयं ३७. कृणववयं ३८. उणववयं ३९. वणववयं  
४०. मन्निववयं ४१. मणिववयं ४२. कणववयं ४३. मन्विज्जं  
४४. मन्वाग्गणं ४५. नमरमाणं ४६. वृहं ४७. पणिवृ ४८. वारं  
४९. पणिवरं ५०. वववृहं ५१. मन्ववृहं ५२. मणववृहं ५३. ज्वं ५४.  
नित्तं ५५. नृज्जवृहं ५६. पणिवृहं ५७. मन्विज्जं ५८. वाऽवृहं ५९.  
मन्वात्तं ६०. इमयं ६१. उणववयं ६२. पणुयं ६३. द्विरणवृत्ति  
६४. नृवणवृत्ति ६५. नृणवृत्ति ६६. माणिववृत्ति ६७. पन्ववृत्ति  
६८. कणववृत्ति ६९. मणववृत्ति ७०. मन्विज्जं ७१. मन्वाग्गणं ७२. मन्वाग्गणं वि ॥

८६. तद् यं मे कन्वापरिणु मेतं कुमारं मेहाऽव्यासो गणियमपहाणासो सउपगम्य-  
सासासो वावर्त्तारि कन्वासो मुत्तसो य अत्यसो य कन्वासो य मेहाऽवेऽ निवत्ता-  
वेऽ, मेहाऽवेऽ निवत्तावेऽ मन्वाग्गणं उजयेऽ ॥

८७. तद् यं मेऽस्य कुमारस्य मन्वापरिणु तं कन्वापरिणु नृमेऽ यववेऽ विउवेऽ  
मं मन्वाग्गणं मन्वाग्गणं मन्वाग्गणं मन्वाग्गणं मन्वाग्गणं मन्वाग्गणं मन्वाग्गणं  
मन्वाग्गणं मन्वाग्गणं मन्वाग्गणं मन्वाग्गणं मन्वाग्गणं मन्वाग्गणं मन्वाग्गणं ॥

विहिष्पगारदेसीभासाविसाराए' गीगरुडे मंगध्वनदुसुसने हगजोही गयजोही  
रहजोही बाहुजोही बाहुष्पमद्री अलंभोगममध्ये साहसिए वियालचारी जाए  
यावि होत्या ॥

### मेहस्स पाणिग्गहण-पदं

८६. तए णं तस्स मेहस्स कुमारस्स अम्माणियरो मेहं कुमारं वावचारि-कलापंघियं  
जाव' वियालचारि' जायं पारंति, पाणित्ता अट्टपासायवाडिमाणं कारंति—  
अव्भुग्गयमूसियं' पहसिए विव मणि-कणग-रयण-भत्तिचित्ते वाउड्ढय-विजय-  
वेजयंती-पडाग-छत्ताइच्छतकलिए तुंगे गणतलमभिलंघमाणसिहरे जालंतर-  
रयण' पंजरम्मिलिए' व्व मणिकणगशूभियाणं वियसिय-सयवत्त-पुंडरीए  
तिलयरयणद्धचंदच्चिए' नाणामणिमयदामालंकिए अंतो व्हि च सण्हे  
तवणिज्ज-रुइल'-वालुया-पत्थरे सुहफासे सस्सिरीयरुवे पासाईए' •दरिसणिग्गे  
अभिरुवे ° पडिरुवे ।

एगं च णं महं भवणं कारेति—अणोगखंभसयसन्निविट्टं लीलट्टियसालभंजियागं  
अव्भुग्गयसुकयवइरवेइयातोरण"-वररइयसालभंजिय"-सुसिलिट्ट - विसिट्ट-लट्ट-  
संठिय-पसत्थ-वेरुलियखंभ-नाणामणिकणगरयण-खचियउज्जलं वहराम-सुविभत्त-  
निचियरमणिज्जभूमिभागं ईहामिय"-उसभ-तुरय-नर-भगर-विहग-वालग-  
किन्नर-रुह-सरभ-चमर-कुंजर-वणलय-पउमलय °-भत्तिचित्तं खंभुग्गयवयरवेइ-  
यापरिगयाभिरामं विज्जाहर-जमल-जुयल-जंतजुत्तं पिव अच्चीसहस्समालणीयं"  
रुवगसहस्सकलियं भिसमाणं" भिट्ठिभसमाणं चक्खुल्लोयणलेसं" सुहफासं  
सस्सिरीयरुवं कंचणमणिरयणशूभियागं नाणाविह-पंचवण-घंटापडाग-परिमडि-

१. अट्टारसविह ° (ख); अट्टारसदेसीभासा ° (वृपा); ° चंदचित्ता (राय ° सू ° १३७) ।  
(ओ ° सू ° १४८); अट्टारसविहदेसिष्पगार-  
भासा ° (राय ° सू ° ८०६) । अष्टादश-  
विधेः प्रकाराः प्रवृत्तिप्रकाराः अष्टादशभिर्वा  
विविभिर्भेदः प्रचारः प्रवृत्तिर्यस्या (वृ) ।  
२. ना ° १।१।८८ ।  
३. वियालचारी (क) ।  
४. अत्र च द्वितीयावहुवचनलोपो दृश्यः (वृ) ।  
५. द्वितीयावहुवचनलोपो दृश्यः (वृ) ।  
६. पंजरम्मिलिय (ख, ग) ।  
७. ° यंदच्चिए (क, ख, ग); ° चंदचित्ते  
८. रुइर (ग) ।  
९. सं ° पा °—पासाईए जाव पडिरुवे ।  
१०. ° वतिरवेतिया ° (ग); ° वरवरइरवेइया  
(राय ° सू ° १७) ।  
११. सालभंजिया (क, ख, घ) ।  
१२. सं ° पा °—ईहामिय जाव भत्तिचित्तं ।  
१३. ° मीणं (क, ख, ग) ।  
१४. ° मालिणीयं (ख) ।  
१५. ° लेस्सं (क, ग) ।

यागसिद्धरं यवन्त-मिच्छिनिकयमं विणिग्मुयंतं नाउल्लोडयमहित्यं जाव' गंधयद्विभूयं  
पाशार्थं दरिद्रनिपजं श्रिभन्चं ददित्वं ॥

६०. तप षं तरन मेहृत्सु कुमारस्य दम्भापिपरो मेहं कुमारे नाहृषसि तिहि-करण-  
नवपत्त-मुहुनेमि सरिसिवापं गरिव्यवापं सरित्तवापं सरित्तवावप-रुव-  
जावप-मुषोवयोवापं सरिसाहृत्तो रावकुनेहितो श्राणित्तवापं पसाहृपदृम-  
श्रित्तववृ-सोवयव-संगतमुषपिहृ अदृहि राववदकन्नाहि सति एगदिवयेपं  
पापि निहृत्तिसु ॥

पीडवाप-पदं

६१. तप षं तरन मेहृत्सु दम्भापिपरो दसं एमारचं पीडवापं दलरनि—अदृ हिरप-  
पांटीयो अदृ सुवपनकोटीयो गाहापुनारेण भाणियव्यं जाव' पेशपनारिवाप्रो,

गायाई अणुलिपिंति, अणुलिपित्ता नागा-नीमासवाग-वोर्भं' \*वरणगरपट्टगु-  
गायं कुसालणरपरंसितं अस्सलालापेलवं श्रेयापरियकणमगाचिगंतकम्मं० हंस-  
लवखणं पडसाडगं नियंसंति, हारं पिणद्धेंति, अद्दहारं पिणद्धेंति, एवं—एगावलि  
मुत्तावलि कणगावलि रयणावलि पालवं पायपलवं कट्टगाइं तुडिगाइं  
कैऊराइं अंगयाइं दसमुद्धियाणंतयं कट्टिगुनायं कुंडलाइं चूडामणिं रयणुककडं  
मउडं—पिणद्धेंति, पिणद्धेत्ता' गंधिम-वेह्मि-पूरिम-संधाउमणं'—चउड्विहणं  
मल्लेणं कप्पकखणं पिव अलंकिय-विभूसियं करंति ॥

### मेहस्स अभिनिवत्तमणमहस्सव-पदं

१२६. तए णं से सेणिए राया कोडुंविद्यपुरिसे सद्दवेइ, सद्दवेत्ता एवं वयासी—  
खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! अणेगखंभसय-सण्णिविट्टं लीलद्विय-सालभंजियायं  
ईहामिय-उसभ-तुरय-नर-मगर-विहग-वालग-किन्नर-कग-सरभ-चमर-कुंजर-  
वणलय-पउमलय-भत्तिचित्तं घंटावलि-महुर-मणहरसरं सुभ-कंत-दरिसणिज्जं  
निउणोविय-मिसिमिसंत-मणिरयणघंटियाजालपरिकित्तं अठभुग्गय-वइरवेइया-  
परिगयाभिरामं विजजाहरजमल-जंतजूत्तं पिव अच्चीसहस्समालणीयं' ह्वग-  
सहस्सकलियं भिसमाणं' भिठिभसमाणं चक्खुल्लोयणलेस्सं मुहफासं सस्सिरीयरुवं  
सिग्घं तुरियं चवलं वेइयं पुरिससहस्सवाहिणीयं सीयं उवट्टवेह ॥
१३०. तए णं ते कोडुंविद्यपुरिसा हट्टुट्टुआ अणेगखंभसय-सण्णिविट्टं जाव' सीयं  
उवट्टवेति ॥
१३१. तए णं से मेहे कुमारे सीयं दुहहइ, दुहहित्ता सीहासणवरगाए पुरत्याभिमुहे  
सण्णिसण्णे ॥
१३२. तए णं तस्स मेहस्स कुमारस्स माया ण्हाया कयवलिकम्मा जाव' अप्पमहग्घा-

१. सं० पा०—नासानीसासवायवोर्भं जाव हंस-  
लवखण ।
२. एतत् पदं वृत्तौ नास्ति व्याख्यातम् ।
३. × (ख, ग) ।
४. पिणद्धेत्ता दिव्वं सुमणदामं पिणद्धति,  
दहरमलयमुगंधिएं गंधे पिणद्धेंति । तए णं  
तं मेहं कुमारं (क, ख, ग); 'घ' प्रति विहाय  
सर्वासु प्रतिपु पाठान्तररूपेणोद्धृतः पाठो  
लभ्यते । 'घ' प्रती एवं पाठोस्ति—'दिव्वं  
सुमणदामं पिणद्धेंति । तते णं तं मेहं कुमारं  
गंधिम०' । किन्तु भगवत्यां (६।२३)

- आचारचूलायां (१५।२८) च असी पाठः  
अतीव व्यवस्थितरूपेण प्राप्तोस्ति, अतः  
तयोराधारेण अत्रापि पाठः स्वीकृतः । अनेन  
प्रस्तुतसूत्रे जातस्य पाठमिश्रणस्य परिहारः  
सहजमेव जातः ।
५. संजोडमेणं (ख) ।
६. ० मालिणीयं (क, ख, ग) ।
७. मिसमीणं (ख, ग) ।
८. ना० १।१।२६ ।
९. ना० १।१।१२७ ।

भरण्यान्वित्यमरीच सीर्षं दुराहट, दुराहिन्ता मेहेरुस कुमाररुस वाहिवापाने भृश-  
नर्णनिं निगीयट ॥

१३३. तम् षं वरुस मेहेरुस कुमाररुस खंयथाई रयहरणं न पच्छिणहं न गताय सीर्षं  
दुराहट, दुराहिन्ता मेहेरुस कुमाररुस वामवामे भृशानर्णनिं निगीयट ॥

१३४. तम् षं वरुस मेहेरुस कुमाररुस विट्टुषो एसा वरुवर्णो निगारागारवामेसा  
संगव-नय-द्विनिय-भणिय-वेद्विय-विनास - संदाय-नदाय - निउण-वृणोवय-वय-वा  
यामेनवजमन-वयन-वेद्विय-पद-वृणाय-योण-वदय-सोदिय-वयो-दुस विम-नय-  
कुरे-वयमानं सकोरेरुमरुवामे वरुनं वायवर्णं गताय सनीनं योहारेभाणी-  
योहारेभाणी चिट्टुट ॥

१३५. तम् षं वरुस मेहेरुस कुमाररुस दुरे वरुवर्णो निगारागारवामेसायो \*संगव-  
नय-द्विनिय-भणिय-वेद्विय-विनास-संदाय-नदाय-निउण-वृणोवय-वय-कुमरा रो सीर्षं  
दुराहनि, दुराहिन्ता मेहेरुस कुमाररुस वरुयो पानं नायासनि-वृणय-वय-  
सकोरेरुवयवाम-वयन-वेद्विय-विनास-संदाय-नदाय-निउण-वृणोवय-वय-कुमरा रो सीर्षं  
दुराहट, दुराहिन्ता मेहेरुस कुमाररुस वरुयो वरुवर्णो निगारागारवामेसायो \*संग-  
वय-नय-द्विनिय-भणिय-वेद्विय-विनास-संदाय-नदाय-निउण-वृणोवय-वय-कुमरा रो सीर्षं  
दुराहनि-वृणय-वय-सकोरेरुवयवाम-वयन-वेद्विय-विनास-संदाय-नदाय-निउण-  
वृणोवय-वय-कुमरा रो सीर्षं योहारेभाणी चिट्टुट ॥

१३६. तम् षं वरुस मेहेरुस कुमाररुस एसा वरुवर्णो निगारागारवामेसा \*गारवामेसा संगव-  
नय-द्विनिय-भणिय-वेद्विय-विनास-संदाय-नदाय-निउण-वृणोवय-वय-कुमरा रो सीर्षं  
दुराहट, दुराहिन्ता मेहेरुस कुमाररुस वरुयो वरुवर्णो निगारागारवामेसा \*गारवामेसा संगव-  
नय-द्विनिय-भणिय-वेद्विय-विनास-संदाय-नदाय-निउण-वृणोवय-वय-कुमरा रो सीर्षं  
दुराहनि-वृणय-वय-सकोरेरुवयवाम-वयन-वेद्विय-विनास-संदाय-नदाय-निउण-  
वृणोवय-वय-कुमरा रो सीर्षं योहारेभाणी चिट्टुट ॥

१३७. तम् षं वरुस मेहेरुस कुमाररुस एसा वरुवर्णो निगारागारवामेसा \*गारवामेसा संगव-  
नय-द्विनिय-भणिय-वेद्विय-विनास-संदाय-नदाय-निउण-वृणोवय-वय-कुमरा रो सीर्षं  
दुराहट, दुराहिन्ता मेहेरुस कुमाररुस वरुयो वरुवर्णो निगारागारवामेसा \*गारवामेसा संगव-  
नय-द्विनिय-भणिय-वेद्विय-विनास-संदाय-नदाय-निउण-वृणोवय-वय-कुमरा रो सीर्षं  
दुराहनि-वृणय-वय-सकोरेरुवयवाम-वयन-वेद्विय-विनास-संदाय-नदाय-निउण-  
वृणोवय-वय-कुमरा रो सीर्षं योहारेभाणी चिट्टुट ॥

१३८. तम् षं वरुस मेहेरुस कुमाररुस विम षं वरुवर्णो निगारागारवामेसा \*गारवामेसा संगव-  
नय-द्विनिय-भणिय-वेद्विय-विनास-संदाय-नदाय-निउण-वृणोवय-वय-कुमरा रो सीर्षं  
दुराहट, दुराहिन्ता मेहेरुस कुमाररुस वरुयो वरुवर्णो निगारागारवामेसा \*गारवामेसा संगव-  
नय-द्विनिय-भणिय-वेद्विय-विनास-संदाय-नदाय-निउण-वृणोवय-वय-कुमरा रो सीर्षं  
दुराहनि-वृणय-वय-सकोरेरुवयवाम-वयन-वेद्विय-विनास-संदाय-नदाय-निउण-  
वृणोवय-वय-कुमरा रो सीर्षं योहारेभाणी चिट्टुट ॥



१३६. \*तए णं ते कोडुंविद्यपुरिसा गरिसयाणं गरिचयाणं गरिक्वयाणं एमाभरण-  
गहिय-निज्जोयाणं कोडुंविद्यवरतरुणाणं महस्सं<sup>०</sup> मदायेति ॥
१४०. तए णं ते कोडुंविद्यवरतरुणपुरिसा मेणियम्म रण्णो कोडुंविद्यपुरिमेहिं सद्दविया  
समाणा हट्ठा ण्हाया जाव' [मव्वालंकारविभूमिया ?] एमाभरण-गहिय-  
णिज्जोया जेणामेव मेणिए राया तेणामेव उवागच्छंति, उवागच्छिता मेणियं  
रायं एवं वयासी—संदिमह णं देवाणुप्पिया ! जं णं अग्गेहिं करणिज्जं ॥
१४१. तए णं से सेणिए राया तं कोडुंविद्यवरतरुणमहस्सं गवं वयासी—गच्छह णं  
तुब्भे देवाणुप्पिया ! मेहस्स कुमारस्स पुरिससहस्सवाहिणीयं सीयं परिवहेह ॥
१४२. तए णं तं कोडुंविद्यवरतरुणसहस्सं मेणिएण रण्णा एवं वुत्तं मंतं हट्ठं मेहस्स  
कुमारस्स पुरिससहस्सवाहिणीयं सीयं परिवहेह ॥
१४३. तए णं तस्स मेहस्स कुमारस्स पुरिससहस्सवाहिणीयं सीयं दुक्खस्स समाणस्स इमे  
अट्ठदुमंगलया तप्पढमयाए पुरओ अहाणुपुव्वीए संपत्थिया, तं जहा—सोवत्थिय'-  
सिरिवच्छ - नंदियावत्त - वद्धमाणग-भद्दासण - कलस-मच्छ-द्रप्पणया जाव'

१. ना० १।१।८१ ।

२. अत्र जाव शब्दस्याग्रिमो पाठो नास्ति सूचितः,  
किन्तु प्रसंगानुसारेण पूतिकृत एव पाठो  
युज्यते ।
३. °वाहिणीं (ग, घ) ।
४. °वाहिणीं (ख); वाहिणी (ग) ।
५. आणुपुव्वीए (घ) ।
६. सोत्थिय (ग) ।
७. (१) तयाणंतरं च णं पुण्यकलसांभगारं  
दिक्वा य छत्तपडागा सचामरा दंसण-रइय-  
आलोयदरिसणिज्जा वाउद्धुयविजयवेजयंती  
य ऊसिया गणतलमणुलिहंती पुरओ अहाणु-  
पुव्वीए संपट्टिया ।  
(२) तयाणंतरं च णं वेरुलियभिसंतविमलदंडं  
पलंबकोरेंट मल्लदामोवसोहियं चंदमडलनिभं  
विमलं आयवत्तं पवरं सीहासणं च मणिरयण-  
पायवीढं सभाउयाजुयसमाउत्तं वहुकिकर-  
कम्मकर-पुरिस-पायत्त-गरिक्खित्त पुरओ  
अहाणुपुव्वीए संपट्टियं ।

- (३) तयाणंतरं च णं वहवे लट्टिग्गाहा कुंत-  
ग्गाहा चावरग्गाहा चामरग्गाहा, पोत्वयग्गाहा  
फलग्गाहा पीडयग्गाहा वीणग्गाहा कूवग्गाहा  
हडणग्गाहा पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्टिया ।  
(४) तयाणंतरं च णं वहवे दंडिणो मुंडिणो  
छिहंडिणो पिच्छिणो हासकरा डमरकरा  
चाडुकरा कीडंता य वायंता य गायंता य  
नच्छंता य हसंता य सोहंता य साविता य  
रवसंता य आलोयं च करेमाणा जयसदं च  
पउंजमाणा पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्टिया ।  
(५) तयाणंतरं च णं जच्चाणं तरमत्तिलहाय-  
णाणं थासग-अहिलाण-चामर-गंड-परिमंडिय-  
कडीणं किकरवरतरुणपरिग्गहियाणं अट्ठसयं  
वरतुरगाणं पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्टियं ।  
(६) तयाणंतरं च णं ईसीदंताणं ईसीमत्ताणं  
ईसीतुंगाणं ईसीउच्छंगविसाल-धवलदंताणं  
कंचणकोसी-पविट्टदंताणं कंचण-मणिरयण-  
भूसियाण वरपुरिसारोहगसंपउत्ताणं अट्ठसयं

बह्वे अत्यधिया' \*कामधिया भोगधिया ज्ञानधिया किञ्चिदधिया कानेधिया  
 कारुधाधिया रोगिया चक्रिया संगधिया मुहुर्गन्धिया वरुमाना पूगमाधिया  
 मंथियमणा ताहि इट्टाहि कंवाहि पिनाहि मयपनाहि मयामाहि मयाभिरमाहि  
 द्विययममणिज्जाहि वग्गुहि जयविजयमंगलनाहि \* अणवरयं उभिनंत्वा य  
 अभियुण्णंता य एवं वनाणी - जय-जय नंदा ! जय-जय भद्र !

जय-जय नंदा ! भद्रं ते । अजितं जिजाहि उंठियाउं, जितं च पात्तेहि ससस-  
 पम्मं, जियविग्घो वि य वनाहि तं देव ! निदिमग्गे, गित्ताहि रामदीनमात्तं  
 तयेण पित्त-भणिय'-वदकण्ठो. महाहि य अट्टकम्मसत्तु भाषेणं उरमेणं सुयोणं  
 अणमनो, पायव विविमिरमणत्तरं वैदत्तं ताणं, मण्ड य मोक्कं पम्मं पयं

सासयं च अयलं, 'हंता परीसहचमूणं', अर्थात् परीसहोवसगणं, धम्मे ते अविग्घं भवउ त्ति कट्टु पुणो-पुणो मंगल-अयसइ पउजंति ॥

१४४. तए णं से मेहे कुमारे रायगिहुरस नगरसस मग्गमज्जेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छिता जेणव गुणसिए चेट्ठा तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छिता पुरिसमहस्सावाहिणीओ सीयाओ पच्चोरुहइ ॥

सिस्सभिवख दाण-पदं

१४५. तए णं तस्स मेहस्स कुमारस्स अम्मापियरो मेहं कुमारं पुरओ कट्टु जेणामेव समणे भगवं महावीरे तेणामेव उवागच्छंति, उवागच्छिता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करंति, करेत्ता वंदंति नमंस्संति, वंदित्ता नमंस्सित्ता एवं वयासी—एस णं देवाणुप्पिया ! मेहे कुमारे अम्हं एगे पुत्ते इट्ठे कंते' एपिए मणुण्णे मणामे थेज्जे वेसासिए सम्माणं वहुमाए अणुमाए भंडकरंङ्ग-समाणे रयणे रयणभूए० जीवियऊसासाए हिययणंदिजणए उंवरपुप्फं पिव दुल्लहे सवणयाए, किमंग पुण दरिसणयाए ?

से जहान्तामए उप्पले ति वा पउमे ति वा कुमुदे ति वा पंके जाए जले संबड्ढिए नोवलिप्पइ पंकरएणं नोवलिप्पइ जलरएणं, एवामेव मेहे कुमारे कामेसु जाए भोगेसु संबड्ढिए नोवलिप्पइ कामरएणं नोवलिप्पइ भोगरएणं । एस णं देवाणुप्पिया ! संसारभउच्चिग्गे भीए जम्मणं-जर-मरणणं, इच्छइ देवाणु-प्पियाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए । अम्हे णं देवाणु-प्पियाणं सिस्सभिवखं' दलयामो । पडिच्छंतु णं देवाणुप्पिया ! सिस्सभिवखं ॥

१४६. तए णं समणे भगवं महावीरे मेहस्स कुमारस्स अम्मापिऊहि एवं वुत्ते समाणे एयमट्ठं सम्मं पडिसुणेइ ॥

१४७. तए णं से मेहे कुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ' उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमइ, सयमेव आभरण-मल्लालंकारं ओमुयइ ॥

१४८. तए णं तस्स मेहस्स कुमारस्स माया हंसलवखणेणं पडसाडएणं' आभरण-मल्लालंकारं पडिच्छइ, पडिच्छित्ता हार-वारिधार-सिंदुवार-छिन्तमुत्तावलि-प्पगासाइं असूणि विणिम्मयमाणी-विणिम्मयमाणी रोयमाणी-रोयमाणी कंद-माणी-कंदमाणी विलवमाणी-विलवमाणी एवं वयासी—जइयव्वं जाया !

१. हत्वा परीसह-चमू—परीपहसैन्यम् ।  
णमित्यलंकारे अथवा कथंभूतः त्वम्, हंता—  
विनाशकः परीपह-चमूनाम् (वृ) ।  
२. पच्चोरुभइ (ख, ग) ।  
३. सं० पा०—कंते जाव जीवियऊसासए ।

४. संबुड्ढे (ख, ग) ।  
५. जम्म (ख, ग) ।  
६. सीसभिवख (क) ।  
७. × (क, ग, घ) ।  
८. पडग० (ख) ।

पडियव्वं जाया ! पराकमिवव्वं जाया ! अस्मि न पं अट्टे नो पमात्तव्वं ।  
अस्मिं पं एमेव मग्गे भवत्तं त्ति कट्ठं मेहत्तं कुमारत्तं अस्मात्तिपरो समणं  
भगवं महावीरं वंदंति नमंमंति, वंदिता नमंमिन्ता जामेय दितां पाउव्वभूया  
तामेव दितां पडियया ॥

मेहरस पदवज्जागहण-पदं

१४८. तए पं मे मेहे कुमारे मग्गेय पंनमुट्ठियं नोयं करेत्तं, करेत्ता वेणामेव सक्के  
भग्गं महावीरं वेणामेव उदामत्तत्तं, उदामत्तत्तं समणं भग्गं महावीरं  
तिक्कव्वंतां सायात्तिय-पयात्तियं करेत्तं, करेत्ता वंदंत्तं नमंमत्तं, वंदिता नमंमिन्ता  
एवं वयातो - आत्तिन्न पं भवे ! नोए, पत्तिने पं भवे ! नोए, पत्तिने पं भवे !  
नोए अनाए भरणेण य ।

मे अद्वान्तमए कट्टं गाहावर्त्तं सत्तावेसि भिव्यायभावानि के सत्थ भंते अत्तं  
एएभारे' मीत्तव्वमए व सत्ताय आत्ताए एएवं अत्तवत्तमत्तं - एए मे निक्कव्वित्तं  
समणं 'पत्तत्ता पुत्र य' नोए विपणं सुहाए समणं निरमेणाए आत्तवत्तियत्तं  
भविन्ता । एएमेव मग्गं वि एए आत्तवत्तं इट्टे कत्ते विए मत्तव्वं सत्ताय । एए  
मे निक्कव्वित्तं समणं संतावत्तियत्तं कत्तं भविन्ता । नं उत्तत्तियं पं विद्यात्तियत्तं  
सग्गेय पत्तवत्तियं सग्गेय मत्तवत्तियं सग्गेय विद्यात्तियं सग्गेय विद्यात्तियं  
सग्गेय आत्तवत्तियत्तं-विद्यात्तियत्तं-विद्यात्तियत्तं-विद्यात्तियत्तं-विद्यात्तियत्तं-विद्यात्तियत्तं-विद्यात्तियत्तं

## मेहस्स मणो-संकिलेस-पदं

१५२. जद्विसं' च णं मेहे कुमारे' मुडे भवित्ता अगाराया अणगारियं पव्वइए, तस्स णं दिवसस्स पच्चावरण्हकालगमयसि' ममणाणं निग्गंथाणं अहारादणियाए' सेज्जा-संधारणमु विभज्जमाणेणु मंहुकुमाररगं दारमुं' सेज्जा-संधारण जाए यावि होत्था ॥

१५३. तए णं समणा निग्गंथा पुच्चरत्तावरत्तकालगमयसि वायणाए पुच्चणाए परियट्ठणाए धम्माणुजोग्गित्ताए य उच्चारस्स वा' पासवणरम वा' अट्ठगच्छमाणा य निग्गच्छमाणा य अप्पेगइया मेहं कुमारे' ह्त्थेहि संघट्ठेति 'अप्पेगइया पाएहि संघट्ठेति अप्पेगइया सीमे संघट्ठेति अप्पेगइया पोट्ठे संघट्ठेति अप्पेगइया कार्यसि संघट्ठेति' अप्पेगइया ओल्लंइति अप्पेगइया पोल्लंइति अप्पेगइया पाय-रय-रेणु-गुडियं करेति । एमहालियं' च रयणि' मेहे कुमारे नो संचाएइ सणमवि अच्चि' निमीलित्ताए ॥

१५४. तए णं तस्स मेहस्स कुमारस्स अयमेयाह्वे अज्जभत्तिआए' 'चित्तिए पत्थिए मणो-गए संकप्पे' समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं सेणियस्स रण्णो पुत्ते धारिणीए देवीए अत्तए मेहे' 'इट्ठे कंते पिए मणुण्णं मणामे थेज्जे वेसासिए सम्मए बहुमए अणुमए भंडकरंडगसमाणे रयणे रयणभूए जीविय-उस्साराए हियय-णंदि-जणणे उंवर-पुफं व दुत्तलहे' सवणयाए' । तं जया णं अहं अगारमज्जभावसामि' तथा णं मम समणा निग्गंथा आढायंति परियाणंति' सक्कारेति सम्माणंति, अट्ठाइं हेऊइं पसिणाइं कारणाइं वागरणाइं' आइक्खंति, इट्ठाहि कंताहि वग्गुहि आल-वेति संलवेति । जप्पभिइं च णं अहं मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए, तप्पभिइं च णं मम समणा निग्गंथा नो आढायंति' 'नो परियाणंति नो सक्कारेति नो सम्माणंति नो अट्ठाइं हेऊइं पसिणाइं कारणाइं वागरणाइं आइक्खंति,

१. जं दिवसं (घ) ।

२. अणगारे (क) ।

३. पुच्चा' (क, ग, घ) ।

४. आहारातिणियाए (ख, ग) ।

५. मेहस्स अणगारस्स (क) सर्वत्र ।

६. दारमूले (क, ख) ।

७, ८. य (क, ख, ग, घ) । १८६ सूत्रस्य आधारेण अत्र 'वा' इति पाठो गृहीतः ।

९. सं० पा०—एवं पाएहि सीसे पोट्ठे कार्यसि ।

१०. एवमहा० (क, घ); एयमहा० (ग) ।

११. रयणी (क, घ) ।

१२. अच्छी (ख) ।

१३. सं० पा०—अज्जभत्थिए जाव समुप्पज्जित्था ।

१४. सं० पा०—मेहे जाव सवणयाए ।

१५. समणयाए (क, ख, ग) ।

१६. 'मज्जंवासामि (क); 'मज्जेवसामि (ग); अगारमज्जे आवसामि (वृषा) ।

१७. परिजाणंति (ग) ।

१८. वाकरणाइं (क, ख, ग) ।

१९. सं० पा०—आढायंति जाव संलवेति ।

नो इष्टाहि कंताहि वरगूहि आलवेति ० मंलवेति । अदुनरं च णं ममं समया  
 निगमथा रासो पृथ्वरतावरत्नकालसमवेति वावणाए पृच्छणाए 'परिवट्टणाए'  
 घम्भाणुजोगचिताए य उच्चारस्त वा पासवणस्त वा अजगन्तमाणा य निग-  
 च्छमाणा य अण्णगइया हृत्थोह संघट्टेति अण्णगइया पाण्हि मयट्टेति अण्णगइया  
 सीने संघट्टेति अण्णगइया पोह्ठे संघट्टेति अण्णगइया कायसि मयट्टेति अण्णगइया  
 अण्णंतेति अण्णगइया पोण्ठेति अण्णगइया पाय-रय-रेण-सुट्टियं करेति ० । एम-  
 हातियं न णं रत्ति अहं नो संचाण्णि अन्दि निमित्तान्तेणए [ निमीणिणाए ? ] ।  
 तं सेयं गत्तु मज्जा कल्लं पाडण्णभायाए रयणीए जाव' उट्टियमि मूरे महत्त-  
 रग्गिम्मि दिणमरे तेयता जवन्ते समणं भगवं महावीरं आपुन्दिता पुणरवि  
 अणारमज्जावगित्तए त्ति कद्दू एवं संघेह्ठे. संघेहेसा अट्ट-पुट्ट-वसट्ट-भाणवणए  
 निरयणट्टियं न णं तं रयणि मवेह्ठे, मवेह्ठेसा कल्लं पाडण्णभायाए  
 गुणिमत्ताए रयणीए जाव' उट्टियमि मूरे महत्तरग्गिम्मि दिणमरे तेयता जवन्ते  
 जेणव समणं भगवं महावीरं तेणध' उवागन्तए, उवागन्दिता समणं भगवं  
 महावीरं निक्खुतो आयाहिण-पयाहिणं करेह, करेसा संघट्टे समंघट्टे जाव'  
 पज्जयासए ॥

समणा निरगंथा आदायति' •परियाणंति सवतरेनि मग्गाणंनि अट्टादं हेज्जं  
 पसिणाइं कारणाइं वागरणाइं आडवर्गात्ति, उट्टादिं कंदाहिं वग्गुदिं आलवेत्ति  
 संलवेत्ति ° । जप्पभिइं च णं मूढे भवित्ता अगाराओ अणगाणियं पव्वयामि  
 तप्पभिइं च णं ममं समणा निरगंथा नो आद्यायंति जानं संलवेत्ति । अट्टुत्तरे च  
 णं ममं समणा निरगंथा राओ पुट्टवरस्तावरत्तकाल्लममयंमि अणंगइया जाव'  
 पाय-रय-रेणु-गुडियं करेत्ति । तं मेयं मनु मम कल्लं पाळपभायाए रयाणए  
 जाव' उट्टियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि द्विणयरे तेयसा जलंते समणं भगवं  
 महावीरं आपुच्छित्ता पुणरवि अगारमज्जे आवसित्तए ति कट्टु एयं संपेहेसि,  
 संपेहेत्ता अट्ट-दुहट्ट-वसट्ट-माणसगए' •निरयपडिक्कियियं च णं तं ° रयणि खवेसि,  
 खवेत्ता जेणामेव अहं तेणामेव हव्वमागए ।  
 से नूणं मेहा ! एसा अत्थे समत्थे ।  
 हंता अत्थे समत्थे" ॥

भगवया सुमेरूपभ-भवनिरुचण-पदं

१५६. एवं खलु मेहा ! तुमं इओ तच्चे अइए भवग्गहणे वेयइट्टगिरिपायमूले वणयरेहि  
 निव्वत्तियनामधेज्जे सेए संख-उज्जल-विमल-निम्मल-दहिघण-गोखीर-फेण-  
 रयणियरप्पयासे सत्तुस्सेहे नवायए दसपरिणाहे सत्तंगपइट्टिए 'सोम-सम्मिए'  
 सुहवे' पुरओ उदग्गे समूसियसिरे सुहासणे पिट्टओ वराहे अइयाकुच्छीं अच्छिइ-  
 कुच्छी अलंवकुच्छी पलंवलंवोदराहरकरे" धणुपट्टागिति-विसिट्टुपुट्टे अल्लीण-  
 पमाणजुत्त-वट्टिय-पीवर-गत्तावरे" अल्लीण-पमाणजुत्तपुच्छे पडिपुण-सुचारु-  
 कुम्मचलणे पंडुर" सुविसुद्ध-निद्ध-निरुवहय-विसत्तिनहे छदंते सुमेरूपभे नाम  
 हत्थिराया होत्था ॥
१५७. तत्थ णं तुमं मेहा ! वहीहि हत्थीहि य हत्थिणियाहि य लोट्टएहि य लोट्टियाहि

१. सं० पा०—आदायति ° ।

२. ना० १।१।१५४ ।

३. ना० १।१।१५३ ।

४. ना० १।१।२४ ।

५. सं पा०—अट्टुहट्टवसट्टमाणसगए जाव  
 रयाण ।

६. अट्टे समट्टे हंता अट्टे समट्टे [व्वचित्] ।

७. समे सुसंठिए (वृ); सोम-सम्मिए (वृषा) ।

८. वृत्तो नास्ति व्याख्यातः ।

९. अतिया ° (ग, घ) ।

१०. अलंव ° (वृ); पलंव ° (वृषा) ।

११. अतोमे वृत्तो वाचनान्तरस्य निर्देशोस्ति—  
 अभ्युदगत-मुकुल-मल्लिका-धवलदन्तः, आना-  
 मित-चाप-ललित-संवेल्लितायशुंडः । उपाशक-  
 दशाया—(२।२८) भिदं विशेपणद्वयं मूलपाठे  
 विद्यते—अवभुग्गय - मउल-मल्लिया- विमल-  
 धवलदंतं ° आणामिय-चाव-ललिय-संवेल्लि-  
 यग्गसोंडं ।

१२. पंडर (क, च) ।

यं कालभाण्डि यं कालभियाहि यं नहि संपरिवृष्टे हृदयमहृदयनाथं वेणुं पाण्डुं  
पट्टवणं जूह्वरे वंदयस्विवृष्टणं, अणोति च वृहणं एकल्लाणं हृदयकलभाणं  
आहेवचनं • पारेवचनं नामितं भदितं महत्तरगत आणा-ईमर-भेषावचनं कते-  
माणे पानेमाणे • विहरति ॥

११८. नमो णं नुमं मेहा ! निचवपवमने सटं पलवित कदणरटं मोहणमोने (मयितके  
कामभोगनिसिणं) बह्राहे ह्यर्वाहि यं • हृदयिणियाहि यं लोड्डुगहि यं लोड्डुगियाहि  
यं कालभाण्डि यं कालभियाहि यं नहि • संपरिवृष्टे वेयवृद्धिनिरिपायमुने निरीनु  
यं दरीनु यं कुहरेनु यं कंदरागु यं उज्जारेनु यं निजारेनु यं विमरगुं यं  
गडुगुं यं पल्लवेनु यं चिल्लवेनु यं कडवेनु यं कडवपल्लवेनु यं नरीनु यं विम-  
रीनु यं टंकेनु यं कूटेनु यं सिहरेनु यं पत्तवेनु यं मनेनु यं माणिसुं यं काणणेनु  
यं वषंनु यं वषणंटेनु यं वषणरटंनु यं नरीनु यं नदीकल्लेनु यं जरेनु यं मगनेनु  
यं नावीनु यं पोतगरणीनुं यं दीहिणागुं यं गुजांतिणागुं यं नरेनु यं नरातिणागुं  
यं नरतरपतिणागुं यं वषावरेहि दिन्नधियारे बह्राहे ह्यर्वाहि यं जाय नहि  
संपरिवृष्टे बह्राहिविहृतत्पल्लव-पडरपाणियवणं • निचवप निचवपने सुदंमुनेण  
विहरति ॥

११९. नमो णं नुमं मेहा—अपवया" कयाट पाडम-विरिहार-मरट" • ऐमव-वमनेनु  
कमेण पंचनु उडनु ममटवकनेनु विमरत्तवममयनि वेड्डुगुने माणे पायव-  
धंमगमुट्टिणं मुवकत्तव-पन्-तायवट-मारय-न-त्रोगरीवण मत्ताभयकंणं"  
हृदयकीण वणदक-जाय" • नपत्तिंनु वणंतेनु गुमाउवमनु दिग्गुनु मत्तावाण-भेणेण  
नपत्तिंनु दिग्गुजावेनु इत्तवममाणेनु पोत्तव-पणंनु कपो-वरी भियाममाणेनु  
मम-कुट्टिय-विणट्टु-कामिय" • कट्टम-न-ईयवमम-भीण-पणी-पणेनु वणंतेनु विमर-  
पीणकट्टिय-वपेनु "पारपम-मंणट्टु-ईरु-पाणिस-विदुममणेनु" • इमंनु वणुवम-  
मुवकत्तव-पामाउवम-वममागुं • ऐममुट्टिणं • पत्तिवपेनु मनेनु विमर-  
टं-



उण्हावाय-खरफरुसचंडभास्य-गुणकनणपत्तकयचरवाडलि-भर्मनदित्तसंभंतसात्रया-  
उल-मिगतण्हावद्धचिधपट्टेमु गिरिवरेमु संवट्टएमु' तत्थ-मिय-समाय'-सरोसि-  
वेसु' अत्रदालियवयणविवर-निल्लालियग्गीहे महेनतुवट्टए-पुण्णकण्णे संकुचिय-  
थोर-पीवर-करे ऊसिय-नंगूले पीणाइय'-विरसरडिय-सट्टेणं फोडयंतैव अंवरत्तलं,  
पायदहरएणं कंपयंतैव मेइणित्तलं, विणिम्मयमाणे य सौयरे', सच्चयां समंता  
वल्लिवियाणाइं छिदमाणे, क्वखसहम्साइं तत्थ सुवह्णि नोल्लयंतै', विणट्टरट्टेव्व  
नरवरिदे, वायाइत्तेव्व पोए, मंडलवाएव्व परिट्ठमंते, अभिक्खणं-अभिवक्खणं  
लिडनियरं पमुंचमाणे-पमुंचमाणे व्हहिं ह्थीहिं य जाव' सद्धिं विसोदिंसि  
विप्पलाइत्था ॥

१६०. तत्थ णं तुमं मेहा ! जुण्णे जरा-जज्जरिय-देहे आउरे भंभ्रिणं पिवासिए दुव्वले  
किलंते नट्टसुइए मूढविसाए सयाओ जूहाओ विप्पहूणे' वणदवजालापरट्टे"  
उण्हेण य तण्हाए य छुहाए य परट्ठभाहए समाणे भीए तत्थे तसिए उव्विग्गे  
संजायभए सव्वओ समंता आधावमाणे परिधावमाणे एगं च णं महं सरं  
अप्पोदगं" पंकवहुलं अतित्थेणं" पाणियपाए ओइण्णे ।

तत्थ णं तुमं मेहा ! तीरमइगए पाणियं असंपत्ते अंतरा चैव सेयंसि विसण्णे ।  
तत्थं णं तुमं मेहा ! पाणियं पाइस्सामि त्ति कट्टु हत्थं पसारेसि । से वि य ते  
हत्थे उदगं न पावइ । तए णं तुमं मेहा ! पुणरवि कायं पच्चुद्धरिस्सामि त्ति  
कट्टु वलियतरायं पंकंसि खुत्ते ॥

१६१. तए णं तुमं मेहा ! अण्णया कयाइ एगे चिरनिज्जूढए गयवरजुवाणए सगाओ  
जूहाओ कर-चरण-दंत-मुसलपहारेहिं विप्परट्टे समाणे तं चैव महह्हं पाणी-  
यपाए समोयरइ । तए णं से कलभए तुमं पासइ, पासित्ता तं पुव्ववेरं सुमरइ,  
सुमरित्ता आसुरत्ते" रुट्ठे कुविए चंडिकिए मिसिमिसेमाणे जेणव तुमं तेणेव  
उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तुमं तिव्खेहिं दंतमुसलेहिं तिव्खुत्तो पिट्टओ 'उट्टु-

१. संवट्टएमु (ग) ।

२. पसय (ख, ग, घ, वृ); अनुयोगद्वारवृत्तो  
पाठांतररूपेण 'पसय' शब्दः प्राप्यते—  
पसयस्तु—आटविको द्विखुरः चतुष्पदविशेषः ।  
प्रस्तुतसूत्रस्य वृत्तावपि इत्थमेव व्याख्यात-  
मस्ति—प्रसयाश्चाटव्यचतुष्पदविशेषाः ।

३. सिरिसवेसु (ख, ग) ।

४. पिणाइय (ख); पेणाइय (ग) ।

५. सीइरं (क); सीयारं (क्व०) ।

६. नोल्लवते (ग) ।

७. ना० १।१।१५७ ।

८. ज्भुसिए (क, घ); जुंजिए (ग); 'भुसियं'  
बुभुक्षितमित्यर्थः (अंतगडवृत्ति ३।८) ।

९. विप्पहीणे (क) ।

१०. ०वरट्टे (क); ०परट्टे (ख) ।

११. अप्पोययं (ख) ।

१२. अतित्थेणं (ख, ग) ।

१३. आसुरत्ते (क, ख) ।

भङ्ग, उद्भृभित्ता" पुद्बं" वेरं निज्जाणु, निज्जाणुना हृदुतुहे पाणीयं विचद,  
गिविचिता" जामेव दिशि पाउरुभूण तामेव दिशि पडिणण ॥

१६०. तण् णं तत्र मेहा ! सतीरगंसि धेयणा पाउरुभयित्था—उज्ज्वला विज्जला  
कवत्तया" •पमाया चंडा दुग्गा" दुग्गहियात्ता । पित्तज्जरपरिणवसरीरे वाह-  
ववकंतीण यावि विहृत्तिया ।

भगवत्या मेरुपभ-भयनिहवण-पदं

१६३. तण् णं तुमं मेहा ! तं उज्ज्वलं •विज्जलं कवत्तयं पमायं चंडं दुग्गं" दुग्गहियामं  
सत्तरांदिनं धेयणं वेदंसि, सतीरं चाननवं परमाउयं पानडना घट्टु-•दुग्गु-वगट्टु"  
कालमासे कालं विज्ज्या उहेव जंघुलीवे दीवे भारहे यामे वाशिण्डुभरहे गणाण  
महानटणं वाहिणे कूले विभंगिदिपायभूने एणेणं मन्ववरमंधहृत्तिया एणाण  
मन्ववरकरिणं कुत्तिंसि मन्ववरभणं जणिणं ॥

१६४. तण् णं सा मन्ववरभिया मन्ववरं माग्गाणं वरुत्तामाग्गंसि" तुमं पयाया ॥

१६५. तण् णं तुमं मेहा ! मन्ववरानायां विवमन्ववे तमाणे मन्ववरभणं यापि होत्ता—  
रत्तुणव-रत्तुणवणं जामुमयाजं चपाविणवणं-ववरात्ता-सन्ववणं तुम-  
मन्ववरभणवणं", उहे विणवणं उह्ववणं", मणिमार"-कणे"-कोत्त-दुग्गो  
अणंवाहिरिणवणंविणवणं वरुत्तं विणिकाणंमु मन्ववरं विहृत्तिया ॥

१६६. तण् णं तुमं मेहा ! उग्गुत्तयावभवाये जोत्तयावमन्ववरं उह्ववणं कालवमन्वरा  
मंजुलीणं तं उह्वं सत्यमेव पडिणवज्जसि ॥

१६७. तण् णं तुमं मेहा ! मन्ववरं वि विणविकलागयेउत्तं" •मन्ववरं मन्ववरं मन्ववरं-  
पाणे मन्ववरंविणविकलागयेउत्तं" •मन्ववरं मन्ववरं मन्ववरं मन्ववरं मन्ववरं-  
विणविकलागयेउत्तं" •मन्ववरं मन्ववरं मन्ववरं मन्ववरं मन्ववरं-  
मन्ववरं मन्ववरं मन्ववरं मन्ववरं मन्ववरं-  
मन्ववरं मन्ववरं मन्ववरं मन्ववरं मन्ववरं-  
मन्ववरं मन्ववरं मन्ववरं मन्ववरं मन्ववरं-  
मन्ववरं मन्ववरं मन्ववरं मन्ववरं मन्ववरं-

पमाणजुत्तपुच्छे पडिपुण्ण-गुञ्जर-कृमनजणे पंर-गुविगुद्ध-निद्ध-निव्वह्य-  
विंसतिनहे ° चउदते मेरुपभे हत्थिरयणे होत्था । तत्थ णं तुमं मेहा !  
सत्तसइयस्स जूहस्स आहेवच्चं ° गोरेवच्चं सागित्तं भट्टित्तं महत्तरगतं आणा-  
ईसर-सेणावच्चं कारेमाणे पालेमाणे ° अभिरमेत्था ॥

१६८. तए णं तुमं मेहा ! अण्णया कयाइ गिम्हकानसमयंसि जेड्ढाम्भे [मासे पायव-  
घंससमुट्टिएणं सुक्कतण-पत्त-कयवर-मारुय-संजांगदीविएणं महाभयंकरेणं  
हुयवहेणं ? ] वणदव-जाला-पलित्तेगु वणतेगु धूमाडलानु दिरासु जाव'  
मंडलवाएव्व परिभमंते भीए तत्थे ° तसिए उच्चिग्गे ° संजायभए वहुहि  
हत्थीहि य' ° हत्थिणियाहि य लोट्टिएहि य लाट्टियाहि य कलभएहि य कलभि-  
याहि य सट्ठि संपरिवुडे सव्वओ समंता दिरोदिसि विप्पलाइत्था ॥
१६९. तए णं तव मेहा ! तं वणदवं पासित्ता अयमेयाह्वे अजभत्थिए' ° चितिए  
पत्थिए मणोगए संकप्पे ° समुप्पज्जित्था—कहि णं मन्ने मए अयमेयाह्वे  
अग्गिसंभमे' अणूभूयपुव्वे ?
१७०. तए णं तव मेहा ! लेस्साहि विमुज्जमाणीहि अजभवसाणेणं सोहणेणं सुभेणं  
परिणामेणं तयावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमेणं ईहा-पूह-मग्गण-गवंसणं  
करेमाणस्स सन्निपुव्वे जाईसरणे समुप्पज्जित्था ॥
१७१. तए णं तुमं मेहा ! एयमट्ठं सम्मं अभिसमेसि—एवं खलु मया" अईए दोच्चे  
भवग्गहणे इहेव जंबुदीवे दोवे भारहे वासे वेयड्ढगिरिपायमूले जाव" मुमेरुपभे  
नाम हत्थिराया होत्था । तत्थ णं मया" अयमेवाह्वे अग्गिसंभमे" समणुभूए ॥
१७२. तए णं तुमं मेहा ! तस्सेव दिवसस्स पच्चावरण्हकालसमयंसि नियएणं जूहेणं  
सट्ठिं समण्णागए यावि होत्था ॥
१७३. तए णं तुमं मेहा ! सत्तुस्सेहे जाव" सन्निजाईसरणे चउदते मेरुपभे नामं हीत्थ  
होत्था ॥

१. होत्था । सत्तंगपडिट्टिए तहेव जाव पडिरुव्वे  
(क, घ) । यत् पुनरिह दृश्यते—सत्तंगेत्यादि  
तद् वाचनान्तरवर्णकापेक्षं कुलिखितमिति  
(वृ) ।
२. सं० पा०—आहेवच्चं जाव अभिरमेत्था ।
३. १५९ मूत्रस्य वर्णनपद्धत्यासी पाठोऽत्र युज्यते ।
४. ना० ११११५६ ।
५. सं० पा०—तत्थे जाव संजायभए ।
६. सं० पा०—हत्थीहि य जाव कलभियाहि ।
७. सं० पा०—अजभत्थिए जाव समुप्पज्जित्था ।
८. ° संभवे (ख, ग) ।
९. × (ग) ।
१०. मत्ता (ख) ।
११. ना० ११११५६ ।
१२. महया (क, ख, ग); एतत् पदं अशुद्धं  
दृश्यते ।
१३. ° संभवे (घ) ।
१४. ना० ११११६७ ।

मैरुपभेज मंडलनिम्माणपदं

१७४. नात् षं तुम्भं मेहा ! अयमेवात्वे अम्भारिणां जाय' नमुत्तज्जिन्ना —मेवं गन्तु  
मम दशार्णि गंगात् महानदीत् दाह्निणिल्लनि कूर्वन्ति विभ्गिरियायमूने 'अयग्नि-  
गंगाणकारणद्वा' तापणं नृहेणं महत्तमहात्तयं मंडलं धात्तात्' नि कट्टं एत्तं  
सपेहेसि, सपेहेत्ता मुहंमुहेणं विहरंसि ॥

१७५. नात् षं तुम्भं मेहा ! अयमेवा कयात् पडमवात्तमंनि' महावृद्धिकायंसि सन्नितवसंसि  
गंगात् महानदीत् अदूरवामंते वृहद्दि हृत्वादि य जाय' कन्तभियादि य सन्नति य  
हृदियसपुद्दि संवत्तवृत्ते एत्तं महत्तं जोगणपरिमंडलं महत्तमहात्तयं मंडलं धात्तंसि —  
जं सत्तं सणं वा पत्तं वा कट्टं वा कट्टं वा लया वा कल्पी वा सत्तं वा सत्ते  
वा सत्ते वा, नं सत्तं तित्तान्तो' आहृणिय-आहृणिय पात्तं उट्टेसि, सत्तेय  
सिपत्तंसि, एत्तंते एत्तेसि ॥

१७६. नात् षं तुम्भं मेहा ! नरनेय मंडलत्तया अदूरवामंते गंगात् महानदीत् दाह्निणिल्लने  
कूर्वे विभ्गिरियायमूने गिरिमे न जाय' मुहंमुहेणं विहरंसि ॥

१७७. नात् षं तुम्भं मेहा ! अयमेवा कयात् सज्जिन्नात्तं महावृद्धिकायंसि  
सन्नितवसंसि जेणेव मे मंडले मेणेव उदामत्तत्तंसि, उदामत्तत्तया जेणेव पि  
'मंडलत्तयात्तं करंसि' ।

पदं—सन्नितवसंसि' महावृद्धिकायंसि सन्नितवसमात्तंसि जेणेव मे मंडले  
मेणेव उदामत्तत्तंसि, उदामत्तत्तया सत्तं पि मंडलत्तयात्तं करंसि' जाय' मुहंमुहेणं  
विहरंसि ॥

गिम्हकालसमयंसि जेट्ठामूणे माणे पायव-वंसनामुट्टिणं' जाव' संवट्टुएणु  
मियपसुपंखिसरीसिवेसु' दिरांदिमि विण्णलायमाणेणु तेहि वहीहि हत्थीहि य'  
सद्धि जेणेव से मंडले तेणेव पहारेत्थ गमणाए ।

यत् पुनः 'तए णं तुमं मेहा अण्णया कयाद्  
कमेणं पंचसु' इत्यादि दृश्यते, तद् गमान्तरं  
मन्यामहे (वृ)

आदर्शेषु गमद्वयं लिखितमस्ति । द्वितीयो  
गमः पूर्ववति १५६ सूत्रस्य वर्णनेन सादृश्यं  
गच्छति, तेन तस्यैव मूले सन्निवेशः कृतः ।  
प्रथमो गमः इत्यमस्ति—

अह मेहा ! तुमं गइंदभावम्मि वट्टमाणो  
कमेणं नलिणिवणविहवणकरे हेमंते कुंद-  
लोद्ध-उद्धत-तुसारपउरम्मि अइवकंते,  
अहिणवगिम्हसमयंसि पत्ते वियट्टमाणो वणेसु  
'वणकरेणु - विविह - दिन्नकयपसव - घाओ'  
उउयकुसुम<sup>१</sup>-चामरा<sup>२</sup>-कण्णपूर-परिमंडियाभि-  
रामो मयवस-विगसंत-कडतड-किलिन्त-  
गंधमदवारिणा सुरभिजणियगंधो करेणुपरि-  
वारिओ उउसमत्त<sup>३</sup>-जणियसोहो काले  
दिणयरकरपयंडे परिसोसिय-त्तखवरसिहर<sup>४</sup>-  
भीमतरदंसणिज्जे भिगार-रवंत-भेरवरवे  
नाणाविहवत्त-कट्ट-तण-कयवरुद्धत-पइमारुया-  
इद्ध-नहयल-पदुममाणे<sup>५</sup> वाउलि-दारुणतरे  
तणहावस - दोस - दूसिय<sup>६</sup>-भमंत-विविहसावय-

गमाउणे भीमररिसाणिउजे<sup>७</sup> वट्टंते दारुणम्मि-  
गिम्हे माइयवस - पसर - पसरिय - विगभिण्णे  
अधम्मदिग-भीमभेरव-रवणगारेणं गहुधारा-  
पटिय-मित्त-उट्टायमाण-वगधयंत - संदुदण्णे<sup>८</sup>  
दित्ततर-सकुल्लिगेणं धूममानाउलेण  
सायवमयंतकरणेणं वणदवेणं जालान्नाविय<sup>९</sup>-  
निगद्धूमंकारभीओ आयवालोय<sup>१०</sup>-  
महंततुवट्टय-पुण्ण-रुण्णो 'आकुंचिय-धोर-  
पीवरकरो भयवस-भयंत-दित्तनयणो'<sup>११</sup> वेयेण  
महामेहो व्व नाय-गोदिलिय-महल्लरुवो  
जेण कओ तेण<sup>१२</sup> पुरा दवगिग-भयभीयहियएणं  
अदगयतणप्पएसरुत्तो रुत्तोद्वेसो दवमि-  
संताणकारणट्टा<sup>१३</sup> 'तेहि वहीहि हत्थीहि य  
सद्धि'<sup>१४</sup> जेणेव मंडले तेणेव पहारेत्थ गमणाए ।  
एवको ताव एस गमो ।

१. संघंस ० (क, ख, घ) ।

२. ना० ११।१५६ ।

३. १५६ सूत्रे इत्थं पाठरचनास्ति—तत्प-मिय-  
ससय-सरीसिवेसु ।

४. पू०—ना० ११।१५७ ।

१. वणरेणुविविहदिन्नकयपंसुघाओ (वृपा) ।
२. तुमं कुसुम (घ), कुसुम (वृ), उउयकुसुम (वृपा) ।
३. चामर (भव०) ।
४. ०समय (क) ।
५. ०सिहर (घ, वृ) ।
६. दुमणो (वृपा) ।
७. दोसिय (वृ) ।
८. ०दंसणिजे (घ) ।
९. सद्धुदण्णं (वृपा) ।

१०. जालालेविय (वृ) ।

११. आयवाले (वृ), आयवालोय (वृपा) ।

१२. आकुंचियधोरपीवरकराभयसब्बदिसिभयंतदित्तनयणो  
(वृपा) ।

१३. ते (क, ख, घ) ।

१४. वारणत्था (क, ग, घ) ।

१५. एतावान् पाठः ख, ग, घ, प्रतिपु नास्ति, केवलं 'क'  
प्रतावेव विद्यते, वृत्त्यनुमोदितोस्ति तेनास्माभिः  
स्वीकृतः ।

नख णं अण्णे वहेवे सीहा य वग्घा य विगा य दोविया य अन्छा य नरन्छा य परामरां य सिमान्ना य विराला य सुण्हा य कोन्दा य मसा य कोकनिया य चित्ता यं चिल्ललां य पुण्डवविट्ठा अग्गिभयविट्ठुयां एग्गयसो विन्नामभेणं चिट्ठुति ॥

१७६. तए णं नुमं मेद्दा ! जेणोव ने मंउत्ते तेणोव उवामच्छति, उवामच्छिता मेहि वहेहि मेहेहि य जावो चिल्ललेहि य एग्गयसो विन्नामभेणं चिट्ठुति ॥

मेरुपभरस पाटुवणेव-पवं

१७७. तए णं नुमे' मेद्दा ! पाएणं गलं कंठुएरगामी' ति कट्ठ पाए उविरत्ते' । गंति च णं अंतरेणि अण्णेहि वनवनेहि मरोहि पणोविज्जमणो'-पणोविज्जमाणे मसए अण्णपविट्ठे ॥

१७१. तए णं नुमे' मेद्दा ! गायं कंठुएरगामी' पृणरवि पायं पट्टिनिवणेविग्गमादि' ति कट्ठ मं मसयं अण्णपविट्ठे पान्नासि, पानिस्ता पाणाणुकेपयाए' भूयाणकंपयाए जीवाणु-कंपयाए मत्ताणुकेपयाए ने पाए अंतरे' नेव मंथासि, नां येव णं निगित्ते ॥

१७२. तए णं नुमे' मेद्दा ! गायं पाणाणुकेपयाए' •भूयाणकंपयाए जीवाणुकेपयाए' मत्ताणुकेपयाए मंथादे परिष्कीकाए, मयाएस्ताउए निवट्ठे ॥

१७३. तए णं ने पणदने अट्ठहाउज्जादं सट्ठिदियादं नं यण भवमेद, भवमेता चिट्ठिए उवएए उवमेने रिज्जताए यावि होत्था ॥

१८४. तए णं ते वह्वे सीहा य जाव' चिल्लला य तं वणदवं निट्टियं' •उवरयं उवरांतं°  
विज्झायं पासंति, पासित्ता अग्गिभयविप्पमुक्का तण्हाए य छुहाए य परट्भाह्या  
समाणा तओ मंडलाओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता सव्वओ समंता  
विप्पसरित्था ।
१८५. तए णं ते वह्वे हत्थी' •य हत्थिणीओ य लोट्टया य लोट्टिया य कलभा य  
कलभिया य तं वणदवं निट्टियं उवरयं उवरांतं विज्झायं पासंति, पासित्ता  
अग्गिभयविप्पमुक्का तण्हाए य° छुहाए य परट्भाह्या समाणा तओ मंडलाओ  
पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता दिरोदिसि विप्पसरित्था ।
१८६. तए णं तुमं मेहा ! जुण्णे जरा-जज्जरिय-देहे सिद्धिलवलितय'-पिण्णद्धगते  
दुब्बले किलंते जुंजिए पिचासिए अत्थामे अत्थले अपरक्कमे ठाणुकडे' वेगेण  
विप्पसरिस्सामि त्ति कट्टु पाए पसारमाणे विज्जुहए विव रययगिरि'-पट्ठारे  
घरणितलंसि सव्वंगेहि सण्णिवइए ॥
१८७. तए णं तव मेहा ! सरीरगंसि वेयणा पाउव्भूया —उज्जला' •विउला कक्खडा  
पगाढा चंडा दुक्खा दुरहियासा । पित्तज्जरपरिगयसरीरे° दाहवक्कंतीए यावि  
विहरसि ॥

### तीय संवभे चट्टमाण-तित्तिक्खोवदेस-पदं

१८८. तए णं तुमं मेहा ! तं उज्जलं जाव' दुरहियासं तिण्णि राइंदियाइं वेयणं  
वेएमाणे विहरित्ता एगं वाससयं परमाउं पालइत्ता इहेव जंबुट्टीवे दीवे भारहे  
वासे रायगिहे नयरे सेणियस्स रण्णे धारिणीए देवीए कुच्छिसि कुमारत्ताए  
पच्चायाए ॥
१८९. तए णं तुमं मेहा ! आणुपुव्वेणं गढभवासाओ निक्खंते' समाणे उम्मक्कवालभावे  
जोव्वणगमणुप्पत्ते मम अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए ।  
तं जइ ताव तुमे मेहा ! तिरिक्खजोणियभावमुवगएणं अपडिलद्ध-सम्मत्तरयण-  
लंभेणं से पाए पाणाणुकंपयाए'° •भूयाणुकंपयाए जीवाणुकंपयाए सत्ताणुकंपयाए°

१. ना० १।१।१७८ ।

२. सं० पा०—निट्टियं जाव विज्झायं ।

३. सं० पा०—हत्थी जाव छुहाए ।

४. °तया (घ) ।

५. ठाणुकडे (क); ठारणुखंभे (घ) ।

६. रेवयं (कव०); एकस्यां हस्तलिखितवृत्ता-  
वपि 'रेवयगिरि' इति पाठो लभ्यते । वृत्तौ  
'रययगिरि' पाठस्य पर्यालोचनमपि कृतमस्ति-

इह प्राग्भारः ईपदवनतखंडं उपमानेनास्य  
महत्तर्यैव न वर्णते रक्तत्वात् तस्य । वाच-  
नान्तरे तु सित एवासाविति (वृ) ।

७. सं० पा०—उज्जला जाव दाहवक्कंतीए ।

८. ना० १।१।१८७ ।

९. निक्कंते (ख) ।

१०. सं० पा०—पाणाणुकंपयाए जाव अंतरा ।

अंतरा चैव संधारिण, नो चैव णं निविलसते । किमंग पुण तुमं' मेहा ! ज्यानि  
 'विपुलकुलसमुद्भवे णं' निरुवह्वयसरीर-दंतलक्ष्यचिदिए' णं एव' उद्वाण-वन-  
 वीरिय-पुरिसगार-परलकमसंज्ञने णं मम अंतिण मुंटे भविन्ता अगाराओ  
 अणगारियं पव्वडण समाणे समणाणं निग्गंवाणं राओ पृव्वरत्तायस्सकालसम-  
 यंसि वायणाणं' •पुच्छणाणं परिच्छणाणं' धग्गाणुओगन्तिताणं य उच्चारस्स  
 वा पानवणस्स वा अइग्गच्छमाणाणं य निग्गच्छमाणाणं य ह्वयसंघट्टणाणि य  
 पायसंघट्टणाणि य' •ओससंघट्टणाणि य पोडुसंघट्टणाणि य कायसंघट्टणाणि य  
 ओलंउणाणि य पोसंउणाणि य पाय' -रय-रेणु-मुंउणाणि य नो समं सहंसि  
 समंसि निन्तिपयंसि अहिंससंसि ?

**मेहस्स जाहसरण-पदं**

१३०. ताणं तस्स मेहस्स अणगारस्स समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिण एयमट्टं  
 सोच्चा निरम्म मुभेहि परिणामेहि पगत्थेहि अजभवसाणेहि वेसाहि विमुग्ग-  
 माणीहि तयावरणिज्जाणं कग्गाणं सओवसमेणं ईहापुट्ट-मग्गण-वयंनणं  
 त्तेमाणस्स सण्णिवुत्थे जाहंसरणे समणण्णे, एयमट्टं समं अभिसमेट् ॥

**मेहस्स समपणपुत्वं पुणो पव्वज्जा-पदं**

१३१. ताणं मे मेहे कुयारे समणेणं भगवता महावीरेणं संभारियपुट्टभवे' टुमुणाणी-  
 वनंवेवे' अणंरयसमुपुण्यमुंटे' हरिसतगं-•विगणसण हिणए' •धाराणकलसंके  
 पिय समूंसियरोमकूवे' समणं भगवं महावीरं वंदट् समंसट्, वेदिन्ता समंसिता  
 एव' ययासी—  
 अज्जणविन्ती णं भवे ! मम सो अज्जाणि सोत्तणं अरमेमे क्ताणं समणस्स  
 निग्गंवाणं निग्गट्टे ति कट्टु पणरणि समणं भगवं महावीरं वंदट् समंसट्,  
 वेदिन्ता समंसिता एव' ययासी—



इच्छामि णं भंते ! इयाणि दोच्चं पि सयमेव पच्चावियं सयमेव मुंडावियं  
 \*सयमेव सेहावियं सयमेव सिक्खावियं ° सयमेव आयार-गोयरं जायामाया-  
 वत्तियं' धम्ममाइक्खियं' ॥

१६२. तए णं समणे भगवं महावीरे मेहं कुमारं सयमेव पच्चावेइ' \*सयमेव मुंडावेइ  
 सयमेव सेहावेइ सयमेव सिक्खावेइ सयमेव आयार-गोयर-विणय-त्रेणइय-चरण-  
 करण °-जायामायावत्तियं धम्ममाइक्खइ—एवं देवानुप्पिया ! गंतच्चं, एवं  
 चिट्ठियच्चं, एवं निसीयच्चं, एवं तुयट्ठियच्चं, एवं भुंजियच्चं एवं भासियच्चं एवं  
 उट्ठाए' उट्ठाय पाणाणं भूयाणं जीवाणं सत्ताणं संजमेणं संजमियच्चं ॥

१६३. तए णं से मेहे समणस्स भगवओ महावीरस्स अयमेयाह्वं धम्मियं उवएसं सम्मं  
 पडिच्छइ, पडिच्छिता तह गच्छइ तह चिट्ठइ' \*तह निसीयइ तह तुयट्ठइ तह  
 भुंजइ तह भासइ तह उट्ठाए उट्ठाय पाणेहि भूएहि जीवेहि सत्तेहि ° संजमेणं  
 संजमइ ॥

मेहस्स निगंठचरिया-पदं

१६४. तए णं से मेहे अणगारे जाए-इरियासमिए' \*भासासमिए एसणासमिए आयाण-  
 भंड-मत्त-णिकखेवणासमिए उच्चार-पासवण-खेल-सिघाण-जल्ल-पारिट्ठावणिआ-  
 समिए मणसमिए वइसमिए कायसमिए मणगुत्ते वइगुत्ते कायगुत्ते गुत्ते गुत्तिदिए  
 गुत्तवंभयारी चाई लज्जू धन्ने खंतिखमे जिइंदिए सोहिए अणियाणे अप्पुस्सुए  
 अब्हिल्लेसे सुसामण्णरए दंते इणमेव निगंथं पावयण पुरओकाउं विहरंति ° ॥

१६५. तए णं से मेहे अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स 'तहारूवाणं थेराणं  
 अंतिए' सामाइयमाइयाइ' 'एक्कारस अंगाइ'" अहिज्जइ, अहिज्जिता वहुंहि  
 छट्ठुमदसमदुवालेहि मासद्धमासखमणेहि" अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥

मेहस्स भिक्खुपडिमा-पदं

१६६. तए णं समणे भगवं महावीरे रायगिहाओ नयराओ गुणसिलयाओ चेइयाओ  
 पडिणिकखमइ, पडिणिकखमित्ता वहिया जणवयविहारं विहरइ ॥

१. सं० पा०—मुंडावियं जाव सयमेव ।

२. °उत्तियं (क, ख, ग, घ) ।

३. °माइक्खिउं (क, ग, घ) ।

४. सं० पा०—पच्चावेइ जाव जायामाया-  
 वत्तियं ।

५. उट्ठाय (क, ग, घ) ।

६. सं० पा०—चिट्ठइ जाव संजमेणं ।

७. सं० पा०—अणगार-वण्णओ भाणियव्वी ।

वृत्तावयं पाठः उल्लिखितोस्ति, तत्र 'दंते'

इति विशेषणं नास्ति ।

८. अंतिए तहारूवाणं थेराणं (क, ख, ग, घ) ।

अत्र लेखने 'अंतिए' पदस्य विपर्ययो जातः  
 इति संभाव्यते । (१।१।२०८) सूत्रे पि  
 स्वीकृतपाठवत् पाठो लभ्यते—

९. °माइयाणि (क, ग); सामातियमाइयाणि  
 (ख) ।

१०. °अंगाति (ख); एक्कारसंगाइ (घ) ।

११. °खवणेहि (ख) । पू०—ना० १।१।२०१ ।

११७. ताम् षं मे मेहे श्रणगारे श्रणया कयाइ समण भगवं महावीरं वंदेउ नमंसट.  
वंदिता नमंसिता एवं कयासी—उच्छामि षं भंते ! तुम्भेहि अरुभणुण्याए  
समाणे मासियं भिकवूपटिमं उवसंपज्जिता षं विहरित्ताम् ।

अहामुहं देवाणुणिया ! मा पटिवंधं करेहि ॥

११८. ताम् षं मे मेहे श्रणगारे समणेणं भगवया महावीरेणं अरुभणुण्याए' नमाणे  
मासियं भिकवूपटिमं उवसंपज्जिता षं विहरइ ।

मासियं भित्तुपटिमं 'अहामुत्तं अहामुत्तं अहामुत्तं' नमं काएणं फामेउ  
पावेउ नोभेउ तीरेउ विट्टेउ, नमं काएणं फामेत्ता पावेत्ता नोभेत्ता तीरेत्ता  
विट्टेत्ता पुणरथि नमणं भगवं महावीरं वंदेउ नमंसट, वंदिता नमंसिता एवं  
कयासी—उच्छामि षं भंते ! तुम्भेहि अरुभणुण्याए' समाणे दोमानिय भित्तु-  
पटिमं उवसंपज्जिता षं विहरित्ताम् ।

अहामुहं देवाणुणिया ! मा पटिवंधं करेहि ।

जहा पद्यमाए अभिन्नायो महा दोच्छाम् तच्छाम् चउत्ताए पंचमाए सम्भानियाए  
सत्तमासियाए पद्यमत्तराट्ठियाए दोच्चनत्तराट्ठियाए' तच्च नत्तराट्ठियाए'  
सहोराट्ठियाए' एगराट्ठियाए' वि ॥

मेहसुत्त गुणरयणसंयच्छर-पदं

११९. ताम् षं मे मेहे श्रणगारे वारुण भिकवूपटिमाओ नमं काएणं फामेत्ता पावेत्ता  
नोभेत्ता तीरेत्ता विट्टेत्ता पुणरथि वंदेउ नमंसट, वंदिता नमंसिता एवं कयासी—  
उच्छामि षं भंते ! तुम्भेहि अरुभणुण्याए' समाणे गुणरयणसंयच्छरं तयोक्कम  
उवसंपज्जिता षं विहरित्ताम् ।

अहामुहं देवाणुणिया ! मा पटिवंधं करेहि ॥

१२०. ताम् षं मे मेहे श्रणगारे पद्यं मामं वउत्तं-वउत्तेण वरिपविससंणं तयोक्कमेणं,  
दिया उणवकुट्टुए सुत्ताभिमुहे एत्तावत्तभुमीए एत्तावेत्ताए, रतिं वीरसमेणं  
एत्तावत्तएणं । दोक्कं मामं वउत्तं-वउत्तेण वरिपविससंणं तयोक्कमेणं दिया उणव-  
कुट्टुए सुत्ताभिमुहे एत्तावत्तभुमीए एत्तावेत्ताए, रतिं वीरसमेणं एत्तावत्तएणं ।  
तच्चं मामं वउत्तं-वउत्तेणं वरिपविससंणं तयोक्कमेणं, दिया उणवकुट्टुए सुत्ताभि-  
मुहे एत्तावत्तभुमीए एत्तावेत्ताए, रतिं वीरसमेणं एत्तावत्तएणं ।

चउत्थं मासं दसमं-दसमेणं अणिविगतत्तेणं तवोकम्ममेणं, दिया ठाणुक्कुडुए  
सूराभिमुहे आयावणभूमोए आयावेमाणे, रत्ति वीरासणेणं अवाउडएणं ।  
पंचमं मासं दुवालसमं-दुवालसमेणं अणिविगतत्तेणं तवोकम्ममेणं, दिया ठाणुक्कुडुए  
सूराभिमुहे आयावणभूमोए आयावेमाणे, रत्ति वीरासणेणं अवाउडएणं ।  
एवं एएणं अभिलावेणं छट्ठे चोदसमं-चोदसमेणं, सत्तमे सोलसमं-सोलसमेणं,  
अट्ठमे अट्टारसमं - अट्टारसमेणं, नवमे वीरासमं-वीरासमेणं, दसमे वावोसइमं-  
वावोसइमेणं, एक्कारसमे चउव्वीगइमं-चउव्वीसइमेणं, वारसमे छव्वीसइमं-  
छव्वीसइमेणं, तेरसमे अट्टावीरासमं-अट्टावीगइमेणं, चोदसमे तीसइमं-तीरासमेणं,  
पंचदसमे वत्तीसइमं-वत्तीसइमेणं, सोलसमे चउत्तीसइमं-चउत्तीसइमेणं—अणि-  
विखत्तेणं तवोकम्ममेणं, दिया ठाणुक्कुडुए, नुराभिमुहे आयावणभूमोए आयावेमाणे,  
वीरासणेणं' अवाउडएणं य ॥

२०१. तए णं से मेहे अणगारे गुणरयणसंवच्छरं तवोकम्मं अहामुत्तं •अहाकप्पं अहा-  
मग्गं° सम्मं काएणं फासेइ पालेइ सोभेइ तीरेइ किट्टेइ अहामुत्तं अहाकप्पं'  
°अहामग्गं सम्मं काएणं फामेत्ता पालेत्ता सोभेत्ता तीरेत्ता° किट्टेत्ता समणं  
भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता वट्ठहि छट्ठमदसमदुवालसेहि  
मासद्धमासखमणेहि विचित्तेहि तवोकम्ममेहि अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥

मेहस्स सरीरदसा-पदं

२०२. तए णं से मेहे अणगारे तेणं 'ओरालेणं' त्रिपुलेणं सस्सिरिएणं पयत्तेणं पग्गहिएणं'  
कल्लाणेणं सिवेणं धन्नेणं मंगल्लेणं उदग्गेणं उदारेणं उत्तमेणं महाणुभावेणं  
तवोकम्ममेणं सुक्के लुक्खे' निम्मंमे किडिकिडियाभूए अट्टिचम्मावणद्धे किसे  
धमणिसंतए जाए यावि होत्था—जीवंजीवेणं गच्छइ, जीवंजीवेणं चिट्ठइ, भासं  
भासित्ता गिलाइ, भासं भासमाणे गिलाइ, भासं भासिस्सामि त्ति गिलाइ ।  
से जहानामए इंगालसगडिया इ वा कट्टसगडिया इ वा पत्तसगडिया इ वा  
तिलंडासगडिया° इ वा एरंडसगडिया° इ वा° उणहे दिन्ना सुक्का° समाणी

१. वीरासणेणं य (क, ख, ग) ।

२. सं० पा०—अहामुत्तं जाव सम्मं ।

३. सं० पा०—अहाकप्पं जाव किट्टेत्ता ।

४. उरालेणं (ख, ग, घ) ।

५. परिग्गहिएणं (क, ख) ।

६. भुक्खे (क, ग, घ) :

७. तिलसगडिया (ग) ।

८. एरंडकट्टसगडिया (ख) ।

९. भगवती (२।१) सूत्रे स्कन्दकवणंके कानिचित् १०. सुक्का (ख, ग) ।

पदानि अधिकानि विपर्ययं प्राप्तानि च  
वर्तन्ते, यथा—ओरालेणं विउलेणं पयत्तेणं  
पग्गहिएणं कल्लाणेणं सिवेणं धन्नेणं मंगल्लेणं  
सस्सिरिएणं उदग्गेणं उदत्तेणं उत्तमेणं उदा-  
रेणं महाणुभावेणं० ।

से जहा नामए कट्टसगडिया इ वा पत्तसग-  
डिया इ वा पत्ततिलभंडसगडिया इ वा  
एरंडकट्टसगडिया इ वा इंगालसगडिया इ वा ।



महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिन्ना समणं भगवं महावीरं निक्खुत्तो  
आयाहिण-पायाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता नच्चासण्णे  
नाइदूरे सुस्सूसमाणे नमंसमाणे अभिमुहं विणणणं पंजलिइते' पज्जुवासइ ॥

२०५. 'मेहा इ !' समणे भगवं महावीरे मेहं अणगारं एवं वयासी—से नूणं तव  
मेहा ! राओ पुव्वरत्तावरत्तकालमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणरत्ता अय-  
मेयारूवे अज्झत्थिए' अचित्थिए पत्थिए मणांगए संकणं ० समुप्पज्जित्था—एवं  
खलु अहं इमेणं ओरालेणं' तवाकम्मणेणं गुत्तं जाव' जेणेव' इहं तेणेव हव्व-  
माणए ।

से नूणं मेहा ! अट्ठे समट्ठे ?

हंता अत्थि ।

अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंघं करेहि ॥

२०६. तए णं से मेहे अणगारे समणेणं भगवया महावीरेणं अट्ठभणुण्णाए समणे  
हट्ठुट्ठु-चित्तमाणंदिए जाव' हरिसवस-विसप्पमाणहियए उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता  
समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पायाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ,  
वंदित्ता नमंसित्ता सयमेव पंच महव्वयाइं आरुहेइ, आरुहेत्ता गोयमादीए'  
समणे निग्गंथे निग्गंथोओ य खामेइ, खामेत्ता त्हारूवेहि कडादोहि थेरेहि  
सद्धि विपुलं पव्वयं सणियं-सणियं दुरुहइ, दुरुहित्ता सयमेव मेहघणसण्णिगासं"  
पुढविसिलापट्टयं पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता उच्चारपासवणभूमि पडिलेहेइ, पडि-  
लेहेत्ता दव्वभसंधारगं संथरइ, संथरित्ता दव्वभसंधारगं दुरुहइ, दुरुहित्ता पुरत्थाभि-  
मुहे संपलियं कनिसण्णे करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलि कट्टु  
एवं वयासी—नमोत्थु णं अरहंताणं जाव"  
सिद्धिगइनामधेज्जं ठाणं संपत्ताणं ।  
नमोत्थु णं समणस्स जाव सिद्धिगइनामधेज्जं ठाणं संपाविउकामस्स मम  
धम्मायरियस्स । वंदामि णं भगवतं तत्थगयं इहगए, पासउ मे भगवं तत्थगए  
इहगयं ति कट्टु वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—पुंविं पि य  
णं मए समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए सव्वे पाणाइवाए पच्चवखाए,  
मुसावाए अदिण्णादाणे मेहुणे परिग्गहे कोहे माणे माया लोहे पेज्जे दोसे कलहे

१. पंजलियडे (ख); अंजलियडे (घ) ।

२. मेह ति (ख); मेघाइ (घ) ।

३. सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था ।

४. ना०—१।१।२०४ ।

५. पू० ना० १।१।२०४ ।

६. अत्र १।१।२०४ सूत्रस्य 'जेणेव समणे भगवं  
महावीरे' अतः पूर्ववर्ती पाठः समपितोस्ति ।

७. ना० १।१।१६ ।

८. आरुभेइ (ख); आरुहति (घ) ।

९. गोयमादि (क, ख, ग, घ) ।

१०. अतोत्रे १।५।८३ सूत्रे 'देवसण्णिवार्यं' इति  
पदं विद्यते ।

११. ओ० सू० २१ ।

अध्वनकलाणे पेनुष्णे परपरिवाप् अरुठरुं मायाभोरो सिच्छादंशमल्लं-  
पच्चवत्याम् ।

दुयाणि पि णं अहं तस्मेव अंनिम् सव्यं पाणास्वायं पच्चवत्यामि जाव सिच्छा-  
दंशमल्लं पच्चवत्यामि, सव्यं अरण-पाण-भ्राह्म-नाह्मं चउच्चिह्मि स्याह्वारं  
पच्चवत्यामि जावउज्जीवाम् ।

जंमि य उमं सरुंरं इट्टं कंत्तं पिथं' •मणुष्णं मज्जामं धेज्जं वेम्भानियं गम्भयं  
बहुमयं अणूमयं भंडकदंउमसमाणं मा णं नीयं मा णं उट्टं मा णं सुद्धा मा णं  
पिवासा मा णं चौरा मा णं चात्ता मा णं दंवा मा णं मनया मा णं वाटय-पिनिय-  
संभिय-सण्णियाडय'० विविहा रोगायका पनीनहोवमग्गा 'पुननीनि कट्टह'  
एयं' पि य णं चरमेदि' उसाय-नीनामेदि' बोनिरामि नि कट्टह संनेह्णा-  
भुज्जा-भुनिम्' भत्तपाण - पट्टियाडयिम्, पाय्यावणां कालं अणवकंममाणं  
विह्वरु ॥

२०७. तां णं ते येरा भगवंतो मेह्वस्त अणमारस्त अणित्ताम् विद्यावटियं करेति ॥

मेह्वस्त समाहितरण-पदं

२०८. तां णं ते मेहे अणमारं नमणस्त भगवयो महायोस्तस तत्रायवाणं येराणं खेनिम्  
मामाहयमाहसाहं' एणत्तरसस्येगाहं अहिविज्जा, सव्वपडिपुण्णाहं दुयाणम-  
वटिणाहं मामणपटियाणं पाउणिज्जा, मामियाणं संविह्णाणं अण्णाण भोमिज्जा,  
सट्टि भत्ताहं अणसण्णाणं टिण्णा, प्रासाहय-पट्टिकके उदियनत्ते मणाहित्तं  
सणुपुत्थेणं कालणम् ॥

येरेहि मेह्वस्त चायारभंडसमप्यण-पदं

२०९. तां णं ते येरा भगवंतो मेहे अणमारं अणुपुत्थेणं पायनयं पायनि, पायिना  
परिनेत्ताणपयिणं' वाउमणं करेति, करेया मेह्वस्त चायारभणं मेह्वस्ति,  
विउत्तात्ते एववयासो सज्जियं-सज्जियं' पच्चोमणमि, पच्चोमणिया' उण्णासेव  
सुलसित्तम् विट्टम्, येणामेव मरणं भगवं महायोदि, येणामेव उणमण्णाति,  
उणमणिया मरणं भगवं महायोदि' वेदीति ममेवति, वेदीत्ता मणवित्ता एयं

वयासी—एवं खलु देवाणुप्पियाणं अंतेवासी मेहे नाम अणगारे पगइभट्टणं  
 •पगइउवसंते पगइपयणुकोहमाणमायालोभे मिउमइवसंपणे अल्लीणे°  
 विणीए, से णं देवाणुप्पियाणं अट्ठभणुण्णाए, समाणे गोयमाइए, समणे निगंथे  
 निगंथीओ य खामेत्ता अम्हेहिं गच्छि विपुलं पव्वयं सणियं-सणियं दुक्खइ,  
 सयमेवमेघघणराणिणासं पुट्टिविसिजं पडिबेहेइ, भत्तपाण-पडियाइक्खिए  
 अणुपुव्वेणं कालगए ।

एस णं देवाणुप्पिया ! मेहस्स अणगारस्स आयारभंडण ॥

गोयमपुच्छाए भगवओ उत्तर-पदं

२१०. भंते ! त्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता  
 एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पियाणं अंतेवासी मेहे नाम अणगारे से णं भंते !  
 मेहे अणगारे कालमासे कालं किच्चा कहिं गए ? कहिं उववण्णे ?

२११. गोयमा ! इ° समणे भगवं महावीरे गोयमं एवं वयासी—एवं खलु गोयमा !  
 मम अंतेवासी मेहे नाम अणगारे पगइभट्टणं जाव' विणीए, से णं त्हाएवाणं  
 थेराणं अंतिए सामाइयमाइयाइ' एक्कारस अंगाणं अहिज्जित्ता, वारस भिक्खु-  
 पडिमाओ गुणरयण-संवच्छरं तवोकम्मं काणं फासित्ता जाव' कट्टेत्ता, मए  
 अट्ठभणुण्णाए समाणे गोयमाइ थेरे खामेत्ता, त्हाएवेहिं •कडादीहिं थेरेहिं  
 सद्धि° विपुलं पव्वयं [सणियं-सणियं ?] दुक्खित्ता', दट्ठभसंधारणं, संथरित्ता  
 दट्ठभसंधारोवगए सयमेव पंचमहव्वए उच्चारित्ता, वारस वासाइं सामणपरि-  
 यागं पाउणित्ता, मासियाए संलेहणाए अप्पाणं भूसित्ता, सद्धिं भत्ताइं अणसणाए  
 छेदेत्ता आलोइय-पडिक्कंते उद्धियसल्ले समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा  
 उड्डं चंदिम-सूर-गहगण-नक्खत्ता-तारारुवाणं वहुइं जोयणाइं वहुइं जोयणसयाइं  
 वहुइं जोयणसहस्साइं वहुइं जोयणसयसहस्साइं वहुओ जोयणकोडीओ वहुओ  
 जोयणकोडाकोडीओ उड्डं दूरं उप्पइत्ता सोहम्मीसाण-सणकुमार-माहिद-वंभ-  
 लंतग-महासुक्क-सहस्साराणय-पाणयारणच्चुए तिण्णि य अट्टारसुत्तरे गेवेज्ज-  
 विमाणवाससए वीईवइत्ता विजए महाविमाणे देवत्ताए उववण्णे ।

१. सं० पा०—पगइभट्टणं जाव विणीए ।

२. प्रस्तुतसूत्रस्य वृत्तौ 'अल्लीणे' इत्यस्य अनन्तरं  
 'भट्टणं' इति पाठोऽस्ति ।

३. अत्र पुनर्लेखने अपूर्णो पाठोऽस्ति । अस्य  
 पूर्तये द्रष्टव्यं १११२०६ सूत्रम् ।

४. दि (क, ख, ग, घ) ।

५. न.० १११२०६ ।

६. सामाइयाइं (ख) ।

७. ना० १११२०१ ।

८. सं० पा०—त्हाएवेहिं जाव विपुलं ।

९. अत्र पुनर्लेखने अपूर्णो पाठोऽस्ति । अस्य  
 पूर्तये द्रष्टव्यं १११२०६ सूत्रम् ।

१०. वंभलोक (घ) ।

तस्य णं अत्येगइयाणं देवाणं तेत्तीगं मागरोवमाटं टिटं पण्यता । तस्य णं  
मेहंसा वि देवस्य तेत्तीगं मागरोवमाटं टिटं ॥

२१२. एण णं भने ! मेहे देवे ताओ देवलोयाओ आडवत्तणं टिटवत्तणं भदवत्तणं  
धणंत्तरं तयं चडत्ता कहिं गच्छिहि ? कहिं उववज्जिहि ?  
गंगमा ! महाविदेहे वाने सिज्जिहि वुज्जिहि मुच्चिहि परिनिज्जाहि  
सव्वदुवत्ताणमत्तं कहिं ॥

निश्चय-पदं

२१३. एणं गन्तुं जंतुं ! समणेणं भगवता महावीरेणं आइगरेणं गित्तभगरेणं जज्जं  
गिद्धिगइनामधेज्जं ठाणं गंगत्तणं अण्णानंभं-निमित्तं पदमत्तं नावउभयपस्य  
अगमट्टं पण्यत्ते ।

...नि वेमि

वृत्तिकृता समुद्धता निगमनगाथा—

महेशंहि निज्जणंहि, यगणेहि नोययनि आयरिया ।  
गंगे कहिंवि सान्नि, जहं मेहमुणं महावीरो ॥१॥



कुटुंबेसु' जेट्टपुत्ते कुटुंबमज्जे' ठावेत्ता पुरिससहस्सवाहिणीओ' सीयाओ दुब्बा  
समाणा मम अतियं पाउवभवह । ते वि तहेव पाउवभवन्ति ॥

### मंडुयस्स रायाभिसेय-पदं

६२. तए णं से सेलए राया पंच मंतिसयाइं पाउवभवमाणाइं पासइ, पासित्ता हट्टुट्टे  
कोडुंवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया !  
मंडुयस्स कुमारस्स महत्थं\* महग्घं महरिहं विउलं० रायाभिसेयं उवट्टुवेह ॥
६३. \*तए णं ते कोडुंवियपुरिसा मंडुयस्स कुमारस्स महत्थं महग्घं महरिहं विउलं  
रायाभिसेयं उवट्टुवेति ॥
६४. तए णं से सेलए राया बहूहि गणनायगेहि य जाव' संधिवालेहि य सद्धि संपरि-  
वुडे मंडुयं कुमारं जाव' रायाभिसेएणं अभिसिचइ ॥
६५. तए णं से मंडुए राया जाए—महयाहिमवन्तं-महंतं-मलयं-मंदरं-महिंदसारे जाव'  
रज्जं पसासेमाणे० विहरइ ॥

### सेलयस्स निक्खमणाभिसेय-पदं

६६. तए णं से सेलए मंडुयं रायं आपुच्छइ ॥
६७. तए णं मंडुए राया कोडुंवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव  
भो देवाणुप्पिया ! सेलगपुरं नयरं आसिय'-\*सित्तं-सुइयं-सम्मज्जिओवलितं  
जाव'० सुगंधवरगंधियं० गंधवट्ठिभूयं करेह य कारवेह य, एयमाणत्तियं पच्च-  
प्पिणह ॥
६८. तए णं से मंडुए दोच्चं पि कोडुंवियपुरिसे एवं'' वयासी—खिप्पामेव भो देवाणु-  
प्पिया ! सेलगस्स रण्णो महत्थं'' \*महग्घं महरिहं विउलं० निक्खमणाभिसेयं  
[करेह ?] जहेव मेहस्स तहेव'' नवरं—पउमावती देवी अगकेसे पडिच्छइ,  
सच्चेव पडिग्गाहं गहाय सीयं दुरुहइ । अक्खसेसं तहेव जाव'' ॥

१. कोडुंबेसु (ख) ।

२. कोडुंबं० (घ) ।

३. ०वाहिणीयाओ (घ) ।

४. सं० पा०—महत्थं जाव रायाभिसेयं ।

५. सं० पा०—अभिसिचइ जाव राया जाए  
विहरइ ।

६. ना० १।१।२४ ।

७. ना० १।१।१९ ।

८. ओ० सू० १४ ।

९. सं० पा०—आसिय जाव गंधवट्ठिभूयं ।

१०. ना० १।१।३३ ।

११. सद्दावेइ २ एवं (क) ।

१२. सं० पा०—महत्थं जाव निक्खमणाभिसेयं ।

१३. ना० १।१।२२-१३२ ।

१४. ना० १।१।३४-१४३; १।५।२६-३३ ।

नेत्रगस्त पद्यवृत्ता-परं

६९. 'तए षं मे नेत्रय [ पंचहि मन्त्रिणपृष्टि मन्त्रि ? ] मयमेव पंचमुद्रियं लोचं करेद, करेत्ता तेषामेव मुग् तेषामेव उवागच्छत्, उवागच्छित्ता मुग् क्षणमार विवसुषो ब्राह्मणिण-गयाद्विष्णं करेद, करेत्ता पदद ननमत् जाव' पञ्चदश ॥

नेत्रगस्त अणवारचरिया-परं

१००. तए षं मे नेत्रय अणवारं जाव जाव' कम्मनिग्घायपट्टाय एवं व षं विदुद ॥  
 १०१. तए षं मे नेत्रय मुग्गस त्तायावाणं सेराणं अणिय ० मामात्तयसात्तरात् अणवारस अवात् अणियत्त, अणियत्तत्ता म्हाहि वाडव्ये-० छट्टुम - दसम - तुवात्तमेहि मागद्धमात्तयमणेहि अण्णाणं भवेमाले ० विदुद ॥

सुग्गस परिनिव्याण-परं

१०२. तए षं मे मुग् नेत्रगस्त अणवारस तात् पंचमसामोकरात् पंच अणवारसवात् गीत्तत्ताय विवरत् ॥  
 १०३. तए षं मे मुग् अण्णया कयात् नेत्रनमुग्गलो नगदायो मुग्गिमभावालो उज्जा-पाथो परिनिवरमत्, परिनिवरमित्ता वदिया जणययविदुद विदुद ॥  
 १०४. तए षं मे मुग् अणवारं अण्णया कयात्' तेषं अणवारसत्तमणेण मन्त्रि मयविण्णे पुज्जायपुत्थि वरमणे मामाणुयामं इदञ्जभाणे मुग्गुणेण विवरमाणं विरेय मुग्गोमवत्तयम् ० तेषंय उवागच्छत्, उवागच्छित्ता पृथगेयं पत्तये सणियं-अणिय मुग्गत्, मुग्गित्ता मेधायजमन्निगायं देवमन्निगाय मुग्गोमिसत्तापट्टय परिनिवेत्, परिनिवेत्ता जाव' सेवेत्ता-भुग्गया-भुग्गिय भवात्तय-वदियमद्वियम् पाथोद-गमणायुग्गये ॥  
 १०५. तए षं मे मुग् म्हाणि पासाणि मामप्यपरित्यामं पाउत्तित्ता, माणियम् मन्त्रिणसत् अण्णाणं भुग्गिया, म्हाणि भवात्तं अण्णयाय विदिया जाव' वेवसवन्नापरिमणं भग्गुत्तत्ताय वयो पत्तया मियं मुग्गे मुग्गे अणवारं परिनिवदुद माग्गुत्तत्ताय-हीणे ॥

य अरसेहि य विरसेहि य सीएहि य उण्हेहि य कालाद्वकंतेहि य पमाणाइक्कं-  
तेहि य निच्चं पाणभोगेहि य पयद-सुकुमालस्स सुहोचियस्स<sup>१</sup> सरीरगंसि  
'वेयणा पाउव्भूया'<sup>२</sup>—उज्जला<sup>३</sup> •विउला कक्खडा पगाढा चंडा दुक्खा<sup>४</sup>  
दुरहियासा । कंडु-दाह-पित्तज्जर-परिगयसरीरे यावि विहरइ ॥

१०७. तए णं से सेलए तेणं रोयायंकेणं सुक्के भुक्खे जाए यावि होत्था ॥

१०८. तए णं से सेलए अणया कयाइ पुव्वाणुपुव्वि चरमाणे<sup>५</sup> •गामाणुगामं दूइज्जभाणे  
सुहंसुहेणं विहरमाणे जेणेव सेलगपुरे नयरे जेणेव सुभूमिभागे उज्जाणे तेणेव  
उवागच्छइ, उवागच्छिता अहापडिह्वं ओगहं ओगिण्हत्ता संजमेणं तवसा  
अप्पाणं भावेमाणे<sup>६</sup> विहरइ ॥

१०९. परिसा निग्गया । मंडुओ वि निग्गओ सेलगं अणगारं 'वंदइ नमंसइ पज्जु-  
वासइ'<sup>७</sup> ॥

### सेलगस्स तिगिच्छा-पदं

११०. तए णं से मंडुए राया सेलगस्स अणगारस्स सरीरगं सुक्कं भुक्खं<sup>८</sup> सव्वावाहं  
सरोगं पासइ, पासित्ता एवं वयासी—अहणं भंते ! तुव्भं अहापवत्तेहि<sup>९</sup>  
तेगिच्छएहि<sup>१०</sup> अहापवत्तेणं<sup>११</sup> ओसह-भेसज्ज-भत्तपाणेणं तेगिच्छं आउट्ठावेमि<sup>१२</sup> ।  
तुव्भे णं भंते ! मम जाणसालासु समोसरह, फासु-एसणिज्जं पीढ-फलग-सेज्जा-  
संथारगं ओगिण्हत्ताणं विहरइ ॥

१११. तए णं से सेलए अणगारे मंडुयस्स रण्णो एयमट्ठं तह 'त्ति' पडिसुणेइ ॥

११२. तए णं से मंडुए सेलगं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता जामेव दिसि<sup>१३</sup> पाउव्भूए  
तामेव दिसि पडिगए ॥

११३. तए णं से सेलए कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव<sup>१४</sup> उट्ठियम्मि सूरे सहस्स-  
रस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते स-भंड-मत्तोवगरणमायाए पंथगपामोक्खेहि पंचहि

१. निच्च य (क, ख, ग, घ) ।

२. सुहोइयस्स (ग) ।

३. रोगायंके पाउव्भूए (वृषा) ।

४. सं० पा०—उज्जला जाव दुरहियासा ।

५. सं० पा०—चरमाणे जाव जेणेव सुभूमिभागे  
जाव विहरइ ।

६. अणग वंदइ ता पज्जु-

पूतिस्थलमद्यापि क्वापि नोपलव्वम् ।

८. अहापउत्तेहि (ख); अहापवत्तितेहि (घ) ।

९. तिगच्छएहि (क) ।

१०. अहापवित्तेणं (ख) ।

११. आउंटावेमि (क, ग, घ); आउंटावेमि  
(ख); आदशेषु-प्रायेण 'आउंटावेमि' इति  
पाठो लभ्यते; वृत्तावत्र नास्त्यनुस्वारः ।

१२. दिसं (क) ।

आदशेषु १३. ना० १।१।२४ ।

अस्य

श्रवणारगणं नदि' सेलमपुरमणुष्यविगट, अणुपविगिता सेनेव 'मंडुयम रण्यो जाणसाना' सेनेव उवागच्छट, उवागच्छिता फानु-गुणविगटं \*पीठ-पल्लव-सेवजा-संधारणं श्रोनिष्ठिताणं ० चिह्नट ॥

११४. नमः षं मे मंडुय तेनिच्छिणं' सद्गुणैः, सद्गुणैः नमः सदासी-सुभे षं देवाणुषिणया ! सेलमपुर फानु-गुणविगटं \*श्रोसद्-भेसवज-भक्तपाणेणं ० सेनिच्छिणं श्राद्धट्टेणं ॥

११५. नमः षं ते तेनिच्छिणया मंडुयणं रण्यो षं युना समाणा हट्टुगुट्टा सेलमपुर सद्गुण-पवनेहि श्रोसद्-भेसवज-भक्तपाणेहि तेनिच्छिणं श्राद्धट्टेणं, 'मंडुयणम न मे उवदिनि' ॥

११६. नमः षं मरुन सेलमपुर' अणुपवनेहि \*श्रोसद्-भेसवज-भक्तपाणेहि ० मंडुयणम-एण य से रोगायके उवनेते मायि होत्या—हट्टे मंडुयणरीरे' नमः वषमय-रोगायके ॥

**सेलमपुर पमत्तविहार-पदं**

११७. नमः षं मे सेलम तंनि रोगायकंति उवमंति नमार्णंति तंति विगुडे अणुप-वाटम-सारमे सज्जपाणय म मुच्छिणं सदिणं मिडे अट्टोययमे श्रोसन्ने श्रोसन्ने-विहारी, पामने' \*पामन्नेविहारी कुर्णंति कुर्णंतिविहारी पमने पमन्नेविहारी ० मंगने मंगन्नेविहारी उववट्टे-पीठ'-\*पल्लव-भेसवजा-संधारणं ० पमने मायि विगुट्टे, नो मंजाण्ट फानु-गुणविगटं पीठ-पल्लव-भेसवजा-संधारणं पवनिष्ठिता मंडुयं षं रायं श्राष्टिच्छिता र्णिया' \*जपययविहारे ० विहारीणं ॥

**साष्टि सेलमपुर परिचचार-पदं**

११८. नमः षं मेनि पंभमयज्जाणं पंभट्टे सणमारगमयान सण्ययान सण्यट्ट एणययं सट्टियाणं \*समुदागमयानं सण्यययययं सण्यययययं ० सुवयययययययय-

समयंसि धम्मजागरियं जागरभाणाणं अयमेयारूवे अज्भत्थिए' •चित्तिए पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था—एवं खलु सेलए रायरिसी चइत्ता रज्जं जाव' पव्वइए विउले' असण-पाण-खाइम-साइम मज्जपाणए य मुच्छिए नो संचाएइ'°फासु-एसणिज्जं पीढ-फलग-सेज्जा-संधारयं पच्चप्पिणित्ता मंडुयं च रायं आपुच्छित्ता वहिया जणवयविहारं° विहरित्ताए । नो खलु कप्पइ देवाणुप्पिया ! समणाणं° निग्गथाणं' ओसन्नाणं पासत्थाणं कुसोलाणं पमत्ताणं संसत्ताणं उउ-वद्ध-पीढ-फलग-सेज्जा-संधारए° पमत्ताणं विहरित्ताए । तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं कल्लं सेलगं रायरिसि आपुच्छित्ता पाडिहारियं पीढ-फलग-सेज्जा-संधारयं पच्चप्पिणित्ता सेलगस्स अणगारस्स पंथयं अणगारं वेयावच्चकरं ठावेत्ता वहिया अठ्भुज्जएणं' •जणवयविहारेणं° विहरित्ताए— एवं संपेहेत्ति, संपेहेत्ता कल्लं जेणेव सेलए रायरिसी तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सेलयं रायरिसि आपुच्छित्ता पाडिहारियं पीढ-फलग-सेज्जा-संधारयं पच्चप्पिणित्ता, पच्चप्पिणित्ता पंथयं अणगारं वेयावच्चकरं ठावेत्ति, ठावेत्ता वहिया' •जणवयविहारं° विहरंति ॥

### पंथगस्स चाउम्मासिय-खामणा-पदं

११६. तए णं से पंथए सेलगस्स सेज्जा-संधारय-उच्चार-पासवण-खेल्ल-सिघाणमत्त-ओसह-भेसज्ज-भत्तपाणएणं अगिलाए विणएणं वेयावडियं करेइ ॥
१२०. तए णं से सेलए अणया कयाइ कत्तियं-चाउम्मासियंसि विउलं असण-पाण-खाइम-साइमं आहारमाहारिए सुवहुं च मज्जपाणयं' पीए पच्चावरण्हकाल-समयंसि' सुहप्पसुत्ते ॥
१२१. तए णं से पंथए कत्तिय-चाउम्मासियंसि कयकाउस्सग्गे देवसियं पडिक्कमणं

१. सं० पा०—अज्भत्थिए जाव समुप्पज्जित्था । १०. मज्जणपाययं (ख) ।
२. ओ० सू० २३ । ११. पुच्चावरण्हकालसमयंसि (क, ख, ग, घ) ।
३. विपुलेणं (क) । सर्वेषु आदर्शेषु 'पुच्चावरण्ह०' इति पाठो लभ्यते, किन्तु अर्थ-मीमांसया नासावत्र संगतोस्ति । अत्र सायंकालीनसमयस्य प्रसंगोस्ति, अतः 'पच्चावरण्ह०' इति पाठोस्माभिः गृहीतः । आदर्शेषु लिपिदोषेण 'पच्चा०' स्थाने 'पुच्चा०' जातमिति संभाव्यते । उपासकदशासूत्रेषु (६।१७) इत्थं जातमस्ति ।
४. सं० पा०—संचाएइ जाव विहरित्ताए ।
५. सं० पा०—समणाणं जाव पमत्ताणं । अस्य पूर्तिः १।५।११० सूत्रे प्रदत्तसंकेतानुसारेण कृतास्ति ।
६. एतत् पदं १।५।१२४ सूत्राधारेण स्वीकृतम् ।
७. सं० पा०—अठ्भुज्जएणं जाव विहरित्ताए ।
८. सं० पा०—वहिया जाव विहरंति ।
९. कत्तिया (ख) ।

पट्टिककाले, आत्मन्नाशियं पट्टिकानिउकामे सेलमं रायविकि गामपट्टिकाय सीमेपं  
पाणु संघट्टेड ॥

सेलमरस कोथ-पदं

१२२. त्वां णं मे सेलमं पंथाणं सीमेपं पाणु संघट्टिणं समामे भामुत्तं \*सुत्ते कुवित्  
वाडिक्काम् \*मिनिमिनेमाये उट्टेड, उट्टेत्ता एयं पत्तानी—से केन वं भो ! एव  
अपत्तिवपत्तम्, \*दुरंत-पंत-नत्तम्, ह्योपपुत्तवाडिक्काम्, गिरि-गिरि-पित्त-  
कित्ति-परि-वत्तिज्ज, ते णं ममं सुत्तपुत्तं पाणु संघट्टेड ?

१२३. त्वां णं मे पंथाणं सेलमणं एयं युत्ते समामे भाणं त्वां मणिणं कवत्तम् \*परिभणित्त  
गिरिनायत्तं मत्तम्, अज्जानं कट्टं एयं पत्तानी—अहं णं भो ! पत्त  
कवत्तवाडिक्कामे देवमियं पट्टिककणं पट्टिककाले, आत्मन्नाशियं गामेभाणं  
देवाणुत्तियं यंदमाये सीमेपं पाणु संघट्टेडम् ।

'सं गामेमि णं सुत्तं देवाणुत्तिया' !

समंत्तं णं देवाणुत्तिया !

संभुत्तमत्तियं णं देवाणुत्तिया ! त्वां भुत्तं एयंकरत्तयाणं त्वां कट्टं सेलम  
यत्तमायं एयमत्तं समं विणत्तं भुत्तं-भुत्तं सत्तम् ॥

सेलमरस अरभुत्तजयविहार-पदं

१२४. त्वां णं सत्तं सेलमरसं रायविकिरसं पंथाणं एयं युत्तम् अरभुत्तयाणं अरभुत्तियाणं  
\*सत्तियं पत्तियं मयोभाणं संघट्टेणं समुत्तियाणं -एयं सत्तं सत्तं \*अरभुत्त  
रत्तं सत्तं पत्तियं अरभुत्तं अरभुत्तियाणं, पत्तियं पत्तियाणं अरभुत्तियाणं सुत्तियं  
सुत्तियाणं अरभुत्तियाणं अरभुत्तियाणं अरभुत्तियाणं अरभुत्तियाणं अरभुत्तियाणं  
अरभुत्तियाणं अरभुत्तियाणं अरभुत्तियाणं अरभुत्तियाणं अरभुत्तियाणं  
अरभुत्तियाणं \*अरभुत्तियाणं पत्तियाणं सुत्तियाणं अरभुत्तियाणं अरभुत्तियाणं  
अरभुत्तियाणं अरभुत्तियाणं

...

## छट्ठं अज्भयणं

तुंवे

उक्खेव-पदं

१. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं पंचमस्स नायज्भयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, छट्ठस्स णं भंते ! नायज्भयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?
२. एवं खलु जंतू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे समोसरणं । परिस्ता निग्गया ॥
३. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूई नामं अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अट्ठरसामंते जाव<sup>१</sup> सुक्कज्झाणोव-गए विहरइ ॥

गरुयत्त-लहुयत्त-पदं

४. तए णं से इंदभूई नामं अणगारे जायसड्ढे जाव<sup>२</sup> एवं वयासी—कहण्णं<sup>३</sup> भंते ! जीवा गरुयत्तं वा लहुयत्तं वा हव्वमामच्छंति ? गोयमा ! से जहानामए केइ पुरिसे एणं महं सुक्कतुंवं<sup>४</sup> निच्छिद्धं निरुवहयं दब्भेहि य कुसेहि य वेढेइ, वेढेत्ता मट्ठियालेवेणं लिपइ, लिपित्ता उण्हे दलयइ, दलयित्ता सुक्कं समाणं दोच्चंपि दब्भेहि य कुसेहि य वेढेइ, वेढेत्ता मट्ठियालेवेणं लिपइ, लिपित्ता उण्हे दलयइ, दलयित्ता सुक्कं समाणं तच्चंपि दब्भेहि य कुसेहि य वेढेइ, मट्ठियालेवेणं लिपइ, उण्हे दलयइ । एवं खलु एएणुवाएणं अंतरा वेढेमाणे

१. ओ० सू० ८२ ।

२. ओ० सू० ८३ ।

३. कह णं (क, ग) ।

४. सुक्कं० (क, घ) ।

श्रवणं निवर्तमाने' श्रवणं सुवर्तयेमाने' ज्ञानं धृष्टं नृद्विधायेवेति चिद्वदं,  
 श्रवणात्तन्नाशमपौरुषित्वमिति उद्वगमि पविगत्वेकदा' । मे नृपं गोपमा ! मे नृपे  
 मेनि धृष्टं नृद्विधायेवेनं नगववाणं भासित्वाणं' नगव-भासित्वाणं' उचिप  
 मन्वित्तमद्वयत्वा' अहे धरणिमत्त-वद्वृत्ताने भवद ।

एवामेव गोपमा ! श्रीवा वि पाणाद्वयत्वाणं' •मुखात्वाणं' धरिपत्तामनेनं  
 मेद्वमेनं पविगत्वेनं ज्ञानं' •मिच्छाद्वेनमत्तवेनं' अणुपुद्वेनं' अद्वैतमत्तवेनं  
 नमश्चित्तवित्ता मन्वि नगववाणं भासित्वाणं' नगव-भासित्वाणं' नगवममि नगव  
 त्तिवत्ता धरणिमत्तमद्वयत्वा' अहे नगवत्त-वद्वृत्ताने भवति । एवं नृपु गोपमा !

श्रीवा नगवत्तं इत्यमागच्छति । 'एतं नृपं' गोपमा ! मे नृपे मेनि धरणिमत्तवेनं'  
 नृद्विधायेवेनि चिद्वदं नृद्विधं नि पविगत्वेनं ईमि धरणिमत्तवेनं उच्यते  
 न चिद्वदं । अथानेनं नृपं नि नृद्विधायेवे' •निने नृद्विधं पविगत्वेनं ईमि  
 धरणिमत्तवेनं' उच्यतेनं नृपं चिद्वदं । एवं नृपु एतन् इत्यमागच्छ मेनु धृष्टं  
 नृद्विधायेवेनु चिद्वदं' •नृद्विधं पविगत्वेनं' [मे नृपे ? ] विमुक्तवत्ताने'  
 अहे धरणिमत्तमद्वयत्वा उचिप मन्वित्तमद्वयत्वा-वद्वृत्ताने भवद ।

एवामेव गोपमा ! श्रीवा पाणाद्वयत्वायेवमेनं ज्ञानं मिच्छाद्वेनमत्तवेनं  
 अणुपुद्वेनं अद्वैतमत्तवेनं नगवत्तमद्वयत्वा उचिप नृपमत्त-वद्वृत्ताने  
 भवति । एवं नृपु गोपमा ! श्रीवा नृपं' इत्यमागच्छति ॥



वृत्तिकृता समुद्धृता निगमनगाथा—

जह मिंउलेवालित्तं, गुरुयं तुवं अहो वयइ ।  
 एवं कय-कम्मगुरु, जीवा वच्चंति अहरगइं ॥१॥  
 तं चेव तन्विमुक्कं, जलोर्वारिं ठाइ जाय-लहुभावं ।  
 जह तह कम्म-विमुक्का, लोयग-पइड्डिया होंति ॥२॥

## सत्तमं अञ्जयणं

### रोहिणी

#### उपलक्ष्य-पदं

१. जह्यं भवे ! समस्यै भगवण्य मन्मथीनेन पशुना नाप्यभयवत्तम वसन्तु  
वसन्तु, मन्मथस्य च भवे ! नाप्यभयवत्तम के वदन्ते वसन्तु ?
२. मयं मनु जन्तु ! येन कारिणं विना समस्यै नाप्यगिहे नासं नमरे श्रेयसा ।  
मुमुक्षुभिर्भागे उपज्जगणे ॥

#### पञ्चमस्यवाह-पदं

१. जह्यं च नाप्यगिहे मयं मयं नासं मन्मथयो परिपन्नत—वदन्ते जगणं वसन्तिभूत ।  
भद्रा भवन्ति—वसन्तिविविधमसौदा जगणं मुमुक्षु ॥
२. मयं च मन्मथस्य मन्मथवाहस्य पुत्रा भवन्तु मन्मथस्य वसन्तु वसन्ति मन्मथस्य—  
वसन्तु श्रेयसा, ये जगणं—मन्मथस्ये वसन्तु मन्मथस्ये वसन्तिभूत ॥
३. मयं च मन्मथस्य मन्मथवाहस्य पुत्रा मन्मथस्ये मन्मथस्ये मन्मथस्ये मन्मथस्ये श्रेयसा  
ये जगणं—वसन्ति मन्मथस्ये वसन्तिभूत श्रेयसा ॥

य कोडुंवेसु य मंतेसु य गुजभेयु य रहस्सेसु य निच्छएसु य ववहारेसु य प्रापु-  
च्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, मेढी पमाणं आहारे आलंवणे चक्खू, मेढीभूते  
पमाणभूते आहारभूते आलंवणभूते चक्खूभूए सव्वकज्जवट्टावए ।

तं 'न नज्जइ' णं मए' गयंसि वा चुयंसि वा मयंसि वा भग्गंसि वा लुग्गंसि वा  
सडियंसि वा पडियंसि वा विदेसत्थंसि वा धिप्पवसियंसि वा इमस्स कुडुंवस्स  
के मन्ते आहारे वा आलंवे वा पडिवंधे वा भविस्सइ ?

तं सेयं खलु मम कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव' उट्टियम्मि सूरे सहस्स-  
रस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेत्ता  
मित्त-नाइ'-●नियग-सयण-संबंधि-परियणं० चउण्ह य सुण्हाणं' कुलघरवग्गं  
आमंतेत्ता तं मित्त-नाइ-नियग'-●सयण-संबंधि-परियणं० चउण्ह य सुण्हाणं'  
कुलघरवग्गं विपुलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं धूव-पुप्फ-वत्थ-गंध'-●मल्ला-  
लंकारेण य० सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता तस्सेव मित्त-नाइ'-●नियग-सयण-संबंधि-  
परियणस्स० चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स पुरओ चउण्हं सुण्हाणं परिक्खण-  
दुयाए पंच-पंच सालिअक्खए दलइत्ता जाणामि ताव का किह वा सारक्खेइ  
वा ? संगोवेइ वा ? संबड्ढेइ वा ? एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए  
रयणीए जाव' उट्टियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते 'विपुलं  
असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेइ, मित्त-नाइ'-●नियग-सयण-संबंधि-  
परियणं० चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गं आमंतेइ''', तओ पच्छा ण्हाए भोयणमंड-  
वंसि सुहासणवरगए तेणं मित्त-नाइ''-●नियग-सयण-संबंधि-परियणेणं० चउण्ह  
य सुण्हाणं कुलघरवग्गेणं सद्धिं तं विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं आसादेमाणे  
जाव'सक्कारेइ, सक्कारेत्ता तस्सेव मित्त-नाइ''-●नियग-सयण-संबंधि-परियणस्स०  
चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स पुरओ पंच सालिअक्खए गेण्हइ, गेण्हत्ता  
जेहं सुण्हं उज्झियं' सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—तुमं णं पुत्ता ! मम

१. × (ख, ग) ।

२. मए त्ति मयि (वृ) ।

३. ना० १।१।२४ ।

४. सं० पा०—नाइ० ।

५. ण्हुसाणं (ख) ।

६. सं० पा०—नियग० ।

७. ण्हुसाणं (ख, ग) ।

८. सं० पा०—गंध जाव सक्कारेत्ता ।

९. सं० पा०—नाइ० ।

१०. ना० १।१।२४ ।

११. सं० पा०—नाइ० ।

१२. मित्त-नाइ० चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गं  
आमंतेइ, विपुलं असणं ४ उवक्खडावेइ  
(क, ख, ग) ।

१३. सं० पा—नाइ० ।

१४. ना० १।१।८१ ।

१५. सं० पा०—नाइ० ।

१६. उज्झितं (ख); उज्झितं (ग);  
उज्झितं (घ) ।



चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स पुरओ पंच सालिअक्खए गेण्हइ, गेण्हिता °  
 चउत्थं रोहिणीयं सुण्हं सद्दावेइ, °सद्दावेत्ता एवं वयासी—तुमं णं पुत्ता ! मम  
 हत्थाओ इमे पंच सालिअक्खए गेण्हाहि, जाव' गेण्हइ, गेण्हिता एगंतमवक्कमइ,  
 एगंतमवक्कमियाए इमेयारूवे अज्झत्थिए चित्तिए पत्थिए मणोगए संकप्पे  
 समुप्पज्जित्था—एवं खलु मम ताओ इमस्स मित्त-नाइ-नियग-सयण-संवेदि-  
 परियणस्स चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स पुरओ सद्दावेत्ता एवं वयासी—तुमं णं  
 पुत्ता ! मम हत्थाओ इमे पंच सालिअक्खए गेण्हाहि, अणुपुब्बेणं सारक्खमाणी  
 संगोवेमाणी विहराहि । ज्या णं अहं पुत्ता ! तुमं इमे पंच सालिअक्खए  
 जाएज्जा, तथा णं तुमं मम इमे पंच सालिअक्खए पडिनिज्जाएज्जासि त्ति कट्टु  
 मम हत्थंसि पंच सालिअक्खए दलयइ ° । तं भवियव्वं एत्थ कारणेण' । तं सेयं  
 खलु मम एए पंच सालिअक्खए सारक्खमाणीए संगोवेमाणीए संवड्ढेमाणीए  
 त्ति कट्टु एवं सपेहेइ, सपेहेत्ता कुलघर-पुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—  
 तुव्वे णं देवाणुप्पिया ! एए पंच सालिअक्खए गेण्हइ, गेण्हिता पढमपाउसंसि  
 महावुट्ठिकायंसि निवइयंसि समाणंसि खुड्ढागं केयारं सुपरिकम्मियं करेह, करेत्ता  
 इमे पंच सालिअक्खए वावेह, वावेत्ता दोच्चं पि 'तच्चं पि' उक्खय-निहए'  
 करेह, करेत्ता वाडिपक्खेवं' करेह, करेत्ता सारक्खमाणा संगोवेमाणा  
 आणुपुब्बेणं संवड्ढेह ॥

११. तए णं ते कोडुविया रोहिणीए एयमट्ठं पडिसुणेंति, ते पंच सालिअक्खए गेण्हंति,  
 अणुपुब्बेणं सारक्खंति, संगोविति' ॥
१२. तए णं कोडुविया पढमपाउसंसि महावुट्ठिकायंसि निवइयंसि समाणंसि खुड्ढागं  
 केयारं सुपरिकम्मियं करेंति, ते पंच सालिअक्खए ववंति, दोच्चं पि तच्चं पि  
 उक्खय-निहए करेंति, वाडिपरिक्खेवं करेंति, अणुपुब्बेणं सारक्खेमाणा  
 संगोवेमाणा संवड्ढेमाणा विहरंति ॥
१३. तए णं ते साली अणुपुब्बेणं सारक्खज्जमाणा संगोविज्जमाणा संवड्ढिज्जमाणा  
 साली जाया—किण्हा किण्होभासा' °नीला नीलोभासा हरिया हरिओभासा  
 सीया सीओभासा णिद्धा णिद्धोभासा तिब्वा तिब्बोभासा किण्हा किण्हच्छाया  
 नीला नीलच्छाया हरिया हरियच्छाया सीया सीयच्छाया णिद्धा णिद्धच्छाया  
 तिब्वा तिब्बच्छाया घण-कडियकडिच्छाया रम्मा महामेह ° निउरं वभूया  
 पासाईया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ॥

१. सं० पा०—सद्दावेइ जाव तं ।

२. ना० १।७।६,७ ।

३. कारणेणं त्ति कट्टु (क, घ) ।

४. ×(क, ग) ।

५. निक्खए (क, ख, ग, घ) ।

६. ×(क, ख, ग) ।

७. संगोविति विहरंति (क, ख, ग, घ) ।

८. सं० पा०—किण्होभासा जाव निउरं वभूया ।



२०. तए णं ते कोडुविद्या ते साली कोट्टागारंसि पल्लंसि' •पक्खिवन्ति, पक्खिवित्ता  
ओलिपन्ति, ओलिपित्ता लच्छिय-मुट्ठिए करन्ति, करन्ता सारक्खमाणा संगोवे माणा °  
विहरन्ति ॥
२१. चउत्थे वासारत्ते वहवे कुंभराया जाया ॥

### परिक्खा-परिणाम-पदं

२२. तए णं तस्स धणस्स पंचमयंसि संवच्छरंसि परिणममाणंसि पुट्टवरत्तावरत्तकाल-  
समयंसि इमेयारूवे अज्भत्थिए चित्तिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्या—  
एवं खलु मए इओ अतीते' पंचमे संवच्छरे चउण्हं सुण्हणं परिक्खणट्टयाए ते  
पंच-पंच सालिअक्खया हत्थे दिन्ना । तं सेयं खलु मम कल्लं पाउप्पभायाए  
रयणीए जाव' उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते पंच  
सालिअक्खए परिजाइत्तए' जाव' जाणामि ताव काए किहू सारक्खिया वा  
संगोविया वा संवड्डिया वत्ति कट्टु एवं संपहेइ, संपहेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए  
रयणीए जाव' उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते विपुलं  
असणं °पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेत्ता मित्त-नाइ-नियग-सयण-संवंधि-  
परियणं चउण्ह य सुण्हणं कुलघरवग्गं जाव' ° सम्माणित्ता तस्सेव मित्त-नाइ-  
°नियग-सयण-संवंधि-परियणस्स ° चउण्ह य सुण्हणं कुलघरवग्गस्स पुरओ  
जेट्ठं उज्जिभयं सदावेइ, सदावेत्ता एवं वयासी—एवं खलु अहं पुत्ता ! इओ  
अतीते पंचमम्मि संवच्छरे' इमस्स मित्त-''•नाइ-नियग-सयण-संवंधि-परिय-  
णस्स ° चउण्ह य सुण्हणं कुलघरवग्गस्स य पुरओ तव हत्थंसि पंच सालिअक्खए  
दलयामि । जया णं अहं पुत्ता ! एए पंच सालिअक्खए जाएज्जा तया णं तुमं  
मम इमे पंच सालिअक्खए पडिनिज्जाएसि'३ । से नूनं पुत्ता ! अट्ठे समट्ठे ?

१. सं० पा०—पल्लन्ति जाव विहरन्ति; घल्लन्ति  
(क) पल्लन्ति (ख, ग, घ); यद्यपि बहुषु  
आदर्शेषु 'पल्लन्ति' इति पदं विद्यते, किन्तु  
नैसत् समीचीनं प्रतिभाति । यद्येतत् स्वीकृतं  
स्यात् तर्हि जाव शब्दस्य पूर्वराधारस्थलं  
नोपलभ्यते 'पल्लन्ति' इति पदस्यार्थोपि  
नैव संगच्छते । अतएव अस्माभिः पल्लंसि'  
इति पदं स्वीकृतम् । अस्याधारः (४३) सूत्रे  
'पल्ले उन्निदइ' इति पाठे उपलभ्यते ।

२. अईए (क) ।

३. ना० १।१।२४ ।

४. परिजातित्तए (ख, ग, घ) ।

५. एवं (घ) ।

६. ना० १।१।२४ ।

७. सं० पा०—असणं मित्त-नाइ चउण्ह य  
सुण्हणं कुलघर जाव सम्माणित्ता ।

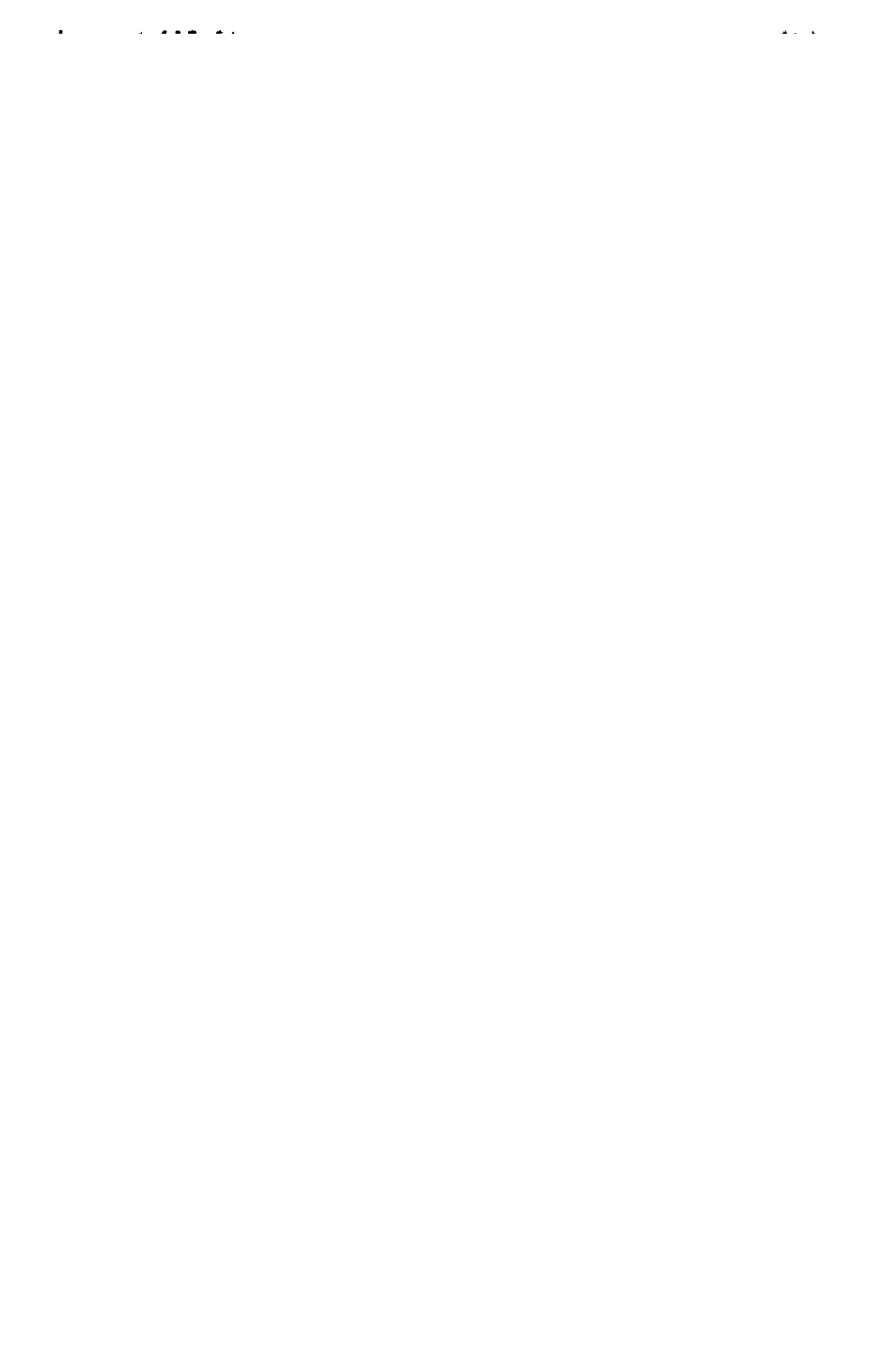
८. ना० १।७।६ ।

९. सं० पा०—नाइ ° ।

१०. संवत्सरे (ग) ।

११. सं० पा०—मित्त ।

१२. °निज्जाएसि ति कट्टु (क) ।





- च ण्हाणोवदाइयं च वाहिर'-पेसणकारियं' च ठवेइ' ॥
२७. एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा' •आयरिय-उवज्झा-याणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं° पव्वइए, पंच य से महव्वयाइं उज्झियाइं भवंति, से णं इहभवे चेव व्हूणं समणाणं व्हूणं समणीणं व्हूणं सावयाणं व्हूणं सावियाण य हीलणिज्जे जाव' चाउरंत-संसार-कंतारं भुज्जो-भुज्जो अणुपरियट्टिस्सइ—जहा सा उज्झिया' ॥
२८. एवं भोगवइया वि, नवरं"—छोल्लेमि, छोल्लित्ता अणुगिलेमि, अणुगिलित्ता सकम्मसंजुत्ता यावि भवामि । तं नो खलु ताओ ! ते चेव पंच सालिअक्खए, एए णं अण्णे ।
२९. तए णं से धणे सत्थवाहे भोगवइयाए अंतिए एयमट्टं सोच्चा निसम्मा आमुरुत्ते जाव' मिसिमिसेमाणे भोगवइं तस्स मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणस्स चउण्हं सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स य पुरओ° तस्स कुलघरस्स कंडितियं' च कोट्टितियं च पोसतियं च एवं—खंडितियं खंडितियं परिवेसंतियं' परिभायंतियं'' अविभतरियं'' पेसणकारि महाणसिणि ठवेइ ॥
३०. एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा आयरिय-उवज्झा-याणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए, पंच य से महव्वयाइं फालियाइं'' भवंति, से णं इहभवे चेव व्हूणं समणाणं व्हूणं समणीणं व्हूणं सावयाणं व्हूणं सावियाण य हीलणिज्जे जाव'' चाउरंत-संसार-कंतारं भुज्जो-भुज्जो अणुपरियट्टिस्सइ—जहा व सा भोगवइया ॥
३१. एवं रक्खियावि'', नवरं—जेणेव वासघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मंजूसं विहाडेइ, विहाडेत्ता रयणकरंडगाओ ते पंच सालिअक्खए गेण्हइ, गेण्हित्ता जेणेव धणे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पंच सालिअक्खए धणस्स हत्थे दलयइ ॥
३२. तए णं से धणे सत्थवाहे रक्खियं एवं वयासी—किं णं पुत्ता ! ते चेव एए पंच सालिअक्खए उदाहु अण्णे ?

१. वाहर (ख) ।

२. पेसणकारि (क, ख) ।

३. ठवेइ (क) ।

४. सं० पा०—निग्गंथी वा जाव पव्वइए ।

५. ना० १।३।२४ ।

६. उज्झिया (ग, घ) ।

७. सं० पा०—नवरं तस्स ।

८. ना० १।१।१६१ ।

९. कुंडेतियं (ख); कंडेतियं (ग); खंडेतियं (घ) ।

१०. °तियं च (ग) ।

११. °तियं च (ग) ।

१२. °तरियं च (ग) ।

१३. फाडियाति (घ) फोडियाइं (वव) ।

१४. ना० १।३।२४ ।

१५. रक्खितियावि (ख, ग) ।

३३. यत् नो जिनितव्यं यत् नो भयव्यर्हं यत् नो क्लेशो—ते वेद ताव्यो ! एतं यत्र मान्दि-  
शक्यम्, नो यवने ।

यत्कृतं ? पुना !

यत् नो वायो ! तुल्ये ह्यसौ शरीरि पंचमे' •मंदव्यादे इममन् भित्त-वात-विपन्न-  
मायन-मंसपि-यस्यममन् जलदं यं सुकृतं पुनश्चरुवममन् युदसो यत्र मान्दि-  
शक्यम् वेदात्, वेदित्वा मम भद्रं हि, भद्रं मेवा मम एवं कथामो—यत् नो  
पुना ! मम ज्ञानस्यो हमे यत्र मान्दिशक्यम् मिच्छति, सत्सुख्येण सात्त्विकमायो  
सर्वाधिभाषी विद्वराति । जना नो यत् पुना ! यत् हमे यत्र मान्दिशक्यम्  
जलज्ज्वा, यथा नो यम मम हमे यत्र मान्दिशक्यम् पदिमिच्छामुज्ज्वामि वि  
पददृ मम सुख्यमि यत्र मान्दिशक्यम् कथवत् । तं भदिव्यं सुख पादय्यो  
वि कदृते ये यत्र मान्दिशक्यम् सुखे यत् •वेदमि, यदित्वा यत्तकडिमात्  
पदिमपिमि, पदिमपिज्ज्वा उगीतानुमे ह्येमि, ह्येवमा' जियेक पदिज्ज्वायवमापी  
मानि विद्वरामि । ययो' एतं कथयते वायो ! ते वेद यत्र मान्दिशक्यम्,  
नो यवने ॥

सालिअक्खए सगडि-सागडेणं निज्जाइस्ससि ? ॥

३८. तए णं सा रोहिणी धणं सत्थवाहं एवं वयासी—एवं खलु ताओ ! तुभे इओ अतीते पंचमे संवच्छरे इमस्स मित्त'-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणस्स चउण्हय सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स पुरओ पंच सालिअक्खए गेण्हह, गेण्हत्ता ममं सदावेह, सदावेत्ता एवं वयासी—तुमं णं पुत्ता मम हत्थाओ इमे पंच सालिअक्खए गेण्हहि, अणुपुव्वेणं सारक्खमाणी संगोवेमाणी विहराहि । जया णं अहं पुत्ता ! तुमं इमे पंच सालिअक्खए जाएज्जा, तथा णं तुमं मम इमे पंच सालिअक्खए पडिनिज्जाएज्जासि ति कट्ठु मम हत्थंसि पंच सालिअक्खए दलयह । तं भवियव्वं एत्थ कारणेणं । तं सेयं खलु मम एए पंच सालिअक्खए सारक्खमाणीए संगोवेमाणीए संबद्धेमाणीए जाव' °वह्वे कुंभसयाजाया तेणव कमेण । एवं खलु ताओ ! तुभे ते पंच सालिअक्खए सगडि-सागडेणं निज्जाएमि ॥
३९. तए णं से धणे सत्थवाहे रोहिणीयाए सुवहुयं सगडि-सागडं दत्ताति' ॥
४०. तए णं से रोहिणी सुवहुं सगडि-सागडं गहाय जेणेव सए कुलघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छत्ता कोट्टागारे विहाडेइ, विहाडित्ता पल्ले उट्ठिभदइ, उट्ठिभदित्ता सगडि-सागडं भरेइ, भरेत्ता रायगिहं नगरं मज्झंमज्झेणं जेणेव सए गिहे जेणेव घणे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छइ ॥
४१. तए णं रायगिहे नयरे सिघाडग'-°तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापहपहेसु° वहुजणो अणमणं एवमाइक्खइ—घण्णे णं देवाणुप्पिया ! धणे सत्थवाहे, जस्स णं रोहिणीया सुण्हा पंच सालिअक्खए 'सगडि-सागडेणं' निज्जाएइ ॥
४२. तए णं से धणे सत्थवाहे ते पंच सालिअक्खए सगडि-सागडेणं निज्जाइए पासइ, पासित्ता हटुवुट्ठे' पडिच्छइ, पडिच्छित्ता तस्सेव मित्त-नाइ'-°नियग-सयण-संबंधि-परियणस्स° चउण्हय सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स पुरओ रोहिणीयं सुण्हं तस्स कुलघरस्स वहुमु कज्जेसु य' °कारणसु य कुडुंवेसु य मंतेसु य गुवभेसु य °रहस्सेसु य आपुच्छणिज्जं' °पडिपुच्छणिज्जं मेडि पमाणं आहारं आलवणं चक्खुं, मेढीभूयं पमाणभूयं आहारभूयं आलवणभूयं चक्खुभूयं सव्वकज्ज° वड्ढावियं पमाणभूयं ठवेइ ।
४३. एवामेव समणाउसो' ! °जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा आयरिय-उवज्झा-याणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए°, पंच से महव्वया

१. सं० पा०—मित्त जाव वहवे ।

२. ना० १।७।१०-२१ ।

३. दलयइ (ख) ।

४. सं० पा०—सिघाडग जाव वहुजणो ।

५. सगडसागडिएणं(क); सगडिसागडिएणं (ख) । १०. सं० पा०—समणाउसो ! जाव पंच ।

६. हट्ट जाव (क, च) ।

७. सं० पा०—नाइ ।

८. सं० पा०—कज्जेसु जाव रहस्सेसु ।

९. सं० पा०—आपुच्छणिज्जं जाव वड्ढावियं ।

संबद्धिया भवन्ति, ते च साधने येन साधनं समाधानं साधनं समाधानं साधनं  
 साधनात् साधनं साधिकात् न साधिकात् साधने साधने साधनात् साधनात् साधिकात्-  
 साधने—साधनं च साधिकात् ॥

निवृत्त-पदं

४४. एवं साधु साधु ! समाधानं साधनात् साधिकात् साधने साधने साधने साधने  
 निवृत्त-पदं साधने साधने साधनात् साधनात् साधने साधने साधने साधने ।  
 निवृत्ति ॥

सो अप्पहिण्णकरई, इहल्लोयम्मिचि विऊर्हि पणयपओ ।  
एगंतसुही जायइ, परम्मि गोवयंपि पावेइ ॥१०॥

रोहिणी—

जह रोहिणी उ सुण्हा, रोवियसाली जहत्थमभिहाणा ।  
वड्डित्ता सालिकणे, पत्ता सब्वस्स सामित्तं ॥११॥  
तह जो भव्वो पाविय, वयाइ पालेइ अप्पणा सम्मं ।  
अण्णेसि वि भव्वाणं, देइ अण्णेसि हियहेउं ॥१२॥  
सो इह संघप्पहाणो, जुगप्पहाणोत्ति लहइ संसद्दं ।  
अप्पपरेंसि कल्लाण-कारओ गोयमपहुव्व ॥१३॥  
तित्थस्स वुड्डिकारी, अक्खेवणओ कुत्तित्थियाईणं ।  
विउस-नरसेविय-कमो, कमेण सिद्धिं पि पावेइ ॥१४॥



## महव्वलस तवविसय-माया-पद

१८. तए णं से महव्वले अणगारे इमेणं कारणेणं इत्थिनामगोयं कम्मं निव्वत्तिमु—  
जइ णं ते महव्वलवज्जा छ अणगारा चउत्थं उवसंपज्जित्ता णं विहरंति, तओ  
से महव्वले अणगारे छट्ठं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ । जइ' णं ते महव्वलवज्जा छ  
अणगारा छट्ठं उवसंपज्जित्ता णं विहरंति, तओ से महव्वले अणगारे अट्ठमं  
उवसंपज्जित्ता णं विहरइ । एवं--अह अट्ठमं तो दसमं, अह दसमं तो  
दुवालसमं । 'इमेहि य'<sup>१</sup> णं वीसाए णं कारणेहि आसेविय-वहुलीकाएहि तित्थयर-  
नामगोयं कम्मं निव्वत्तिमु, तं जहा—

## संगहणी-गाहा

अरहंत-सिद्ध-पवयण-गुरु-थेर-बहुस्सुय'-तवस्सीमु ।  
वच्छल्लया य तेसिं, अभिक्ख' नाणोवओगे य ॥१॥  
दंसण-विणए आवस्सए य सीलव्वए निरइयारो ।  
खणलवत्तवच्चियाए, वेयावच्चे समाहीए' ॥२॥  
अपुव्वनाणगहणे, सुयभत्ती पवयण'-पहावणया ।  
एएहि कारणेहि, तित्थयरत्तं लहइ 'सो उ'<sup>२</sup> ॥३॥

## महव्वलादीणं विविहतवचरण-पदं

१९. तए णं ते महव्वलपामोक्खा सत्त अणगारा मासियं भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ता  
णं विहरंति जाव' एगाराइयं ॥  
२०. तए णं ते महव्वलपामोक्खा सत्त अणगारा खुड्डाणं 'सीहनिकीलियं तवोकम्म'<sup>३</sup>  
उवसंपज्जित्ता णं विहरंति, तं जहा—

चउत्थं करेति, सव्वकामगुणियं पारेति ।  
छट्ठं करेति, चउत्थं करेति ।  
अट्ठमं करेति, छट्ठं करेति ।  
दसमं करेति, अट्ठमं करेति ।  
दुवालसमं करेति, दसमं करेति ।  
चोइसमं करेति, दुवालसमं करेति ।

१. अत्र वर्णविपर्ययेण 'थकार' स्थाने इकारो  
जातः । मूढूच्चारणार्थं वर्णविपर्ययो लभ्यते  
आर्पणाक्येषु ।  
२. इमेहि च (क) ।  
३. बहुस्सुए (क, ख, ग, घ) ।  
४. अत्र अनुस्वारलोपः ।  
५. समाहो य (क, ख, ग, घ) ।  
६. पवयणे (क, ख, ग, घ) ।  
७. जीवो (वृ); एसो (वृपा) ।  
८. ना० १११।१६८ ।  
९. ° लियत्तवोकम्मं (ख) ।

सोऽस्मत्समं करोति, सोऽस्मत्समं करोति ।  
 सद्दृशं अस्मत्समं करोति, सोऽस्मत्समं करोति ।  
 सोऽस्मत्समं करोति, सोऽस्मत्समं करोति ।  
 सद्दृशं अस्मत्समं करोति, सोऽस्मत्समं करोति ।  
 सोऽस्मत्समं करोति, सद्दृशं अस्मत्समं करोति ।  
 सोऽस्मत्समं करोति, अस्मत्समं करोति ।  
 सद्दृशं अस्मत्समं करोति, सद्दृशं करोति ।  
 अस्मत्समं करोति, सद्दृशं करोति ।  
 सद्दृशं करोति, सद्दृशं करोति ।



## समाहिमरण-पदं

२६. तए णं ते महव्वलनामोक्त्वा रात्त अणगारा तेणं उरानेणं<sup>१</sup> तवोकम्मंणं नुक्का भुक्खा निम्मंसा किडिकिडियाभूया अट्टिचम्मावणट्ठा किंसा धमणिंसंतया जाया या वि होत्था । जहा खंदथो<sup>२</sup> नवरं—थेरे आपुच्छिता चारवव्वयं सणियं-सणियं दुरुहंति जाव<sup>३</sup> दोमासियाए सनेहणाए अण्णाणं भोसेत्ता, सवीसं भत्तसयं अणसणाए छेत्ता, चतुरासीइं वाससयसहस्साइं नामण्णपरियागं पाडणित्ता, चुलसीइं पुव्वसयसहस्साइं सव्वाउयं पालइत्ता जयंते विमाणे देवत्ताए उववण्णा । तत्थ णं अत्येगइयाणं देवाणं वत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता । तत्थ णं महव्वलवज्जाणं छण्हं देवाणं देसूणाइं वत्तीसं सागरोवमाइं ठिई । महव्वलस्स देवस्स य पडिपुणाइं वत्तीसं सागरोवमाइं ठिई<sup>४</sup> ॥

## पच्चायाति-पदं

२७. तए णं ते महव्वलवज्जा छप्पि देवा जयंताओ देवलोगाओ आउक्खएणं 'भवक्खएणं ठितिकखएणं'<sup>५</sup> अणंतरं चयं चइत्ता इहेव जंबुदीवे दीवे भारहे वासे विसुद्धपिइमाइवंसेसु<sup>६</sup> रायकुलेसु पत्तेयं-पत्तेयं कुमारत्ताए पच्चायाया, तं जहा—पडिबुद्धी इक्खागराया,

चंदच्छाए अंगराया,

सखे कासिराया,

रुप्पी कुणालाहिवई,

अदीणसत्त कुरराया,

जियसत्त पंचालाहिवई ॥

२८. तए णं से महव्वले देवे तिहिं नाणेहिं समगे 'उच्चट्टाण्णएणं गहेसु'<sup>७</sup>, सोमासु दिसासु वित्तिमिरासु विसुद्धासु, जइएसु<sup>८</sup> सउणेसु, पयाहिणाणुकूलंसि भूमि-सप्पिसि मास्यंसि पवार्यंसि, निष्फण्ण-सस्स-मेइणीयंसि कालंसि पमुइय-पक्कीलिएसु<sup>९</sup> जणवएसु अद्धरत्तकालसमयंसि अस्सिणीनक्खत्तेणं जोगमुवागएणं जे से 'हेमंताणं चउत्थे मासे अट्टमे पक्खे, तस्स णं फग्गुणसुद्धस्स'<sup>१०</sup> चउत्थीपक्खेणं जयंताओ विमाणाओ वत्तीसं सागरोवमठिइयाओ अणंतरं चयं चइत्ता इहेव

१. पू०—ना० १।१।२०२ ।

२. भग० २।१६४-६८; इहेव यथा मेघकुमारो वर्णितः (१।१।२०३-२०६) ।

३. ना० १।१।२०६-२०८ ।

४. ठिई पण्णत्ता (क, ख, घ) ।

५. ठितिकखएणं भवक्खएणं (ख, ग, घ) ।

६. पित्तिमात्ति० (ख, ग, घ) ।

७. ०गएसु गहेसु (घ) ।

८. जइतेसु गहेसु (क, ख, ग, घ) ।

९. पक्कीलिएसु (ख) ।

१०. वाचनान्तरपु—गिम्हाणं पढमे मासे दोच्चे पक्खे चेतसुद्धे तस्स णं चेतसुद्धस्स (वृ) ।



३४. तए णं सा पभावई देवी नवण्हं मासाणं [वहुपडिपुण्णाणं ?] अद्धट्टमाण य राइंदियाणं [वीइक्कंताणं ?] जे से हेमंताणं पढमे मारो दोच्चे पक्खे मग्गसिर-सुद्धे, तस्स णं एक्कारसीए पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि अस्सिणीनक्खत्तेणं [जोगमुवागएणं ?] उच्चट्टाणगएसुं गहेसुं जाव' पमुइय-पक्कीलिएसु जणवएसु आरोयारोयं' एगुणवीसइमं तित्थयरं पयाया ॥
३५. तेणं कालेणं तेणं समएणं अहेलोगवत्थव्वाओ अट्ट दिसाकुमारीमहयरियाओ जहा जंबुद्वीवपणत्तीए' जम्मणुस्सवं', नवरं—मिहिलाए कुंभस्स पभावईए अभिलाओ संजोएयव्वो जाव नंदीसरवरदीवे महिमा ॥
३६. तथा णं कुंभए राया वहाँहि भवणवइ'-वाणमंतर-जोइस-त्रेमाणिएहि देवेहि तित्थयर-जम्मणाभिसेयमहिमाए कयाए समाणीए पच्चूसकालसमयंसि नगर-गुत्तिए सद्दवेइ° जायकम्मं जाव' नामकरणं—जम्हा' णं अम्हं इमीसे' दारियाए माऊए मल्लसयणिज्जंसि डोहले विणीए, तं होउ णं [अम्हं दारिया ?] नामेणं मल्ली' ॥
३७. १०•तए णं सा मल्ली पंचघाईपरिविखत्ता जाव" सुंहंसुहेणं परिवड्ढई° ॥

१. ना०—१।५।२५ ।

२. आरोगमारोगं (ग) ।

३. वक्ष° ५ ।

४. जम्मणं सव्वं (क, ख, ग, घ) । अत्र 'जम्मणं सव्वं' अस्य पाठस्थार्थो नैव संगति गच्छति । वृत्तिकृता—'जन्मवक्तव्यता सर्वा वाच्या' इति विवृतम्, किन्तु नात्र विवरणानु-सारी पाठोस्ति । अत्र 'जम्मणुस्सवं' इति पाठः स्वाभाविकः स्यात् । जंबुद्वीपप्रज्ञप्त्यामपि 'जम्मणमहिमं करेति' इति पाठो लभ्यते । असौ 'जम्मणुस्सवं' इति पाठस्य पुष्टि करोति । लिपिदोषेण पाठविपर्ययो जातः इति कल्पना नात्रास्वाभाविकी ।

५. सं० पा०—भवणवइ° तित्थयर° ।

६. कप्पो° महावीर जन्म प्रहरण ।

७. जहा (ख, घ) ।

८. इमीए (क, ख, ग, घ); अत्र षष्ठ्यन्तं

सा वड्ढई भगवई, दियलौयचुया अणोवमसिरीया ।

दासीदासपरिवुडा,

परिकिण्णा

पीढमदेहि ॥१॥

पदमस्ति तेन 'इमंसे' इति पदं युज्यते ।

६. मल्ली २ (क) ।

१०. सं० पा०—जहा महव्वले जाव परिवड्ढिया ।

अत्र पूर्णपाठावलोकनार्थं महावलस्य संकेतः कृतोस्ति । तस्य वर्णनं भगवत्यां (११।११) विद्यते । तत्राप्यादर्शेषु 'जहा दढपइण्णे' इति समर्पणमस्ति, तेनास्माभिरसौ पाठः दृढप्रतिज्ञप्रकरणादेव पूरितः ।

अतोऽग्रे आदर्शेषु निम्नलिखितं गाथाद्वयं प्राप्यते, किन्तु एतत् प्रक्षिप्तमस्ति । वृत्तिकारेणापि सूचितमिदं, यथा—'सा वड्ढई भगवई' इत्यादि गाथाद्वयं आवश्यक-नियुं क्तिसंवंधिऋपभमहावीरवर्णकरूपं बहु-विशेषणसाधर्म्यादिहाधीतम्, न पुनर्गाथा-द्वयोक्तानि विशेषणानि सर्वाणि मल्लि-जिनस्य घटन्ते । तेनास्माभिः नैतत् मूलपाठे स्वीकृतम् । तच्च गाथाद्वयमिदम्—



४१. तए णं सा मल्ली मणिपेढियाए उवरि अप्पणो सरिसियं सरित्तयं सरिव्वयं सरिस-  
लावण्ण-रूव-जोव्वण-गुणोववेयं कणगामइं' मत्थयच्छिड्डं पउमुप्पल'-पिहाणं  
पडिमं करेइ, करेत्ता जं विउलं असण-पाण-खाइम-साइमं आहारेइ, तओ  
मणुण्णाओ असण-पाण-खाइम-साइमाओ कल्लाकत्तिल एगमेगं पिडं गहाय  
तीसे कणगामईए मत्थयच्छिड्डाए' •पउमुप्पल-पिहाणाए° पडिमाए मत्थयंसि  
पक्खवमाणी-पक्खवमाणी विहरइ ॥
४२. तए णं तीसे कणगामईए मत्थयच्छिड्डाए' •पउमुप्पल-पिहाणाए° पडिमाए  
एगमेगंसि पिडे पक्खप्पमाणे-पक्खप्पमाणे तओ गंवे' पाउभवेइ, से जहाणामए  
—अहिमडे इ वा' •गोमडे इ वा सुणहमडे इ वा मज्जारमडे इ वा मणुस्समडे इ  
वा महिसमडे इ वा मूसगमडे इ वा आसमडे इ वा हत्थिमडे इ वा सीहमडे इ वा  
वग्घमडे इ वा विगमडे इ वा दीविगमडे इ वा । मय-कुहिय-विणट्ट-दुरभिवा-  
वण्ण-दुविभगंघे किमिजालाउलसंसत्ते असुइ-विलीण-विगय-वीभत्सदरिसणिज्जे  
भवेयारूवे सिया ?  
नो इणट्टे समट्टे । एत्तो अणिट्टतराए चेव अकंततराए चेव अप्पियतराए चेव  
अमणुण्णतराए चेव° अमणामतराए चेव ॥

### पडिबुद्धिराय-पदं

४३. तेणं कालेणं तेणं समएणं कोसला नामं जणवए । तत्थ णं सागेए नामं नयरे ।  
४४. तस्स णं उत्तरपुरत्थिमे' दिसीभाए, एत्थ णं महगे नागघरए होत्था—दिव्वे  
सच्चे सच्चोवाए सण्णिहिय-पाडिहेरे ॥  
४५. तत्थ णं सागेए नयरे पडिबुद्धी नामं इक्खागराया परिवसइ । पउमावई देवी ।  
सुबुद्धी अमच्चे साम-दंड'-•भेय-उवप्पयाण-नीति-सुपउत्त-नय-विहण्ण'  
विहरई ° ॥
४६. तए णं पउमावईए देवीए अण्णया कयाइ नागजण्णए यावि होत्था ॥  
४७. तए णं सा पउमावई देवी नागजण्णमुवट्ठियं जाणित्ता जेणेव पडिबुद्धी' •राया  
तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयलपरिग्गहियं दसणहं सिरंसावत्तं मत्थए

१. कणगामयं (ग) ।

२. पउमप्पल्ल (ख, ग, घ) ।

३. सं० पा०—मत्थयच्छिड्डाए जाव पडिमाए ।

४. सं० पा—कणगामईए जाव मत्थयच्छिड्डाए ।  
अत्र जाव शब्दस्य प्रयोगोऽयुद्धोस्ति । असी  
उपरितनसूत्रवत् 'मत्थयच्छिड्डाए जाव  
पडिमाए' एवं युज्यते ।

५. गंधिए (क); गंधि (ग, घ) ।

६. सं० पा०—अहिमडे इ वा जाव अणिट्टतराए  
अमणामतराए ।

७. उत्तरपुरत्थिमे णं (ख, ग) ।

८. सं० पा०—साम दंड° । असी अपूर्णः पाठः  
'जाव' आदिपुत्तिसकेतरहितोस्ति ।

९. पू०—ता० १।१।१६ ।

१०. सं० पा०—पडिबुद्धी° करयल° ।



५३. तए णं सा पउमावई देवी अंतो अंतैउरंसि ण्हाया जाव' धम्मियं जाणं दुह्ढा ॥
५४. तए णं सा पउमावई देवी नियग-परियाल-संपरिवुडा सागेयं नयरं मज्झमज्झेणं निज्जाइ', जेणेव पोक्खरणी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता पोक्खरणि ओगाहति, ओगाहिता जलमज्जणं करेइ जाव' परमसुइभूया उल्लपडसाडया जाइं तत्थ उप्पलाइं जाव' ताइं गेण्हइ, जेणेव नागघरए तेणेव प्हारेत्य गमणाए ॥
५५. तए णं पउमावईए देवीए दासचेडीओ व्हूओ पुप्फपडलग-हत्थगयाओ धूवकड-च्छुय-हत्थगयाओ पिट्ठओ समणुगच्छंति ॥
५६. तए णं पउमावई देवी सत्विट्ठीए जेणेव नागघरए तेणेव उवागच्छइ, उवाग-च्छिता नागघरं अणुप्पविसइ, लोमहत्थगं परामुसइ जाव' धूवं डहइ, पडिवुद्धि पडिवालेमाणी-पडिवालेमाणी चिट्ठइ ॥
५७. तए णं से पडिवुद्धी ण्हाए' हत्थिखंधवरगए सकोरेंट' मल्लदामेणं छतेणं धरिज्जमाणेणं सेयवरचामराहि वीइज्जमाणे ह्य-गय-रह-पवरजोहकलियाए चाउरंगिणीए सेणाए सद्धि संपरिवुडे महया भड-चडगर-रह-पहकर-विदपरि-क्खित्ते सागेयं नगरं मज्झमज्झेणं निगगच्छइ, निगगच्छिता जेणेव नागघरए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता हत्थिखंधाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरहिता आलोए पणामं करेइ, करेत्ता पुप्फमंडवं अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता पासइ तं एगं महं सिरिदामगंडं ॥
५८. तए णं पडिवुद्धी तं सिरिदामगंडं सुचिरं कालं निरिक्खइ । तंसि सिरिदाम-गंडंसि जायविम्हए सुवुद्धि अमच्चं एवं वयासी—तुमं देवाणुप्पिया ! मम दोच्चेणं व्हूणि गामागर जाव' सण्णिवेसाइं आहिंडसि, व्हूण य राईसर जाव' सत्थवाहपभिईणं गिहाइं अणुप्पविससि, तं अत्थि णं तुमे कहिंचि एरिसए सिरिदामगंडे दिट्ठपुव्वे, जारिसए णं इमे पउमावईए देवीए सिरिदामगंडे ?
५९. तए णं सुवुद्धी पडिवुद्धि रायं एवं वयासी—एवं खलु सामी ! अहं अण्णया कयाइ' तुव्भं दोच्चेणं मिहिलं रायहाणि गए । तत्थ णं मए कुंभयस्स रण्णो धूयाए पभावईए देवीए अत्तयाए मल्लीए संवच्छर-पडिलेहणगंसि दिव्वे

१. ना० १११६५ ।

२. निघाइ (क, ख); निगगच्छइ (घ) ।

३. ४. ना० ११२१४ ।

५. तत्थ (क, ख, ग, घ) एतत् अशुद्धं प्रति-भाति ।

६. ना० ११२.१४ ।

७. पू०—ना० १११६६ ।

८. सं० पा०—सकोरेंट जाव सेयवर० ।

९. सुइरं (क, ख, ग) ।

१०. ना० १११११८ ।

११. ना० ११५६ ।

१२. कयाइं (ग) ।

मिरिदासगणैः सिद्धयुक्तैः । एतन्न तं मिरिदासगणैश्च इमे पञ्चमावर्तिं देवैश्च  
मिरिदासगणैः समसामान्यमपि कथं न शक्यते ॥

६०. तन्न वा पवित्रयुक्तौ सुदुर्लभं श्रमवशं एव यथासीत्—देवमित्रिणा वा देवतापुत्रिणा ।  
सत्त्वो विदेवतापुत्रवत्त्वता, श्रमश्च' वा सत्त्ववत्त्व-पवित्रियुक्तयुक्तौ मिरिदासगणैश्च  
पञ्चमावर्तिं देवैश्च मिरिदासगणैः समसामान्यमपि कथं न शक्यते ?

६१. तन्न वा सुदुर्लभं पवित्रयुक्तौ इत्यप्यप्यवश्यं एव यथासीत्—एतन्न तन्न मासीत् ! सत्त्वो  
विदेवतापुत्रवत्त्वता सुदुर्लभं सुदुर्लभं-साधनवत्त्वात् श्रम' पवित्रयुक्तौ ॥

६२. तन्न वा पवित्रयुक्तौ सुदुर्लभं श्रमवशं एव यथासीत्—एतन्न तन्न मासीत् ! मिरिदास-  
गणैश्च मिरिदासगणैः' दूयं सत्त्ववत्त्व-सत्त्ववत्त्वता एव यथासीत्—एतन्न तन्न मासीत् !  
देवतापुत्रिणा ! मिरिदास गणैश्च । एतन्न तन्न मासीत् । एतन्न तन्न मासीत् । एतन्न तन्न मासीत् ।  
पञ्चमावर्तिं मिरिदासगणैः समसामान्यमपि पवित्रियुक्तौ कथं न शक्यते ।  
सत्त्वो इत्यवश्यं ॥



अम्हं गणिमं च धरिमं च मेज्जं च पारिच्छेज्जं च भंडगं गहाय खवणसमुद्दं पोयवहणेणं ओगाहित्तए त्ति कट्टु अण्णमण्णस्स एयमट्ठं पडिसुणंति, पडिसुणेत्ता गणिमं च धरिमं च मेज्जं च पारिच्छेज्जं च भंडगं गेण्हंति, गेण्हत्ता सगडी-सागडयं सज्जेति, सज्जेत्ता गणिमस्स धरिमस्स मेज्जस्स पारिच्छेज्जस्स य भंडगस्स सगडी-सागडियं भरेति, भरेत्ता सोहणंसि तिहि-करण-नक्खत्त-मुहुत्तंसि विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेति, उवक्खडावेत्ता मित्त-नाइ-नियग-सयण-संवंधि-परिजणं भोयणवेलाए भुंजावेति, \*भुंजावेत्ता मित्त-नाइ-नियग-सयण-संवंधि-परिजणं ° आपुच्छंति, आपुच्छित्ता सगडी-सागडियं जोयंति, जोइत्ता चंपाए नयरीए मज्झमज्झेणं निग्गच्छंति, निग्गच्छित्ता जेणेव गंभीरए' पोयपट्टणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सगडी-सागडियं मोयंति, पोयवहणं सज्जेति, सज्जेत्ता गणिमस्स' \*धरिमस्स मेज्जस्स पारिच्छेज्जस्स य ° भंडगस्स [पोयवहणं ? ] भरेति, तंदुलाण य समियस्स य तेल्लस्स य घयस्स य गुलस्स य गोरसस्स य उदगस्स य भायणाणं य ओसहाण य भेसज्जाण य तणस्स य कट्टस्स य आवरणाण य पहरणाण य अण्णेसि च वहूणं पोयवहणपाउग्गाणं दव्वाणं पोयवहूणं भरेति । सोहणंसि तिहि-करण-नक्खत्त-मुहुत्तंसि विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेति, उवक्खडावेत्ता मित्त-नाइ-नियग-सयण-संवंधि-परियणं भोयणवेलाए भुंजावेति, भुंजावेत्ता मित्त-नाइ-नियग-सयण-संवंधि-परियणं आपुच्छंति, जेणेव पोयट्ठाणे तेणेव उवागच्छंति ॥

६७. तए णं तेसि अरहण्णगं\*पामोक्खाणं वहूणं संजत्ता-नावा °वाणियगारणं' \*मित्त-नाइ-नियग-सयण-संवंधि °-परियणा ताहि इट्ठाहि' \*कंताहि पियाहि मणुण्णाहि मणामाहि ओरालाहि ° वग्गूहि अभिनंदंता य अभिसंयुणमाणा य एवं वयासी—अज्ज ! ताय ! भाय ! माउल ! भाइणेज्ज ! भगवया समुद्देणं अभिरविखज्जमाणा-अभिरविखज्जमाणा चिरं जीवह, भदं च भे, पुणरवि लद्धे कयकज्जे अणहसमग्गे नियगं घरं हव्वमागए पासामो त्ति कट्टु ताहि सोमाहि निद्धाहि दीहाहि सप्पिवासाहि पप्पुयाहि दिट्ठीहि निरिक्खमाणा मुहुत्तमेत्तं संचिट्ठंति । तत्रो समाणिएसु पुप्फवलिकम्मसेसु, दिन्नेसु सरस-रत्त-चंदण-दहर-पंचंगुलितलेसु, अणुक्खत्तंसि धूवंसि, पूइएसु' समुद्वाएसु,

१. सं० पा०—भुंजावेति जाव आपुच्छति ।

२. गंभीर (ख, घ) ।

३. सं० पा०—गणिमस्स जाव चउच्चिहभंडगस्स ।

४. भायणस्स (घ) ।

५. सं० पा०—अरहण्णग जाव वाणियगारणं ।

६. सं० पा०—वाणियगारणं जाव परियणा ।

७. सं० पा०—इट्ठाहि जाव वग्गूहि ।

८. पूतिएसु (ख); पूइतेसु (ग, घ) ।

मंगलारिणामुं चन्द्रवर्णं, उदरिणामुं शिवामुं भयङ्गोमुं, चन्द्रवर्णवर्णामुं सुमेरुं  
 चन्द्रवर्णं चन्द्रवर्णवर्णोमुं, मङ्गलामुं चन्द्रवर्णवर्णोमुं चन्द्रवर्णं उदरिणामुं-चन्द्रवर्णं-  
 •चन्द्रवर्णवर्णं •चन्द्रवर्णं चन्द्रवर्णवर्णवर्णमुं-चन्द्रवर्णं चन्द्रवर्णं चन्द्रवर्णं चन्द्रवर्णं  
 चन्द्रवर्णं •चन्द्रवर्णमुं चन्द्रवर्णवर्णवर्णवर्णं चन्द्रवर्णवर्णवर्णं •चन्द्रवर्णवर्णं चन्द्रवर्णं  
 चन्द्रवर्णं ॥

निव्वोलेमि', जेणं' तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे असमाहिपत्ते अकाले चैव जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥

७५. तए णं से अरहण्णगे समणोवासए तं देवं मणसा चैव एवं वयासी—अहं णं देवानुप्पिया ! अरहण्णए नामं समणोवासए अहिगयजीवाजीवे । नो खलु अहं सक्के केणइ देवेण वा<sup>१</sup> दाणवेण वा जक्खेण वा रक्खसेण वा किन्तरेण वा किपुरिसेण वा महोरगेण वा गंधवेण वा<sup>२</sup> निग्गंथाओ पावयणाओ चालित्तए वा खोभित्तए वा विपरिणामित्तए वा, तुमं णं जा<sup>३</sup> सद्धा तं करेहि त्ति कट्टु अभीए जाव<sup>४</sup> अभिन्नमुहराग-नयणवण्णे अदीण-विमण-माणसे निच्चले निप्पंदे<sup>५</sup> तुसिणीए धम्मज्झाणोवगए विहरइ ॥
७६. तए णं से दिव्वे पिसायरूवे अरहण्णगं समणोवासगं दोच्चंपि तच्चंपि एवं वयासी—हंभो अरहण्णगा ! जाव<sup>६</sup> धम्मज्झाणोवगए विहरइ ॥
७७. तए णं से दिव्वे पिसायरूवे अरहण्णगं धम्मज्झाणोवगयं पासइ, पासित्ता वलियतरागं आसुरत्ते तं पोयवहणं दोहि अंगुलियाहिं गेण्हइ, गेण्हित्ता सत्तट्टतलं-<sup>७</sup>प्पमाणमेत्ताइं उड्डं वेहासं उव्विहइ, उव्विहित्ता<sup>८</sup> अरहण्णगं एवं वयासी—हंभो अरहण्णगा ! अपत्थियपत्थया<sup>९</sup> ! नो खलु कप्पइ तव सील-व्वय<sup>१०</sup>-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासाइं चालित्तए वा खोभित्तए वा खंडित्तए वा भंजित्तए वा उज्झित्तए वा परिच्चइत्तए वा । तं जइ णं तुमं सील-व्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासाइं न चालेसि न खोभेसि न खंडेसि न भंजेसि न उज्झसि न परिच्चयसि, तो ते अहं एयं पोयवहणं अंतो जलंसि निव्वोलेमि, जेणं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे असमाहिपत्ते अकाले चैव जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥
७८. तए णं से अरहण्णगे समणोवासए तं देवं मणसा चैव एवं वयासी—अहं णं देवानुप्पिया ! अरहण्णए नामं समणोवासए—अहिगयजीवाजीवे नो खलु अहं सक्के केणइ देवेण वा दाणवेण वा जक्खेण वा रक्खसेण वा किन्तरेण वा किपुरिसेण वा महोरगेण वा गंधवेण वा निग्गंथाओ पावयणाओ चालित्तए वा खोभित्तए वा विपरिणामित्तए वा, तुमं णं जा सद्धा तं करेहि त्ति कट्टु अभीए जाव<sup>११</sup> अभिन्नमुहराग-नयणवण्णे अदीण-विमण-माणसे निच्चले निप्पंदे

१. निच्छोल्लेमि (क) ।

२. जाणं (क, ग, घ) ।

३. × (ग) ।

४. सं० पा०—देवेण वा जाव निग्गंथाओ ।

५. जाव (ख, ग, घ) अशुद्धं प्रतिभाति ।

६. ना० १।८।७३ ।

७. निप्पंदे (ख) ।

८. ना० १।८।७४, ७५ ।

९. सं० पा०—सत्तट्टतलाइं जाव अरहण्णगं ।

१०. पू०—ना० १।८।७४ ।

११. सं० पा०—सीलव्वय तहेव जाव धम्मज्झाणोवगए ।

१२. ना० १।८।७३ ।



अवक्कमामि' उत्तरवेडव्वियं रुवं विउव्वामि, विउव्वित्ता ताए उक्किट्टाए<sup>१</sup>  
 देवगईए' जेणेव लवणसमुद्धे जेणेव देवाणुप्पिए तेणेव उवागच्छामि, उवागच्छित्ता  
 देवाणुप्पियस्स उवसागं करेमि, नो चेव णं देवाणुप्पिए भीए' \*तत्थे च्चनिए संभंते  
 आउले उव्विग्गे भिण्णमुहराग-नयणवण्णे वीणविमणमाणसे जाए ° । तं जं णं  
 सक्के देविदे देवराया एवं वयइ, सच्चे णं एसमट्ठे । तं दिट्ठे णं देवाणुप्पियस्स  
 इड्डी' \*जुई जसो वलं वीरियं पुरिसकार °-परत्तकमे लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए ।  
 तं खामेमि णं देवाणुप्पिया । खमेसु णं देवाणुप्पिया ! खंतुमरिहसि णं देवाणु-  
 प्पिया ! नाइ भुज्जो एवंकरणयाए त्ति कट्ठु पंजलिउत्ते पायवड्डीए एयमट्ठं  
 विणएणं भुज्जो-भुज्जो खामेइ, अरहण्णगरस्स य दुवे कुंडलजुयले दलयइ, दलइत्ता  
 जामेव दिसि पाउव्भूए तामेव दिसि पडिगए ॥

८०. तए णं से अरहण्णए निरुवसगमिति कट्ठु पडिमं पारेइ ॥

८१. तए णं ते अरहण्णगपामोक्खा' \*संजत्ता-नावा °वाणियगा दक्खिणाणुकूलेणं  
 वाएणं जेणेव गंभीराए पोयट्टाणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता पोयं लवेति,  
 लवेत्ता सगडि'-सागडं सज्जेति, तं गणिमं धरिमं मेज्जं परिच्छेज्जं च सगडि-  
 सागडं संकामेति, संकामेत्ता सगडि-सागडं जोविंति' जोवित्ता जेणेव मिहिला  
 तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता मिहिलाए रायहाणीए वहिया अगुज्जाणंसि  
 सगडि-सागडं मोएंति, मोएत्ता महत्थं महग्घं महरिहं विउलं रायारिहं पाहुडं  
 दिव्वं कुंडलजुयलं च गेण्हंति, गेण्हित्ता [मिहिलाए रायहाणीए' ?] अणुप्प-  
 विसंति, अणुप्पविसित्ता जेणेव कुंभए राया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता  
 करयल' \*परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्ठु ° महत्थं' \*महग्घं मह-  
 रिहं विउलं रायारिहं पाहुडं ° दिव्वं कुंडलजुयलं च उवणेति ॥

८२. तए णं कुंभए राया तेसि संजत्ता' °-नावावाणियगाणं तं महत्थं महग्घं महरिहं  
 विउलं रायारिहं पाहुडं दिव्वं कुंडलजुयलं च ° पडिच्छइ, पडिच्छित्ता मल्लि  
 विदेहवररायकन्नं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता तं दिव्वं कुंडलजुयलं मल्लीए विदेह-  
 रायकन्नगाए पिणद्धेइ, पिणद्धेत्ता पडिविसज्जेइ ॥

१. २, ३. पू०—राय सू० १० ।

४. सं० पा०—भीया वा... ।

५. सं० पा०—इड्डी जाव परकम्मे ।

६. सं० पा०—पामोक्खा जाव वाणियगा ।

७. सगड (ग, घ) ।

८. जोएंति (क) ।

९. 'क' प्रती असौ पाठः 'महत्थं' अतः प्राग्

लिखितो लभ्यते, किन्तु वस्तुतः कोष्ठक-  
 स्थाने युज्यते । अन्यादर्शेषु नासौ  
 लब्धोस्ति ।

१०. सं० पा०—करयल ° ।

११. सं० पा०—महत्थं ° ।

१२. सं० पा०—संजत्तगाणं जाव पडिच्छइ ।



मल्ली विदेहरायवरकन्ता अच्चेरए दिट्ठे । तं नो मनु अण्णा कावि तारिसिया देवकन्ता वा' \*अमुरकन्ता वा नागकन्ता वा जगकन्ता वा गंधव्रकन्ता वा रायकन्ता वा ° जारिसिया णं मल्ली विदेहरायवरकन्ता ॥

८७. तए णं चंदच्छाए अरहण्णगपामोक्खे' रावकारेइ सम्माणेइ, रावकारेत्ता सम्माणेत्ता उस्सुवकं वियरइ, वियरित्ता पडिविसज्जेइ ॥

८८. तए णं चंदच्छाए वाणियग-जणियहाणे दूयं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—जाव' मल्लि विदेहरायवरकन्तं गम भारियत्ताए वरेहि, जइ वि य णं सा सयं रज्जसुंका' ॥

८९. तए णं से हए चंदच्छाएणं एवं वुत्ते समाणे हट्टवुट्ठे जाव' पहारेत्थ गमणाए ॥

### रुप्पि-राय-पदं

९०. तेणं कालेणं तेणं समएणं कुणाला नाम जणवए होत्था । तत्थ णं सावत्थो नाम नयरी होत्था । तत्थ णं रुप्पी कुणालाहिवई नाम राया होत्था । तस्स णं रुप्पिस्स धूया धारिणीए देवीए अत्तया सुवाहू नाम दारिया होत्था—सुकुमाल-पाणिपाया' रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य उक्किट्ठा उक्किट्ठसरीरा जाया यावि होत्था ॥

९१. तीसे णं सुवाहूए दारियाए अण्णया चाउम्मासिय-मज्जणए जाए यावि होत्था ॥

९२. तए णं से रुप्पी कुणालाहिवई सुवाहूए दारियाए चाउम्मासिय-मज्जणयं उवट्ठियं जाणइ, जाणित्ता कोडुं वियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! सुवाहूए दारियाए कल्लं चाउम्मासिय-मज्जणए भविस्सइ, तं तुव्भे णं रायमग्गमोगाढंसि चउक्कंसि' जल-थलय-दसद्धवण्णं मल्लं साहरह' \*जाव' एणं महं सिरिदामगंडं" गंधद्धाणिं मुयंतं उल्लोयंसि ओलएह । ते वि तहेव ° ओलयंति" ॥

९३. तए णं से रुप्पी कुणालाहिवई सुवण्णगार-सेणिं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! रायमग्गमोगाढंसि पुप्फमंडवंसि नाणाविहपंच-वण्णेहि तंदुलेहिं नगरं आलिहह. तस्स बहुमज्जभदेसभाए पट्टयं रएह, एयमाण-त्तियं पच्चप्पिणह । ते वि तहेव पच्चप्पिणंति ॥

१. सं० पा०—देवकन्ता वा जाव जारिसिया ।

देवकन्ता (क, ख, ग, घ) ।

२. पामोक्खा (क, ख, घ) ।

३. ना० १।८।६२ ।

४. \*सुक्का (घ) ।

५. ना० १।८।६३ ।

६. पू०—ना० १।१।१७ ।

७. मंडवंसि (क, ख, ग, घ) ।

८. सं० पा०—साहरह जाव ओलयंति ।

९. ना० १।८।४८ ।

१०. पू०—ना० १।८।३० ।

११. ओलेंति (क) ।





१००. तए णं से दूए रुप्पिणा एवं वुत्ते समाणे हट्टुत्ते जाव'० जेणेव मिहिला नयरी तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥

### संख-राय-पदं

१०१. तेणं कालेणं तेणं समएणं कासी नामं जणवए हंत्या । तत्थ णं वाणारसी नामं नयरी होत्था । तत्थ णं संखे नामं कासीराया होत्था ॥
१०२. तए णं तीसे मल्लीए विदेहवररायकन्नाए' अण्णया कयाइं तस्स दिव्वस्स कुंडलजुयलस्स संधी विसंघडिए यावि होत्था ॥
१०३. तए णं से कुंभए राया सुवण्णगारसेणि सदावेइ, सदावेत्ता एवं वयासी—तुब्भे णं देवाणुप्पिया । इमस्स दिव्वस्स कुंडलजुयलस्स संधि' संघाडेह, [संघाडेत्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह' ?] ॥
१०४. तए णं सा सुवण्णगारसेणी एयमट्टं तहत्ति पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता तं दिव्वं कुंडलजुयलं गेण्हइ, गेण्हत्ता जेणेव सुवण्णगार-भिसियाओ तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छत्ता सुवण्णगार-भिसियासु निवेसेइ, निवेसेत्ता व्हूहिं आएहि य' •उवाएहि य उप्पत्तियाहि य वेणइयाहि य कम्मयाहि य पारिणामियाहि य वुद्धीहि' परिणामेमाणा इच्छंति तस्स दिव्वस्स कुंडलजुयलस्स संधि घडित्तए, नो चेव णं संचाएइ घडित्तए ॥
१०५. तए णं सा सुवण्णगारसेणी जेणेव कुंभए राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छत्ता करयल'•परिगहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलि कट्टु जएणं विजएणं वद्धा-वेइ', वद्धावेत्ता एवं वयासी—एवं खलु सामी ! अज्ज तुम्हे' अम्हे सदावेह, जाव' संधि संघाडेत्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह । तए णं अम्हे तं दिव्वं कुंडलजुयलं गेण्हामो, गेण्हत्ता जेणेव सुवण्णगार-भिसियाओ तेणेव उवगच्छामो जाव' नो संचाएमो संधि' संघाडेत्तए । तए णं अम्हे सामी ! एयस्स दिव्वस्स कुंडलजुयलस्स अण्णं सरिसयं कुंडलजुयलं घडेमो ॥
१०६. तए णं से कुंभए राया तीसे सुवण्णगारसेणीए अंतिए एयमट्टं सोच्चा निसम्म आसुरुत्ते रुट्ठे कुविए चंडिकिए मिसिमिसेमाणे तिवलियं भिउडिं निडाले साहट्टु एवं वयासी—केस णं तुब्भे कलाया णं भवह, जे णं तुब्भे इमस्स

१. ना० १।८।६३ ।

२. °कन्नयाए (ख) ।

३. संधी (क, ख, ग, घ) ।

४. स्वर्णकारश्रेण्या राज्ञे निवेदने कोष्ठकवर्ती पाठो विद्यते । द्रष्टव्यम्—सू० १०५ । तेन अत्रासी युज्यते ।

५. सं० पा०—आएहि य जाव परिणामेमाणा ।

६. सं० पा०—करयलवद्धावेत्ता ।

७. तुब्भे (ग) ।

८. ना० १।८।१०३ ।

९. ना० १।८।१०४ ।

१०. × (ख, घ) ।



वयासी—जाव' मल्लि विदेहरायवरकन्नं मम भारियत्ताए वरेहि, जइ वि य णं  
सा सयं रज्जसुंका ॥

११३. तए णं से दूए संखेणं एवं वुत्ते समाने हट्टुत्तुडे जाव' जेणेव मिहिला नयरी तेणेव०  
पहारेत्थ गमणाए ॥

### अदीणसत्तु-राय-पदं

११४. तेणं कालेणं तेणं समएणं कुरु नामं जणवए होत्था । तत्थ णं हत्थिणाउरे नामं  
नयरे होत्था । तत्थ णं अदीणसत्तु नामं राया होत्था जाव' रज्जं पसासेमाणे  
विहरइ ॥
११५. तत्थ णं मिहिलाए तस्स णं कुंभगस्स रण्णो पुत्ते पभावईए देवीए अत्तए मल्लीए  
अणुमग्गजायए मल्लदिन्ने' नामं कुमारे सुकुमालपाणिपाए जाव' जुवराया  
यावि होत्था ॥
११६. तए णं मल्लदिन्ने कुमारे अण्णया कयाइ कोडुंवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव  
वयासी—गच्छह णं तुब्भे मम पमदवणंसि एगं महं चित्तसभं करेह—अणेग-  
खंभसयसण्णिविट्ठं' एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह । तेवि तहेव पच्चप्पिणंति ॥
११७. तए णं से मल्लदिन्ने कुमारे चित्तगर-सेणि सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—  
तुब्भे णं' देवाणुप्पिया ! चित्तसभं हाव-भाव-विलास-विट्ठोयकलिएहिं ह्वेहिं  
चित्तेह', •चित्तेत्ता एयमाणत्तियं० पच्चप्पिणह ॥
११८. तए णं सा चित्तगर-सेणी एयमट्ठं' तहत्ति पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता जेणेव सयाइ  
गिहाई तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तूलियाओ वण्णए य गेप्पहइ, गेप्पित्ता  
जेणेव चित्तसभा तेणेव अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता भूमिभागे विरचित्ति,  
विरचित्ता भूमि सज्जेइ, सज्जेत्ता चित्तसभं हाव-भाव'-विलास-विट्ठोय-  
कलिएहिं ह्वेहिं, चित्तेत्तं पयत्ता यावि होत्था ॥
११९. तए णं एगस्स चित्तगरस्स इमेयारूवा चित्तगर-लद्धी लद्धा पत्ता अभिसमण्णा-  
गया—जस्स णं दुपयस्स वा चउप्पयस्स वा अपयस्स वा एगदेसमवि पासइ,  
तस्स णं देसाणुसारेणं तयाणुरूवं निव्वत्तेइ ॥
१२०. तए णं से चित्तगरे' मल्लीए जवणियंतरियाए'<sup>१३</sup> जालंतरेण पायंगुट्ठं पासइ । तए

१. ना० १।८।६२।

२. ना० १।८।६३ ।

३. ओ० सू० १४ ।

४. ०दिन्ने (क, ख, ग, घ) ।

५. ओ० सू० १४३ ।

६. पू०—ना० १।१।८६ ।

७. गच्छह णं तुब्भे (ख, घ) ।

८. सं० पा०—चित्तेह जाव पच्चप्पिणह ।

९. द्रष्टव्यम्—अस्यैवाध्ययनस्य १०४ सूत्रम् ।

१०. सं० पा०—भाव जाव चित्तेत्तं ।

११. चित्तगरदारए (क, ख, ग, घ) ।

१२. जवणियंतरियाए (ख); जवणतरियाए (ग) ।



## जियसत्तु-राय-पदं

१३८. तेणं कालेणं तेणं समएणं पंचाले जणधाय । कं पिस्सपुदे नवरं । जियसत्तु नामं राया पंचालाहिवई । तस्स णं जियसत्तुस्स धारिणोपामोक्कं देवागहस्सं ओरोहे होत्था ॥
१३९. तत्थ णं मिहिलाए चोक्खा' नामं परिव्वाइया—रिउव्वेय'-•मज्जुवेद-सामवेद-अहव्वणवेद-इतिहासपंचमाणं निचंदुच्छट्ठाणं संगोवंगाणं सरहस्साणं चउण्हं वेदाणं सारगा जाव' वंभण्णएसु य सत्थंसु ° गुपरिणिट्टिया यावि होत्था ॥
१४०. तए णं सा चोक्खा परिव्वाइया मिहिलाए वृह्णं राईसर जाव' सत्थवाहपमिईणं पुरओ दाणधम्मं च सोयधम्मं च तित्थाभिसेयं च आघवेमाणी पण्णवेमाणी परूवेमाणी उवदंसेमाणी विहरइ ॥
१४१. तए णं सा चोक्खा अण्णया कयाइं तिदंडं च कुडियं च जाव' धाउरत्ताओ य गेण्हइ, गेण्हत्ता परिव्वाइयागवसहाओ पडिनिक्कमइ, पडिनिक्कमित्ता पविरल-परिव्वाइया-सद्धिं संपरिवुडा मिहिलं रायहाणि मज्जमज्जेणं जेणव कुंभगस्स रण्णो भवणे जेणव कन्नंतेउरे जेणव मल्ली विदेहरायवरकन्ना तेणव उवागच्छइ, उवागच्छत्ता उदयपरिफोसियाए' 'दवभोवरिपच्चत्थुयाए भिसियाए'° निसीयइ, निसीइत्ता मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए पुरओ दाणधम्मं च' •सोयधम्मं च तित्थाभिसेयं च आघवेमाणी पण्णवेमाणी परूवेमाणी उवदंसेमाणी ° विहरइ ॥
१४२. तए णं मल्ली विदेहरायवरकन्ना चोक्खं परिव्वाइयं एवं वयासी—तुव्वण्ण' चोक्खे ! किंमूलए धम्मे पण्णत्ते ?
१४३. तए णं सा चोक्खा परिव्वाइया मल्लि विदेहरायवरकन्तं एवं वयासी—अम्हं णं देवाणुप्पिए ! सोयमूलए धम्मे पण्णत्ते । जं णं अम्हं किंचि असुई भवइ तं णं उदएण य मट्टियाए'° •य सुई भवइ । एवं खलु अम्हे जलाभिसेय-पूयप्पाणो ° अविग्घेणं सगं गच्छामो ॥
१४४. तए णं मल्ली विदेहरायवरकन्ना चोक्खं परिव्वाइयं एवं वयासी—चोक्खे'° ! से जहानामए केइ पुरिसे सहिरकयं वत्थं सहिरेणं चेव धोवेज्जा, अत्थि णं

१. ओरोहो (क); उवरोहे (ख) ।

२. चोक्खी (ख) ।

३. सं० पा०—रिउव्वेय जाव परिणिट्टिया ।

४. ओ० सू० ९७ ।

५. ना० ११५।६ ।

६. ओ० सू० ११७ ।

७. °फासियाए (क, ग) ।

८. °पच्चत्थुयाते भिसियाते (ख, घ) ।

९. सं० पा०—दाणधम्मं च जाव विहरइ ।

१०. तुव्वेणं (ख, घ) अशुद्धं प्रतिभाति ।

११. सं० पा०—मट्टियाए जाव अविग्घेणं ।

११।६० सूत्रे एतत् वर्णनं किञ्चित् परिवर्तनेन लभ्यते ।

१२. चोक्खा (ख, घ) ।



अवभृष्टेऽ, अवभृष्टेत्ता चोक्त्वा सनकारेऽ सम्भाषेऽ, सनकारेणा सम्भाषेता आस-  
णेषु उवनिमंतेऽ ॥

१५१. तए णं सा चोक्खा उदगपरिफोसियाए' •दवभोवरि पञ्चनयुगाए ° भिसियाए  
निविसइ', निविसित्ता जियसत्तुं रायं रज्जे य' °रुद्धे य कोमे य कोट्टागारे य  
वले य वाहणे य पुरे य ° अंतेउरे य कुसलोदंनं पुच्छइ ॥
१५२. तए णं सा चोक्खा जियसत्तुस्या रण्णो दाणधम्मं च' •तोयधम्मं च तित्थाभि-  
सेयं च आघवेमाणी पणवेमाणी पणवेमाणी उवदंसेमाणी ° विहरइ ॥
१५३. तए णं से जियसत्तु अण्णो ओरोहंमि जायविहए चोक्त्वा एवं वयासी—तुमं  
णं देवाणुप्पिया ! ब्रह्मिणं गामागर जाव' सण्णिवेसंमि आहिउसि, वहुणं य  
राईसर' सत्थवाहएभिईणं गिहाइं अणुप्पविससि, तं अट्ठिययाइं ते कस्सइ रण्णो  
वा' °ईसरस्स वा कंहिचि ° एरिसए ओरोहे दिहपुव्वे, जारिसए णं इमे मम  
ओरोहे' ?
१५४. तए णं सा चोक्खा परिव्वाइया 'जियसत्तुणा एवं वुत्ता समाणी ईसि विहसियं"  
करेइ, करेत्ता एवं वयासी—सरिसए णं तुमं देवाणुप्पिया ! तस्स अगडददुदुरस्स।  
के णं देवाणुप्पिए ! से अगडददुदुरे ?  
जियसत्तु ! से जहानामए अगडददुदुरे सिया । सेणं तत्थ जाए तत्थेव वुड्ढे अण्णं  
अगडं वा तलागं वा दहं वा सरं वा सागरं वा अपासमाणे मण्णइ—अयं चेव  
अगडे वा" °तलागे वा दहे वा सरे वा ° सागरे वा ।  
तए णं तं कूवं अण्णे सामुदए ददुदुरे हव्वमागए ।  
तए णं से कूवददुदुरे तं सामुदयं" ददुदुरं एवं वयासी—से के" तुमं देवाणुप्पिया !  
कत्तो वा इह हव्वमागए ?  
तए णं से सामुदए ददुदुरे तं कूवददुदुरं एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया !  
अहं सामुदए ददुदुरे ।

१. सं० पा०—उदगपरिफोसियाए जाव भिसि-  
याए ।

२. णिवसइ (क, ख, ग, घ) ।

३. सं० पा०—रज्जे य जाव अंतेउरे ।

४. सं० पा०—दाणधम्मं च जाव विहरइ ।

५. ना० १।१।११८ ।

६. पू०—ना० १।५।६ ।

७. सं० पा०—रण्णो वा जाव एरिसए ।

८. ओरोवे (ख) ।

९. जियसत्तु एवं व ईसि अवहसियं (क, ख,

ग); जियसत्तु एवं वयासी इसि अवहसियं  
(घ); आदर्शेषु 'एवं व' इति संक्षिप्तरूपं  
लिखितं लभ्यते स्तवकादर्शे तत्र 'एवं  
वयासी' इति जातम् । स्तवकारेण 'इम  
कहइ' इत्यर्थोपि कृतः । अस्य मौलिकं रूपं  
अस्माभिः प्रस्तुतसूत्रस्य पोडशाध्ययने  
लब्धम् ।

१०. सं० पा०—अगडे वा जाव सागरे ।

११. समुदयं (घ) ।

१२. केसणं (घ) ।





१५८. तए णं छप्पि दूया जेणेव मिहिला तेणेव उवागच्छति, उवागच्छता मिहिलाए अणुप्पविसंति पत्तयं-पत्तयं संधावारनिवेमं करेति, करेता मिहिलं रायहाणि अणुप्पविसंति, अणुप्पविसत्ता जेणेव कुंभए तेणेव उवागच्छति, उवागच्छता पत्तयं करयल\*परिगहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलि कट्टु° साणं-साणं राईणं वयणाइं निवेदेति ॥

कुंभएण दूयाणं असक्कार-पदं

१५९. तए णं से कुंभए तेसि दूयाणं 'अंतियं एयमट्टं' सोच्चा आसुरत्ते° •च्छे कुविए चंडिकिए मिसिमिसेमाणे° तिवलियं भिउडि निउत्ते साहट्टु एवं वयासी— न देमिणं अहं तुव्भं मल्लि विदेहरायवरकन्नं ति कट्टु ते छप्पि दूए असक्कारिय असम्माणिय अवदारेणं° निच्छुभावेइ ॥

१६०. तए णं ते जियसत्तुपामोकखाणं छण्हं राईणं दूया कुंभएणं रण्णा 'असक्कारिय असम्माणिय' अवदारेणं° निच्छुभाविया समाणा जेणेव सगा-सगा जणवया जेणेव 'सयाइ-सयाइ नगराइं' जेणेव सया-सया रायाणो तेणेव उवागच्छति, उवागच्छिता करयल\*परिगहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलि कट्टु° एवं वयासी— एवं खलु सामी! अम्हे जियसत्तुपामोकखाणं छण्हं राईणं दूया जमगसमगं चेव जेणेव मिहिला तेणेव उवागया जाव° अवदारेणं निच्छुभावेइ ॥ "तं न देइ णं सामी! कुंभए मल्लि विदेहरायवरकन्नं" साणं-साणं राईणं एयमट्टं निवेदेति ॥

जियसत्तुपामोकखाणं कुंभएणं जुज्झ-पदं

१६१. तए णं ते जियसत्तुपामोकखा छप्पि रायाणो तेसि दूयाणं अंतिए एयमट्टं सोच्चा निसम्म आसुरत्ता रुट्टा कुविया चंडिकिया मिसिमिसेमाणा अणमणस्स दूय-संपेसणं करेति, करेत्ता एवं वयासी— एवं खलु देवाणुप्पिया! अम्हं छण्हं राईणं दूया जमगसमगं चेव मिहिला तेणेव उवागया जाव° अवदारेणं निच्छूढा। तं सेयं खलु देवाणुप्पिया! कुंभगस्स जत्तं° गेण्हित्तए त्ति कट्टु अणमणस्स एयमट्टं

१. सं० पा०—करयल\*\*\* ।

२. निवेसंति (क, ग, घ) ।

३. × (ख, ग) ।

४. सं० पा०—आसुरत्ते जाव तिवलियं ।

५. अवदारेणं (क, ख, घ) ।

६. असक्कारिय-असम्माणिया (ख, ग) ।

७. अवदारेणं (क) ।

८. सयाति-सयाति नगराति (ख) ।

९. सं० पा०—करयल° ।

१०. ना० १।८।१५८, १५९ ।

११. ना० १।८।१५८, १५९ ।

१२. जुत्तं (ख, ग) ।



१६६. तए णं से कुंभए जियसत्तुपामोवर्णोहिं छहिं राईहिं ह्यमहिय-<sup>१</sup> \*पवरवीर-  
घाइय-विवडियच्चिध-अय-पडागे किच्छोवगयमाणे दिरोदिंसि° पडिसेहिं, समणे  
अस्थामे अवले अवीरिए' \*अपुरिसावकारपरकामे° अघारणिज्जमिति कट्टु  
सिग्धं तुरिय' \*चवलं चंडं जट्टणं° वेडगं जेणेव मिहिला तेणेव उवागच्छइ,  
उवागच्छित्ता मिहिलं अणुपविसाइ, अणुपविसित्ता मिहिलाए दुवाराइं पिहेइ,  
पिहेत्ता रोहसज्जे चिट्टइ ॥
१६७. तए णं ते जियसत्तुपामोवक्ता छणिं रायाणो जेणेव मिहिला तेणेव उवागच्छंति,  
उवागच्छित्ता मिहिलं रायहाणिं निम्संचारं निरुच्चारं मच्चयो सपता  
ओरंभित्ता णं चिट्टति ॥
१६८. तए णं से कुंभए राया मिहिलं रायहाणिं आंरुद्धं जाणित्ता अंभितरियाए  
उवट्टाणसालाए सीहासणवरगए तेसिं जियसत्तुपामोवक्ताणं छण्हं राईणं  
अंतराणि य छिदाणि य 'विवराणि य' मम्माणि' य अलभमाणे वृहंहिं आएहिं  
य उवाएहिं य, उप्पत्तियाहिं य वेणइयाहिं य कम्मयाहिं य पारिणामियाहिं  
य—बुद्धीहिं परिणामेमाणे-परिणामेमाणे किञ्चिं आयं वा उवायं वा अलभमाणे  
ओहयमणसंकप्पे° \*करतलपल्हत्थमुहे अट्टज्जाणोवगए° भियायइ ॥

### मल्लीए चित्ताहेउ-पुच्छा-पदं

१६९. इमं च णं मल्ली विदेहरायवरकन्ना प्हाया' \*कयवलिकम्मा कयकोउय-  
मंगलपायच्छित्ता सव्वालंकारविभूसिया° वृहंहिं खुज्जाहिं' संपरिवुडा जेणेव  
कुंभए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कुंभगस्स पायसगहणं करेइ ॥
१७०. तए णं कुंभए मल्लि विदेहरायवरकन्त्तं नो आढाइ नो परियाणाइ' तुसिणीए  
संचिट्टइ ॥
१७१. तए णं मल्ली विदेहरायवरकन्ना कुंभगं एवं वयासी—तुव्भे णं ताओ !  
अण्णया ममं एज्जमाणि'° \*पासित्ता आढाइ परियाणाह अंके निवेसेह । इयाणि  
ताओ ! तुव्भे ममं नो आढाइ नो परियाणाह नो अंके° निवेसेह । किण्णं तुव्भं  
अज्ज ओहय'° मणसंकप्पा करतलपल्हत्थमुहा अट्टज्जाणोवगया° भियायह ?

१. सं० पा०—हयमहिय जाव पडिसेहिए । ७. सं० पा०—ओहयमणसंकप्पे जाव भियायइ ।  
२. सं० पा०—अवीरिए जाव अघारणिज्ज° । ८. सं० पा०—प्हाया जाव वृहंहिं ।  
३. सं० पा०—तुरियं जाव वेइयं । ९. पू०—ओ० सू० ७० ।  
४. °पवेसेइ (ख, ग, घ) । १०. द्रष्टव्यम्—१।१।३६ सूत्रम् ।  
५. विरहाणि य (ग); विरहाणि य विवराणि (घ) । ११. एज्जमाणं (ख, ग, घ) । सं० पा०—  
एज्जमाणि जाव निवेसेह ।  
६. सम्माणि (क, ख, ग) अशुद्धं प्रतिभाति । १२. सं० पा०—ओहय जाव भियायह ।



१७६. तए णं सा मल्ली विदेहरायवरकन्ना ण्हाया' \*मत्ययच्छिडाए पउमुप्पल-पिहाणा पडिमा तेणं व जालघराए जेणेव कणगमई मत्थयच्छिडा पउमुप्पल-पिहाणा पडिमा तेणं व उवागच्छइ, उवागच्छिता तीगे कणगमईए मत्थयच्छिडाए पउमुप्पल-पिहाणाए पडिमाए मत्थयाओ तं पउमुप्पल-पिहाणं' अक्केइ । तओ' णं गंधे निद्धावेइ', से जहाणामए—अहिमडे इ वा जाव' एत्तो अमुभतराए' चेव ॥
१७७. तए णं ते जियसत्तुपामोक्खा छप्पि रायाणो तेणं अमुभेणं गंधेणं अभिभूया समाणा सएहि-सएहि उत्तरिज्जेहि आसाइं' पिहेति, पिहेत्ता परम्मुहा चिट्ठंति ॥
१७८. तए णं सा मल्ली विदेहरायवरकन्ना ते जियसत्तुपामोक्खे एवं वयासी—किणं तुव्भे देवाणुप्पिया ! सएहि-सएहि उत्तरिज्जेहि" \*आसाइं पिहेत्ता° परम्मुहा चिट्ठह ?
१७९. तए णं ते जियसत्तुपामोक्खा मल्लि विदेहरायवरकन्ना एवं वयति—एवं खलु देवाणुप्पिए ! अम्हे इमेणं अमुभेणं गंधेणं अभिभूया समाणा सएहि-सएहि उत्तरिज्जेहि" \*आसाइं पिहेत्ता° चिट्ठामो ॥
१८०. तए णं मल्ली विदेहरायवरकन्ना ते जियसत्तुपामोक्खे एवं वयासी—जइ ताव देवाणुप्पिया ! इमीसे कणग" \*मईए मत्थयच्छिडाए पउमुप्पल-पिहाणाए° पडिमाए कल्लाकल्लि ताओ मणुण्णाओ असण-पाण-खाइस-साइमाओ एगमेगे पिडे पक्खिप्पमाणे-पक्खिप्पमाणे इमेयारूवे अमुभे पोग्गले"-परिणामे, इमस्स" पुण ओरालियसरीरस्स खेलासवस्स वंतासवस्स पित्तासवस्स सुक्कासवस्स सोणियपूयासवस्स दुइय"-ऊसास-नीसासस्स 'दुइय-मुत्त-पूइय-पुरीस-पुण्णस्स" ॥

१. सं० पा०—ण्हाया जाव पायच्छिता ।

२. ओ० सू० ७० ।

३. पउमं (क, ख, ग, घ) ।

४. ततेणं (ख, घ) ।

५. णिद्धाइ (क); णिद्धवेइ (ख) ।

६. ना० १।८।४२ ।

७. प्रस्तुताध्ययनस्य ४२ सूत्रे 'एतो अणिट्ठतराए चेव अकंततराए चेव' इत्यादि पदानि दृश्यन्ते । तत्र 'अमुभतराए चेव' इति पदं नास्ति । अत्र संभवतः 'अणिट्ठतराए' इत्यादिपदानां सारसंग्रहरूपेण 'अमुभतराए' इति पदं प्रयुक्तमस्ति ।

८. आसाति (ख, ग, घ) ।

९. पिहिति (क, ग) ।

१०. सं० पा०—उत्तरिज्जेहि जाव परम्मुहा ।

११. सं० पा०—उत्तरिज्जेहि जाव चिट्ठामो ।

१२. सं० पा०—कणग जाव पडिमाए ।

१३. पोग्गले (क, ख, घ) ।

१४. अतः पूर्वं वाचनान्तरे 'किमंग पुण' इति लभ्यते । (वृ) ।

१५. दुइय (घ) । मुखमुखोच्चारणार्थं 'दुइय' शब्दस्य 'दुइय' मितिरूपं कृतं संभाव्यते अथवा दुइयार्थवाची देशी शब्दः स्यात् ? वृत्तौ 'दुइय' शब्दस्य 'दुइय' इत्यर्थोक्ति कृतः ।

१६. दुइय-मुत्त-पुरिस-पूय-वहुपडिपुण्ण(१।१।१०६)।



१८३. तए णं ते जियसत्तुपामोक्खा छप्पि रायाणो जेणेव मल्ली अरहा तेणेव उवागच्छति ॥
१८४. तए णं महव्वलपामोक्खा रात्तयि य' वालवयंसा एगयओ अभिसमण्णागया वि होत्था ॥
१८५. तए णं मल्ली अरहा ते जियसत्तुपामोक्खे छप्पि रायाणो एवं वयासी—एवं खलु अहं देवाणुप्पिया ! संसारभउव्विग्गा जाव' पव्वयामि । तं तुव्वे णं किं करेह ? किं ववसह ? 'किं वा भे हियइच्छिण्णं गामत्थे' ?
१८६. तए णं जियसत्तुपामोक्खा छप्पि रायाणो मल्लि अरहं एवं वयासी—जइ णं तुव्वे देवाणुप्पिया ! संसारभउव्विग्गा जाव' पव्वयह, अम्हं णं देवाणुप्पिया ! के अण्णे आलंवणे वा आहारे वा पडिबंवे वा ? जह चैव णं देवाणुप्पिया ! तुव्वे अम्हं इओ तच्चे भवग्गहणे वहसु कज्जेसु' य मेढी पमाणं जाव' धम्मधुरा होत्था, तह' चैव णं देवाणुप्पिया ! इण्हि पि जाव' धम्मधुरा भविस्सह । अमहे वि णं देवाणुप्पिया ! संसारभउव्विग्गा' भीया जम्मणमरणाणं देवाणुप्पिया'-सद्धिं मुंडा भवित्ता" • णं अगाराओ अणगारियं ° पव्वयामो ॥
१८७. तए णं मल्ली अरहा ते जियसत्तुपामोक्खे छप्पि रायाणो एवं वयासी—जइ णं तुव्वे संसारभउव्विग्गा जाव'" मए सद्धिं पव्वयह, तं गच्छह णं तुव्वे देवाणुप्पिया ! सएहि-सएहि रज्जेहि जेट्ठपुत्ते" ठावेह, ठावेत्ता पुरिससहस्सवाहिणीओ सीयाओ" दुख्हह", मम अतियं पाउव्वभवह ॥
१८८. तए णं ते जियसत्तुपामोक्खा छप्पि रायाणो मल्लिस्स अरहओ एयमट्ठं पडिसुणेति ॥
१८९. तए णं मल्ली अरहा ते जियसत्तुपामोक्खा छप्पि रायाणो गहाय जेणेव कुंभए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कुंभगस्स पाएसु पाडेइ ॥
१९०. तए णं कुंभए ते जियसत्तुपामोक्खे विउलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं पुष्फ-

१. पिय (ख) ।

२. ना० १।५।८६ ।

३. के भे हियसामत्थे (क, ख, ग); १।५।८६ सूयात् किंचित् पाठः स्वीकृतः ।

४. ना० १।५।८६ ।

५. पू०—ना० १।५।९० ।

६. ना० १।५।९० ।

७. तहा (ख, ग, घ) ।

८. ना० १।५।९० ।

९. भउव्विग्गा जाव (क, ख, ग, घ) । अशुद्धं प्रतिभाति ।

१०. देवाणुप्पियाणं (क्व °) ।

११. सं० पा०—भवित्ता जाव पव्वयामो ।

१२. ना० १।५।८६ ।

१३. °पुत्ते रज्जे (ख, ग, घ) ।

१४. सीविया (क) ।

१५. दुख्खा समाणा (क); अस्याध्ययनस्य १४ सूत्रेपि 'दुख्खा समाणा' इति पाठोस्ति ।





रायहाणि कुंभगरस रण्णो भवणंसि तिण्णि कोडिसया अट्टारोद्धं च कोडीओ  
असीइं रायसहस्साइं—इमेयाह्वं अत्थ-संपयाणं साहरत्तु, साहरत्ता मम  
एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह्ण ॥

१६६. तए णं ते जंभगा देवा वेसमणेणं देवेणं एवं वृत्ता ममाणा जाव' पडिसुणेता  
उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवककमंति अवककमिच्चा वेउच्चियरामुक्वाएणं  
समोहण्णंति, समोहणित्ता संगेज्जाइं जोगणाइं दंउं निगरंति, जाव' उत्तरवेउ-  
च्चियाइं रुवाइं विउच्चंति, विउच्चित्ता ताए उन्निरुट्टाए जाव' देवगईए वीइविय-  
माणा-वीइवियमाणा जेणेव जंबुद्वीवे दीवे भारद्दे वासे जेणेव मिहिला रायहाणी  
जेणेव कुंभगरस रण्णो भवणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता कुंभगरस रण्णो  
भवणंसि तिण्णि कोडिसया जाव' साहरंति, साहरित्ता जेणेव वेसमणे देवे  
तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयल'•परिग्गहियं दसणहं सिरसावतं  
मत्थए अंजलि कट्टु तमाणत्तियं० पच्चप्पिणंति ॥
१६७. तए णं से वेसमणे देवे जेणेव सक्के देविदे देवराया तेणेव उवागच्छइ, उवाग-  
च्छित्ता करयलपरिग्गहियं जाव' तमाणत्तियं पच्चप्पिणइ ॥
१६८. तए णं मल्ली अरहा कल्लाकल्लि जाव मागह्यो पायरासो त्ति बहूणं सणाहाण  
य अणाहाण य पंथियाण य पहियाण य करोडियाण' य कप्पडियाण य 'एगमेगं  
हिरण्णकोडि अट्टु य अणूणाइं सयसहस्साइं—इमेयाह्वं अत्थ-संपयाणं'  
दलयइ ॥
१६९. तए णं कुंभए राया मिहिलाए रायहाणीए तत्थ-तत्थ तहि-तहि देसे-देसे बहूयो  
महाणससालाओ करेइ । तत्थ णं बहवे {मणुया दिण्णभइ-भत्त-वेयणा विउलं  
असण-पाण-खाइम-साइमं उवक्खडेंति । जे जहा आगच्छंति, तं जहा—पंथिया  
वा पहिया वा करोडिया वा कप्पडिया वा पासंडत्था वा गिहत्था वा, तस्स  
य तहा आसत्थस्स वीसत्थस्स सुहासणवरगयस्स तं विउलं असण-पाण-खाइम-  
साइमं परिभाएमाणा परिवेसेमाणा' विहरंति ॥
२००. तए णं मिहिलाए नयरीए सिघाडग'•-•तिग-चउवक-चच्चर-चउम्मुह-महापह-  
पहेसु० बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ—एवं खलु देवाणुप्पिया ! कुंभगरस  
रण्णो भवणंसि सव्वकामगुणियं किमिच्छियं विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं

१. ना० १।८।१६५ ।

२, ३. राय० सू० १० ।

४. ना० १।८।१६५ ।

५. सं० पा०—करयल जाव पच्चप्पिणंति ।

६. ना० १।८।१६६ ।

७. काउडियाणं (वृषा) ।

८. एगमेगं ह्यथाभासं ति वाचनान्तरे दृश्यते(वृ)।

९. परिवेसमाणा (क, ख) ।

१०. सं० पा०—सिघाडग जाव बहुजणो ।



- पडिचण्णा सन्निशिणियाइं' • दसाद्वयणाटं ° वत्थाइं पवरं परिहिया करयल'-  
 • परिग्गहियं दसाणहं सिरसावत्तं मत्थाए अंजलि कट्टु ° ताहि इट्ठाहि' • कंताहि  
 पियाहि मणुण्णाहि मणामाहि वग्गूहि ° एवं वयासी—शुज्झाहि भगवं लोगणाहा!  
 पवत्तेहि घम्मत्तित्यं जीवाणं हियमुद्दुन्निस्सेयसाकरं भविरसट्ठ त्ति कट्टु दोच्चंपि  
 तच्चंपि एवं वयंति, मल्लि अरहं वंदंनि नगंरंति, वंदित्ता नमसित्ता जामेव  
 दिंसि पाउट्ठभूया तामेव दिंसि पट्टिमया ॥
२०४. तए णं मल्ली अरहा तेहि लोगंतिएहि देवेहि संबोद्धिणं समाणे जेणेव अम्मा-  
 पियरो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल' • परिग्गहियं दसाणहं सिरसा-  
 वत्तं मत्थाए अंजलि कट्टु ° एवं वयासी—इच्छामि णं अम्मयाओ ! तुव्भेहि  
 अट्ठमणुण्णाए समाणे मुंडे भवित्ता' • णं अगाराओ अणगारियं ° पव्वइत्तए ।  
 अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करंइ ॥
२०५. तए णं कुंभए राया कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव  
 भो देवाणुप्पिया ! अट्टसहस्सेणं सोवण्णियाणं कलसाणं जाव' अट्टसहस्सेणं  
 भोभेज्जाणं कलसाणं अण्णं च महत्थं' • महग्घं महरिहं विउलं ° तित्थयराभि-  
 सेयं उवट्टवेह । तेवि जाव उवट्टवेत्ति ॥
२०६. तेणं कालेणं तेणं समएणं चमरे असुरिदे जाव' अच्चुयपज्जवसाणा आगया ॥
२०७. तए णं सक्के देविदे देवराया आभिओगिए देवे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—  
 खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! अट्टसहस्सेणं सोवण्णियाणं कलसाणं जाव'  
 अण्णं च' • महत्थं महग्घं महरिहं ° विउलं तित्थयराभिसेयं उवट्टवेह । तेवि  
 जाव उवट्टवेत्ति । तेवि कलसा 'तेसु चेव कलसेसु' ° अणुपविट्ठा ॥
२०८. तए णं से सक्के देविदे देवराया कुंभए य राया मल्लि अरहं सीहासणंसि  
 पुरत्थाभिमुहं निवेसेंति', अट्टसहस्सेणं सोवण्णियाणं कलसाणं जाव' तित्थयरा-  
 भिसेयं अभिसिंचंति ॥
२०९. तए णं मल्लिस्स भगवओ अभिसेए वट्टमाणे अप्पेगइया देवा मिहिलं च

१. सं० पा०—सखिखिणियाइं जाव वत्थाइं ।  
 अत्र वस्तुतः 'जाव परिहिए' इति संक्षेपो  
 युज्यते । पूर्वसूत्रेष्वपि इत्यमेव लब्धत्वात् ॥
२. विभक्तिरहितं पदम् ।
३. सं० पा०—करयल ° ।
४. सं० पा०—इट्ठाहि जाव एवं ।
५. सं० पा०—करयल ° ।
६. सं० पा०—भवित्ता जाव पव्वइत्तए ।
७. राय० सू० २८० ।
८. सं० पा०—महत्थं जाव तित्थयराभिसेयं ।
९. जंबु ° वक्खारो ५ ।
१०. ना० १।८।२०५ ।
११. सं० पा०—अण्णं च तं विउलं ।
१२. ते चेव कलसे (ख, ग) ।
१३. निवेसेइ (क, ख, ग, घ) ।
१४. ना० १।८।२०५ ।



## सुबुद्धिस्स उवेहा-पदं

१५. तए णं से सुबुद्धी अमच्चे' •जियसत्तुस्स रण्णो एयमदुं नो आडाइ नो परियाणाइ° तुसिणीए संचिदुइ ॥
१६. तए णं से जियसत्तू राया सुबुद्धि अमच्चं दोच्चंणि तच्चंणि एवं वयासी—अहो णं' •सुबुद्धी ! इमे फरिदोदए अमणुण्णे वण्णेणं अमणुण्णे गंधेणं अमणुण्णे रसेणं अमणुण्णे फारेणं, से जहानामए—अहिमटे इ वा जाव' अमणामतराए चैव गंधेणं पणत्ते° ॥
१७. तए णं से सुबुद्धी अमच्चे जियसत्तुणा रण्णा दोच्चंणि तच्चंणि एवं वुत्ते समाणे एवं वयासी—नो खलु सामी ! अमहं एयंसि फरिदोदगंसि केइ विमहए । एवं खलु सामी ! सुद्धिभसद्दा वि पोग्गला दुद्धिभसद्दात्ताए परिणमंति', •दुद्धिभसद्दा वि पोग्गला सुद्धिभसद्दात्ताए परिणमंति । सुहुवा वि पोग्गला दुहुवत्ताए परिणमंति, दुहुवा वि पोग्गला सुहुवत्ताए परिणमंति । सुद्धिभगंधा वि पोग्गला दुद्धिभगंधत्ताए परिणमंति, दुद्धिभगंधा वि पोग्गला सुद्धिभगंधत्ताए परिणमंति । सुरसा वि पोग्गला दुरसत्ताए परिणमंति, दुरसा वि पोग्गला सुरसत्ताए परिणमंति । सुहफासा वि पोग्गला दुहफासत्ताए परिणमंति, दुहफासा वि पोग्गला सुहफासत्ताए परिणमंति° । पओग-वीससा-परिणया वि य णं सामी ! पोग्गला पणत्ता ॥

## जियसत्तुस्स विरोध-पदं

१८. तए णं जियसत्तू राया सुबुद्धि अमच्चं एवं वयासी—मा णं तुमं देवाणुप्पिया ! अप्पाणं च परं च तदुभयं च वहुणि य असवभावुवभावणाहि भिच्छत्ताभिनिवेसेण य वुग्गाहेमाणे वुप्पाएमाणे विहराहि ॥

## सुबुद्धिणा जलसोधण-पदं

१९. तए णं सुबुद्धिस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चितिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—अहो णं जियसत्तू राया संते' तच्चे तहिए अवितहे सब्भूए जिणपणत्ते भावे नो' उवलभइ । तं सेयं खलु मम जियसत्तुस्स रण्णो संतारणं तच्चाणं तहियाणं अचित्तहाणं सब्भूयाणं जिणपणत्ताणं भावाणं अभिगमणदुयाए एयमदुं उवाइणावेत्तए—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता पच्चइएहिं पुरिसेहिं सद्धि अंतरावणाओ'

१. सं० पा०—अमच्चे जाव तुसिणीए ।

२. सं० पा०—अहो णं तं चैव ।

३. ना० १।१२।३ ।

४. सं० पा०—परिणमंति तं चैव ।

५. सच्चे (ख) ।

६. नो सदहइ (क) ।

७. अन्धितरावणाओ (क) ।



उदगरसंभारणिज्जेहिं दव्वेहिं संभारेइ, संभारेत्ता जियसत्तुस्स रण्णो पाणिय-  
घरियं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—तुमं णं देवाणुप्पिया ! इमं उदगरयणं  
गेणहाहि, गेण्हत्ता जियसत्तुस्स रण्णो भोगणवेलाए उव्वणेज्जासि ॥

जियसत्तुणा उदगरयणपसंसा-पदं

२१. तए णं से पाणिय-घरिए सुवुद्धिस्स एयमट्ठं पडिगुणेइ, पडिगुणेत्ता तं उदगरयण  
गेण्हइ, गेण्हत्ता जियसत्तुस्स रण्णो भोगणवेलाए उव्वणेइ ॥
२२. तए णं से जियसत्तु राया तं विपुलं अराण-पाण-तादम-साइमं आसाएमाणे  
•विसाएमाणे परिभाएमाणे परिभुजेमाणे एवं च णं ° विहरइ । जिमियभुत्तु-  
त्तराणए वि य णं °समाणे आयंते चोक्खे ° परमसुइभूए तंसि उदगरयणंसि  
जायविम्हए ते वह्वे राईसर जाव' सत्थवाहपभिइओ एवं वयासी—अहो णं  
देवाणुप्पिया ! इमे उदगरयणे अच्छे जाव' सत्विदियगाय-पल्हायणिज्जे ॥
२३. तए णं ते वह्वे राईसर जाव' सत्थवाहपभिइओ एवं वयासी—तहेव णं सामी !  
जण्णं तुव्वे वयह'—इमे उदगरयणे अच्छे जाव' सत्विदियगाय °-  
पल्हायणिज्जे ॥

जियसत्तुणा उदगाणयणपुच्छा-पदं

२४. तए णं जियसत्तु राया पाणिय-घरियं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—एसं भू  
तुमे देवाणुप्पिया ! उदगरयणे कओ आसादिते ?
२५. तए णं से पाणिय-घरिए जियसत्तु एवं वयासी— एसं णं सामी ! मए  
उदगरयणं सुवुद्धिस्स अंतियाओ आसादिते ॥
२६. तए णं जियसत्तु सुवुद्धिअमच्चं । सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—अहो णं  
सुवुद्धी ! केणं कारणेण अहं तव अणिट्ठे अकंते अप्पिए अमणुणे अमणामे जेणं  
तुमं मम कल्लकल्लिं भोगणवेलाए इमं उदगरयणं न उव्वट्ठेसि ? तं एसं णं  
तुमे देवाणुप्पिया ! उदगरयणे कओ उवल्लेइ ?

सुवुद्धिस्स उत्तर-पदं

२७. तए णं सुवुद्धी जियसत्तु एवं वयासी—एसं णं सामी ! से फरिहोदए ॥

१. पडिगुणाति (ख) ।

२. सं० पा०—आसाएमाणे जाव विहरइ ।

३. सं० पा०—य णं जाव परमसुइभूए ।

४. ना० १।७।६ ।

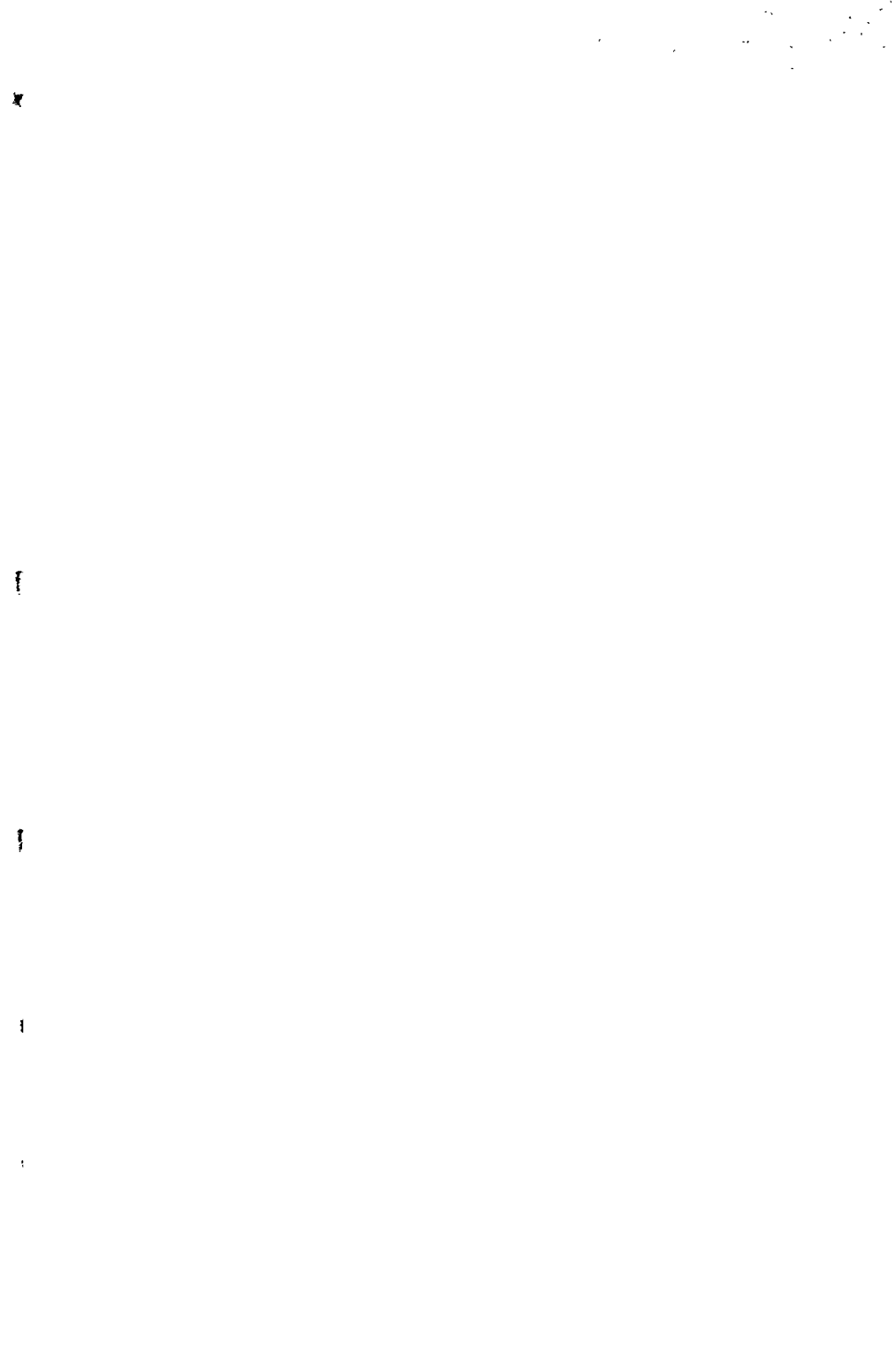
५. ना० १।१२।१६ ।

६. ना० १।७।६ ।

७. सं० पा०—जाव एवं चैव पल्हायणिज्जे ।

८. ना० १।१२।१६ ।

९. कत्तो (ख); कत्तो (ग) ।





वि यत्य' बहुजणो 'किं ते' जलरगण-विनिहमज्जण-कयलिलयाहरय'-कुमुम-सत्थरय-अणोसउणमण-कयन्निभिमसंकुत्तेगु सुहंसुहेणं अभिरममाणो-अभिरम-माणो' विहरइ ॥

२५. तए णं नंदाए पोक्खरिणीए' बहुजणो पहागमाणो य पियमाणो य पाणियं च' संवहमाणो य अण्णमण्णं एवं वयासो—अण्णे' णं देवाणुप्पिया ! नंदे मणियार-सेट्ठी, कयत्ये' ०णं देवाणुप्पिया ! नंदे मणियारसेट्ठी, कयल्लवत्तणे णं देवाणु-प्पिया ! नंदे मणियारसेट्ठी, कयपुण्णे णं देवाणुप्पिया ! नंदे मणियारसेट्ठी, कया णं लोया ! सुलद्धे माणुस्साए' जम्मजीवियफले [नंदस्स मणियारस्स ?] ? जस्स णं इमेयाह्वा नंदा पोक्खरिणी चाउवत्तोणा जाव' पडिह्वा" जाव" रायगिहविणिग्गओ जत्य बहुजणो आसणेसु य सयणेसु य सण्णिसणो य संतुयट्ठी य पेच्छमाणो य साहेमाणो य सुहंसुहेणं विहरइ । तं धन्ने णं देवाणुप्पिया ! नंदे मणियारसेट्ठी, कयत्ये णं देवाणुप्पिया ! नंदे मणियारसेट्ठी, कयल्लवत्तणे णं देवाणुप्पिया ! नंदे मणियारसेट्ठी, कयपुण्णे णं देवाणुप्पिया ! नंदे मणियारसेट्ठी, कया णं लोया ! सुलद्धे माणुस्साए' जम्मजीवियफले नंदस्स मणियारस्स ?

२६. तए णं रायगिहे सिघाडग'<sup>१</sup>-०तिग-चउवक-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु<sup>०</sup> बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ एवं भासइ एवं पण्णवेइ एवं पल्लवेइ - धन्ने णं देवाणुप्पिया ! नंदे मणियारसेट्ठी सो चेव गमओ जाव सुहंसुहेणं विहरइ ॥

२७. तए णं से नंदे मणियारसेट्ठी बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठुट्ठे 'धाराहत - कलंवगं विव'<sup>१</sup> समूसवियरोमकूवे परं सायासोक्खमणुभवमाणे विहरइ ॥

### नंदस्स रोगुप्पत्ति-पदं

२८. तए णं तस्स नंदस्स मणियारसेट्ठिस्स अण्णया कयाइ सरीरगंसि सोलस रोगा-यंका" पाउठभूया । [तं जहा—

१. जत्य (क, ख); तत्य (घ) ।

२. किं तत् 'यत् करोति' इति शेषः ।

३. ० घरय (क) ।

४. अभिरममाणे (क) ।

५. पुक्खरणीए (क); पोक्खरणीए (ख) ।

६. वा (क) ।

७. धण्णेसि (क, घ) ।

८. सं० पा०—कयत्ये जाव जम्म० ।

९. ना० १।१३।१७ ।

१०. पडिह्वा जस्स णं पुरत्थिमिल्ले तं चेव चउसु वि वणसंडेसु (क, ख, ग, घ) ।

११. ना० १।१३।१८-२४ ।

१२. सं० पा०—सिघाडग जाव बहुजणो ।

१३. धाराहयकलंवकं विव (ख, ग); ० कयंबकं विव (घ) ।

१४. रोगात्तंका (क); रोयायंका (ख) ।



सिरावत्थोहि' य तापणाहि य पुडणाहि य 'छल्लीहि य वल्लीहि य' मूलेहि य कंदेहि य पत्तेहि य पुष्पेहि य फलेहि य धीएहि य गिलियाहि य मुनियाहि य श्रोतहेहि य भेगज्जेहि य' इच्छति भेगि मीनसणं रोगायंकारणं एगमवि रोगायंके उवसामित्तए, नो चैव णं संचारंति उवसामित्तए ॥

३१. तए णं ते बह्वे वेज्जा' य वेज्जपुत्ता य जाणुया य जाणुयपुत्ता य कुमला य कुसलपुत्ता य जाहे नो संचारंति तेसि सोलसणं रोगायंकारणं एगमवि रोगायंके उवसामित्तए, ताहे संता तंता परितंता' •निद्विण्णा समाणा जामेव दिसं पाउव्भूया तामेव दिसं° पडिगया ॥

भगवश्रो उत्तरे ददुुरदेवस्स ददुुरभव-पदं

३२. तए णं नंदे मणियारगेट्ठो तेहि सोलसेहि रोगायंकेहि अभिभूए समाणे नंदाए पुक्खरिणीए मुच्छिए गहिए गिद्धे अज्जभाववण्णे तिरिवखजोणिएहि निवद्धाउए वद्धपएसिए अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे कालमाणे कालं किच्चा नंदाए पोक्खरिणीए ददुुरीए कुच्छिसि ददुुरत्ताए उववण्णे ॥

३३. तए णं नंदे' ददुुरे' गट्टभाश्रो विणिमुक्के समाणे उम्मुक्कवालभावे' विण्णय-परिणयमित्ते' जोव्वणगमणुप्पत्ते नंदाए पोक्खरिणीए अशिरममाणे-अशिरममाणे विहरइ ॥

३४. तए णं नंदाए पोक्खरिणीए बहुजणो प्हायमाणो य पियमाणो य पाणियं च संवहमाणो य अण्णमण्ण" एवमाइक्खइ एवं भासइ एवं पण्णवेइ एवं परुवेइ— धन्ने णं देवाणुप्पिया ! नंदे मणियारे, जस्स णं इमेयारूवा नंदा पुक्खरिणी— चाउक्कोणा जाव" पडिरूवा" ॥

ददुुरस्स जाइसरण-पदं

३५. तए णं तस्स ददुुरस्स तं अभिक्खणं-अभिक्खणं बहुजणस्स अंतिए एयमट्टं

- |  |   |
|--|---|
| १. सिरावेहेहि (क); अवरहसिरावत्थोहि (ख); सिरावेहेहि य (ग) । | ७. नंदे जीवे (घ) ।  |
| २. छल्लीहि य (ख); वल्लीहि य छल्लीहि य (घ) ।                | ८. ददुुरीए (घ) ।  |
| ३. य आसज्जेहि य (क, ग); आइज्जेहि य (घ) ।                   | ९. उमुक्क° (ख, घ) ।   |
| ४. रोगातंके (क, ग) ।                                       | १०. विण्णाय ° (घ) ।   |
| ५. विज्जा (क, ख, ग) ।                                      | ११. अण्णमण्णस्स (क, ग, घ) ।   |
| ६. सं° पा०—परितंता जाव पडिगया ।                            | १२. ना० ११३।१७ ।  |
|  | १३. पडिरूवा जस्स णं पुरत्थिमिल्ले वणसंडे चित्तसभा अणेगखंभ(क, ख, ग, घ); पू०— ना० ११३।१८-२४ । |



३८. तए णं नंदाए, पोक्खारिणीए, बहुजणो 'पहायमाणो य पियमाणो य' (पाणियं च संवहमाणो य' अणमणं) \*एवमाइवाइ—एवं मनु० रामणे भगवं महावीरे इहेव गुणसिलए चेइए समोसहे । तं गच्छामो णं येवाणुणिया । समणं भगवं महावीरं वंदामो' \*णमंसामो सक्कारेमो सम्माणेमो कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं० पज्जुवासामो । एयं णं दहभवे परभवे य हियाए' \*सुहाए खमाए निस्सेयसाए० आणुगामियत्ताए भविरसाइ ॥

### दद्दुरस्स समवसरणं पइ गमण-पदं

३९. तए णं तस्स दद्दुरस्स बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा नितम्म अयमेवाह्वे अज्झत्थिए चितिए पत्थिए मणोगए संकण्णे समुप्पज्जित्था—एवं खलु समणे भगवं महावीरे समोसहे । तं गच्छामि णं समणं भगवं महावीरं वंदामि—एवं सपेहेइ, सपेहेत्ता नंदाओ पोक्खारिणीओ सणियं-सणियं पच्चुत्तरेइ', जेणेव रायमग्गे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ताए उक्किट्ठाए' दद्दुरगईए वीईव-यमाणे-वीईवयमाणे जेणेव ममं अंतिए तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥

४०. इमं च ण सेणिए राया भंभसारं पहाए जाव' सच्चालंकारविभूसिए हत्थिखं-वरगए सकोरेंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं सेयवरचामरेहि य उद्वुव्व-माणेहिं महयाहय-गय-रह-भड-चडगर-[कलियाए?] चाडरणिणीए सेणाए सद्धि संपरिवुडे मम पायवंदए ह्ववमागच्छइ ॥

### दद्दुरस्स मच्चु-पदं

४१. तए णं से दद्दुरे सेणियस्स रण्णो एगेणं आसकिसोरएणं वामपाएणं अक्कते समाणे अंतनिग्घाइए कए यावि होत्था ॥

४२. तए णं से दद्दुरे अथामे अवले अवीरिए अपुरिसक्कारपरक्कमे अधारणिज्जमिति कट्ठु एगंतमवक्कमइ, करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्ठु एवं वयासी—नमोत्थु णं अरहंताणं जाव' सिद्धिगइनामधेज्जं ठाणं संपत्ताणं । नमोत्थु णं समणस्स भगवओ महावीरस्स जाव' सिद्धिगइनामधेज्जं ठाणं

१. पहाइ ३ (क, ख, ग); पहाणे य ३ (घ) ।

असो पाठः ३४ सूत्रेण पूरितः ।

२. सं० पा०—अणमणं जाव समणे ।

३. सं० पा०—वंदामो जाव पज्जुवासामो ।

४. हियाए (क, ख, ग) सं० पा०—हियाए

जाव आणुगामियत्ताए ।

५. पू०—ना० १।१३।३७ ।

६. उत्तरेइ, २ (ख) ।

७. उक्किट्ठाए ५ (क, ख) ।

८. भिभसारि (क); भिभसारि(ख); भिभासारे (घ) ।

९. ना० १।१।५१ ।

१०, ११. ओ० सू० २१ ।



## चौदसमं अडभयणं

### तेयली

#### उक्खेव-पदं

१. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं तेरसमस्स नायज्भ-  
यणस्स अयमट्टे पण्णत्ते, चौदसमस्स णं भंते ! नायज्भयणस्स के अट्टे पण्णत्ते ?
२. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समाएणं तेयलिपुरं नाम नयरं । पमयवणे  
उज्जाणे । कणगरहे राया ॥
३. तस्स णं कणगरहस्स पउमावई देवी ॥
४. तस्स णं कणगरहस्स तेयलिपुत्ते नामं अमच्चे—'साम-दंड'<sup>१</sup>—●भेय-उवप्पयाण-  
नीति-सुपउत्त-नयविहण्णु' विहरइ ॥
५. तत्थ णं तेयलिपुरे कलादे नामं मूसियारदारए होत्था—अड्ढे जाव' अपरिभूए ॥
६. तस्स णं भद्दा नामं भारिया ॥
७. तस्स णं कलायस्स मूसियारदारगस्स धूया भद्दाए अत्तया' पोट्टिला नामं  
दारिया होत्था—रूवेण य जोव्वणेण' य लावण्णेण य उक्किट्ठा उक्किट्ठ-  
सरीरा ॥

#### पोट्टिलाए कीडा-पदं

८. तए णं सा पोट्टिला दारिया अण्णया कयाइ ण्हाया सव्वालंकारविभूसिया  
चेडिया-चक्कवाल-संपरिवुडा उप्पि पासायवरगया आगासतलगंसि कणग'  
तिट्ठसएणं कीलमाणी-कीलमाणी विहरइ ॥

१. ना० १११७ ।

४. ना० ११५७ ।

२. सं० पा०—साम-दंड० । असो अपूर्णः

५. अत्तिया (क, ख, ग) ।

पाठः 'जाव' आदिपूर्तिसंकेत-रहितोस्ति ।

६. × (ग) ।

३. पू०—ना० ११११६ ।

७. कणगमयेण (घ) ।





सलाहणिज्जं वा शरिसो वा मंजोगो वा शिज्जडं णं पोट्टिला दारिया  
तेयलिपुत्तरस । तो' भण देवाणुणिया ! किं दवामो सुक्कं ॥

१६. तए णं कलाए मूसियारदारए ते अश्वितरटाणिज्जे पुरिसे एवं वयासो—एस  
चेव णं देवाणुणिया ! मम सुक्के जण्णं तेयलिपुत्ते मम दारियानिमित्तं  
अणुरमहं करेइ । ते अश्वितरटाणिज्जे पुरिसे निपुत्तेणं असण-पाण-खाइम-  
साइमेणं पुष्फ-वत्थ-गंध'-मल्लालंकारेणं सवकारेइ सम्माणेइ, सवकारेता  
सम्माणेत्ता पडिविसज्जेइ ॥
१७. [तए णं ते अश्वितरटाणिज्जा पुरिसा' ? ] कलायस्स मूसियारदारयस्स  
गिहाओ पडिनियत्तंति', जेणेव तेयलिपुत्ते अमच्चे तेणेव उवागच्छति, उवा-  
गच्छिता तेयलिपुत्तं अमच्चं णमदुं निवेइति' ॥

### पोट्टिलाए विवाह-पदं

१८. तए णं कलाए मूसियारदारए अण्णया कयाइं सोहणंसि तिहि-करण-नवखत्त-  
मुहुत्तंसि पोट्टिलं दारियं ण्हायं सब्वालंकारविभूसियं सीयं दुरुहेत्ता मित्त-नाइ'-  
•नियग-सयण-संवंधि-परियणेणं सद्धिं ° संपरिवुडे साओ गिहाओ पडिनिकखमइ,  
पडिनिकखमित्ता सव्विड्ढीए' तेयलिपुरं नयरं मज्जमंज्जेणं जेणेव तेयलिस्स  
गिहे तेणेव उवागच्छइ, पोट्टिलं दारियं तेयलिपुत्तस्स सयमेव भारियत्ताए  
दलयइ ॥
१९. तए णं तेयलिपुत्ते पोट्टिलं दारियं भारियत्ताए उवणीयं पासइ, पासित्ता हड्डुडे  
पोट्टिलाए सद्धिं पट्टयं दुरुहइ, दुरुहित्ता सेयापीएहि' कलसेहि अप्पाणं मज्जावेइ,  
मज्जावेत्ता अगिहोमं कारेइ, कारेत्ता पाणिग्गहणं करेइ, करेत्ता पोट्टिलाए  
भारियाए' मित्त-नाइ'-•नियग-सयण-संवंधि-°-परियणं विउलेणं असण-पाण-  
खाइम-साइमेणं पुष्फ-वत्थ'<sup>११</sup>-•गंध-मल्लालंकारेणं सवकारेइ सम्माणेइ, सवकारेता  
सम्माणेत्ता ° पडिविसज्जेइ ॥
२०. तए णं से तेयलिपुत्ते पोट्टिलाए भारियाए अणुरत्ते अविरत्ते उरालाइ'' •माणु-  
स्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे ° विहरइ ॥

१. ता (क, घ) ।

२. सुक्कं (घ) ।

३. जाव (ख, घ) ।

४. कोण्ठकान्तगतं: पाठः प्रतिपु नोपलभ्यते ।

५. नियत्तंति २ (क, ख, ग); पडिनिकखमइ  
(घ) ।

६. निवेयंति (ख); निवेत्तेति (ग) ।

७. सं० पा०—नाइ० ।

८. पू०—ना० १।१।३३ ।

९. सेयपीएहि (ग) ।

१०. भारियाए सद्धिं (घ) ।

११. सं० पा०—नाइ जाव परियणं ।

१२. सं० पा०—वत्थ जाव पडिविसज्जेइ ।

१३. सं० पा०—उरालाइं जाव विहरइ ।



अमणुणा अमणामा जाया यानि होत्या—नेच्छद् णं तेयलिपुत्ते पोट्टिलाए नामगोयमवि सवणयाए, किं पुण संमाणं वा परिभोगं वा ?

३७. तए णं तीसे पोट्टिलाए अण्णया कयाए पुच्यरताथरताकालसमयासि इमेयाल्वे अज्झत्थिएण चित्तिएण पत्थिएण मणोगए संकप्पे सुमुण्णज्जित्था—एवं मनु अहं तेयलिस्स पुब्बि इट्ठा कंता पिया मणुणा मणामा आसि, इयाणि अणिट्ठा अकंता अप्पिया अमणुणा अमणामा जाया । नेच्छद् णं तेयलिपुत्ते मम नाम' गोयमवि सवणयाए, किं पुण संमाणं वा परिभोगं वा ? [ति कट्ठु ?] ओह्यमणसंकप्पा' करतलपल्लह्यमुही अट्टज्झाणोवगया ° भियायइ ॥

### पोट्टिलाए दाणसाला-पदं

३८. तए णं तेयलिपुत्ते पोट्टिलं ओह्यमणसंकप्पं' करतलपल्लह्यमुहि अट्टज्झाणो-वगयं ° भियायमाणिं पासइ, पासित्ता एवं वयासी—मा णं तुमं देवाणुप्पिए ! ओह्यमणसंकप्पा' करतलपल्लह्यमुही अट्टज्झाणोवगया ° भियाहि । तुमं णं मम महाणसंसि विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं उवक्खडावेहि, उवक्खडावेत्ता वहुणं समण-माहण'-अतिहि-किवण-°-वणीमगाणं देयमाणी य दवावेमाणी' य विहराहि ॥

३९. तए णं सा पोट्टिला तेयलिपुत्तेणं अमच्चेणं एवं वुत्ता समाणी' हट्ठा तेयलि-पुत्तस्स एयमट्ठं पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता कल्लाकल्लि महाणसंसि विपुलं असण-°पाण-खाइम-साइमं उवक्खडावेइ, उवक्खडावेत्ता वहुणं समण-माहण-अतिहि किवण-वणीमगाणं देयमाणी य ° दवावेमाणी य विहरइ ॥

### अज्जा-संघाडगस्स भिक्खायरियागमण-पदं

४०. तेणं कालेणं तेणं समएणं सुव्वयाओ नामं अज्जाओ इरियासमियाओ' भासासमियाओ एसणासमियाओ आयाण-भंड-मत्त-णिक्खेवणासमियाओ उच्चार-पासवण-खेल-सिघाण-जल्ल-पारिट्ठावणियासमियाओ मणसमियाओ वइसमियाओ कायसमियाओ मणगुत्ताओ वइगुत्ताओ कायगुत्ताओ गुत्ताओ गुत्तिदियाओ ° गुत्तवंभचारिणीओ बहुस्सुयाओ बहुपरिवाराओ पुव्वाणुपुब्बि

१. सं० पा०—ताम जाव परिभोगं ।

२. सं० पा०—ओह्यमणसंकप्पा जाव भियायइ ।

३. सं० पा०—ओह्यमणसंकप्पं जाव भियाय-माणि ।

४. सं० पा०—ओह्यमणसंकप्पा ° ।

५. सं० पा०—माहण जाव वणीमगाणं ।

६. देवावेमाणी (क) ।

७. समाणा (ख, ग) ।

८. सं० पा०—असणं जाव दवावेमाणी ।

९. सं० पा०—इरियासमियाओ जाव गुत्तवंभ-चारिणीओ ।



## पोट्टि लवेवेण तेयलिपुत्तस्स संबोह-पवं

६२. तए णं से पोट्टिले देवे तेयलिपुत्तं अभिक्खणं-अभिक्खणं केवलपण्णत्ते घम्मे संबोहेइ, नो चैव णं से तेयलिपुत्तं संवुज्झइ ॥
६३. तए णं तस्स पोट्टिलदेवस्स इमेयारुचे अज्झत्थिए चित्थिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं खलु कणगज्झए राया तेयलिपुत्तं आढाइ जाव' भाग च ने प्रणुवइइइ', तए ण से तेप्रलिपुत्ते अभिक्खणं-अभिक्खणं संत्रोहिज्जमाणे विघम्मे नो संवुज्झइ । त सेयं खनु ममं कणगज्झयं तेयलिपुत्ताओ विपरिणा-मित्तए त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कणगज्झयं तेयलिपुत्ताओ विपरिणामेइ ॥
६४. तए णं तेयलिपुत्ते कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव' उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिग्गरे तेयसा जलत्ते ण्हाए' •कयवलिकम्मं कयकाउय-मंगल-पाय-च्छित्त आसत्तववरण ए वहाँहि पुरिसेहि सद्धि संपरिवुडे साओ गिहाओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव कणगज्झए राया तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥
६५. तए णं तेयलिपुत्तं अमच्चं जे जहा बह्वे राईसर-तलवर' •माडंविद्य-कोडुंविद्य-इव्व-सेट्टि-सेणावइ-सत्थवाह' पभियओ' पासंति ते तद्देव आढायंति परियाणंति अब्भुट्ठेति, अंजलिपग्गहं' करेति, इट्ठाहि कंताहि जाव' वग्गूहि 'आलवमाणा य संलवमाणा' य पुरओ य पिट्टओ य पासओ य' समणुगच्छंति ॥
६६. तए णं से तेयलिपुत्ते जेणेव कणगज्झए तेणेव उवागच्छइ ॥
६७. तए णं से कणगज्झए तेयलिपुत्तं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता नो आढाइ' नो परियाणाइ नो अब्भुट्ठेइ, अणाढायमाणे' अपरियाणमाणे अणव्भुट्ठेमाणे परम्मुहे संचिट्ठइ ॥
६८. तए णं से तेयलिपुत्ते अमच्चे कणगज्झयस्स रण्णो अंजलि करेइ । 'तओ य णं' से कणगज्झए राया अणाढायमाणे' अपरियाणमाणे अणव्भुट्ठेमाणे तुसिणीए परम्मुहे संचिट्ठइ ॥

१. ना० १।१४।६० ।

२. वड्ढेइ (क, ख, ग, घ) ।

३. ना० १।१।२४ ।

४. सं० पा०—ण्हाए जाव पायच्छित्ते ।

५. सं० पा०—तलवर जाव पभियओ ।

६. पभितयो (क); पभिइओ (ग, घ) ।

७. °परिग्गहिए (क); °परिग्गहिय (घ); °परिग्गहं (ख, ग) ।

८. ना० १।१।४८ ।

९. आलवमाणे य संलवमाणे (ग) ।

१०. य मग्गओ (क, ख, ग, घ) । अत्र 'मग्गओ य' इति पाठोऽतिरिक्तः सम्भाव्यते । 'पिट्टओ य मग्गओ य' एते द्वे अपि पदे समानार्थके स्तः । अस्याध्ययनस्यैव ७० सूत्रे 'मग्गओ य' इति पाठो नोपलभ्यते ।

११. आयाणत्ति (क) ।

१२. अणायाणमाणे ३(क); अणाढामीणे ३(ग) ।

१३. तए णं (क, ख, घ) ।

१४. अणाढाइज्जमाणे ३(क); अणाढामीणे (ख, ग); अणादिज्जमाणे (घ) ।



पोट्टि लदेवेण तेयलिपुत्तस्स संबोह-पवं

६२. तए णं से पोट्टिले देवे तेयलिपुत्तं अभिक्खणं-अभिक्खणं केवलपण्णत्ते धम्मं संबोहेइ, नो चैव णं से तेयलिपुत्तं संबुज्झइ ॥
६३. तए णं तस्स पोट्टिलदेवस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चित्थिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं खलु कणगज्झए राया तेयलिपुत्तं आढाइ जाव' भाग च ने अणुवड्डइ, तए णं से तंयलिपुत्ते अभिक्खणं-अभिक्खणं संत्रोहिज्जमाणे वि धम्मं नो संबुज्झइ । त सेयं खलु ममं कणगज्झयं तेयलिपुत्ताओ विपरिणा-मित्तए त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कणगज्झयं तेयलिपुत्ताओ विपरिणामेइ ॥
६४. तए णं तेयलिपुत्ते कत्तं पाउप्पभायाए रयणीए जाव' उट्ठियम्मि सूरे सहस्स-रस्सिम्मि दिगयरे तेयसा जलते ण्हाए' •कयवलिकम्मं कयकाउय-मंगल°-पाय-च्छित्त आसव्वववरए वड्डहिं. पुरिसेहिं सद्धिं संपरिवुडे साओ गिहाओ निगच्छइ, निगच्छित्ता जेणेव कणगज्झए राया तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥
६५. तए णं तेयलिपुत्तं अमच्चं जे जहा वहवे राईसर-तलवर' •माडंविद्य-कोडुंविद्य-इव्वभ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाह°पभियओ' पासंति ते तहेव आढायंति परियाणंति अब्भुट्ठेति, अंजलिपग्गहं' करंति, इट्ठाहिं कंताहिं जाव' वग्गूहिं 'आलवमाणा य संलवमाणा' य पुरओ य पिट्ठओ य पासओ य' समणुगच्छंति ॥
६६. तए णं से तेयलिपुत्ते जेणेव कणगज्झए तेणेव उवागच्छइ ॥
६७. तए णं से कणगज्जए तेयलिपुत्तं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता नो आढाइ' नो परि-याणाइ नो अब्भुट्ठेइ, अणाढायमाणे' अपरियाणमाणे अणव्भुट्ठेमाणे परम्मुहे संचिट्ठइ ॥
६८. तए णं से तेयलिपुत्ते अमच्चे कणगज्झयस्स रण्णे अंजलि करेइ । 'तओ य णं' से कणगज्झए राया अणाढायमाणे' अपरियाणमाणे अणव्भुट्ठेमाणे तुसिणीए परम्मुहे संचिट्ठइ ॥

१. ना० १।१४।६० ।

२. वड्डेइ (क, ख, ग, घ) ।

३. ना० १।१।२४ ।

४. सं० पा०—ण्हाए जाव पायच्छित्ते ।

५. सं० पा०—तलवर जाव पभियओ ।

६. पभित्तयो (क); पभिइओ (ग, घ) ।

७. °परिग्गहिए (क); °परिग्गहिय (घ); °परिग्गहं (ख, ग) ।

८. ना० १।१।४८ ।

९. आलवमाणे य संलवमाणे (ग) ।

१०. य मग्गओ (क, ख, ग, घ) । अथ 'मग्गओ य' इति पाठोऽतिरिक्तः सम्भाव्यते । 'पिट्ठओ य मग्गओ य' एते द्वे अपि पदे समानार्थके स्तः । अस्याध्ययनस्यैव ७० सूत्रे 'मग्गओ य' इति पाठो नोपलभ्यते ।

११. आयाणति (क) ।

१२. अणाययणमाणे ३(क); अणाढायमाणे ३(ग) ।

१३. तए णं (क, ख, घ) ।

१४. अणाढाइज्जमाणे ३(क); अणाढायमाणे (ख, ग); अणादिज्जमाणे (घ) ।





७५. तए णं से तेयलिपुत्ते महइमहालियं सिलं गीवाए बंधइ, बंधित्ता अत्याहंमतारम-  
पोरिसीयंसि उदगंसि अप्पाणं मुयइ । तत्थ वि से थाहे जाए ॥
७६. तए णं से तेयलिपुत्ते सुक्कंसि तणकूडंसि अगणिकायं पक्खिवइ, पक्खिवित्ता  
अप्पाणं मुयइ । तत्थ वि य से अगणिकाए विज्झाए' ।

१. आवश्यकचूर्णो (पृष्ठ ४६६, ५००) समुद्रते  
प्रस्तुताध्ययने अरण्यगमनस्य निर्देशोऽस्ति ।  
तथा अन्योपि क्रमभेदो वर्तते । स च अतीव  
मननीयोऽस्ति, यथा—

ताहे तणकूडे अंगि दातुं पविट्ठो, तत्थवि न  
डज्झति, ताहे अडवि पविसति, तत्थ पुरतो  
छिण्णगिरिसिहरकंदरप्पवाते पिट्ठतो कपेमा-  
णेव मेदिणितलं आकड्डंतव्व पादवगणे  
विफोडेमाणेव अंवरतलं सब्वतमोरासिब्व  
पिंडिते पच्चकखमिव सतं कतंते भीमे भीमा-  
रवं करंते महावारणे समुट्ठिते, दोसु चक्खु-  
निवातेसु पयंडघणुजुत्तविप्पमुक्को पुंखमेत्तव-  
सेसा धरणितलपवेसाणि सराणि पतंति  
हुतवहजालासहस्ससंकुलं समंततो पलित्तं  
घगघगेति सब्वारण्णं, अइरुगतवालसूरगुंजद-  
पुंजनिगरप्पगासं भियाति इंगालभूतं गिहं,  
ताहे चित्तेति—पोट्टिला जदि मे नित्थारेज्जति,  
एवं वयासी—आउसो पोट्टिला ! आहता  
आयाणाहि ।

ततेणं सा पोट्टिला पंचवण्णाइं सखिखिणीयाइं  
जाव एवं वयासी—आउसो तेतलिपुत्ता !  
एहि ता आदाणाहि, पुरतो छिण्णगिरिसिहर-  
कंदरप्पवाते तं चेव जाव इंगालभूतं गिहं तं  
आउसो तेतलिपुत्ता ! कहि वयामो ?  
ततेणं से तेतली एवं वयासी—सद्धेतं खलु  
भो समणा वयंति, सद्धेयं खलु भो माहणा  
वयंति, अहमेगो असद्धेयं वदिससामि,  
एवं खलु अहं सह पुत्तेहि अपुत्तो को मे तं  
सद्दिहस्सति ? एवं सह मित्तेहिं सह

दारंहिं सह वित्तेणं, सह परिग्गहेणं  
सह दासेहिं जाव दाणमाणसक्कारोवयारसंग-  
हिते तेतलिपुत्तस्सा सयणपरियणेषि तगं गते  
को मे तं सद्दिहस्सति ?

एवं खलु तेतलिपुत्ते कणगज्झत्तेणं अवज्झा-  
तके को मे तं सद्दिहस्सति ?

कानक्कमणीतिसत्थविसारदे तेतलिपुत्ते  
विसादं गतेति को मे तं सद्दिहस्सति ?

ततेणं तेतलिपुत्तेणं तात्तपुडे विसे खइते सेविय  
पडिहतेत्ति को मे तं सद्दिहस्सति ?

एवं असी वेहासे जले अग्गी जाव रण्णेवि  
पुरतो पवाने एमादि को मे तं सद्दिहस्सति ?  
जातिकुलरूवविणओवयारसालिणी पोट्टिला  
मुसिकारधूता मिच्छं विपडिवण्णा को मे तं  
सद्दिहस्सति ?

ताहे पोट्टिला भणति—एहि ता आदाणाहि,  
भीतस्स खलु भो पवज्जा ताणं, आतुरस्स  
भेसज्जं किच्चं अभिउत्तस्स पच्चयकरणं  
संतस्स वाहणकिच्चं महाजले वाहणकिच्चं  
माइस्स रहस्सकिच्चं उक्कठित्तस्स देसगमण-  
किच्चं छुहितस्स भोयणकिच्चं पिवासितस्स  
पाणकिच्चं सोहातुरस्स जुवत्तिकिच्चं परं  
अभियुंजितुकामस्स सहायकिच्चं खंतस्स  
दंतस्स गुत्तस्स जितेंदियस्स एत्तो एगमवि न  
भवति । सुट्ठु-सुट्ठु तण्णं तुमं तेतलिपुत्ता ।  
एयमट्ठं आदाणाहिति कट्ठु दोच्चपि तच्चंपि  
एवं वयति, वइत्ता जामेव दिंसि पाउब्भूया  
तामेव दिंसि पडिगता ।



## पण्णरसमं अज्झयण

### नंदीफले

#### उक्खेव-पदं

१. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं चोहसमस्स नायज्झयणस्स अयमद्वे पण्णत्ते, पण्णरसमस्स णं भंते ! नायज्झयणस्स के अद्वे पण्णत्ते ?
२. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपा नाम नयरी होत्था । पुण्णभदे चेइए । जियसत्तू राया ॥
३. तत्थ णं चंपाए नयरीए धणे नामं सत्थवाहे होत्था—अइहे जाव' अपरिभूए ॥
४. तीसे णं चंपाए नयरीए उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए अहिच्छत्ता नाम' नयरी होत्था—रिद्धत्थिमिय-समिद्धा वण्णओ' ॥
५. तत्थ णं अहिच्छत्ताए नयरीए कणगकेऊ नामं राया होत्था—महया वण्णओ' ॥

#### धणस्स घोसणा-पदं

६. तए णं तस्स धणस्स सत्थवाहस्स अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि इमेयारूवे अज्झत्थिए चित्थिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—सेयं खलु मम विपुलं पणियभंडमायाए अहिच्छत्तं नयरि वाणिज्जाए गमित्तए—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता गणिमं च धरिमं च मेज्जं च पारिच्छेज्जं च - चउव्विहं भंडं गेणहइ, गेण्हत्ता सगडी-सागडं सज्जेइ, सज्जेत्ता सगडी-सागडं भरेइ, भरेत्ता कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुभे देवाणुप्पिया ! चंपाए नयरीए सिघाडग जाव' महापहपहेसु [उगघोसेमाणा-उगघोसेमाणा ?]

१. ना० १।१।७ ।
२. नामं (ख, घ) ।
३. ओ० सू० १ ।

४. ओ० सू० १४ ।
५. ना० १।१।६५ ।



आहारंति, छायासु वीरामंति । तेषां णं आयाए भद्दए भवइ, तत्रो पच्छा परिणममाणा-परिणममाणा' •अकाले चैव जीवियाओ • ववरोवेंति ॥

१६. एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथो वा आयरिय-उवज्जायाणं अंतिए मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए समाणे पंचसु कामगुणेषु सज्जइ' •रज्जइ गिज्जइ मुज्जइ अज्जोववज्जइ, सेणं इहभवे जाव' अणादियं च णं अणवययगं दीहमद्धं संसारकंतांरं भुज्जो-भुज्जो • अणुपरियट्टिस्सइ—जहा व ते पुरिसा ॥

### धणस्स अहिच्छत्ताऽगमण-पदं

१७. तए णं से धणे सत्थवाहे सगडी-सागडं जोयावेइ, जोयावेत्ता जेणेव अहिच्छत्ता नयरी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छत्ता अहिच्छत्ताए नयरीए वहिया अग्गुज्जाणे सत्थनिवेशं करेइ, करेत्ता सगडी-सागडं मोयावेइ ॥
१८. तए णं से धणे सत्थवाहे महत्थं महग्घं महरिहं रायारिहं पाहुडं गेण्हइ, गेण्हित्ता वहुपुरिसेहिं सद्धिं संपरिवुडे अहिच्छत्तं नयारि मज्झंमज्झेणं अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता जेणेव कणगकेऊ राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छत्ता करयल' •परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलि कट्टु जएणं विजएणं • वद्धावेइ, वद्धावेत्ता तं महत्थं महग्घं महरिहं रायारिहं पाहुडं उवणेइ ॥
१९. तए णं से कणगकेऊ राया हट्टुट्टे धणस्स सत्थवाहस्स तं महत्थं महग्घं महरिहं रायारिहं पाहुडं पडिच्छइ, पडिच्छित्ता धणं सत्थवाहं सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता उस्सुककं वियरइ, वियरित्ता पडिविसज्जेइ, भंडविणिमयं करेइ, करेत्ता पडिभंडं गेण्हइ, गेण्हित्ता सुहंसुहेणं जेणेव चंपा नयरी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मित्त-नाइ' •नियग-सयण-संवंधि-परियणेणं सद्धिं • अभिसमण्णागए विपुलाइं माणुस्सगाइ' • भोगभोगाइं पच्चणुभवमाणे • विहरइ ॥

### धणस्स पव्वज्जा-पदं

२०. तेणं कालेणं तेणं समएणं थेरागमणं ॥
२१. धणे सत्थवाहे धम्मं सोच्चा जेट्टपुत्तं कुडुंवे ठावेत्ता पव्वइए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जित्ता, वह्णिणं वासाणि सामण्णपरियागं पाउणित्ता, मासियाए संलेहणाए अत्ताणं भूसेत्ता, अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववण्णे ।

१. सं० पा०—परिणममाणा जाव ववरोवेंति । ४. सं० पा०—करयल जाव वद्धावेइ ।

२. सं० पा०—सज्जइ जाव अणुपरियट्टिस्सइ । ५. सं० पा०—नाइ० ।

३. ना० १।३।२४ ।

६. सं० पा०—माणुस्सगाइं जाव विहरइ ।



## सोलसमं अज्भयणं

### अचरकंका

#### उक्खेव-पदं

१. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं पण्णरसमस्स नायज्भयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, सोलसमस्स णं भंते ! नायज्भयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?
२. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपा नामं नयरी होत्था ॥
३. तीसे णं चंपाए नयरीए वहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए सुभूमिभागे नामं उज्जाणे होत्था ॥

#### नागसिरी-कहाणम-पदं

४. तत्थ णं चंपाए नयरीए तत्रो माहणा भायरो परिवसंति, तं जहा —सोमे सोमदत्ते सोमभूई—अड्ढा जाव' अपरिभूया रिउब्बेय-जउब्बेय-सामवेय-अथव्वणवेय जाव' वंभणएसु य सत्थेसु सुपरिनिट्ठिया ॥
५. तेसि णं माहणाणं तत्रो भारियाओ होत्था, तं जहा—नागसिरी भूयसिरी जक्खसिरी—सुकुमालपाणिपायाओ जाव' तेसि णं माहणाणं इट्ठाओ, तेहि माहणेहिं सद्धिं विउले माणुस्सए कामभोए पच्चणुभवमाणीओ विहरंति ॥

#### नागसिरीए तित्तालाउय-उवक्खडण-पदं

६. तए णं तेसि माहणाणं अण्णया कयाइ एगयओ समुवागयाणं जाव' इमेयारूवे मिहोकहा-समुल्लावे समुप्पज्जित्था—एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं इमे विउले

१. ना० १११७ ।

२. ना० ११५७ ।

३. ना० ११५१३६ ।

४. ना० ११११७ ।

५. पू०—ना० ११११७ ।

६. ना० ११३७ ।





खाइम-साइमं आहारंति, जेणेव रायाइं गिहाइं तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छिता सकम्मसंपउत्ताओ जायाओ ॥

### धम्मरुइस्स तित्तालाउय-दाण-पदं

११. तेणं कालेणं तेणं समएणं धम्मघोसा नामं थेरा जाव' बहुपरिवारा जेणेव चंपा नयरी जेणेव सुभूमिभागे उज्जाणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छिता अहापडि-रुवं' •ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा° विहरंति । परिसा निग्गया । धम्मो कहिओ । परिसा पडिग्गया ॥
१२. तए णं तेसिं धम्मघोसाणं थेराणं अंतेवासी धम्मरुइ' नामं अणगारे ओराले' •घोरे घोरगुणे घोरतवस्सी घोरवंभचेरवासी उच्छूढसरीरे संखित्त-विउल°-तेयलेस्से मासंमासेणं खममाणे विहरइ ॥
१३. तए णं से धम्मरुइं अणगारे मासखमणपारणगंसि पढमाए पोरिसीए' सज्झायं करेइ, वीयाए पोरिसीए भाणं भियाइ, एवं जहा गोयमसामी तहेव' भायणाइं ओगाहेइ, तहेव धम्मघोसं थेरं आपुच्छइ जाव' चंपाए नयरीए उच्च-नीअ-मज्झिक्कमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडमाणे जेणेव नागसिरीए माहणीए गिहे तेणेव अणुपविट्ठे ॥
१४. तए णं सा नागसिरी माहणी धम्मरुइं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता तस्स सालइ-यस्स तित्तालाउयस्स' बहुसंभारसंभियस्स नेहावगाढस्स एडणट्टयाए हट्टुट्टा उट्टाए उट्टेइ, उट्टेत्ता जेणेव भत्तघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता तं सालइयं 'तित्तालाउयं बहुसंभारसंभियं नेहावगाढ' धम्मरुइस्स अणगारस्स पडिग्गहंसि' सव्वमेव निसिरइ' ॥
१५. तए णं से धम्मरुइं अणगारे अहापज्जत्तमित्ति कट्टु नागसिरीए माहणीए गिहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता चंपाए नयरीए मज्झमज्झेणं पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव सुभूमिभागे उज्जाणे जेणेव धम्मघोसा थेरा तेणेव

१. ना० १।१४।४० ।

२. सं० पा०—अहापडिरुवं जाव विहरंति ।

३. धम्मस्ती (ग) ।

४. सं० पा०—उराले जाव तेयलेस्से ।

५. पोरिसीए (क); पोरिसीए (ख); पोरिसी-याए (ग) ।

६. पु०—भग० २।१०७ ।

७. भग० २।१०७-१०६ ।

८. तित्तकड्यस्स (क, ख, ग, घ); पूर्ववत्तिसूत्रेषु 'तित्तालाउयं' इति पाठोऽस्ति । अस्मिन् सूत्रे तस्य परिवर्तनं जातम् । अत्रापि 'अला-उयं' पदमपेक्षितमस्ति, तेनात्र पूर्ववत्तिपाठ एव स्वीकृतः ।

९. तित्तकड्यं च बहुनेहावगाढं (क, ख, ग, घ) ।

१०. पडिग्गहणे (ख, ग); पडिग्गहए (घ) ।

११. निस्सरइ (घ) ।



ववरोविज्जन्ति, तं जइ णं अहं एयं सालइयं तित्तालाउयं बहुसंभारसंभियं नेहावगाढं थंडिलंसि सव्वं निसिरामि तो' णं बहूणं पाणाणं भूयाणं जीवाणं सत्ताणं वहकरणं भविससइ । तं रोयं खलु ममेयं सालइयं \*तित्तालाउयं बहुसंभारसंभियं० नेहावगाढं सयमेव आहारित्तए, ममं चैव एएणं सरीरणं निज्जाउ त्ति कट्टु एवं संपेहेइ संपेहेत्ता मुहुपोत्तियं पडिलेहेइ, ससीसोवरियं कायं पमज्जेइ, तं सालइयं 'तित्तालाउयं बहुसंभारसंभियं नेहावगाढं' त्रिलमिव पन्नगभूएणं अप्पाणेणं सव्वं सरीरकोट्टुगंसि पक्खवइ ॥

### धम्मरुइस्स समाहिमरण-पदं

२०. तए णं तस्स धम्मरुइस्स तं सालइयं \*तित्तालाउयं बहुसंभारसंभियं० नेहावगाढं आहारियस्स समाणस्स मुहुत्तंतरेणं परिणममाणंसि सरीरणंसि वेयणा पाउवभूया—उज्जला' \*विउला कक्खडा पगाढा चंडा दुक्खा० दुरहियासा ॥

२१. तए णं से धम्मरुइ अणगारे अथामे अवले अवीरिए अपुरिसक्कारपरक्कमे' अधारणिज्जमिन्ति कट्टु आयारभंडगं एगंते ठवेइ, थंडिलं पडिलेहेइ, दवभसंथारगं संथरेइ", दवभसंथारगं दुरुहइ, पुरत्थाभिमुहे संपलियंकनिसण्णे करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलि कट्टु एवं वयासी—नमोत्थु णं अरहंताणं जाव' सिद्धिगइनामधेज्जं ठाणं संपत्ताणं । नमोत्थु णं धम्मघोसाणं थेराणं मम धम्मायरियाणं धम्मोवएसगाणं । पुंविं पि णं मए धम्मघोसाणं थेराणं अंतिए' सव्वे पाणाइवाए पच्चक्खाए जावज्जीवाए जाव" वहिद्धादाणे" [पच्चक्खाए जावज्जीवाए ? ], इयाणिं पि णं अहं तेसिं चैव भगवंताणं अंतियं सव्वं पाणाइवायं पच्चक्खामि जाव वहिद्धादाणं पच्चक्खामि जावज्जीवाए जहा खंदओ जाव" चरिमेहिं उस्सासेहिं वोसिरामि त्ति कट्टु आलोइय-पडिक्कंते समाहिपत्ते कालगए ॥

### साहूहि धम्मरुइस्स गवेसणा-पदं

२२. तए णं ते धम्मघोसा थेरा धम्मरुइं अणगारं चिरगयं जाणित्ता समणे निग्गये सद्दावेत्ति, सद्दावेत्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! 'धम्मरुइं अणगारे'"

१. ता (क, ग); तए (ख) ।

६. अंतियं (क) ।

२. सं० पा०—सालइयं जाव नेहावगाढं ।

१०. ना० १।५।५६ ।

३. तित्तकडुयं बहुनेहावगाढं (क, ख, ग, घ) ।

११. परिग्गहे (क, ख, ग, घ) अत्रापि १।५।५६ वत् पाठरचना समालोचनीयास्ति । द्रष्टव्यम्—१।५।५६ सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।

४. सं० पा०—सालइयं जाव नेहावगाढं ।

५. सं० पा०—उज्जला जाव दुरहियासा ।

६. अपुरिसक्कार० (ग) ।

१२. भग० २।६८, ६९ ।

७. संथारेइ (ग) ।

१३. धम्मरुइस्स अणगारस्स (ख) ।

८. ओ० सू० २१ ।



से णं धम्मरुई अणगारे वृहणि वाराणि सामण्णपरियागं पाउणित्ता आलोइय-  
पडिवकंते समाहिपत्ते कालमारो कालं किच्चा उद्धं जाव' सब्वट्टसिद्धे  
महाविमाणे देवत्ताए उववण्णे । तत्थ णं अजहन्नमणुत्तकोरेणं तेत्तीसं सागरो-  
वमाइं ठिई पण्णत्ता । तत्थ णं धम्मरुइस्स वि देवस्स तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई  
पण्णत्ता । से णं धम्मरुई देवे ताओ देवलोगाओ' •आउक्खएणं ठिइक्खएणं  
भवक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता ° महाविदेहे वारो सिद्धिभइइ ॥

### नागसिरीए गरिहा-पदं

२५. तं धिरत्थु णं अज्जो ! नागसिरीए माहणीए अधन्नाए अपुण्णाए' •दूभगाए  
दूभगसत्ताए दूभग°निवोलियाए, जाए णं तहारूवे साहू साहूरूवे धम्मरुई  
अणगारे मासक्खमणपारणगंसि सालइएणं' •तित्तालाउएणं बहुसंभारसंभिएणं °  
नेहावगाढेणं अकाले चेव जीवियाओ ववरोविए ॥
२६. तए णं ते समणा निगंथा धम्मघोसाणं थेराणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म'  
चंपाए सिघाडग-तिग'-•चउक्क-चच्चर-चउम्पुह-महापहपहेसु ° बहुजणस्स  
एवमाइक्खंति एवं भासंति एवं पण्णवेति एवं परूवेति—धिरत्थु णं  
देवाणुप्पिया ! नागसिरीए जाव' दूभगनिवोलियाए, जाए णं तहारूवे साहू  
साहूरूवे धम्मरुई अणगारे सालइएणं' •तित्तालाउएणं बहुसंभारसंभिएणं °  
नेहावगाढेणं अकाले चेव जीवियाओ ववरोविए ॥
२७. तए णं तेसि समणाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म बहुजणो अणमण्णस्स  
एवमाइक्खइ एवं भासइ एवं पण्णवेइ एवं परूवेइ—धिरत्थु णं नागसिरीए  
माहणीए जाव' जीवियाओ ववरोविए ॥

### नागसिरीए गिहनिच्चासण-पदं

२८. तए णं ते माहणा चंपाए नयरीए बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म  
आसुरुत्ता'° •रुट्ठा कुविया चंडिकिया ° मिसिमिसेमाणा जेणेव नागसिरी  
माहणी तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता नागसिरिं माहणि एवं वयासी—  
'हंभो नागसिरी ! अपत्थियपत्थिए ! दुरंतपंतलक्खणे ! हीणपुण्णचाउइसे !  
[सिरि-हिरि-धिइ-कित्तिपरिवज्जिए ?] धिरत्थु णं तव अधन्नाए अपुण्णाए

१. ना० १११२११ ।

२. सं० पा०—देवलोगाओ जाव महाविदेहे ।

३. सं० पा०—अपुण्णाए जाव निवोलियाए ।

४. सं० पा०—सालइएणं जाव नेहावगाढेणं ।

५. निसम्मा (क, ख, ग) ।

६. सं० पा०—तिग जाव बहुजणस्स ।

७. ना० ११६१२५ ।

८. सं० पा०—सालइएणं जाव नेहावगाढेणं ।

९. ना० ११६१२६ ।

१०. सं० पा०—आसुरुत्ता जाव मिसिमिसेमाणा ।



सा णं तओणंतरं उव्वट्टित्ता दोच्चंपि मच्छेसु उव्वज्जइ । तत्थ वि य णं सत्थवज्जभा दाहववकंतीए कालमासे कालं किच्चा दोच्चंपि अहेसत्तमाए पुढवीए उव्वकोसं तेत्तीससागरोवमट्टिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए उव्वज्जइ । सा णं तओहितो' उव्वट्टित्ता तच्चंपि मच्छेसु उव्ववण्णा । तत्थ वि य णं सत्थवज्जभा' \*दाहववकंतीए' कालमासे कालं किच्चा दोच्चंपि छट्ठाए पुढवीए उव्वकोसं' वावोससागरोवमट्टिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए उव्ववण्णा । तओणंतरं उव्वट्टिता उरगेसु, एवं जहा गोसाले' तहा नेयच्चं जाव रयणप्पभाओ पुढवीओ उव्वट्टित्ता 'सण्णीसु उव्ववण्णा । तओ उव्वट्टित्ता असण्णीसु उव्ववण्णा । तत्थ वि य णं सत्थवज्जभा दाहववकंतीए कालमासे कालं किच्चा दोच्चं पि रयणप्पभाए पुढवीए पलिओवमस्स असंखेज्जभागट्टिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए उव्ववण्णा । तओ उव्वट्टित्ता जाइं इमाइं खहयरविहाणाइं' जाव' अद्दुत्तरं च खरवायर-पुढविकाइयत्ताए, तेसु अणेगसयसहस्सखुत्तो ॥

### सुमालिया-कहाणग-पदं

३२. सा णं तओणंतरं उव्वट्टित्ता इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे चंपाए नयरीए सागर-दत्तस्स सत्थवाहस्स भद्दाए भारियाए कुच्छिसि दारियत्ताए पच्चायाया ॥
३३. तए णं सा भद्दा सत्थवाही नवहं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं' दारियं पयाया—सुकुमालकोमलियं गयतालुयसमाणं ॥
३४. तए णं तीसे णं दारियाए निव्वत्तवारसाहियाए अम्मापियरो इमं एयारुवं गोण्णं गुणनिप्फण्णं नामधेज्जं करेति—जम्हा णं अम्हं एसा दारिया सुकुमाल-कोमलिया गयतालुयसमाणा, तं होउ णं अम्हं इमीसे दारियाए नामधेज्जं सुकुमालिया-सुकुमालिया ॥

१. अत्रापि पूर्वोक्तक्रमानुसारेण भूतकालक्रिया-प्रयोगो युज्यते, किन्तु आदर्शेषु तथा नोप-लभ्यते ।

२. तओहितो जाव (क, ख, ग, घ) । एतत् पदमनावश्यकं प्रतिभाति ।

३. सं० पा०—सत्थवज्जभा जाव कालमासे ।

४. उव्वकोसेणं (क, ख, ग, घ) ।

५. भग० १५।१८६ ।

६. सण्णीसु उव्ववण्णा तओ उव्वट्टित्ता जाइं

इमाइं खहयरविहाणाइं (क, ख, ग, घ) एपं संक्षिप्तपाठोऽस्ति । भगवत्यनुसारेण अस्य स्थाने पाठः पूरितोऽस्ति । समर्पणसूत्रे प्रायः पाठस्य संक्षेपः कृतो लभ्यते । अत्रापि स एव क्रमः अनुसृतोऽस्ति, किन्तु संज्ञिभवान-न्तरं खेचरयोनी जन्म नाभूत् । स्वीकृतपाठा-वलोकनेन एतत् स्पष्टं भवति ।

७. भग० १५।१८६ ।

८. पू०—ना० १।१६।१२४ ।





- सूमालिया नामं दारिया—सुकुमालपाणिवाया जाय' स्वैण य जोव्वणेण य लावण्णेण य उविकट्टा ॥
४४. तए णं जिणदत्ते सत्थवाहे तेसिं कीडुवियाणं अंतिए, एयमट्ठं सोच्चा जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ष्हाए मित्त-नाइ-परिवुडे चंपाए नयरीए मज्झमज्झेणं जेणेव सागरदत्तस्स गिहं तेणेव उवागए ॥
४५. तए णं से सागरदत्ते सत्थवाहे जिणदत्तं सत्थवाहं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता आसणेणं उवनिमंतेइ, उवनिमंतेत्ता आसत्यं वीसत्थं सुहासणवरगयं एवं वयासी—भण देवाणुप्पिया ! किमागमण-पओयणं ?
४६. तए णं से जिणदत्ते सागरदत्तं एवं वयासी—एवं खलु अहं देवाणुप्पिया ! तव धूर्यं भदाए अत्तियं सूमालियं सागरस्स' भारियत्ताए वरेमि । जइ णं जाणह देवाणुप्पिया ! जुत्तं वा पत्तं वा सलाहणिज्जं वा सरिसो वा संजोगो, ता दिज्जउ णं सूमालिया सागरदारगस्स । तए णं देवाणुप्पिया ! भण कि दलयामो' सुकं' सूमालियाए ?
४७. तए णं से सागरदत्ते सत्थवाहे जिणदत्तं सत्थवाहं एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! सूमालिया दारिया एगा' एगजाया' इट्ठा कंता पिया मणुण्णा मणामा जाव' उंवरपुप्फं व दुल्लहा सवणयाए, किमंग पुण पासणयाए ? तं नो खलु अहं इच्छामि सूमालियाए दारियाए खणमवि विप्पओगं । तं जइ णं देवाणुप्पिया ! सागरए दारए मम घरजामाउए भवइ, तो णं अहं सागरस्स सूमालियं दलयामि ॥
४८. तए णं से जिणदत्ते सत्थवाहे सागरदत्तेणं सत्थवाहेणं एवं वुत्ते संमाणे जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सागरगं' दारगं सदावेइ, सदावेत्ता एवं वयासी—एवं खलु पुत्ता ! सागरदत्ते सत्थवाहे ममं एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! सूमालिया दारिया—इट्ठा' •कंता पिया मणुण्णा मणामा जाव' उंवरपुप्फं व दुल्लहा सवणयाए, किमंग पुण पासणयाए ? तं नो खलु अहं इच्छामि सूमालियाए दारियाए खणमवि विप्पओगं' । तं जइ णं सागरए दारए मम घरजामाउए भवइ, 'तो णं' दलयामि ॥

१. ना० १।८।६० ।

२. सागरदत्तस्स दारगस्स (ख, ग) ।

३. दलयामो (क) ।

४. सुकं (ख); सुक्कं (घ) ।

५. मम एगा घ्या (क)

६. एगा जाया (ख, घ) ।

७. ना० १।१।१०६ ।

८. सागरं (ग, घ) ।

९. सं० पा०—इट्ठा तं चैव ।

१०. ना० १।१।१०६ ।

११. जाव (ख, घ) ।



## सागररस्स पुणोगमण-व्वुदास-पदं

६८. तए णं जिणदत्ते सागरदत्तस्स सत्थवाहस्स एयमट्ठं सोच्चा जेणेव सागरए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सागरयं दारयं एवं वयासी—दुट्ठु णं पुत्ता ! तुमे कयं सागरदत्तस्स गिहाओ इहं हव्वमागच्छतेणं । तं गच्छह णं तुमं पुत्ता ! 'एवमवि' गए' सागरदत्तस्स गिहे ॥
६९. तए णं से सागरए दारए जिणदत्तं सत्थवाहं एवं वयासी—अवियाइं अहं ताओ ! गिरिपडणं वा तरुपडणं वा मरुप्पवायं वा जलप्पवेसं वा जलणप्पवेसं वा विसभवखणं वा सत्थोवाडणं वा वेहाणसं वा गिद्धपट्ठं वा पव्वज्जं वा विदेसगमणं वा अट्ठभुवगच्छेज्जा, नो खलु अहं सागरदत्तस्स गिहं गच्छेज्जा ॥

## सूमालियाए दमणेण सद्धिं पुणव्विवाह-पदं

७०. तए णं से सागरदत्ते सत्थवाहे कुडुंतरियाए सागररस्स एयमट्ठं निसामेइ, निसामेत्ता लज्जिए विलीए विट्ठे जिणदत्तस्स सत्थवाहस्स गिहाओ पडिनिक्खमइ, पडि-निक्खमित्ता जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुकुमालियं दारियं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता अंके निवेसेइ, निवेसेत्ता एवं वयासी—किण्णं तव पुत्ता ! सागरएणं दारएणं ? अहं णं तुमं तस्स दाहामि, जस्स णं तुमं इट्ठा' कंता पिया मणुण्णा' मणामा भविस्ससि त्ति सूमालियं दारियं ताहिं इट्ठाहिं कंताहिं पियाहिं मणुण्णाहिं मणामाहिं वग्गूहिं' समासासेइ, समासासेत्ता पडिविसज्जेइ ॥
७१. तए णं से सागरदत्ते सत्थवाहे अण्णया उट्ठिं आगासतलगंसि सुहनिसण्णे राय-मगं ओलोएमाणे-ओलोएमाणे चिट्ठुइ ॥
७२. तए णं से सागरदत्ते एगं महं दमगपुरिसं पासइ—दंडिखंड-निवसणं' खंडमल्लग-खंडघडग-हत्थगयं 'फुट्ट-हडाहड-सीसं मच्छियासहस्सेहिं' अग्निज्जमाणमगं ॥
७३. तए णं से सागरदत्ते सत्थवाहे कोडुंविपुल्लिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—तुभे णं देवाणुप्पिया ! एयं दमगपुरिसं विपुलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं

१. हव्वमागए (ख, घ) ।

२. एयमवि (क) ।

३. इत्थमपिगते—अस्मिन् कायं (१।१६।२६६ सूत्रस्य वृत्तिः) ।

४. मरुप्पवेसं (क)

५. विहाणसं (ख) ।

६. गेद्धपट्ठं (ख, ग) ।

७. अणुगच्छेज्जा (क) ।

८. दारएणं मुक्का (घ) ।

९. सं० पा०—इट्ठा जाव मणामा ।

१०. वग्गूहिं वग्गूहिं (घ) ।

११. वसणं (ख, ग) ।

१२. मच्छियासहस्सेहिं जाव (क, ख, ग, घ) ।

आदर्शेषु पाठान्तररूपेण निर्दिशतः पाठः उपलभ्यते, किन्तु अस्मिन् 'जाव' पदस्य विपर्ययो जातः । 'हत्थगयं जाव' इति पाठ-रचना युक्तास्ति । प्रस्तुताध्ययनस्य २६ सूत्रावलोकनेन एतत् स्पष्टं जायते ।



७६. तए णं से सागरदत्ते सत्थवाह्णे सूमालियं दारियं पद्दामं जाव' सन्नालंकारविभू-  
सियं करेत्ता तं दमगपुरिसं एवं दयासी—एस णं देवानुणिया ! मम धूया इट्ठा  
कांता पिया मणुण्णा मणामा । एयं णं अहं तव भारियत्ताए, दल्लामि, भद्वियाए,  
भद्वो भवेज्जासि' ॥

### दमगस्स पलायण-पदं

८०. तए णं से दमगपुरिसे सागरदत्तस्स एयमट्ठं पट्टिमुणेठ, पट्टिमुणेत्ता सूमालियाए  
दारियाए सद्धिं वासघरं अणुपविसइ, सूमालियाए दारियाए सद्धिं तल्लिमसि  
निवज्जइ ॥
८१. तए णं से दमगपुरिसे सूमालियाए इमेयारूवं अंगफासं पडिसंवेदेइ', \*मे जहा-  
नामए—असिपत्ते इ वा जाव' एत्तो अमणामतरागं चैव अंगफासं पच्चणुवभव-  
माणे विहरइ ॥
८२. तए णं से दमगपुरिसे सूमालियाए दारियाए अंगफासं असहमाणे अवसवसे  
मुहुत्तमेत्तं संचिट्ठइ ॥
८३. तए णं से दमगपुरिसे सूमालियं दारियं सुहपसुत्तं जाणित्ता सूमालियाए दारि-  
याए पासाओ उट्ठेइ, उट्ठेत्ता जेणेव सए सयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ, उवा-  
गच्छित्ता सयणिज्जसि निवज्जइ ॥
८४. तए णं सा सूमालिया दारिया तओ मुहुत्तंतरस्स पडिवुद्धा समाणी पड्विया  
पइमणुरत्ता पइं पासे अपस्समाणी तलिमाओ उट्ठेइ, उट्ठेत्ता जेणेव से सयणिज्जे  
तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता दमगपुरिसस्स पासे णुवज्जइ ॥
८५. तए णं से दमगपुरिसे सूमालियाए दारियाए दोच्चंपि इमं एयारूवं अंगफासं  
पडिसंवेदेइ जाव' \*अकामए अवसवसे मुहुत्तमेत्तं संचिट्ठइ ॥
८६. तए णं से दमगपुरिसे सूमालियं दारियं सुहपसुत्तं जाणित्ता° सयणिज्जाओ  
'अवभुट्ठेइ, अवभुट्ठेत्ता' वासघराओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता खंडमल्लगं खंड-  
घडगं च गहाय मारामुक्के विव काए जामेव दिसि' पाउठभूए तामेव दिसि  
पडिगए ॥

### सूमालियाए पुणोचित्ता-पदं

८७. तए णं सा सूमालिया' \*दारिया तओ मुहुत्तंतरस्स पडिवुद्धा पट्टिच्चया पइमणु-

१. ना० १।१।४७ ।

२. दल्लामि (क) ।

३. भवेज्जाहि (ग) ।

४. सं० पा०—सेसं जहा सागरस्स जाव सय-  
णिज्जाओ ।

५. ना० १।१६।५२ ।

६. ना० १।१६।५२, ५३ ।

७. पवभुट्ठेइ २ (क, ग) ।

८. दिसं (क, ख) ।

९. सं० पा०—सूमालिया जाव गए ।



तुमं णं पुत्ता ! मम महाणरंसि विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं \*उवकखडा-  
वेहि, उवकखडावेत्ता बहूणं समण-माहण-अतिहि-कियण-वणीमगाणं देयमाणी  
य दवावेमाणी य० परिभाएमाणी विहराहि ॥

६३. तए णं सा सूमालिया दारिया एयमट्टं पडिगुणेंइ, पडिगुणेंत्ता [कल्लाकल्लि ?]  
महाणरंसि विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं \*उवकखडावेइ, उवकखडावेत्ता  
बहूणं समण-माहण-अतिहि-कियण-वणीमगाणं देयमाणी य दवावेमाणी य०  
परिभाएमाणी' विहरइ ॥

अज्जा-संघाडगस्स भिक्खायरियागमण-पदं

६४. तेणं कालेणं तेणं समएणं गोवालियाओ अज्जाओ' बहुस्सुयाओ \*बहुपरिवाराओ  
पुव्वाणुपुव्वि चरमाणीओ जेणेव चंपा नयरी तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छत्ता  
अहापडिखुवं ओगहं ओगिण्हंति, ओगिण्हत्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावे-  
माणीओ विहरंति ।

६५. तए णं तासि गोवालियाणं अज्जाणं एगे संघाडए' जेणेव गोवालियाओ अज्जाओ  
तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छत्ता गोवालियाओ अज्जाओ वंदइ नमंसइ, वंदित्ता  
नमंसित्ता एवं वयासी—इच्छामो णं तुवभेहि अब्भणुण्णाए चंपाए नयरीए  
उच्च-नीय-मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडित्तए ।  
अहासुइं देवाणुप्पिया ! मा पडिवंधं करेहि ॥

६६. तए णं ताओ अज्जाओ गोवालियाहि अज्जाहि अब्भणुण्णाया समाणीओ'  
भिक्खायरियं अडमाणीओ सागरदत्तस्स गिहं अणुप्पविट्ठाओ ।

सूमालियाए सागरपसायोवाय-पुच्छा-पदं

६७. तए णं सूमालिया ताओ अज्जाओ एज्जमाणीओ पासइ, पासित्ता हट्टुट्ठा  
आसणाओ अब्भुट्ठेइ, वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता विपुलेणं असण-पाण-  
खाइम-साइमेणं पडिलाभेइ०, पडिलाभेत्ता एवं वयासी—एवं खलु अज्जाओ !  
अहं सागरस्स अणिट्ठा \*अकंता अप्पिया अमणुण्णा० अमणामा ! नेच्छइ णं  
सागरए दारए मम नाम \*गोयमवि सबणयाए, कि पुण दंसणं वा० परिभोगं  
वा ?

१. सं० पा०—जहा पीट्टिला जाव परिभाए-  
माणी ।

२. सं० पा०—साइमं जाव परिभाएमाणी ।

३. दलयमाणी (क, ग); दलमाणी (ख, घ) ।

४. पू०—ना० ११४।४० ।

५. सं० पा०—एवं जहेव तेयलिणाए सुववयाओ

तहेव समोसंढाओ तहेव संघाडओ जाव  
अणुपविट्ठे तहेव जाव सूमालिया ।

६. पू०—ना० ११४।४१ ।

७. पू०—ना० ११४।४२ ।

८. सं० पा०—अणिट्ठा जाव अमणामा ।

९. सं० पा०—नामं वा जाव परिभोगं ।





१०३. तए णं सा सूमालिया समणोवासिया जाया जाव' रामणे निग्गंथे फासुएणं एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्य-पडिग्गह-कंवल-पायपुंछणेणं ओसहभेसज्जेणं पाडिहारिएण य पीढ-फलग-सेज्जा-संथारएणं पडिलाभेमाणी विहरइ ॥

### सूमालियाए पव्वज्जा-पदं

१०४. तए णं तोसे सूमालियाए अण्णया कयाइ पुव्वरतावरत्तकालसमयंसि कुडुंवाजारियं जागरमाणीए अयमेयारूवे अज्झत्तिये चित्तिए पत्तिये मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं सागरस्स पुर्व्व इट्ठा कंता पिया मणुण्णा मणामा आसि, इयारिणं अणिट्ठा अकंता अप्पिया अमणुण्णा अमणामा । नेच्छइ णं सागरए मम नामगोयमवि सवणयाए, किं पुणं दंसणं वा परिभोगं वा ? जस्स-जस्स वि य णं देज्जामि तस्स-तस्स वि य णं अणिट्ठा अकंता अप्पिया अमणुण्णा अमणामा भवामि । तं सेयं खलु ममं गोवालियाणं अज्जाणं अंतिए पव्वइत्तए—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव' उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते जेणेव सागरदत्ते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अज्जलि कट्ठुं एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! मए गोवालियाणं अज्जाणं अंतिए धम्मे निसंते, से वि य मे धम्मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए । तं इच्छामि णं तुव्भेहि अठ्ठभणुण्णाया पव्वइत्तए जाव' गोवालियाणं अज्जाणं अंतिए पव्वइया ॥

१०५. तए णं सा सूमालिया अज्जा जाया—इरियासमिया जाव' गुत्तवंभयारिणी वूहं हि चउत्थ-छट्ठुम'-दसम दुवालसेहि मासद्धमासखमणेहि अप्पाणं भावेमाणीं विहरइ ॥

### सूमालियाए आतावणा-पदं

१०६. तए णं सा सूमालिया अज्जा अण्णया कयाइ जेणेव गोवालियाओ अज्जाओ तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—इच्छामि णं अज्जाओ ! तुव्भेहि अठ्ठभणुण्णाया समानी चंपाए नयरीए वाहिं सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स अदूरसामंते छट्ठुंछट्ठेणं अणिकिखत्तेणं तवोकम्मेणं सूराभिमुही आयावेमाणी विहरित्तए ॥

१०७. तए णं ताओ गोवालियाओ अज्जाओ सूमालियं अज्जं एवं वयासी—अम्हे णं

१. ना० १।५।४७ ।

२. ना० १।१।२४ ।

३. ना० १।१४।५३, ५४ ।

४. ना० १।१४।४० ।

५. सं० पा०—छट्ठुम जाव विहरइ ।



पुणभवमाणी० विहरइ । तं जइ णं केइ इमस्स गुत्तरियस्स तव-नियम-  
वंभचेरवासस्स कल्लाणे फलवित्तिविसेसे अत्थि, तो णं अहमवि आगमिस्सेणं  
भवग्गहणेणं इमेयाख्खाइं उरालाइं' •माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी०  
विहरिज्जामि त्ति कट्टु नियानं करेइ, करेत्ता आयावणभूमोओ' पच्चोरुभइ ॥

### सूमालियाए वाउसियत्त-पदं

११४. तए णं सा सूमालिया अज्जा सरीरवाउसिया' जाया यावि होत्था—अभिकखणं-  
अभिकखणं हत्थे धोवेइ, पाए धोवेइ, सीसं धोवेइ, मुहं धोवेइ, थणंतराइं धोवेइ,  
कक्खंतराइं धोवेइ, गुज्झंतराइं धोवेइ, जत्थ णं ठाणं वा सेज्जं वा निसीहियं वा  
चेएइ, तत्थ वि य णं पुव्वामेव उदएणं अम्भुक्खेत्ता तओ पच्छा ठाणं वा सेज्जं  
वा निसीहियं वा चेएइ ॥
११५. तए णं ताओ गोवालियाओ अज्जाओ सूमालियं अज्जं एवं वयासी—एवं खलु  
अज्जे ! अम्हे समणीओ निग्गंथीओ इरियासमियाओ जाव' वंभचेरधारिणीओ ।  
नो खलु कप्पइ अम्हं सरीरवाउसियाए' होत्तए । तुमं च णं अज्जे !  
सरीरवाउसिया' अभिकखणं-अभिकखणं हत्थे धोवेसि', •पाए धोवेसि, सीसं  
धोवेसि, मुहं धोवेसि, थणंतराइं धोवेसि, कक्खंतराइं धोवेसि, गुज्झंतराइं धोवेसि,  
जत्थ णं ठाणं वा सेज्जं वा निसीहियं वा चेएसि, तत्थ वि य णं पुव्वामेव उदएणं  
अम्भुक्खेत्ता तओ पच्छा ठाणं वा सेज्जं वा निसीहियं वा० चेएसि । तं तुमं णं  
देवाणुप्पिए ! एयस्स ठाणस्स आलोएहि' •निदाहि गरिहाहि पडिक्कमाहि  
विउट्टाहि विसोहेहि अकरणयाए अम्भुट्टेहि, अहारिहं तवोकम्मं पायच्छित्तं०  
पडिवज्जाहि ॥
११६. तए णं सा सूमालिया गोवालियाणं अज्जाणं एयमट्टं नो आढाइ नो परियाणाइ,  
'अणाढायमाणी अपरियाणमाणी' विहरइ ॥
११७. तए णं ताओ अज्जाओ सूमालियं अज्जं अभिकखणं-अभिकखणं हीलेंति' •निदेंति  
खिसेंति गरिहंति० परिभवन्ति, अभिकखणं-अभिकखणं एयमट्टं निवारेंति ॥

१. सं० पा०—उरालाइं जाव विहरिज्जामि ।

२. ० भूमोए (ख, ग, घ) ।

३. ० वाउसा (क); ० पाउसा (ख, ग);  
पाउसिया (घ) ।

४. ना० ११४।४० ।

५. ० पाउसिया (ख, ग, घ) ।

६. पाउसिया (ख, घ) ।

७. सं० पा०—धोवेसि जाव चेएसि ।

८. सं० पा०—आलोएहि जाव पडिवज्जाहि ।

९. अणाढाइमाणा अपरियाणमाणा (क, घ);  
अणाढायमाणा अपरियाणमाणा (ख);  
अपरियाणमाणा (ग) ।

१०. सं० पा०—हीलेंति जाव परिभवन्ति ।



१२१. तत्थ णं दुवए नामं राया होत्था—वण्णग्रो' ॥
१२२. तस्स णं चुलणी देवी । धट्टज्जुणे कुमारे जुवराया ॥
१२३. तए णं सा सूमालिया देवी ताम्रो देवलोगग्रो आउवखएणं' •टिइक्खएणं भवक्खएणं अणंतरं चयं° चइत्ता इहेव जंजुट्टीवे दीवे भारहे वासे पंचालेसु जणवएसु कंपिल्लपुरे नयरे दुवयस्स' रण्णो चुलणीए देवीए कुच्चिसि दारियत्ताए पच्चायाया' ॥
१२४. तए णं सा चुलणी देवी नवण्हं मासाणं' •वहुपडिपुण्णाणं अट्टट्टमाण य राइं-दियाणं वीइक्कंताणं सुकुमाल-पाणिपायं जाव'° दारियं पयाया ॥
१२५. तए णं तीसे दारियाए निव्वत्तवारसाहियाए इमं एयाख्वं नामं—जम्हा णं एसा दारिया दुपयस्स रण्णो धूया चुलणीए देवीए अत्तया, तं होउ णं अम्हं इमीसे दारियाए नामधेज्जे' दोवई ॥
१२६. तए णं तीसे अम्मापियरो इमं एयाख्वं गोण्णं गुणनिप्फन्नं नामधेज्जं करंति—दोवई-दोवई ॥
१२७. तए णं सा दोवई दारिया पंचधाईपरिग्गहिया जाव' गिरिकंदरमल्लीणा इव चंपगलया निवायं'-निव्वाघायंसि सुहंसुहेणं परिवट्टइ ॥
१२८. तए णं सा दोवई रायवरकण्णा उम्मुक्कवालभावा' •विण्णय-परिणयमेत्ता जोव्वणगमणुपत्ता ख्वेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य उक्किट्ठा° उक्किट्टसरीरा जाया यावि होत्था ॥
१२९. तए णं तं दोवइं रायवरकण्णं अण्णया कयाइ अंतेउरियाओ ण्हायं जाव'' सव्वालंकारविभूसियं करंति, करेत्ता दुवयस्स रण्णो पायवंदियं पेसेंति ॥
१३०. तए णं सा दोवई रायवरकण्णा जेणेव दुवए राया तेणेव उवांगच्छइ, उवाग-च्छित्ता दुवयस्स रण्णो पायग्गहणं करेइ ॥

### दोवईए सयंवर-संकप्प-पदं

१३१. तए णं से दुवए राया दोवइं दारियं अंके निवेसेइ, निवेसेत्ता दोवईए रायवर-कण्णाए ख्वे य जोव्वणे य लावण्णे य जायविम्हए दोवइं रायवरकण्णं एवं वयासी—जस्स णं अहं तुमं पुत्ता ! रायस्स वा जुवरायस्स वा भारियत्ताए

१. ओ० सू० १४ ।

२. सं० पा०—आउक्खएणं जाव चइत्ता ।

३. दुपयस्स (ख, ग) ।

४. पयाया (क) ।

५. सं० पा०—मासाणं जाव दारियं ।

६. ना० १।१।२० ।

७. नामधेज्जं (ख, घ) ।

८. ना० १।१६।३६ ।

९. निव्वाय (क) ।

१०. सं० पा०—उम्मुक्कवालभावा जाव उक्किट्टसरीरा ।

११. ना० १।१।४७ ।



दुरुहइ, दुरुहिता वहुहिं पुरिसोहिं—सण्णद्ध'-•वद्ध-वम्मिय-कवएहिं उप्पीलिय-  
सरासण-पट्टिएहिं पिणद्ध-गेविज्जेहिं आविद्ध-विमल-वरान्निध-पट्टेहिं ° गहियाउह-  
पहरणेहिं—सद्धिं संपरिवुडे कपिल्लपुरं नयरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, पंचाल-  
जणवयस्स मज्झंमज्झेणं जेणेव देसप्पते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता  
सुरट्टाजणवयस्स' मज्झंमज्झेणं जेणेव वारवई नयरी तेणेव उवागच्छइ, उवा-  
गच्छिता वारवई नयरी मज्झंमज्झेणं अणुप्पविसइ, अणुप्पविसत्ता जेणेव  
कण्हस्स वासुदेवस्स वाहिरिया उवट्टाणराला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता  
चाउग्घंटं आसरहं ठावेइ, ठावेत्ता रहाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहिता मणुस्स-  
वग्गुरापरिक्वत्ते पायचारविहारेणं जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छइ,  
उवागच्छिता कण्हं वासुदेवं, समुद्विजयपामोक्खे य दरा दसारे जाव' 'छप्पन्नं  
वलवगसाहस्सीओ' करयल'•परिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलि  
कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेइ, वद्धावेत्ता एवं वयइ—एवं खलु देवाणुप्पिया !  
कपिल्लपुरे नयरे दुवयस्स रण्णो घयाए, चुलणीए अत्तयाए, घट्टज्जुणकुमारस्स  
भइणीए, दोवईए रायवरकण्णाए सयंवरे अत्थि । तं णं तुव्भे दुवयं रायं  
अणुगिण्हेमाणा अकालपरिहीणं चैव कपिल्लपुरे नयरे ° समोसरह ॥

१३५. तए णं से कण्हे वासुदेवे तस्स दूयस्स अंतिए एयमट्टं सोच्चा निसम्म हट्टुट्टु'  
•चित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाण °-हियए  
तं दूयं सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता पडिविसज्जेइ ॥

कण्हस्स पत्थाण-पदं

१३६. तए णं से कण्हे वासुदेवे कोडुंवियपुरिसे सदावेइ, सदावेत्ता एवं वयासी—  
गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया ! सभाए सुहम्माए सामुदाइयं भेरि तालेहि ॥  
१३७. तए णं से कोडुंवियपुरिसे करयल'•परिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए  
अंजलि ° कट्टु कण्हस्स वासुदेवस्स एयमट्टं पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता जेणेव  
सभाए सुहम्माए सामुदाइया' भेरी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता सामुदाइयं  
भेरिं महया-महया सहेणं तालेइ ॥  
१३८. तए णं ताए सामुदाइयाए भेरीए तालियाए समाणीए समुद्विजयपामोक्खा दस

१. सं० पा०—सण्णद्ध जाव गहिया ° ।

२. सुरट्टु ° (क, घ) ।

३. ना० ११६।१३२ ।

४. १३२ सूत्रानुसारेणाऽत्र 'सत्थवाहप्पभिइओ'  
इति पाठः संगच्छते ।

५. सं० पा०—करयल तं चैव जाव समोसरह ।

६. सं० पा०—हट्टुट्टु जाव हियए ।

७. सं० पा०—करयल ° ।

८. सामुदाणिया (ख, घ) ।





जुहिद्विलं' भीमसेणं अज्जुणं नउलं सहदेवं, दुज्जोहणं भाइसयं-समग्गं, गंगेयं विदुरं दोणं जयदहं सउर्णि कीवं आसत्थामं करयलं\*परिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलि कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेहि, वद्धावेत्ताएवं वयाहि—एवं खलु देवाणुप्पिया ! कंपिल्लपुरे नयरे दुवयस्स रण्णो धूयाए, चुलणीए अत्तयाए धट्टज्जुणकुमारस्स भइणीए, दोवईए रायवरकण्णाए सयंवरं भविस्सइ । तं णं तुव्भे दुवयं रायं अणुगिण्हेमाणा अकालपरिहीणं चैव कंपिल्लपुरे नयरे ° समोसरह ॥

१४३. तए णं से दूए\* जेणेव हत्थिणाउरे नयरे जेणेव पंडुराया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता पंडुरायं सपुत्तयं—जुहिद्विलं भीमसेणं अज्जुणं नउलं सहदेवं, दुज्जोहणं भाइसय-समग्गं, गंगेयं विदुरं दोणं जयदहं सउर्णि कीवं आसत्थामं\* एवं वयइ—एवं खलु देवाणुपिया ! कंपिल्लपुरे नयरे दुवयस्स रण्णो धूयाए, चुलणीए अत्तयाए, धट्टज्जुणकुमारस्स भइणीए दोवईए रायवरकण्णाए सयंवरं अत्थि । तं णं तुव्भे दुवयं रायं अणुगिण्हेमाणा अकालपरिहीणं चैव कंपिल्लपुरे नयरे समोसरह ॥

१४४. तए णं से पंडुराया जहा वासुदेवे नवरं—भेरी नत्थि जाव\* ° जेणेव कंपिल्लपुरे नयरे तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥

द्वयपेसण-पदं

१४५. एएणेव कमेणं—

तच्चं द्वयं\* एवं वयासी—गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया ! चंपं नयरि । तत्थ णं

१. जुहिद्विलं (घ) ।

२. भायसय ° (ख, घ) ।

३. सं० पा०—करयल जाव कट्टु तहेव जाव समोसरह ।

४. सं० पा०—तए णं से दूए एवं वयासी जहा वासुदेवे नवरं भेरी नत्थि जाव जेणेव;

पू०—ना० ११६।१३३, १३४ ।

५. पू०—ना० ११६।१३४ ।

६. ना० ११६। १३५-१४१ ।

७. सं० पा०—तच्चं द्वयं चंपं नयरि । तत्थ णं तुमं कण्णं अंगरायं सत्तलं नंदिरायं करयल तहेव जाव समोसरह । चउत्थं द्वयं सोत्तिमइं नयरि । तत्थ णं तुमं सिसुपालं दमघोससुयं पंचभाइसयसंपरिवुडं करयल तहेव जाव

समोसरह । पंचम द्वयं हत्थिसीसं नयरि । तत्थ णं तुमं दमदंतं रायं करयल जाव समोसरह । छट्ठं द्वयं महुरं नयरि । तत्थ णं तुमं धरं रायं करयल जाव समोसरह । सत्तमं द्वयं रायगिहं नयरं । तत्थ णं तुमं सहदेवं जरासंधसुयं करयल जाव समोसरह । अट्ठमं द्वयं कोडिणं नयरं । तत्थ णं तुमं रुप्पि भेसगसुयं करयल तहेव जाव समोसरह । नवमं द्वयं विराटं नयरि । तत्थ णं तुमं कीयगं भाउसयसमग्गं करयल जाव समोसरह । दसमं द्वयं भवसेसेसु गामागर-नगरेसु अणेगाइं रायसहस्साइं जाव समोसरह । तए णं से दूए तहेव निग्गच्छइ जेणेव गामागर तहेव जाव समोसरह ।



कवया' हृत्थिखंधवरगया' ह्य-गय-रह'-●पवरजोहकलियाए चाउरंगिणीए सेणाए सद्धि संपरिवुडा महयाभड-चडगर-रह-पहकर-विदपरिविखत्ता° सएहि-सएहि नगरेहितो अभिनिग्गच्छति, अभिनिग्गच्छत्ता जेणेव पंचाले जणवए तेणेव पहारेत्थ गमणाए ।

### दुधयस्स आतित्य-पद

१४७. तए णं से दुवए राया कोडुंविपुसिसे सद्दावेड, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया ! कंपिल्लपुरे नयरं व्हिया गंगाए महानईए अट्टरसामंते एगं महं सयंवरमंडवं करेह—अणेगखंभ-रायसन्निविट्टं लीलट्टिय-सालिभंजियाणं जाव' पासाईयं दरिसणिज्जं अभिस्सवं पडिस्सवं—करेत्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह । ते वि तहेव पच्चप्पिणंति ॥
१४८. तए णं से दुवए राया [दोच्चंपि ?] कोडुंविपुसिसे सद्दावेड, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! वासुदेवपामोकखाणं बहूणं रायसहस्साणं आवासे करेह, करेत्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह । ते वि तहेव पच्चप्पिणंति ॥
१४९. तए णं से दुवए राया वासुदेवपामोकखाणं बहूणं' रायसहस्साणं आगमणं जाणेत्ता पत्तेयं-पत्तेयं हृत्थिखंध'●वरगए सकोरेंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्ज-माणेणं सेयवरचामराहि वीइज्जमाणे ह्य-गय-रह-पवरजोहकलियाए चाउरंगिणीए सेणाए सद्धि संपरिवुडे महयाभड-चडगर-रह-पहकर-विदपरि-क्खित्ते° अग्घं च पज्जं च गहाय सव्विड्डीए कंपिल्लपुराओ निग्गच्छइ, निग्गच्छत्ता जेणेव ते वासुदेवपामोकखा बहवे रायसहस्सा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छत्ता ताइं वासुदेवपामोकखाइं अग्घेण य पज्जेण य सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता तेसि वासुदेवपामोकखाणं पत्तेयं-पत्तेयं आवासे वियरइ ॥
१५०. तए णं ते वासुदेवपामोकखा जेणेव सया-सया आवासा तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छत्ता हृत्थिखंधेहितो पच्चोरुहंति, पच्चोरुहत्ता पत्तेयं-पत्तेयं खंधावार-निवेसं करंति, करेत्ता सएसु-सएसु आवासेसु अणुप्पविसंति, अणुप्पविसित्ता सएसु-सएसु आवासेसु आसणेसु य सयणेसु य सन्निसण्णा य संतुयट्ठा य बहूहि गंधवेहि य नाडएहि य उवगिज्जमाणा य उवनच्चिज्जमाणा य विहरंति ॥
१५१. तए णं से दुवए राया कंपिल्लपुरं नयरं अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता विपुलं

वासुदेवस्य प्रस्थानविषयकं सूत्रं पूर्वं साक्षात्  
उल्लिखितमस्ति, तथैव पाण्डुराजस्यापि,  
तेनासी पाठः पाठान्तररूपेण स्वीकृतः ।

१. पू०—ना० ११६।१३४ ।

२. पू०—ना० १।८।५७; ११६।१५३ ।

३. सं० पा०—रह महया ।

४. ना० १।१ ८६ ।

५. × (ग, घ) ।

६. सं० पा०—हृत्थिखंध जाव परिवुडे ।

७. आवासेसु य (क, ख, ग, घ) ।



मल्लिय-चंपय जाव' सत्तच्छयाईहि' गंधद्वणि मुयंतं परमगुह्फासं दरिसणिज्जं—  
गेण्हइ ॥

१६३. तए णं सा किह्वाविया सुख्वा' •साभावियघरां वीदहजणस्स उस्सुयकरं विचित्त-  
मणि-रण-वद्वच्छरुहं° वामहत्थेणं चित्तलगं दप्पणं गहेऊण सललियं दप्पण-  
संकंतविच'—संदंसिए' य से दाहिणेणं हत्थेणं दरिसाण' पवररायसीहे । फुडविसय-  
विसुद्ध-रिभिय-गंभीर-महुरभणिया सा तेसि सव्वेसि' पत्थिवाणं अम्मापिउ-  
वंस-सत्त-सामत्थ-गोत्त-विचकंति-कंति'-ब्रह्मविहआगम-माहप्प-रुव - कुलसीलजा-  
णिया कित्तणं करेइ । पढमं ताव वणिहपुंगवाणं दसावरं-वीरपुरिस-तेलोवक-  
वलवगाणं', सत्तु''सयसहस्स-माणावमद्दगाणं'' 'भवसिद्धिय-वरपुंडरीयाणं''  
चित्तलगाणं वल-वीरिय-रुव-जोवण्ण-गुण-लावण्णकित्तिया कित्तणं करेइ ।  
तओ पुणो उगसेणमाईणं'' जायवाणं भणइ—सोहगरुवकलिए वरेहि  
वरपुरिसगंधहत्थीणं जो हु ते होइ हियय-दइओ ॥

दोवईए पंडव-वरण-पदं

१६४. तए णं सा दोवई रायावरकण्णगा वहूणं रायवरसहस्साणं मज्झमज्झेणं  
समइच्छमाणी-समइच्छमाणी'' पुव्वकयनियाणेणं चोइज्जमाणी-चोइज्जमाणी  
जेणेव पंच पंडवा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ते पंच पंडवे तेणं दसद्व-  
वण्णेणं कुसुमदामेणं आवेडियपरिवेडिए करेइ, करेत्ता एवं वयासी—एए णं मए  
पंच पंडवा वरिया ॥
१६५. तए णं ताई वासुदेवपामोक्खाइं वहूणि रायसहस्साणि महया-महया सद्देणं  
उगघोसेमाणाइं-उगघोसेमाणाइं एवं वयति—सुवरियं खलु भो ! दोवईए  
रायवरकण्णाए त्ति कट्टु सयंवरमंडवाओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता  
जेणेव सया-सया आवासा तेणेव उवागच्छंति ॥
१६६. तए णं घट्टज्जुणे कुमारो पंच पंडवे दोवइं च'' रायवरकण्णं चाउगघंटं आसरहं

१. ना० १।५।३० ।

२. १।५।३० सूत्रे 'सत्तच्छयाईहि' इति पाठो  
नोपलभ्यते तथा येषां पदानामपि क्रमभेदो  
वर्तते ।

३. सं० पा०—सुरूवा जाव वामपत्थेणं ।

४. °विचं (ख, ग) ।

५. दंसिए (घ) ।

६. दरिसीएइ (ख); दरसिए (घ) ।

७. सव्व (क, ख, ग) ।

८. कित्ति (वृपा) ।

९. दसदसार (ग) । पूर्णपाठः अस्याध्ययनस्य  
१३२ सूत्रे द्रष्टव्यः ।

१०. तिल्लोक० (क) ।

११. सक्क (घ) ।

१२. माणोवमद्दगाणं (ख, घ) ।

१३. भवसिद्धिपवर० (क्व) ।

१४. °माइयाणं (क) ।

१५. समत्तिच्छमाणी (ख, ग, घ) ।

१६. × (ग) ।



## पंडुरायस्स आत्तिय-पदं

१७२. तए णं से पंडू राया कोडुंविद्यपुरिसे सदावेइ, सदावेत्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुव्भे देवाणुप्पिया । हत्थिणाउरे नयरं पंचण्हं पंडवाणं पंच पासायवडिसए कारेह—अवभुगयमूसिय जाव' पडिरुवे ॥
१७३. तए णं ते कोडुंविद्यपुरिसा पडिसुणंति जाव कारवेति ॥
१७४. तए णं से पंडू राया पंचहिं पंडवेहिं दोवईए देवीए सद्धि ह्य-गय'-रह-पवर-जोहकलियाए चाउरंगिणीए सेणाए सद्धि संपरिवुडे महयाभडचडगर-रह-पहकर-विदपरिक्खत्ते ° कंपिल्लपुराओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमिक्खत्ता जेणेव हत्थिणाउरे तेणेव उवागए ॥
१७५. तए णं से पंडू राया तेसि वासुदेवपामोक्खाणं आगमणं जाणित्ता कोडुंविद्यपुरिसे सदावेइ, सदावेत्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुव्भे देवाणुप्पिया ! हत्थिणाउरस्स नयरस्स वहिया वासुदेवपामोक्खाणं वहूणं रायसहस्साणं आवासे—अणेगखंभ-सयसण्णिविट्ठे' कारेह, कारेत्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह । तेवि तहेव पच्चप्पिणंति ॥
१७६. तए णं ते वासुदेवपामोक्खा वहवे रायसहस्सा जेणेव हत्थिणाउरे तेणेव उवागए ॥
१७७. तए णं से पंडू राया ते वासुदेवपामोक्खे' •वहवे रायसहस्से ° उवागए' जाणित्ता हट्टुट्ठे ण्हाए कयवलिकम्मे जहा दुवए जाव' जहारिहं आवासे दलयइ ॥
१७८. तए णं ते वासुदेवपामोक्खा वहवे रायसहस्सा जेणेव सया-सया आवासा तेणेव उवागच्छंति तहेव जाव' विहरंति ॥
१७९. तए णं से पंडू राया हत्थिणाउरं नयरं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता कोडुंविद्य-पुरिसे सदावेइ, सदावेत्ता एवं वयासी—तुव्भे णं देवाणुप्पिया ! विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं आवासेसु उवणेह । तेवि तहेव उवणंति ॥
१८०. तए णं ते वासुदेवपामोक्खा वहवे रायसहस्सा ण्हाया कयवलिकम्मा कय-कोउय-मंगल-पायच्छित्ता तं विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं आसाएमाणा तहेव जाव' विहरंति ॥

## कल्लाणकार-पदं

१८१. तए णं से पंडू राया ते पंच पंडवे दोवइं च देवि पट्टयं 'दुरुहावेइ, दुरुहावेत्ता' सेया-

१. वण्णओ जाव(क, ख, ग, घ); ना० १११।८६ । ७. ना० ११६।१५० ।  
 २. सं० पा०—ह्यगय संपरिवुडे । ८. पू०—ना० ११६।१५१ ।  
 ३. पू०—ना० १११।८६ । ९. ना० ११६।१५२ ।  
 ४. सं० पा०—वासुदेवपामोक्खे जाव उवागए । १०. दुस्सेइ २(क, ख, ग, घ)। द्रष्टव्यम्—१६६  
 ५. आगए (ग) । सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।  
 ना० ११६।१४६ ।





ओलोइंते रम्मं हत्थिणाउरं उवागए पंडुरायभवणंसि" "भक्ति-वेगेण" समो-  
वइए ॥

१८६. तए णं से पंडू राया कच्छुल्लनारयं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता पंचहिं पंडवेहिं  
कुंतीए य देवीए सद्धि आसणाओ अरुद्धेइ, अरुद्धेत्ता कच्छुल्लनारयं सत्तट्ट-  
पयाइं पच्चुग्गच्छइ, पच्चुग्गच्छित्ता तिवखुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता  
वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता महुरिहेणं 'अग्घेणं पज्जेणं' आराणेण य उवनि-  
मतेइ ॥
१८७. तए णं से कच्छुल्लनारए उदगपरिफोसियाए दग्घोवरिपच्चत्थुयाए भिसियाए  
निसीयइ, निसीइत्ता पंडुरायं रज्जे यं •रुद्धे य कोसे य कोट्टागारे य वले य  
वाहणे य पुरे यं अंतेउरे य कुसलोदंतं पुच्छइ ॥
१८८. तए णं से पंडू राया कोंती देवी पंच य पंडवा कच्छुल्लनारयं आढंति' •परिया-  
णंति अरुद्धेत्ति' • पज्जुवासंति ।
१८९. तए णं सा दोवई देवी कच्छुल्लनारयं 'अस्संजयं अविरयं अप्पडिहयपच्चखाय-  
पावकम्मंति' कट्टु नो आढाइ नो परियाणइ नो अरुद्धेइ नो पज्जुवासइ ॥
१९०. तए णं तस्स कच्छुल्लनारयस्स इमेयारुवे अरुद्धेत्थिए चित्तिं एत्थिए मणोगए  
संकप्पे समुप्पज्जित्था-- अहो णं दोवई देवी रुवेण यं •जोव्वणेण यं लावणणेण  
य पंचहिं पंडवेहिं अरुद्धेत्ता' समाणी ममं नो आढाइ' •नो परियाणइ नो  
अरुद्धेइ' नो पज्जुवासइ । तं सेयं खलु मम दोवईए देवीए विप्पियं करेत्तए  
त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता पंडुरायं आपुच्छइ, आपुच्छित्ता उप्पयणिं"  
विज्जं आवाहेइ, आवाहेत्ता ताए उविकट्टाए" •तुरियाए चवलाए चंडाए सिग्घाए  
उद्धुयाए जइणाए छेयाए • विज्जाहरगईए लवणसमुद्धं मज्जंमज्जेणं पुरत्थाभि-  
मुहे वीईवइउं पयत्ते यावि होत्था ।

### नारदस्स अवरकंका-गमण-पदं

१९१. तेणं कालेणं तेणं समएणं धायइसंडे दीवे पुरत्थिमद्ध-दाहिणड्डु-भरहवासे अवर-  
कंका नामं रायहाणी होत्था ॥

१. कच्छुल्लनारए जाव पंडुस्स रण्णो भवणंसि ६. अस्संजय-अविरय-अप्पडिहयअपच्चखायपाव-  
(क) अस्य संक्षिप्तपाठस्य परम्पराया कम्मंति (क, ग) ।  
उल्लेखो वृत्तावपि लभ्यते, यथा—इह ७. सं० पा०—रुवेण य जाव लावणणेण ।  
क्वचिद् यावत् करणादिदं दृश्यम् (व) । ८. अट्टुद्धा (ख) ।
२. अइवेगेणं (ख, ग, घ) । ९. सं० पा०—आढाइ जाव नो पज्जुवासइ ।
३. × (ग, घ) । १०. उप्पणिं (ख, ग) ।
४. सं० पा०—रज्जे य जाव अंतेउरे । ११. सं० पा०—उविकट्टाए जाव विज्जाहरगईए ।
५. सं० पा०—आढंति जाव पज्जुवासंति ।







•पवरवीर-घाइय-धिवडियचिध-धय-पडागे किच्छोवगयपाणे दिमोदिसि°  
पडिसेहिए ॥

### पउमनाभस्स पलायण-पदं

२६०. तए णं से पउमनाभे राया तिभागवलावमेसे अत्थामे' अत्रने अवारिए, अपुरि-  
सवकारपरवकमे अधारणिज्जमिति कट्टु सिग्घं तुरियं चवलं चंडं जइण वेइयं  
जेणेव अवरकंका' तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता अवरकंकां रायहाणि अणु-  
पविसइ, अणुपविसित्ता वाराइं' पिहेइ, पिहेत्ता रोहासज्जं चिट्ठइ ॥

### कण्हस्स नरसिहखुव-पदं

२६१. तए णं से कण्हे वासुदेवे जेणेव अवरकंका तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता रहं  
ठवेइ, ठवेत्ता रहाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहिता वेउच्चियसमुग्घाएणं समोहणइ'  
एगं मह नरसीहखुवं विउच्चइ, विउच्चित्ता महया-महया सट्ठेणं पायददरियं  
करेइ ॥

२६२. तए णं कण्हेणं वासुदेवेणं महया-महया सट्ठेणं पायददरएणं कएणं समाणेणं  
अवरकंका रायहाणी संभग्ग-पागार'-गोउराट्टालय-चरिय-तोरण-पल्हत्थिय-'  
पवरभवण-सिरिघरा सरसरस्स धरणियले सण्णिवइया ॥

### पउमनाभस्स सरण-पदं

२६३. तए णं से पउमनाभे राया अवरकंकां रायहाणि संभग्ग'-पागार-गोउराट्टालय-  
चरिय-तोरण-पल्हत्थियपवरभवण-सिरिघरं सरसरस्स धरणियले सण्णिवइयं°  
पासित्ता भीए दोवईं देवि सरणं उवेइ ॥

२६४. तए णं सा दोवईं देवी पउमनाभं रायं एवं वयासी—किण्णं तुमं देवाणुप्पिया !  
न' जाणसि कण्हस्स वासुदेवस्स उत्तमपुरिसस्स विप्पियं करेमाणे ? 'ममं इहं  
हव्वमाणेमाणे' तं 'एवमवि गए' गच्छ'° णं तुमं देवाणुप्पिया ! ण्हाए उल्लपड-  
साडए ओच्चूलगवत्थनियत्थे अंतेउर-परियालसंपरिवुडे' अग्गाइं वराइं रयणाइं  
गहाय ममं पुरओकाउं कण्हं वासुदेवं करयल'°परिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं  
मत्थए अंजलि कट्टु° पायवडिए सरणं उवेहि । पणिवइय-वच्छला णं देवाणु-  
प्पिया ! उत्तमपुरिसा ॥

१. अथामे (ग, घ) ।

२. अवरकंका (क) ।

३. वाराइं (ख) ।

४. समोहणइ (क, ख, घ) ।

५. पागार (क, घ); पगार (ख) ।

६. सं० पा०—संभग्गं जाव पासित्ता ।

७. × (क, ख, ग) ।

८. × (ख, ग, घ) ।

९. द्रष्टव्यम्—६८ सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।

१०. गच्छइ (ग, घ) ।

११. परियालं (क) ।

१२. सं० पा०—करयल° ।



पउमनाभं निव्विसयं आणवेइ, पउमनाभस्स पुत्तं अवरकंकाए रायहाणीए महया-महया रायाभिसेणं अभिसिचइ', \*अभिसिचिता जामेव दिसि पाउअभूए तामेव दिसि ° पडिगए ॥

### अपरिक्खणीयपरिक्खा-पदं

२८१. तए णं से कण्हे वासुदेवे लवणसमुद्दं मज्झमज्जेणं 'वीईवयमाणे-वीईवयमाणे गंगं उवागए' [उवागम्म ?] ते पंच पंडवे एवं वयासी- गच्छह णं तुम्भे देवाणुप्पिया ! गंगं महानइं उत्तरह जाव ताव अहं मुट्ठियं लवणाहिवइं पासामि ॥
२८२. तए णं ते पंच पंडवा कण्हेणं वासुदेवेणं एवं वुत्ता समाणा जेणेव गंगा महानदी तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छिता एगट्ठियाए' मग्गण-गवेसणं करंति, करेत्ता एगट्ठियाए गंगं महानइं उत्तरंति, उत्तरित्ता अण्णमण्णं एवं वयंति—पहू णं देवाणुप्पिया ! कण्हे वासुदेवे गंगं महानइं वाहाहिं उत्तरित्ताए, उदाहू नो पहू उत्तरित्ताए ? त्ति कट्टु एगट्ठियं 'णूमेत्ति, णूमेत्ता' कण्हं वासुदेवं पडिवाले-माणा-पडिवालेमाणा चिट्ठंति ॥
२८३. तए णं से कण्हे वासुदेवे सुट्ठियं लवणाहिवइं पासइ, पासित्ता जेणेव गंगा महानई तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता एगट्ठियाए सव्वओ समंता मग्गण-गवेसणं करेइ, करेत्ता एगट्ठियं अपासमाणे एगाए वाहाए रहं सतुरगं ससारहिं गेण्हइ, एगाए वाहाए गंगं महानइं वासट्ठिं जोयणाइं अद्धजोयणं च वित्थिण्णं उत्तरिउं पयत्ते यावि होत्था ॥
२८४. तए णं से कण्हे वासुदेवे गंगाए महानईए वहुमज्झदेसभाए संपत्ते समाणे संते तंते परितंते वद्धसेए जांए यावि होत्था ॥
२८५. तए णं तस्स कण्हस्स वासुदेवस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए' °चित्थिए पत्थिए मणोगए संकप्पे ° समुप्पज्जित्था—अहो णं पंच पंडवा महावलवगा जेहिं गंगा महानई वासट्ठिं जोयणाइं अद्धजोयणं च वित्थिण्णा वाहाहिं उत्तिण्णा ।

१. सं० पा०—अभिसिचइ जाव पडिगए ।

२. वीईवयइ २ (क, ख, ग); वीईवयइ गंग ° (घ) ।

३. एगट्ठियाए नावाए (क, ख, ग, घ) । वृत्तौ 'एगट्ठियंति नोः' इति व्याख्यातमस्ति । अस्यानुसारेण 'एगट्ठिया' पदं नो वाचकमस्ति । प्रतिपु 'नावाए' इति पदस्यापि उल्लेखो

लभ्यते । स च बहुषु स्थानेषु सारल्यार्थं परिवर्तितपदवद् विद्यते ।

४. एगट्ठियाओ (ग) ।

५. ण मुयंति (क); ण मुचंति (ख); मुसंति २ (घ) ।

६. सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था ।

७. वावट्ठि (क, ग) ।





इच्छामो णं तुब्भेहिं अरुभणुणयाया समाणा अरुहं अरिट्ठेनेमिं' •वंदणाए० गमित्तए ।

अहासुहं देवाणुप्पिया !

३२१. तए ण ते जुहिट्ठिलपामोक्खा पंच अणगारा थेरेहिं अरुभणुणयाया समाणा थेरे भगवते वंदति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता थेराण अंतियाओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता मासंमारोणं अणिविक्खत्तेणं तवोकम्भेण गामाणुगामं दूइज्जमाणा' •सुहंसुहेणं विहरमाणा० जेणेव हृत्यकप्पे' नयरे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता हृत्यकप्पस्स ब्रह्मिया सहस्सववणे उज्जाणे' •संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा० विहरंति ॥

३२२. तए णं ते जुहिट्ठिलवज्जा चत्तारि अणगारा मासानन्नमणपारणए पढमाए पोरिसीए सज्जभायं करंति, वीयाए भाणं भायंति एवं जहा गोयमसामो', नवरं—जुहिट्ठिलं आपुच्छंति जाव' अडमाणा बहुजणसद्दु निस्सामंति—एवं खलु देवाणुप्पिया ! अरहा अरिट्ठेनेमी उज्जंतसेलसिहरे मासिएणं भत्तेणं अपाणएणं पंचहिं छत्तीसेहिं अणगारसएहिं सद्धिं कालगए' •सिद्धे बुद्धे मुत्ते अंतगडे परिनिव्वुडे सव्वदुक्ख० प्पहोणे ॥

षंडवाणं निव्वाण-पदं

३२३. तए णं ते जुहिट्ठिलवज्जा चत्तारि अणगारा बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निस्सम्म हृत्यकप्पाओ नयराओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव सहस्संववणे उज्जाणे जेणेव जुहिट्ठिले अणगारे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता भत्तपाणं पच्चुवेक्खंति', पच्चुवेक्खित्ता गमणागमणस्स पडिक्कमंति, पडिक्कमित्ता एसणमणेसणं आलोएंति, आलोएत्ता भत्तपाणं पडिदंसंति, पडिदंसंत्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! •अरहा अरिट्ठेनेमी उज्जंतसेलसिहरे मासिएणं भत्तेणं अपाणएणं पंचहिं छत्तीसेहिं अणगारसएहिं सद्धिं० कालगए । तं सेयं खलु अम्हं देवाणुप्पिया ! इमं पुव्वगहियं भत्तपाणं परिट्ठवेत्ता सेत्तुज्जं पव्वयं सणियं-सणियं दुहहित्तए, संलेहणा-भूसणा-भोसियाणं कालं अणवेक्खमाणाणं' विहरित्तए त्ति कट्ठु अणमणस्स एयमट्ठं पडिसुणंति, पडिसुणंत्ता तं पुव्वगहियं भत्तपाणं एगंते परिट्ठवेत्ति, परिट्ठवेत्ता जेणेव सेत्तुज्जे" पव्वए तेणेव

१. सं० पा०—अरिट्ठेनेमिं जाव गमित्तए ।

२. सं० पा०—दूइज्जमाणा जाव जेणेव ।

३. हृत्यकप्पे (क) ।

४. सं० पा०—उज्जाणे जाव विहरंति ।

५. भ० २।१०७ ।

६. भ० २।१०८, १०९ ।

७. सं० पा०—कालगए जाव प्पहोणे ।

८. पच्चुवेक्खइंति (ख); पच्चवखंति (घ) ।

९. सं० पा०—देवाणुप्पिया जाव कालगए ।

१०. अणवक्खमाणाणं (घ) ।

११. सेत्तुजे (व) ।



१३. तए ण र निज्जामए ते वह्वे कुच्छिधारा य कण्णधारा य गवभेत्तगा य गंजरा-नावावाणियगा य तस्स निज्जामगरस्स अंतिए एणमट्ठं गोच्चा लद्धमुट्ठा पयनिगणाणकुत्तेणं वाएणं जेणेव कालियदीवे तेणेव उयागच्छति, उयागच्छिन्ना पोयवह्वणं लवेत्ति, लवेत्ता एगट्ठियाहिं कालियदीवं उत्तरंति । तत्थ णं वह्वे हिरण्णागरे य सुवण्णागरे य रयणागरे य वहरागरे य, वह्वे तत्थ आसं पासंति, किं ते ?—  
 'लद्धमुट्ठा लद्धरणे' अमुच्छदिगाभाए जाए । अस्स णं देवाणुप्पिया ! कालिय-  
 दीवंतेणं संछूढा' । एस णं कालियदीवे आन्वोपकट' ॥

### कालियदीवे आस-पेच्छण-पदं

१४. तए णं ते कुच्छिधारा य कण्णधारा य गवभेत्तगा य गंजरा-नावावाणियगा य तस्स निज्जामगरस्स अंतिए एणमट्ठं गोच्चा लद्धमुट्ठा पयनिगणाणकुत्तेणं वाएणं जेणेव कालियदीवे तेणेव उयागच्छति, उयागच्छिन्ना पोयवह्वणं लवेत्ति, लवेत्ता एगट्ठियाहिं कालियदीवं उत्तरंति । तत्थ णं वह्वे हिरण्णागरे य सुवण्णागरे य रयणागरे य वहरागरे य, वह्वे तत्थ आसं पासंति, किं ते ?—

हरिरेणु-सोणिमुत्तग-<sup>१</sup>सकविल-मज्जार-पायकुत्तकुट्ट-त्रोत्तसमुग्गयसामवण्णा ।  
 गोहूमगोरंग-गोरपाडल-गोरा, पवालवण्णा य धूमवण्णा य केइ ॥१॥

तलपत्त - रिट्ठवण्णा य, सालिवण्णा य भासवण्णा य केइ ।

जंपिय-तिल-कीडगा य, सोलीय-रिट्ठगा य पुंड-पड्या य कणग पिट्ठा य केइ ॥२॥

चवकागपिट्ठवण्णा, सारसवण्णा य हंसवण्णा य केइ ।

केइत्थ अट्ठभवण्णा, पक्कतल - मेववण्णा य वाहुवण्णा' केइ ॥३॥

संभाणुरागसरिसा, सुयमुह - गुंजद्धराग- सरिसत्थ केइ ।

एलापाडल - गोरा, सामलया - गवलसामला पुणो केइ ॥४॥

वह्वे अण्णे अणिहेसा, सामा कासीसरत्तपीया, अच्चंतविमुद्धा वि य णं आइण्णग-  
 जाइ-कुल-विणीय-गयमच्छरा ।

हयवरा जहोवएस-कम्मवाहिणो वि य णं ।

सिक्खा विणीयविणया,

लंघण-वग्गण-धावण-धोरण-तिवई जईण-सिक्खिय-गई ।

किं ते ? मणसा वि उन्विहंताइं अण्णेगाइं आससयाइं पासंति ० ॥

१५. तए णं ते आसा<sup>२</sup> वाणियए पासंति, तेसि गंधं आघायंति<sup>३</sup>, आघाइत्ता भीया

१. सं० पा०—लद्धमईए जाव अमूढदिसायाए ।

२. संवूढा (ख); संवूढा (ग) ।

३. ओलोकिज्जइ (घ) ।

४. सं० पा०—आइण्णवेढो । विस्तृतः पाठो वृत्त्यनुसारेण स्वीकृतः । मूलपाठे अस्य सूचना 'आइण्णवेढो' इति पदेन प्रदत्तास्ति । वृत्ति-

कारेणापि सूचितमिदम् यथा—वेढो ति वर्णनाथं वाक्यपद्धतिः (वृ) ।

५. पविरल (वृषा) ।

६. वहु ० (वृषा) ।

७. आसा ते(क, घ); आसाए(ग); आसाओ(वव)।

८. अघायंति (ख, ग) ।

1  
2  
3  
4  
5  
6  
7  
8  
9  
10  
11  
12  
13  
14  
15  
16  
17  
18  
19  
20  
21  
22  
23  
24  
25  
26  
27  
28  
29  
30  
31  
32  
33  
34  
35  
36  
37  
38  
39  
40  
41  
42  
43  
44  
45  
46  
47  
48  
49  
50  
51  
52  
53  
54  
55  
56  
57  
58  
59  
60  
61  
62  
63  
64  
65  
66  
67  
68  
69  
70  
71  
72  
73  
74  
75  
76  
77  
78  
79  
80  
81  
82  
83  
84  
85  
86  
87  
88  
89  
90  
91  
92  
93  
94  
95  
96  
97  
98  
99  
100

१८. तए णं ते संजत्ता-नावावाणियगा कणगकेउं एवं वयासी—एवं खलु अम्हे देवाणुप्पिया ! इहेव हत्थिसीसे नयरे परिवरामो तं चैव जाव' कालियदीवतेणं संछूढा । तत्थ णं वह्वे हिरण्णागरे य' •गुवण्णागरे य रयणागरे य वइरागरे य °, वह्वे तत्थ' आसे पासामो' ।

किं ते ? हरिरेणु जाव' अम्हं गंधं आघायंति, आघाइत्ता भीया तत्था उव्विग्गा उव्विग्गमणा तओ अणेगाइं जोयणाइं उदभमंति । तए णं सामी ! अम्हेहिं कालियदीवे 'ते आसा' अच्छेरए दिट्ठुपुव्वे ॥

१९. तए णं से कणगकेऊ तेसिं संजत्ता-नावावाणियगाणं अतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म ते संजत्ता-नावावाणियए एवं वयासी—गच्छह णं तुव्वे देवाणुप्पिया ! मम कोडुंविद्यपुरिसेहिं सिद्धिं कालियदीवाओ ते आसे आणेह ॥

२०. तए णं ते संजत्ता-नावावाणियगा' एवं सामि ! त्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणेंति ॥

२१. तए णं से कणगकेऊ कोडुंविद्यपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुव्वे देवाणुप्पिया ! संजत्ता-नावावाणियएहिं सिद्धिं कालियदीवाओ मम आसे आणेह । तेवि पडिसुणेंति ॥

२२. तए णं ते कोडुंविद्यपुरिसा सगडी-सागडं सज्जेति, सज्जेत्ता तत्थ णं वहूणं वीणाण य वत्तकीण य भामरीण य कच्छभीण य भंभाण य छ्दभामरीण य चित्तवीणाण य अण्णेसिं च वहूण सोइंदिय-पाउग्गाणं दव्वाणं सगडी-सागडं भरेति । वहूणं किण्हाण य' •नीलाण य लोहियाण य हालिद्दाण य ° सुक्किलाण य कट्टकम्माण य चित्तकम्माण य पोत्थकम्माण य लेप्पकम्माण य गंथिमाण य वेढिमाण य पूरिमाण य संघाइमाण य अण्णेसिं च वहूणं चक्खिदिय-पाउग्गाणं दव्वाणं सगडी-सागडं भरेति । वहूण कोट्टुपुडाण य' •पत्तपुडाण य चोयपुडाण य तगरपुडाण य एलापुडाण य हरिवेरपुडाण य उसीरपुडाण य चंपगपुडाण य मरुयगपुडाण य दमगपुडाण य जातिपुडाण य जुहियापुडाण य मल्लियापुडाण य वासंतियापुडाण य केयइपुडाण य कप्पूरपुडाण य पाडलपुडाण य ° अण्णेसिं च वहूणं घाणिदिय-पाउग्गाणं दव्वाणं सगडी-सागडं

१. ना० १।१७।४-१३ ।

२. सं० पा०—हिरण्णागरे य जाव वह्वे;  
हिरण्णागरा ° (ख, ग) ।

३. यत्थ (ख); अत्थि (घ) ।

४. एतत् क्रियापदं १४ सूत्रानुसारेण स्वीकृतम् ।

५. ना० १।१७।१४, १५ ।

६. नावावाणियगा कणगकेउं एवं वयासी (क,

ख, ग, घ) । यद्यपि सर्वेष्वपि आदर्शेषु असौ पाठो विद्यते, तथापि अर्थमीमांसया नासौ सगच्छते । एतादृशप्रसंगे तथा अदर्शनात् । द्रष्टव्यम्—१।८।१०४ सूत्रम् । तेनासौ पाठः पाठान्तरत्वेन स्वीकृतः ।

७. सं० पा०—किण्हाण य जाव सुक्किलाण ।

८. सं० पा०—कोट्टुपुडाण य जाव अण्णेसिं ।



च बहूणं घाणिदिय-पाउग्गाणं दव्वाणं पुंजे य नियरे य करंति, करेत्ता तेसि परिपेरंतेणं' •पासए ठवेति, ठवेत्ता निच्चला निष्फंदा तुसिणीया° चिट्ठति । जत्थ-जत्थ ते आसा आसयंति वा सयंति वा चिट्ठति वा तुयट्ठति वा तत्थ-तत्थ णं ते कोडुं वियपुरिसा गुलस्स जाव पुप्फुत्तर-पउमुत्तराए अण्णेसि च बहूणं जिडिभदिय-पाउग्गाणं दव्वाणं पुंजे य नियरे य करंति, करेत्ता वियए खणंति, खणित्ता गुलपाणगस्स 'खंडपाणगस्स वोरपाणगस्स' अण्णेसि च बहूणं पाणगाणं वियए भरेति, भरेत्ता तेसि परिपेरंतेणं पासए ठवेति', •ठवेत्ता निच्चला निष्फंदा तुसिणीया° चिट्ठति ।

जहिं-जहिं च णं ते आसा आसयंति वा सयंति वा चिट्ठति वा तुयट्ठति वा तहिं-तहिं च णं ते कोडुं वियपुरिसा बह्वे 'कोयवया जाव सिलावट्टया' अण्णाणि य फासिदिय-पाउग्गाइं अत्थुय-पच्चत्थुयाइं ठवेति, ठवेत्ता तेसि परिपेरंतेणं' •पासए ठवेति, ठवेत्ता निच्चला निष्फंदा तुसिणीया° चिट्ठति ॥

२३. तए णं ते आसा जेणेव ते उक्किट्टा सद्-फरिस-रस-रुव-गंधा तेणेव उवागच्छंति ॥  
अमुच्छिय-आसाणं सायत्त-विहार-पदं

२४. तत्थ णं अत्थेगइया आसा अपुव्वा णं इमे सद्-फरिस-रस-रुव-गंधत्ति' कट्ठु तेसु उक्किट्टेसु सद्-फरिस-रस-रुव-गंधेसु अमुच्छिया अगहिया अगिद्धा अणज्भोववण्णा तेसि उक्किट्टाणं सद्'-•फरिस-रस-रुव-गंधाणं दूरंदूरेणं अक्कमंति । ते णं तत्थ पउर-गोयरा पउर-तणपाणिया निवभया निरुव्विग्गा सुहंसुहेणं विहरंति ॥

### निगमण-पदं

२५. एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं निगंथो वा' •निगंथी वा आयरिय-उवज्झायाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए समाणे° सद्-फरिस-रस-रुव-गंधेसु नो सज्जइ नो रज्जइ नो गिज्झइ नो मुज्झइ नो अज्झोवज्झइ, से णं इहलोए चेव बहूणं समणाणं बहूणं समणीणं बहूणं सावयाणं बहूणं सावियाणं य अच्चणिज्जे जाव' चाउरंतं संसारकंतारं वीईवइस्सइ ॥

१. सं० पा०—परिपेरंतेणं जाव चिट्ठति ।

संक्षेपीकरणेऽस्य विपर्ययो जातः ।

२. खंडपाणगस्स पोरपाणगस्स (क); वोरपाण-गस्स य खंडपाणगस्स य (ख): खडपाणगस्स (ग) ।

५. सं० पा०—परिपेरंतेणं जाव चिट्ठति ।

६. गंधाति (ख, घ) ।

३. सं० पा०—ठवेति जाव चिट्ठति ।

७. सं० पा०—सद् जाव गंधाणं ।

८. सं० पा०—निगंथो वा° ।

४. अस्य सूत्रस्य पूर्वपाठापेक्षया 'कोयवया जाव हंसगन्धा' एवं पाठो युज्यते । संभवतः

९. ना० १।२।७६ ।





३५. तए णं ते आसा व्हूहिं मुह्वंधेहि य जाव' छिवणहारेहि य व्हूणि सारीर-  
माणसाइं दुक्खाइं पावेति ॥

### निगमण-पदं

३६. एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं निगंथो वा<sup>१</sup> •निगंथो वा आयरिय-उवज्जायाणं  
अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं<sup>२</sup> ° पव्वइए समाणे इट्ठेसु सट्-फरिस-  
रस-रुव-गंधेसु सज्जइ रज्जइ गिज्जइ मुज्जइ अज्जभोवज्जइ, से णं इहलोए  
चेव व्हूणं समणाणं<sup>३</sup> •व्हूणं समणीणं व्हूणं सावगाणं व्हूणं<sup>४</sup> सावियाण य  
हीलणिज्जे जाव' चाउरंतं संसारकंतारं भुज्जो-भुज्जो अणुपरियट्ठिस्सइ ।

### गाहा —

कल-रिभिय-महुर-तंती-तल-ताल-वंस-कउहाभिरामेसु<sup>१</sup> ।  
सहेसु रज्जमाणा<sup>२</sup>, रमंति सोइंदिय - वसट्ठा ॥१॥  
सोइंदिय-दुद्धंतत्तणस्स अह एत्तिओ हवइ<sup>३</sup> दोसो ।  
दीविग-रुयमसहंतो,<sup>४</sup> व्हवंधं तित्तिरो पत्तो ॥२॥  
थण-जहण-वयण-कर-चरण-नयण-गव्विय-विलासियगईसु<sup>५</sup> ।  
रुवेसु रज्जमाणा, रमंति चक्खिदिय-वसट्ठा ॥३॥  
चक्खिदिय-दुद्धंतत्तणस्स अह एत्तिओ हवइ दोसो ।  
जं<sup>६</sup> जलणमि जलंते, पडइ पर्यगो अबुद्धीओ ॥४॥  
अगरुवर-पवरधूवण - उउयमल्लाणुलेवणविहीसु ।  
गंधेसु रज्जमाणा, रमंति घाणिदिय-वसट्ठा ॥५॥  
घाणिदिय-दुद्धंतत्तणस्स अह एत्तिओ हवइ दोसो ।  
जं ओसहिगंधेणं, विलाओ निद्धावई उरगो ॥६॥  
तित्त-कडुयं<sup>७</sup> कसायं, महुरं<sup>८</sup> बहुखज्ज-पेज्ज-लेज्जभेसु ।  
आसायंमि<sup>९</sup> उ गिद्धा, रमंति जिर्विभदिय-वसट्ठा ॥७॥  
जिर्विभदिय-दुद्धंतत्तणस्स अह एत्तिओ हवइ दोसो ।  
जं गललगुक्खित्तो, फुरइ थलविरैल्लिओ<sup>१०</sup> मच्छो ॥८॥

१. ना० १।१७।३३ ।

२. सं० पा० — निगंथो वा पव्वइए ।

३. सं० पा० — समणाणं जाव सावियाण ।

४. ना० १।३।२४ ।

५. कडुहा<sup>०</sup> (क); ककुहा<sup>०</sup> (ख); ककुवा<sup>०</sup>  
(घ, वृ) ।

६. रयमाणा (ख) ।

७. तत्तियो हवति (क, ग); हवइ एत्तिओ (ख) ।

८. भयमसहंतो (ग); खमसहंतो (घ, वृ) ।

९. °मईसु (क) ।

१०. सं (क) ।

११. कटुय (घ) ।

१२. अंघिलमहुरं (घ) ।

१३. आसायंति (ख) ।

१४. °विरिल्लिओ (क, ख, ग); °विरिल्लिओ (घ) ।



३७. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया मद्दावीरेणं जाव' संपत्तेणं सत्तरसमस्स  
नायज्भयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ।

—त्ति वेमि ॥

वृत्तिकृता समुद्धृता निगमनगाथा—

जह सो कालियदीवो, अणुवमसोवखो तहेव जट्-धम्मो ।  
जह आसा तह साहू, वणियव्व अणुकूलकारिजणा ॥१॥  
जह सदाइ-अगिद्धा, पत्ता नो पासबंधणं आसा ।  
तह विसएमु अगिद्धा, वज्झंति न कम्मणा साहू ॥२॥  
जह सच्छंदविहारो, आसाणं तह इहं वरमुणीणं ।  
जर-मरणाइ-विवज्जिय, सायत्तार्णदनिव्वार्णं ॥३॥  
जह सदाइसु गिद्धा, वद्धा आसा तहेव विसयरया ।  
पावेति कम्मबंधं, परमासुह-कारणं घोरं ॥४॥  
जह ते कालियदीवा, पीया अण्णत्थ दुहगणं पत्ता ।  
तह धम्म-परिद्वह्णा, अधम्मपत्ता इहं जीवा ॥५॥  
पावेति कम्म-नरवइ-वसया संसारवाहियालीए' ।  
आसप्पमहएहि व, नेरइयाईहि दुक्खाई ॥६॥



- दुष्पय-चउष्पय-मिय-पगु-पवित्र-सरिगिवाणं घायाण वहाण उच्छायणयाए<sup>०</sup>  
 अहम्मकेऊ समुट्टिए वहुनगर-निग्गय-जसे सूरे दहणहारी साहसिए सहवेही ॥
२०. से णं तत्थ सीहगुहाए चोरपल्लीए पंचण्हं चोरसायाणं आहेवच्चं<sup>०</sup> पोरेवच्चं<sup>०</sup>  
 सामित्तं भट्टित्तं महत्तरगतं आणा-ईसार-सेणावच्चं कारेमाणे पालेमाणे<sup>०</sup>  
 विहरइ ॥
२१. तए णं से विजए 'तक्कर-सेणावडं' वहुणं चोराण य पारदारियाण य गंठिभेय-  
 गाण य संधिच्छेयगाण य खत्तखणगाण य रायावगारीण य अणघारगाण य  
 वालघायगाण य वीसंभघायगाण य जूयकाराण य खंडरक्खणाण य अण्णेसि च  
 वहुणं छिण्ण-भिण्ण-वाहिराहयाणं कुडंगे यावि होत्था ॥
२२. तए णं से विजए चोरसेणावडं' रायगिहस्स दाहिणपुरत्थिमं जणवयं वहुंहि  
 गामघाएहि य नगरघाएहि य गोगहणेहि य वंदिग्गहणेहि य पंथकुट्टणेहि<sup>०</sup> य  
 खत्तखणणेहि य उवीलेमाणे-उवीलेमाणे विट्ठसेमाणे-विट्ठसेमाणे नित्थाणं<sup>०</sup>  
 निद्धणं करेमाणे विहरइ ॥

### चिलायस्स चोरपल्ली-गमण-पदं

२३. तए णं से चिलाए दासचेडए रायगिहे वहुंहि अत्थाभिसंकीहि य चोज्जाभि-  
 संकीहि<sup>०</sup> य दाराभिसंकीहि य धणिएहि<sup>०</sup> य जूयकरेहि<sup>०</sup> य परवभवमाणे-परवभव-  
 माणे रायगिहाओ नगराओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव सीहगुहा चोरपल्ली  
 तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता विजयं चोरसेणावडं उवसंपज्जित्ता णं  
 विहरइ ॥
२४. तए णं से चिलाए दासचेडे विजयस्स चोरसेणावडस्स अग्ग-असिलट्टिग्गाहे  
 जाए यावि होत्था । जाहे वि य णं से विजए चोरसेणावडं गामघायं वा<sup>०</sup>  
 •नगरघायं वा गोगहणं वा वंदिग्गहणं वा<sup>०</sup> पंथकोट्टि वा काउं वच्चइ<sup>०</sup> ताहे  
 वि य णं से चिलाए दासचेडे सुवहुंपि कूवियवलं हय-महिय<sup>०</sup> •पवर वीर-  
 घाइय-विवडियंविध-धय-पडागं किच्छोवगयपाणं दिसोदिसिं<sup>०</sup> पडिसेहेइ, पडि-  
 सेहेत्ता पुणरवि लद्धेइ कयकज्जे अणहसमग्गे सीहगुहं चोरपल्लि हव्वमागच्छइ ॥

१. सं० पा०—आहेवच्चं जाव विहरइ ।

२. तक्करे चोरसेणावड (घ) ।

३. तक्करसेणावड (क) ।

४. × (ग) ।

५. कोट्टणेहि (क) ।

६. निद्धाणं (क) ।

७. चोरा<sup>०</sup> (घ) ।

८. धणिएहि (ख) ।

९. जुइ<sup>०</sup> (ख, ग) ।

१०. सं० पा०—गामघायं वा जाव पंथकोट्टि ।

११. वयइ (घ) ।

१२. सं० पा०—हयमहिय जाव पडिसेहेइ ।



णं देवाणुप्पिया ! सुंगुमाए दारियाए कूवं गमित्तए । तुळ्ळं णं देवाणुप्पिया !  
से विपुले धण-कणगे, ममं सुंगुमा दारिया ॥

४०. तए णं ते नगरगुत्तिया धणस्स एयमट्ठं पडिगुणेंति, पडिगुणेंता सण्णद्ध-वद्ध-  
वम्मिय-कवया जाव' गहियाउहपहरणा महया-महया उक्किट्ठ'-●सीहनाय-वोल-  
कलकलरवेण पवखुभिय-महा°समुद्-रवभूयं पिव करेमाणा रायगिहायो  
निग्गच्छंति, निग्गच्छित्ता जेणेव चिलाए चोरसेणावड्ढं तेणेव उवागच्छंति,  
उवागच्छित्ता चिलाएणं चोरसेणावड्ढा सद्धिं संपलग्गा यावि होत्या ॥
४१. तए णं ते नगरगुत्तिया चिलायं चोरसेणावड्ढं ह्य-महिय'-●पवरवीर-घाइय-  
विवडियचिध-धय-पडागं किच्छोवगयपाणं दिसोदिसि° पडिसेहेति ॥
४२. तए णं ते पंच चोरसया नगरगुत्तिएहि ह्य-महिय'-●पवरवीर-घाइय-विवडिय-  
चिध-धय-पडागा किच्छोवगयपाणा दिसोदिसि° पडिसेहिया समाणा तं विपुलं  
धण-कणगं विच्छड्डुमाणा य विप्पकिरमाणा य सच्चओ समंता विप्पलाइत्या ॥
४३. तए णं ते नगरगुत्तिया तं विपुलं धण-कणगं गेण्हति, गेण्हित्ता जेणेव रायगिहे  
नगरे तेणेव उवागच्छंति ॥

#### चिलायस्स चोरपल्लीतो पलायण-पदं

४४. तए णं से चिलाए तं चोरसेन्नं तेहि नगरगुत्तिएहि ह्य-महिय-पवरं●वीर-  
घाइय-विवडियचिध-धय-पडागं किच्छोवगयपाणं दिसोदिसि पडिसेहियं  
[पासित्ता ? ] ° भीए तत्ये' सुंसुमं दारियं गहाय एगं महं अगामियं' दीहमद्धं  
अडवि अणुप्पविट्ठे ॥
४५. तए णं से धणे सत्थवाहे सुंसुमं दारियं चिलाएणं अडवीमुहिं अवहीरमाणं  
पासित्ता णं पंचहिं पुत्तेहिं सद्धिं अणुप्पविट्ठे सण्णद्ध-वद्ध-वम्मिय-कवए' चिलायस्स  
पयमग्गविहिं 'अणुगच्छमाणे अभिगज्जंते'" हक्कारेमाणे पुक्कारेमाणे अभितज्जे-  
माणे अभितासेमाणे पिट्ठओ अणुगच्छइ ॥
४६. तए णं से चिलाए तं धणं सत्थवाहं पंचहिं पुत्तेहिं सद्धिं अणुप्पविट्ठं सण्णद्ध-वद्ध-  
वम्मिय-कवय'" समणुगच्छमाणं पासइ, पासित्ता अत्थामे अवले अवीरिए  
अपुरिसक्कारपरक्कमे जाहे नो संचाएइ सुंसुमं दारियं निव्वाहित्तए ताहे संते

१. ना० १।१।३५ ।

२. सं० पा०—उक्किट्ठ जाव समुद्धरवभूयं ।

३. सं० पा०—ह्यमहिय जाव पडिसेहेति ।

४. सं० पा०—ह्यमहिय जाव पडिसेहिया ।

५. सं० पा०—पवर जाव भीए ।

६. द्रष्टव्यम्—अस्याध्ययनस्य ३७ सूत्रम् ।

७. आगामियं (ख, ग, घ) ।

८. अडवीमुहं (घ) ।

९. द्रष्टव्यम्—अस्याध्ययनस्य ३५ सूत्रम् ।

१०. अभिगच्छंते अणुगिज्जमाणे (ख, ग) ।

११. द्रष्टव्यम्—अस्याध्ययनस्य ३५ सूत्रम् ।





धणेणं अडवि-लंघणट्ठं सुया-मंससोणियाहार-पवं

५१. तए णं से धणे सत्यवाहे पंचहिं पुत्तेहिं [सद्धि ?] अप्पच्छट्ठे चिलायं तीसे अगामियाए अडवीए सव्वओ समंता परिधाडेमाणे तण्हाए छुहाए य परवभाहते समाणे तीसे अगामियाए अडवीए सव्वओ समंता उदगस्स मग्गण-गवेसणं करेमाणे संते तंते परित्तंते निव्विण्णे तीसे अगामियाए अडवीए उदगं अणासाएमाणे जेणेव सुंसुमा जीवियाओ ववरोविएल्लिया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता जेट्ठं पुत्तं धणं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—एवं खलु पुत्ता ! सुंसुमाए दारियाए अट्टाए चिलायं तवकरं सव्वओ समंता परिधाडेमाणा तण्हाए छुहाए य अभिभूया समाणा इमीसे अगामियाए अडवीए उदगस्स मग्गण-गवेसणं करेमाणा नो चेव णं उदगं आसादेमो । तए णं उदगं अणासा-एमाणा नो संचाएमो रायगिहं संपावित्तए । तण्णं तुव्भे ममं देवाणुप्पिया ! जीवियाओ ववरोवेह, मम मंसं च सोणियं च आहारेह, तेणं आहारेणं अवयद्धां समाणा तओ पच्छा इमं अगामियं अडवि नित्थरिहिहं, रायगिहं च संपावेहिहं, मित्त-नाइ-<sup>०</sup>नियग-सयण-संवधि-परियणं<sup>०</sup> अभिसमागच्छिहिहं<sup>१</sup>, अत्थस्स य धम्मस्स य पुण्णस्स य आभागी भविस्सह ॥

५२. तए णं से जेट्ठे पुत्ते धणेणं सत्यवाहेणं एवं वुत्ते समाणे धणं सत्यवाहं एवं वयासी—तुव्भे णं ताओ ! अम्हं पिया गुरुजणया देवयभूया ठवका पइट्ठवका संरक्खगा संगोवगा । तं कहण्णं अम्हे ताओ ! तुव्भे जीवियाओ ववरोवेमो, तुव्भं णं मंसं च सोणियं च आहारेमो ? तं तुव्भे णं ताओ ! 'ममं जीवियाओ ववरोवेह, मंसं च सोणियं च आहारेह, अगामियं'<sup>१</sup> अडवि नित्थरिहिहं,<sup>१</sup> \*रायगिहं च संपावेहिहं, मित्त-नाइ-नियग-सयण-संवधि-परियणं अभिसमा-गच्छिहिहं<sup>०</sup>, अत्थस्स य धम्मस्स य पुण्णस्स य आभागी भविस्सह ॥

१. परिधावेमाणे (घ) ।

दोपात् 'धणे' इति जातमिति संभाव्यते ।

२. परिव्वभते (क); पग्गभते (ख, घ); परवभए (घ) । द्रष्टव्यम्—१।१।१८४ ।

७. अववद्धा (ख) ।

८. नित्थरिहह (क); नित्थरेहिह (ग) ।

३. करेइ (क, ख, ग, घ) !

९. संपावेहह (क) ।

४. × (क, ख, ग); अडवीए उदगस्स मग्गण-गवेसणं करेमाणे नो चेव णं उदगं आसाएइ तए णं (घ) ।

१०. सं० पा०—नाइ<sup>०</sup> ।

११. अभिसमागच्छिहह (क, ख, घ) ।

१२. चिन्हाद्धितपाठः ५१ सूत्रात् किञ्चित् संक्षिप्तोऽस्ति ।

५. ववरोविया (घ) ।

१३. नित्थरेह (क); नित्थरह (ख, ग) ।

६. धणे (क, ख, ग, घ); यद्यपि सर्वासु प्रतिपु 'धणे' इति पाठः उपलभ्यते, परं ज्येष्ठपुत्रस्य विशेषणत्वेन 'धणं' इत्येव उपयुज्यते । लिपि-

सं० पा०—तं चेव सव्वं भणइ जाव अत्थस्स ।



बलहेउं वा नो विसयहेउं वा सुंसुमाए दाशियाए मंसरोणिए आहारिए, नन्नत्यं  
एगाए रायगिहं-संपावणट्टयाए ॥

६१. एवामेव समणाउरो ! जो अम्महं निग्गंधो वा निग्गंधी वा' •आयरिय-  
उवजभायाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए समाणे °  
इमस्स ओरालियसरीरस्स वंतासवस्स पित्तासवस्स [खेलागवस्स ?]  
सुवकासवस्स सोणियासवस्स' •दुक्ख-उस्सास-निस्सासस्स दुक्ख-मुत्त-पुरीस-पूय-  
वहुपडिपुण्णस्स उच्चार-पासवण-खेल-सिघाणग-वंत-पित्त-सुवक-सोणियसंभवस्स  
अधुवस्स' अणित्तियस्स असासयस्स सडण-पडण-विद्धंसणधम्मस्स पच्छा पुरं च  
णं ° अवस्सविप्पजहियव्वस्स नो वण्णहेउं वा नो रूवहेउं वा नो बलहेउं वा  
नो विसयहेउं वा आहारं आहारेइ, नन्नत्य एगाए शिद्धिगमण-संपावणट्टयाए, से  
णं इहभवे चेव वहूणं समणाणं वहूणं समणीणं वहूणं सावयाणं वहूणं सावियाण य  
अच्चणिज्जे जाव' चाउरंतं संसारकंतारं वीईवइस्सइ—जहा व से सपुत्ते घणे  
सत्यवाहे ॥

६२. एवं खलु जंवू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं अट्टारसमस्स  
नायज्भयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ।

—त्ति वेमि ॥

वृत्तिकृता समुद्धृता निगमनगाथा—

जह सो चिलाइपुत्तो सुंसुमगिद्धो अकज्ज-पडिवद्धो ।  
धण-पारद्धो पत्तो, महाडविं वसण-सयकलियं ॥१॥  
तह जीवो विसय-सुहे, लुद्धो काऊण पावकिरियाओ ।  
कम्मवसेणं पावइ, भवाडवीए महादुक्खं ॥२॥  
धणसेट्ठी विव गुरुणो, पुत्ता इव साहवो भवो अडवी ।  
सुयमंसमिवाहारो, रायगिहं इह सिवं नेयं ॥३॥  
जह अडवि-नियर-नित्थरण-पावणत्थं तएहिं सुयमंसं ।  
भुत्तं तहेह साहू, गुरुण आणाइ आहारं ॥४॥  
भव-लंघण-सिव-साहणहेउं भुंजंति ण गेहीए ।  
वण्ण-वल-रूव-हेउं, च भावियप्पा महासत्ता ॥५॥

१. अण्णत्य (ख, ग) ।

२. रायगिहं (व) ।

३. सं० पा०—निग्गंधी वा ।

४. सं० पा०—सोणियासवस्स जाव अवस्स ° ।

५. ना० १।२।७६ ।

६. ना० १।१।७ ।



पुंडरीयं रज्जे ठवेना पव्वइए । पुंडरीए राया जाए, कंडरीए जुवराया । महा-  
पउमे अणगारे चौद्दसपुव्ववाइं अहिज्जइ ॥

६. तए णं थेरा बहिया जणवयविहारं विहरंति ॥

१०. तए णं से महापउमे बहूणि वाराणि सामणपरियागं पाउणित्ता जाव' सिद्धे ॥

११. तए णं थेरा अणया कयाइ पुणरवि पुंडरीगिणीए' रायहाणीए नलिण [ णि ? ]  
वणे उज्जाणे समोसइ । पुंडरीए राया निग्गए । कंडरीए महाजणसइं सोच्चा  
जहा महावलो जाव' पज्जुवासाइ । थेरा धम्मं परिकहेंति । पुंडरीए समणोवासए  
जाए जाव' पडिगए ॥

१२. तए णं कंडरीए' •थेराणं अतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्टुट्टे उट्टाए उट्टेइ,  
उट्टेत्ता थेरे तिकखुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वदित्ता  
नमंसित्ता एवं वयासी—सइहामि णं भंते ! निग्गयं पावयणं जाव'° से जहेयं  
तुव्भे वयह । जं नवरं—पुंडरीयं रायं आपुच्छामि' । •तओ पच्छा मुंडे भवित्ता णं  
अगाराओ अणगारियं° पव्वयामि ।  
अहासुहं देवाणुप्पिया !

१३. तए णं से कंडरीए' थेरे वंदइ नमंसइ, वदित्ता नमंसित्ता थेराणं अंतियाओ  
पडिनिक्खमइ, तमेव चाउग्घंटं आसरहं दुरुहइ' •महयाभड-वडगर-पहकरेण  
पुंडरीगिणीए नयरीए मज्जमंज्जेणं जेणामेव साए भवणे तेणामेव उवागच्छइ,  
उवागच्छित्ता चाउग्घंटाओ आसरहाओ° पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता जेणेव  
पुंडरीए राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल'°परिग्गहियं दसणहं  
सिरसावत्तं मत्थए अंजलि कट्टु° एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! मए  
थेराणं अंतिए धम्मे निसंते, से'' •वि य मे धम्मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए ।  
तं इच्छामि णं देवाणुप्पिया ! तुव्भेहि अठभणुण्णाए समाणे थेराणं अंतिए  
मुंडे भवित्ता णं अगाराओ अणगारियं° पव्वइत्तए ॥

१४. तए णं से पुंडरीए राया कंडरीयं एवं वयासी—मा णं तुमं भाउया ! इयारिण

१. ना० १।५।८४ ।

२. पुंडरगिणीए (ग) ।

३. भग० ११।१६४-१६६ ।

४. उवा० १।५२ ।

५. सं० पा०—कंडरीए उट्टाए उट्टेइ उट्टेत्ता  
जाव से जहेयं ।

६. ना० १।१।१०१ ।

७. सं० पा०—आपुच्छामि तए णं जाव पव्व-  
यामि ।

८. कंडरीए जाव [क, ख, ग, घ] ।

९. सं० पा०—दुरुहइ जाव पच्चोरुहइ ।

१०. सं० पा०—करयल जाव एवं ।

११. सं० पा०—से धम्मे अभिरुइए । तए णं  
देवा जाव पव्वइत्तए ।



उवागच्छत्ता कंडरीयं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता कंडरीयरस अणगारस्स  
सरीरं सव्वावाहं सरोमं पासइ, पासित्ता जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उवागच्छइ,  
उवागच्छत्ता थेरे भगवंते वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—अहणं  
भंते ! कंडरीयस्स अणगारस्स अहापवत्तेहि' ओसह-भेसज्ज'-भत्त-पाणेहि°  
तेगिच्छं आउंटामि । तं तुब्भे णं भंते ! मम जाणसालामु समोसरह ॥

२३. तए णं थेरा भगवंतो पुंडरीयरस [एयमट्टं ?] पडिसुणेंति', °पडिसुणेत्ता जेणेव  
पुंडरीयस्स रण्णो जाणसाला तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता फामु-एसणिज्जं  
पीढ-फलग-सेज्जा-संधारं ° उवसंपज्जित्ता णं विहरंति ॥
२४. तए णं पुंडरीए राया °तेगिच्छिए सहावेइ, सहावेत्ता एवं वयासी—तुब्भेणं  
देवाणुप्पिया ! कंडरीयस्स फामु-एसणिज्जेणं ओसह-भेसज्ज-भत्त-पाणेणं  
तेगिच्छं आउट्टेह ॥
२५. तए णं ते तेगिच्छिया पुंडरीएणं रण्णा एवं वुत्ता समाणा हट्टुत्तुत्ता कंडरीयस्स  
अहापवत्तेहि ओसह-भेसज्ज-भत्त-पाणेहि तेगिच्छं आउट्टेंति, मज्जपाणं च से  
उवदिसंति ॥
२६. तए णं तस्स कंडरीयस्स अहापवत्तेहि ओसह-भेसज्ज-भत्त-पाणेहि मज्जपाणएण  
य से रोगायंके उवसंते यावि होत्था—हट्टे वलियसरीरे' जाए ववगयरोगायंके° ॥

### कंडरीयस्स पमत्तविहार-पदं

२७. तए णं थेरा भगवंतो 'पुंडरीयं रायं आपुच्छंति, आपुच्छित्ता' वहिया जणवय-  
विहारं विहरंति ॥
२८. तए णं से कंडरीए ताओ रोयायंकाओ विप्पमुक्के समाणे तंसि मणुणंसि असण-  
पाण-खाइम-साइमंसि मुच्छिए गिद्धे गट्ठिए अज्भोववण्णे नो संचाएइ पुंडरीयं  
आपुच्छित्ता वहिया अट्ठभुज्जएणं° °जणवयविहारेणं ° विहरित्तए तत्थेव ओसन्ने  
जाए ॥

### पुंडरीएण पडिबोह-पदं

२९. तए णं से पुंडरीए इमीसे कहाए लद्धट्टे समाणे ण्हाए अंतेउर-परियाल'-  
संपरिवुडे जेणेव कंडरीए अणगारे तेणेव उवाच्छइ, उवागच्छित्ता

१. अहापत्तेहि (ख); अहावत्तेहि (ग); अहा-  
पवित्तेहि (घ) ।
२. सं० पा०—भेसज्जेहि जाव तेगिच्छं ।
३. सं० पा०—पडिसुणेंति जाव उवसंपज्जित्ता ।
४. सं० पा०—जहा मंडुए सेलगस्स जाव  
वलियसरीरे जाए ।
५. १।५।११६ सूत्रे 'गल्लसरीरे' इति पाठोस्ति ।
६. पुंडरीयं पुच्छंति २ (ख, ग) ।
७. सं० पा०—अट्ठभुज्जएणं जाव विह-  
रित्तए ।
८. परियाल सट्ठि (क, घ) ।





तेणेव उवागच्छड, उवागच्छिता पंडरीय रायं एवं वयासी—एवं खनु देवाणुप्पिया ! तव पियभाउणं कंडरीय अणगारे असोगवणियाण असोगवर-पायवस्स अहे पृढविशिलापट्टे ओहियमणसंकण्णे जाव भियायइ ॥

३४. तए णं से पंडरीय अम्मथाईए एयमट्टं सोच्चा निरम्म तहेव संभंते समाणे उट्टाए उट्टेइ, उट्टेत्ता अंतेउर-परियालमंपरिवुडे जेणेव असोगवणिया \*तेणेव उवागच्छड, उवागच्छिता \* कंडरीय अणगारं तिक्खुत्ता \* आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वदित्ता नमंसित्ता \* एवं वयासी—धन्नेसि णं तुमं देवाणुप्पिया ! \*कयत्थे कयपुण्णे कयलवत्तणे गुलट्टे णं देवाणुप्पिया ! तव माणुस्सए जम्म-जीवियफले जाव अगाराओ अणगारियं \* पव्वइए, अहं णं अघन्ने अकयत्थे अकयपुण्णे अकयलवत्तणे जाव \* नो संचाएमि पव्वइत्ताए । तं धन्नेसि णं तुमं देवाणुप्पिया ! जाव गुलट्टे णं देवाणुप्पिया ! तव माणुस्सए जम्म-जीवियफले ॥

३५. तए णं कंडरीए पंडरीएणं एवं वुत्ते समाणे तुसिणीए संचिट्टइ । दोच्चंपि तच्चंपि \*पंडरीएणं एव वुत्ते समाण तुसिणीए \* संचिट्टइ ॥

३६. तए णं पंडरीए कंडरीयं एवं वयासी—अट्टो भंते ! भोगंहि ? हंता ! अट्टो ॥

३७. तए णं से पंडरीए राया कोडुवियपुरिसे सदावेइ, सदावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! कंडरीयस्स महत्थं \*महग्वं महरिहं विउलं \* रायाभिसेयं उवट्टवेह जाव \* रायाभिसेएणं अभिसिचति ॥

पुंडरीयस्स पव्वज्जा-पदं

३८. तए णं से पंडरीए सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेइ, सयमेव चाउज्जामं धम्मं पडिवज्जइ, पडिवज्जित्ता कंडरीयस्स संतियं आयारभंडगं गेण्हइ, गेण्हित्ता इमं एयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हइ—कप्पइ मे थेरे वंदित्ता नमंसित्ता थेराणं अंतिए चाउज्जामं धम्मं उवसंपज्जित्ता णं तओ पच्छा आहारं आहारित्तए त्ति कट्टु इमं एयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हित्ता णं पुंडरीगिणीए \* पडिणिकखमइ, पडि-णिकखमित्ता पुव्वाणुप्पिवि चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे जेणेव थेरा भग-वंतो तेणेव पहारेत्थे गमणाए ॥

१. पिउभाउए (ख, ग); भाउए (घ) ।

२. सं० पा०—असोगवणिया जाव कंडरीयं ।

३. सं० पा०—तिक्खुत्तो जाव एवं ।

४. सं० पा०—देवाणुप्पिया जाव पव्वतिए ।

५, ६. ना० ११६।२६ ।

७. द्रष्टव्यम्—२६ सूत्रम् ।

८. ना० ११६।२६ ।

९. सं० पा०—तच्चं पि जाव संचिट्टइ ।

१०. हंते (ग) ।

११. सं० पा०—महत्थं जाव रायाभिसेयं ।

१२. ना० १११।१७, ११८ ।

१३. पोंडरिगिणीए (क, ख) ।



विलमिव पणमभूणं अण्णाणं' नं फामु-पराणिज्जं अमण-पाण-खाडम-साइमं  
सारीरकोहुगंसि पक्खिवइ ॥

४४. तए णं तस्स पुंडरीयस्स अण्णगारस्स तं कालाडवकंतं अरसं विरसं सीयलुक्खं  
पाणभोयणं आहारियस्स समाणस्स पुव्वरत्तावरत्तकालगमयंसि धम्मजागरियं  
जागरमाणस्स ते आहारे नो सम्मं परिणमइ ॥

४५. तए णं तस्स पुंडरीयस्स अण्णगारस्स सारीरगंसि वेयणा पाउडभूया -उज्जला'  
•विउला कक्खडा पगाढा चंटा दुक्खा° दुःरहियासा । पित्तज्जर-परिगय-सारीरे  
दाहवक्कंतीए विहरइ ॥

४६. तए णं से पुंडरीए अण्णगारे अत्थामे अवले अवोरिए अपुरिसक्कारपरक्कमे  
करयल'•परिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलि कट्टु° एवं वयासी —  
नमोत्थु णं अरहंताणं भगवंताणं जाव' सिद्धिगण्णामवेज्जं ठाणं संपत्ताणं ।  
नमोत्थु णं थेराणं भगवंताणं मम धम्मायरियाणं धम्मोवणसयाणं । पुव्वि पि  
य णं मए थेराणं अंतिए सव्वे पाणाइवाए पच्चक्खाए जाव' वहिद्धादाणे'  
पच्चक्खाए', •इयारिणं पि णं अहं तेसि चैव अंतिए सव्वं पाणाइवायं  
पच्चक्खामि जाव वहिद्धादाणं पच्चक्खामि । सव्वं असण-पाण-खाडम-साइमं  
पच्चक्खामि चउव्विहं पि आहारं पच्चक्खामि जावज्जीवाए । जंपि य इमं  
सारीरं इहं कंतं तं पि य णं चरिमेहि उस्सास-नीसालोहिं व्रोसिरामि त्ति  
कट्टु° आलोइय-पडिक्कंते कालमासे कालं किच्चा सव्वट्टुसिद्धे उववण्णे ।  
तत्रो अणंतं उव्वट्टित्ता महाविदेहे वासे सिज्झिह्हिइ' •वुज्झिह्हिइ मुच्चिह्हिइ  
परिनिव्वाहिइ° सव्वदुक्खाणमंतं काहिइ ॥

### निगमण-पदं

४७. एवामेव समणाउसो' ! •जो अम्हं निगंथो वा निगंथी वा आयरिय-उवज्झायाणं  
अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अण्णगरियं° पव्वइए समाणे माणुस्सएहि

१. अत्तणेणं (ख) ।

२. सं० पा० —उज्जला जाव दुःरहियासा ।

३. सं० पा० —करयल जाव एवं ।

४. ओ० सू० २१ ।

५. ना० १।५।५६ ।

६. मिच्छादंसणसल्ले (क, ख, ग, घ) अस्या-

ध्ययनस्य ३८, ४३ सूत्रे 'चाउज्जामं धम्मं

पडिवज्जइ' इति पाठोस्ति । उपलब्धपाठश्च

अस्य विसंवादी वसंतै । मेघकुमाराधिकाराव

पूरितोसौ पाठः तेनात्रापि विसंवादो जातः ।

द्रष्टव्यम्—१।५।५६ सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।

७. सं० पा० —पच्चक्खाए जाव आलोइय० ।

चिह्नान्कितः पाठः १।१।२०६ सूत्रेण पूरितः ।

८. पू० —ना० १।१।२०६ ।

९. सं० पा० —सिज्झिह्हिइ जाव सव्वदुक्खाण ।

१०. सं० पा० —समणाउसो जाव पव्वइए ।



## फालीदेवी-पदं

१०. तेषां कालेणं तेषां रामाएणं कालो देवो नमस्त्वंनाए रायहाणोए कालिवडेंसगभवणे कालंसि सीहासणसि चउहि सामाणियसाहससोहि चउहि महयरियाहि सपरिवाराहि, तिहि परिशाहि सत्ताहि अणिएहि सत्ताहि अणियाहिवईहि सोलसहि आयरकवदेवसाहससोहि अण्णेहि य वहुहि कालिवडिगय'-भवणवासीहि असुरकुमारेहि देवेहि देवोहि य सद्धि संपरिवृत्ता महयाहय'-नट्टु-गीय-वाइय-तंती-तल-ताल-तुडिय-वण-मुडंग-पडुणवादियरवेणं दिव्वाइं भोगभोगाई भुंजमाणी ° विहरइ । इमं च णं केवलकप्पं जंबुद्वीवं दीवं विउत्तेणं ओहिणा 'आभोएमाणी-आभोगमाणी' पासइ ॥

## कालीए भगवन्नो वंदण-पदं

११. एत्थं समणं भगवं महावीरं जंबुद्वीवे दीवे भारहे वामे रायगिहे नयरे गुणसिलए चेइए अहापडिख्वं ओग्गहं ओगिण्हत्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणं पासइ, पासित्ता हट्टुट्टु-चित्तमाणंदिया पीइमणा' °परमसोमणस्सिया हरिस-वस-विसप्पमाण °-हियया सीहासणाओ अब्भुट्टेइ, अब्भुट्टेत्ता पायपीढाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहिता पाउयाओ ओमुयइ, ओमुइत्ता तित्यगराभिमुही सत्तट्टु पयाइं अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता वामं जाणुं अंचेइ, अंचेत्ता दाहिणं जाणुं धरणियलंसि निहट्टु तिवखुत्तो मुद्धाणं धरणियलंसि निवेसेइ', ईसि पच्चुन्नमइ, पच्चुन्नमित्ता कडग-तुडिय-थंभियाओ भुयाओ साहरइ, साहरित्ता करयल' °परिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलि ° कट्टु एवं वयासी-नमोत्थु णं अरहंताणं भगवंताणं जाव' सिद्धिगइनामवेज्जं ठाणं संपत्ताणं । नमोत्थु णं समणस्स भगवन्नो महावीरस्स जाव' सिद्धिगइनामवेज्जं ठाणं संपाविउकामस्स । वंदामि णं भगवंतं तत्थगयं इहगया, पासउ मे समणे भगवं महावीरे तत्थगए इहगयं ति कट्टु वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता सीहासणवरंसि पुरत्था-भिमुहा निसण्णा ॥

१२. तए णं तीसे कालीए देवीए इमेयारुवे" °अज्भत्थिए चितिए पत्थिए ण्णोगं संकप्पे ° समुप्पज्जित्था—सेयं खलु मे समणं भगवं महावीरं वंदित्तए" ॥

१. मयहरियाहि (क, ख, ग, घ); महरियाहि (वव) । ८. सं० पा०—करयल जाव कट्टु ।

द्रष्टव्यम्—१।१६।१५६ सूत्रस्य पादटिप्पणम् । ९. १०. ओ० सू० २१ ।

२. °वडेंसय (ख, ग) ।

११. सं० पा०—इमेयारुवे जाव समुप्पज्जित्था ।

३. सं० पा०—महयाहय जाव विहरइ ।

१२. वंदित्ता (क, ख, ग, घ); सं० पा०—वंदि-

४. आभोएमाणी (क, ख, ग, घ) ।

त्तए जाव पज्जुवासित्तए । असौ पाठः 'राय-

५. जत्थ (क, घ); यत्थ (ग) ।

पसेणइय' सूत्रस्य वृत्त्यनुसारेण पूरितः ।

६. सं० पा० पीइमणा जाव हियया ।

द्रष्टव्यम्—'रायपसेणइय' वृत्ति पृ० ५१, ५२ ।

७. निमेइ (क, ग) ।



दारिया होत्था—वड्ढा वड्ढुकुमारी जुण्णा जुण्णकुमारी पडियपुयत्यणी'  
निव्विण्णवरा वरगपरिवज्जिया' वि होत्था ॥

### कालीए पव्वज्जा-पदं

१६. तेणं कालेणं तेणं समणं पासे अरह्हा पुरिसादाणीए आइगरे' \*तित्थगरे  
सहसंबुद्धे पुरिसोत्तमे पुरिससोहे पुरिसवरपंडरीए पुरिसवरगंधहत्थी  
अभयदए चक्खुदए मग्गदए सरणदए जीवदए दीवो ताणं सरणं गई पड्डु  
धम्मवरचाउरंत-चक्कवट्टी अप्पट्टिहय-वरनाणदंसणवरे वियट्टच्छउमे अरह्हा  
जिणे केवली जिणे जाणए तिण्णे ताराए मुत्ते मोयए बुद्धे वोहए सव्वण्णू सव्व-  
दरिसी नवहत्थुस्सेहे समचउरंसंठाणसंठिए वज्जरिसहनारायसंघयणे जल्ल-  
मल्लकलंकसेयरहियसरीरे सिवमयलमक्यमणंतमवखयमव्वावाहमपुणरावत्तणं  
सिद्धिगइणामधेज्जं ठाणं संपाविउकामे' सोलसहिं समणसाहस्सीहिं अट्टत्तीसाए  
अज्जियासाहस्सीहिं सद्धिं संपरिवुडे पुव्वाणुपुव्वि चरमाणे गामाणुगामं  
दूइज्जमाणे सुहंसुहेणं विहरमाणे आमलकप्पाए नयरीए व्हिया ° अंवसालवणे  
समोसढे । परिसा निग्गया जाव' पज्जुवासइ ॥

२०. तए णं सा काली दारिया इमीसे कहाए लद्धट्टा समाणी हट्ट' \*तुट्टु-चित्तमाणंदिया  
पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-विसप्पमाण ° हियया जेणं व अम्मापियरो  
तेणं उवागच्छइ, उवागच्छत्ता करयल' \*परिगहियं दसणहं सिरसावत्तं  
मत्थए अंजलि कट्टु ° एवं वयासी—एधं खलु अम्मयाओ ! पासे अरह्हा  
पुरिसादाणीए आइगरे' \*तित्थगरे इहमागए इह संपत्ते इह समोसढे इह चेव  
आमलकप्पाए नयरीए अंवसालवणे अहापडिरुवं ओगहं ओगिण्हत्ता संजमेणं  
तवसा अप्पाणं भावेमाणे ° विहरइ । तं इच्छामि णं अम्मयाओ ! तुव्भेहिं  
अव्वभणुण्णाया समाणी पासस्स णं अरह्हाओ पुरिसादाणीयस्स पायवंदिया  
गमित्तए ।

अहासुहं देवाणुप्पिए ! मा पडिवंधं करेहि ॥

२१. तए णं सा काली दारिया अम्मापिईहिं अव्वभणुण्णाया समाणी हट्ट' \*तुट्टु-चित्त-  
माणंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-विसप्पमाण ° हियया ण्हाया  
कयवलिकम्मा कयकोउय-मंगल-पायच्छित्ता सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं

१. °पुत्तथणी (ग) ।

२. वरपरिवज्जिया (घ); वरवज्जिया (वृ) ।

३. सं० पा०—जह्हा वद्धमाणसामी नवरं नव-  
हत्थुस्सेहे ° (क, ख, गं, घ) ।

४. पु०—ओ० सू० १६ ।

५. ओ० सू० ५२ ।

६. सं० पा०—हट्ट जाव हियया ।

७. सं० पा०—करयल जाव एवं ।

८. सं० पा०—आइगरे जाव विहरइ ।

९. सं० पा०—हट्ट जाव हियया ।





अवभणुण्याया सगानी पागस्स अरह्हां यत्तिणं मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए ।

अहासुहं देवाणुप्पिए ! मा पडिवंधं करेहि ॥

२६. तए णं से काले गाहावई विउलं अणण-पाण-साइम-साइमं उववखडावेड, उववखडावेत्ता मित्त-नाइ-नियग-सयण-संवंधि-परियणं आमंतेइ, आमंतेत्ता तओ पच्छा ण्हाए जाव' विपुलेणं पुप्फ-वत्थ-गंध-मच्चालंकारेणं सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणत्ता तरशेव मित्त-नाइ-नियग-सयण-संवंधि-परियणस्स पुरओ कालिं दारियं सेयापीएहि कळगेहि ण्हावेड, ण्हावेत्ता सच्चालंकार-विभूसियं करेइ, करेत्ता पुरिसासहरसवाहिण सीयं दुह्हेइ, दुह्हेत्ता मित्तनाइ-नियग-सयण-संवंधि-परियणं सान्दि संपरिवुडे सच्चिद्विओ जाव' दुदुहि-निग्घोस-नाइयरवेणं आमलकणं नयारि मज्झमज्जेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छत्ता जेणेव अंवसालवणे चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छत्ता छत्ताईए तित्थगराइ-सए पासइ, पासित्ता सीयं ठवेइ, ठवेत्ता कालिं दारियं सीयाओ पच्चोख्हेइ' ॥

२७. तए णं तं कालिं दारियं अम्मापियरो पुरओ काउं जेणेव पासे अरहा पुरिसा-दाणीए तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता वंदंति नमंसेति, वंदित्ता नमं-सित्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! काली दारिया अहं धूया इट्ठा कंता जाव' उंवरपुप्फं पिव दुल्लहा सवणयाए, किमंग पुण पासणयाए ? एस णं देवाणुप्पिया ! संसारभउव्विग्गा इच्छइ देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडा भवित्ता' \*णं अगाराओ अणगारियं\* पव्वइत्तए । तं एयं णं देवाणुप्पियाणं सिस्सिणिभक्खं दलयामो । पडिच्छंतु णं देवाणुप्पिया ! सिस्सिणिभक्खं । अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिवंधं करेहि ॥

२८. तए णं सा काली कुमारी पासं अरहं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता उत्तर-पुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमइ, अवक्कमित्ता सयमेव आभरणमल्लालंकारं ओमुयइ, ओमुइत्ता सयमेव लीयं करेइ, करेत्ता जेणेव पासे अरहा पुरिसादाणीए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पासं अरहं तिवक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—आलित्ते णं भंते ! लोए'

१. ना० १।७।६ ।

२. ना० १।१।३३ ।

३. पच्चोख्हेइ (क, ख, ग, घ) ।

४. ना० १।१।१४५ ।

५. सं० पा०—भवित्ता जाव पव्वइत्तए ।

६. 'लोए' अतोये "एवं जहा देवाणंदा जाव"

समर्पणवाक्यमस्ति, किन्तु भगवतीसूत्रे (६।१५२) देवाणंदा-प्रकरणे समर्पितः पाठः संक्षिप्तोस्ति, तेन एतद्वाक्यं पाठान्तररूपेण स्वीकृतमस्माभिः । अस्य प्रुतिस्थलनिर्देशः प्रस्तुतसूत्रादेव कृतः ।



३६. तए णं सा काली अज्जा पुप्फचूलाए अज्जाए एयमट्टं नो आढाइ' •नो परियाणाइ° तुसिणीया संचिट्ठइ ॥

३७. तए णं ताओ पुप्फचूलाओ अज्जाओ कालि अज्जं अभिक्खणं-अभिवक्खणं हीलेंति निंदंति खिसंति गरहंति अवमन्न्ति अभिक्खणं-अभिवक्खणं एयमट्टं निवारंति ॥

### कालीए पुढोविहार-पदं

३८. तए णं तीसे कालीए अज्जाए समणीहिं निग्गंथीहिं अभिक्खणं-अभिवक्खणं हीलिज्जमाणीए जाव' निवारिज्जमाणीए इमेयारुवे अज्भत्तियए' •चित्तिए पत्तियए मणोगए संकप्पे° समुपपज्जित्था—जया णं अहं अगारमज्जे' वसित्वा तथा णं अहं सयंवसा, जप्पभिइं च णं अहं मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइया तप्पभिइं च णं अहं परवासां जाया । तं सयं खलु मम कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए' उट्टियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते पाडिक्कयं' उवस्सयं उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए' उट्टियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते पाडिक्कं उवस्सयं गेण्हइ । तत्थ णं अणिवारिया अणोहट्टिया सच्छंदमई अभिक्खणं - अभिवक्खणं हत्थे धोवेइ', •पाए धोवेइ, सीसं धोवेइ, मुहं धोवेइ, थणंतराणि धोवेइ, कक्खंतराणि धोवेइ, गुज्जंतराणि धोवेइ, जत्थ-जत्थ वि य णं ठाणं वा सेज्जं वा निसीहियं वा चेएइ, तं पुव्वामेव अन्भुक्खित्ता तओ पच्छा° आसयइ वा सयइ वा ॥

### कालीए मच्चु-पदं

३९. तए णं सा काली अज्जा पासत्था पासत्थविहारी ओसन्ना' ओसन्नविहारी कुसीला कुसीलविहारी अहाछंदा अहाछंदविहारी संसत्ता संसत्तविहारी वृहणि वासाणि सामण्णपरियागं पाउणइ, पाउणित्ता अद्धमासियाए संलेहणाए अप्पाणं भूसेइ, भूसेत्ता तीसं भत्ताइं अणसणाए छेएइ, छेएत्ता तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कंता' कालमासे कालं किच्चा चमरच्चं चाए रायहाणीए कालि-वडिसए भवणे उववायसभाए देवसयणिज्जंसि देवदूसंतरिया अंगुलस्स 'असंखेज्जाए भागमेत्ताए' श्रीगाहणाए कालीदेवित्ताए उववण्णा ॥

१. सं० पा०—आढाइ जाव तुसिणीया ।

एक्कयं (घ) ।

२. ना० २।१।३७ ।

८. पू०—ना० १।१।२४ ।

३. सं० पा०—अज्भत्तियए जाव समुपपज्जित्था ।

९. सं० पा०—धोवेइ जाव आसयइ ।

४. अगारवास० (ख, ग, घ) ।

१०. अपडिक्कंता (ख) ।

५. परव्वसा (क, ख, घ) ।

११. असंखेज्जाए० (ख); असंखेज्जाए भागमेत्ताए

६. पू०—ना० १।१।२४ ।

(ग); असंखेज्जाइ० (घ) ।

७. पाडिक्कं (क); पडिक्कयं (ख, ग); पाडि-



## वीञ्चं अज्भयणं

राई

४६. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं धम्मकहाणं पढमस्स वग्गस्स पढमज्जयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, विइयस्स णं भंते ! अज्भयणस्स समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' सपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?
४७. एवं खलु जंजू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नयरे गुणसिलए चेइए । सामी समोसढे । परिसा निग्गया जाव' पज्जुवासइ ॥
४८. तेणं कालेणं तेणं समएणं राई देवी चमरचंचाए रायहाणीए एवं जहा काली तहेव' आगया, नट्टविहि उवदंसित्ता पडिगया ॥
४९. भंतेति ! भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता पुव्वभवपुच्छा' ॥
५०. \*गोयमाति ! समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं आमंतेत्ता एवं वयासी०— एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं आमलकप्पा नयरी अंवसालवणे चेइए । जियसत्तू राया । राई गाहावई । राइसिरी भारिया । राई दारिया । पासस्स समोसरणं । राई दारिया जहेव काली तहेव' निक्खंता ॥
५१. \*तए णं सा राई अज्जा जाया' ॥
५२. तए णं सा राई अज्जा पुप्फचूलाए अज्जाए अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ' ॥

१,२. ना० १११७ ।

३. ओ० सू० ५२ ।

४. ना० २१११०-१२ ।

५. सं० पा०—पुव्वभवपुच्छा एवं । पू०—ना० २११३, १४ ।

६. ना० २१११८-३१ ।

७. सं० पा०—तहेव सरीरवाउसिया तं वेव सव्वं जाव अंतं ।

८. पू०—ना० २११३२ ।

९. पू०—ना० २११३३ ।



# पंचमो व्रगो

## पढमं अज्भयणं

### कमला

१. °जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं धम्मकहाणं वउत्तवस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, पंचमस्स णं भंते ! वग्गस्स समणेणं भगवया महावीरेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?
२. एवं खलु जंवू ! समणेणं भगवया महावीरेणं पंचमस्स वग्गस्स° वत्तीसं अज्भयणा पण्णत्ता, तं जहा—
१. कमला २. कमलप्पभा चेव, ३. उप्पत्ता य ४. सुदंसणा ।  
५. ह्ववई ६. वहुह्ववा, ७. सुह्ववा ८. सुभगावि य ॥१॥  
९. पुण्णा १०. वहुपुत्तिया' चेव, ११. उत्तमा १२. तारयावि' य ।  
१३. पउमा १४. वमुमई चेव, १५. कणगा १६. कणगप्पभा' ॥२॥  
१७. वड्ढेसा १८. केउमई चेव, १९. 'वइरसेणा २०. रइप्पिया' ।  
२१. रोहिणी २२. नवमिया चेव, २३. हिरी २४. पुप्फवईवि य ॥३॥  
२५. 'भुयगा २६. भुयगावई' चेव, २७ महाकच्छा २८. फुडा इय ।  
२९. सुघोसा ३०. विमला चेव, ३१. सुस्सरा य ३२. सरस्सई ॥४॥
३. °जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं धम्मकहाणं पंचमस्स वग्गस्स वत्तीसं अज्भयणा पण्णत्ता, पंचमस्स णं भंते ! वग्गस्स पढमज्भयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ? °
४. एवं खलु जंवू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे समोसरणं जाव' परिसा पज्जुवासइ ॥

१. सं० पा०—पंचम वग्गस्स उक्खेवओ । एवं खलु जंवू ! जाव वत्तीसं ।
२. वहुपुण्णिया (क, ख, घ) ।
३. भारियावि (क, घ) ।
४. रत्तणप्पभा (ठाणं ४।१६५) ।
५. रतिसेणा रतिप्पभा (ठाणं ४।१६७); रतिसेणा रइप्पिया (भ० १०;८६) ।
६. सुभगा सुभगावती (ख) ।
७. सं० पा०—उक्खेवेओ पढमज्भयणस्स ।
८. ओ० सू० ५२ ।





४. एवं खलु जंबू ! तेषां कालेण तेषां समएणं रायगिहे समोसरणं जाव' परिसा पज्जुवासइ ॥
५. तेषां कालेण तेषां समएणं सूरप्पभा देवी सूरसि' विमाणंसि सूरप्पभंसि सीहासणंसि । सेसं जहा कालीए, तहा', नवरं—पुव्वभवो अरखुरीए नयरीए सूरप्पभस्स गाहावइस्स सूरसिरीए भारियाए सूरप्पभा दारिया । सूरस्स अग्गमहिंसी । ठिई अद्धपलिओवमं पंचहिं वासगणहिं अट्ठमहिंयं । सेसं जहा कालीए ॥

### २-४ अज्जभयणाणि

६. एवं—●आयवा, अच्चिमाली, पभंकरा ° । सव्वाओ अरखुरीए नयरीए ॥

### अट्ठमो वग्गो

#### पढमं अज्जभयणं

#### चंदप्पभा

१. 'जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं धम्मकहाणं सत्तमस्स वग्गस्स अयमट्ठे पणत्ते, अट्ठमस्स णं भंते ! वग्गस्स समणेणं भगवया महावीरेणं के अट्ठे पणत्ते ?
२. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं अट्ठमस्स वग्गस्स ° चत्तारि अज्जभयणा पणत्ता, तं जहा—चंदप्पभा, दोसिणाभा, अच्चिमाली, पभंकरा ॥
३. '●जइणं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं धम्मकहाणं अट्ठमस्स वग्गस्स चत्तारि अज्जभयणा पणत्ता, अट्ठमस्स णं भंते ! वग्गस्स पढमज्जभयणस्स के अट्ठे पणत्ते ? °
४. एवं खलु जंबू ! तेषां कालेण तेषां समएणं रायगिहे समोसरणं जाव' परिसा पज्जुवासइ ॥
५. तेषां कालेण तेषां समएणं चंदप्पभा देवी चंदप्पभंसि विमाणंसि चंदप्पभंसि सीहासणंसि । सेसं जहा कालीए, नवरं—पुव्वभवो महुराए नयरीए भंडिवडंसए

१. ओ० सू० ५२ ।

२. रा० ५ सूत्रपद्धत्या अत्रापि 'सूरप्पभंसि' इति पाठो युज्यते ।

३. ना० २।१।१०-४४ ।

४. सं० पा०—एवं सेसाओवि ।

५. सं० पा०—अट्ठमस्स उक्खेवओ । एवं खलु जंबू जाव चत्तारि ।

६. सं० पा०—पढमज्जभयणस्स उक्खेवओ ।

७. ओ० सू० ५२ ।

८. ना० २।१।१०-४४ ।



६. एवं अट्टु वि अज्भयणा काली-भगएण नायव्वा, नवरं—सावत्थीए दोजणीओ । हत्थिणाउरे दोजणीओ । कं पिण्णपुरं दोजणीओ । साएण दोजणीओ । पडमे पियरो विजया मायराओ । सव्वाओ वि पासरस अंतियं पव्वइयाओ । रावकस्स अग्गमहिरीओ । ठिई सत्त पत्तिओवमाइं । महाविदेहे वारो अंतं काहिंति ॥

## दसमो वग्गो

### १-८ अज्भयणाणि

१. १०जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं धम्मकहाणं नवमस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, दसमस्स णं भंते ! वग्गस्स समणेणं भगवया महावीरेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?
२. एवं खलु जंजू ! समणेणं भगवया महावीरेणं दसमस्स वग्गस्स ० अट्टु अज्भयणा पण्णत्ता, तं जहा—

### संगहणी-गाहा

१. कण्हा य २. कण्हराई, ३. रामा तह ४. रामरक्खिया ।

५. वसू या ६. वसुगुत्ता ७. वसुमिक्ता ८. वसुंधरा चैव ईसाणे ॥१॥

३. १०जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं धम्मकहाणं दसमस्स वग्गस्स अट्टु अज्भयणा पण्णत्ता, दसमस्स णं भंते ! वग्गस्स पढमज्भयणस्स के अट्टे पण्णत्ते ? ०
४. एवं खलु जंजू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे समोसरणं जाव' परिसा पज्जुवासइ ॥
५. तेणं कालेणं तेणं समएणं कण्हा देवी ईसाणे कप्पे कण्हवडेंसए विमाणे सभाए सुहम्माए कण्हंसि सीहासणंसि, सेसं जहा कालीए ॥
६. एवं अट्टु वि अज्भयणा काली-भगएणं नायव्वा, नवरं—पुव्वभवो वाणारसीए नयरीए दोजणीओ । रायगिहे नयरे दोजणीओ । सावत्थीए नयरीए दोजणीओ । कोसवीए नयरीए दोजणीओ । रामे पिया धम्मा माया । सव्वाओ वि पासस्स अरहओ अंतिए पव्वइयाओ । पुप्फचूलाए अज्जाए सिस्सिणियत्ताए । ईसाणस्स

१. सं० पा०—दसमस्स उक्खेवओ । एवं खलु २. सं० पा०—पढमस्स उक्खेवओ ।  
जंजू जाव अट्टु । ३. ओ० सू० ५२ ।



१४. तस्स णं आणंदस्स गाहावडस्स सिवणंदा' नामं भारिया होत्था—अहीण'-  
 •पडिपुण्ण-पंचविद्यसारीरा नवसण-वज्जण-गुणोवयेया माणुम्माण-णमाण-  
 पडिपुण्ण-गुजाय-राव्वंग-गुंदरंगी रासि-सोमाकार-कंत-पिय-वसणा° सुहवा,  
 आणंदस्स गाहावडस्स उट्ठा, आणंदेणं गाहावडणा राद्धि अणुरत्ता अविरत्ता,  
 इट्ठे' •सह-करिस-रस-रुव-गंधे° पंचविहे माणुस्सए कामभोए पच्चणुभवमाणी  
 विहरइ ॥
१५. तस्स णं वाणियगामस्स नयरस्स वहिया उत्तरणुरित्थमे दिसीभाए, एत्थ णं  
 कोल्लाए' नामं सण्णिवेसे होत्था—रिद्धात्थमिए' जाव' पासादिए, दरिसणिज्जे  
 अभिरुवे पडिरुवे ॥
१६. तत्थ णं कोल्लाए सण्णिवेसे आणंदस्स गाहावडस्स बहुवे' मित्त-नाइ-नियग-  
 सयण-संबंधि-परिजणे परिवसइ—अट्ठे जाव' बहुजणस्स अपरिभूए ॥

### महावीर-समवसरण-पदं

१७. तेणं कात्रेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे' जाव' •जेणेव वाणियगामे  
 नयरे जेणेव दूइपलासाए चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरुव  
 ओगहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ° ॥
१८. परिसा निग्गया ॥
१९. कूणिए राया जहा, तथा जियसत्तू निग्गच्छइ जाव' पज्जुवासइ ॥
२०. तए णं से आणंदे गाहावई इमोसे कहाए लद्धट्ठे समाणे—“एवं खलु समणे"  
 •भगवं महावीरे" पुव्वाणुपुव्वि चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमागए  
 इह संपत्ते इह समोसडे इहेव वाणियगामस्स नयरस्स वहिया दूइपलासाए चेइए  
 अहापडिरुव ओगहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।"  
 तं महप्फलं खलु भो ! देवाणुप्पिया ! तहारूवाणं अरहंताणं भगवंताणं  
 णामगोयस्स वि सवणयाए, किमंग पुण अभिगमण-वंदण-णमंसण-पडिपुच्छण-  
 पज्जुवासणयाए ? एगस्सवि आरियस्स धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए, किमंग  
 पुण विउलस्स अट्ठस्स गहणयाए ? तं गच्छामि णं देवाणुप्पिया ! समणं

१. सिवानंदा (ख,घ) ।

२. सं० पा०—अहीण जाव सुहवा ।

३. सं० पा०—इट्ठे जाव पंचविहे ।

४. कोलाते (क,ग) ।

५. रिद्धित्थमिए (ख) ।

६. ओ० सू० १ ।

७. बहुवे (ग) ।

८. उवा० १।११ ।

९. सं० पा०—महावीरे जाव समोसरिए ।

१०. ओ० सू० १६, २२ ।

११. ओ० सू० ५३-६६ ।

१२. सं० पा०—समणे जाव विहरइ तं महा-

फलं गच्छामि णं जाव पज्जुवासामि ।

१३. पू०—ओ० सू० ५२ ।



- 'उदगररा घडेहि', अत्रसेसं सव्वं मज्जणविहिं पच्चवत्ताइ ।
- (७) तयाणंतरं च णं वत्थविहिपरिमाणं करेइ—'नन्नत्थ एगेण' 'भोमजुयत्तेण, अत्रसेसं सव्वं वत्थाविहिं पच्चवत्ताइ ।
- (८) तयाणंतरं च णं विलेवणविहिपरिमाणं करेइ—'नन्नत्थ अगरे'—'कुंमुम-चंदणमादिएहि', अत्रसेसं सव्वं विलेवणविहिं पच्चवत्ताइ ।
- (९) तयाणंतरं च णं पुष्कविहिपरिमाणं करेइ—'नन्नत्थ एगेण सुद्धपउमेणं मालइकुमुमदाभेणं वा, अत्रसेसं सव्वं पुष्कविहिं पच्चवत्ताइ ।
- (१०) तयाणंतरं च णं आभरणविहिपरिमाणं करेइ—'नन्नत्थ मट्टकण्णेज्जाएहि नाममुद्दाए य, अत्रसेसं सव्वं आभरणविहिं पच्चवत्ताइ ।
- (११) तयाणंतरं च णं धूवणविहिपरिमाणं करेइ—'नन्नत्थ अगरे'—'नुक्कक-धूवमादिएहि, अत्रसेसं सव्वं धूवणविहिं पच्चवत्ताइ ।
- (१२) तयाणंतरं च णं भोयणविहिपरिमाणं करेमाणे—
- (क) पेज्ज-विहिपरिमाणं करेइ—'नन्नत्थ एगाए कट्टेज्जाए, अत्रसेसं सव्वं पेज्जविहिं पच्चवत्ताइ ।
- (ख) तयाणंतरं च णं भक्खविहिपरिमाणं करेइ—'नन्नत्थ एगेहि घयपुण्णेहि खंडखज्जाएहि वा, अत्रसेसं सव्वं भक्खविहिं पच्चवत्ताइ ।
- (ग) तयाणंतरं च णं ओदणविहिपरिमाणं करेइ—'नन्नत्थ कलमसालि-ओदणेणं, अत्रसेसं सव्वं ओदणविहिं पच्चवत्ताइ ।
- (घ) तयाणंतरं च सूवविहिपरिमाणं करेइ—'नन्नत्थ कलायसूवेण' वा 'मुग्गसूवेण वा माससूवेण' वा अत्रसेसं सव्वं सूवविहिं पच्चवत्ताइ ।
- (ङ) तयाणंतरं च णं घयविहिपरिमाणं करेइ—'नन्नत्थ सारदिएणं गोघय-मंडेणं, अत्रसेसं सव्वं घयविहिं पच्चवत्ताइ ।
- (च) तयाणंतरं च णं सागविहिपरिमाणं करेइ—'नन्नत्थ वत्थुसाएण' वा तुंवसाएण वा सुत्थियसाएण' वा मंडुक्कियसाएण वा, अत्रसेसं सव्वं सागविहिं पच्चवत्ताइ ॥

१. उदगघडेहि (क) ।

२. नन्नत्थेक्केणं (क, ग) ।

३. अगुरु (क, घ) ।

४. °मातितेहि (क); माइतेहि (घ) ।

५. मालई ° (घ) ।

६. अगुरु (क, घ) ।

७. भक्खण ° (ख) ।

८. भक्खण ° (क, ख) ।

९. सूय ° (क, ग, घ) ।

१०. कालाय ° (क) ।

११. मुग्गमाससूवेण (क) ।

१२. वुसातेण (क); वत्थुसातेण (ग); चुच्चुसाएण

(घ) ।

१३. सुत्थिया ° (ग); सूवत्थिय ° (घ) ।





- पेयाला" जाणियव्वा, न समायरियव्वा, तं जहा — १. धंवे २. वहे ३. छविच्छेदे' ४. अतिभारे' ५. भत्तपाणवोच्छेदे' ॥
३३. 'तयाणंतरं च ण थूलयस्स मुसावायवेरमणस्स' समणोवासएणं 'पंच अतियारा' जाणियव्वा', न समायरियव्वा, तं जहा — १. सहसाभवखाणे' २. रहस्सभवखाणे' ३. 'सदारमंतभेए ४. मोसोवएसे' ५. कूडलेहकरणे' ॥"
३४. तयाणंतरं च णं थूलयस्स अदिण्णादाणवेरमणस्स समणोवासएणं पंच अतियारा जाणियव्वा, न समायरियव्वा, तं जहा — १. तेणाहूडे २. तक्करप्पओगे' ३. चिरुद्धरज्जातिवकमे ४. कूडतुल'—कूडमाणे ५. तप्पडिरुवगववहारे ॥
३५. तयाणतरं च णं सदारसंतोसोए समणोवासएणं पंच अतियारा जाणियव्वा, न समायरियव्वा, तं जहा — १. इत्तरियपरिग्गहियागमणे' २. अपरिग्गहियागमणे ३. अणंगकिहुा' ४. परवीवाहकरणे' ५. 'कामभोगे तिव्वाभिलासे' ॥
३६. तयाणंतरं च णं इच्छापरिमाणस्स समणोवासएणं पंच' अतियारा जाणियव्वा, न समायरियव्वा, तं जहा — १. खेत्तवत्पुपमाणातिवकमे २. हिरण्णसुवण्ण-पमाणातिवकमे ३. धणधण्णपमाणातिवकमे ४. दुपयचउप्पयपमाणातिवकमे ५. कुवियपमाणातिवकमे ॥

१. पंचतियारपेयाला (क), पंचतियारा पेयाला ११. वाचनान्तरे तु - कन्नालीयं, गवालीयं, भूमा-  
(घ) । लियं, नासावहारं, कूडसक्खेज्जं संधिकरणे ति  
२. °च्छेए (क,ख,घ) । पठ्यते । "आवश्यकादौ पुनरिमे स्थूलमृपा-  
३. अयि° (क), अइ° (ख,घ) । वादभेदा उक्ताः" ततोयमर्थः संभाव्यते—  
४. °वोच्छेए (क,ख); °वोच्छेए (घ) । एत एव प्रमादसहसाकाराज्जाभोगैरभिधीय-  
५. थूलगमुसावाय° (क,ग,घ) । माना मृपावादविरतेरतिचाराः भवन्त्याकुट्या  
६. पंचतियारा (क,ग,घ) । अस्मिन् सूत्रे तथा च भंगा इति (वृ) ।  
उत्तरवर्तिअतिचारसूत्रेषु 'पेयाला' शब्दः १२ तक्करपओगे (क,घ) ।  
साक्षात् लिखितो नास्ति । १३. कूडतुल्ल (घ) ।  
७. थूलगमुसावायस्स पंचविहे पण्णत्ते, तंजहा — १४. इत्तरिय° (क,ग) ।  
कण्णालियं, गोवालियं, भोमालियं, णासा- १५. °कीडा (ख,घ) ।  
वहारो, कूडसक्खेज्जं संधिकरणे । थूलगमुसा- १६. परविवाह° (क्व) ।  
वायस्स पंच अतियारा जाणियव्वा (ख) । १७. कामभोगे तिव्वाभिनिवेसे (क); कामभोएसु  
८. सहस्रभवखाणे (क) तिव्वाभिनिवेसे (ख) ।  
९. रहस्रभवखाणे (क); रहसाभवखाणे (ख,घ) । १८. इमे पंच (क) ।  
१०. मोसोवएसे सदारमंतभेए (क) ।



●चित्तमाणंदिया पीडमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-विसप्पमाणहियया करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलि कट्टु एवं सामि ! त्ति आणंदस्स समणोवासगस्स एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेइ ॥

४७. तए णं से आणंदे समणोवासए कोडुंविद्यपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो ! देवानुप्पिया ! लहुकरणजुत्त-जोइयं समखुरवालिहाण-सम-लिहियसिगएहिं जंबूणयामयकलावजुत्त-पडिविसिद्धएहिं रययामयघंट-सुत्तरज्जुग-वरकंचणखचियनत्थपग्गहोग्गहियएहिं नीलुप्पलकयामेलएहिं पवरगोणजुवाणएहिं नाणामणिकणग-घट्टियाजालपरिग्गं सुजायजुगजुत्त-उज्जुग-पसत्थसुविरइय-निम्मियं पवरलकखणोववेयं जुत्तामेव धम्मियं जाणप्पवरं उवट्टुवेह, उवट्टुवेत्ता मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह ॥

४८. तए णं ते कोडुंविद्यपुरिसा आणंदेणं समणोवासएणं एवं वुत्ता समाणा हट्टुट्टु-चित्तमाणंदिया पीडमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-विसप्पमाणहियया करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलि कट्टु एवं सामि ! त्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणेत्ति, पडिसुणेत्ता खिप्पामेव लहुकरणजुत्त-जोइयं जाव' धम्मियं जाणप्पवरं उवट्टुवेत्ता तमाणत्तियं पच्चप्पिणत्ति ॥

४९. तए णं सा सिवणंदा भारिया ण्हाया कयवलिकम्मा कय-कोउय-मंगलपायच्छित्ता सुद्धपावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवर परिहिया अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरा चेडियाचक्कवालपरिकिण्णा धम्मियं जाणप्पवरं दुरुहइ, दुरुहत्ता वाणियगामं नयरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव दूइपलासए चेइए तेणेवं उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धम्मियाओ जाणप्पवराओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहत्ता चेडियाचक्कवालपरिकिण्णा जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तिवखुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता णच्चासण्णे णाइदूरे सुस्सूसमाणा णमंसमाणा अभिमुहे विणएणं पंजलियडा° पज्जुवासइ ॥

५०. 'तए णं' समणे भगवं महावीरे सिवणंदाए तीसे य' महइमहालियाए' परिसाए जाव' धम्मं परिकहेइ' ॥

सिवणंदाए गिहिधम्म-पडिवत्ति-पदं

५१. तए णं सा सिवणंदा भारिया समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्टुट्टु°-●चित्तमाणंदिया पीडमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-

१. उवा० १।४७ ।

२. ततो (क, ख) ।

३. × (क) ।

४. महति° (क) ।

५. ओ० सू० ७१-७७ ।

६. कहेइ (क, ख, ग, घ) ।

७. सं० पा०—हट्टुट्टु जाव गिहिधम्मं ।



पलिओवमाइं ठिई पणत्ता' । तत्थ णं आणंदस्स वि समणोवासगस्स चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पणत्ता' [ भविस्सई ? ] ॥

### भगवओ जणवयविहार-पदं

५४. तए णं समणे भगवं महावीरे 'अण्णदा कदाइ' • वाणियगामाओ नयराओ दूइपलासाओ चेइयाओ पडिणिवखमइ, पडिणिवखमिक्का वहिया जणवयविहारं विहरइ ॥

### आणंदस्स समणोवासग-चरिया-पदं

५५. तए णं से आणंदे समणोवासए जाए—अभिगयजीवाजीवे • उवलद्धपुण्णपावे आसव-संवर-निज्जर-किरिया-अहिगरण-बंधमोक्खकुसले असहेज्जे, देवासुर-णाग-सुवण्ण-जक्ख-रक्खस-किण्णर-किपुरिस-गरुल-गंधव्व-महोरगाइएहि देव-गणेहि निग्गंथाओ पावयणाओ अणइक्कमणिज्जे, निग्गंथे पावयणे णिस्संकिए णिक्कंखिए निव्वित्तिगिच्छे लद्धट्टे गहियट्टे पुच्छियट्टे अभिगयट्टे विणिच्छियट्टे अट्टिमिजपेमाणुरागरत्ते, अयमाउसो ! निग्गंथे पावयणे अट्टे अयं परमट्टे सेसे अणट्टे ऊसियफल्लिहे अवंगुयदुवारे चियत्तंतेउर-परधरदार-प्पवेसे चाउट्टसट्टुद्धिट्ट-पुण्णमासिणीसु पडिपुण्णं पोसहं सम्मं अणुपानेत्ता समणे निग्गंथे फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-पडिग्गह-कंवल-पायपुंछणेणं ओसह-भेसज्जेणं पाडिहारिएण य पीढ-फलग-सेज्जा-संधारएणं पडिलाभे-माणे विहरइ ॥

### सिवणंदाए समणोवासिय-चरिया-पदं

५६. तए णं सा सिवणंदा भारिया समणोवासिया जाया—•अभिगयजीवाजीवा उवलद्धपुण्णपावा आसव-संवर-निज्जर-किरिया-अहिगरण-बंधमोक्खकुसला असहेज्जा, देवासुर-णाग-सुवण्ण-जक्ख-रक्खस-किण्णर-किपुरिस-गरुल-गंधव्व-महोरगाइएहि देवगणेहि निग्गंथाओ पावयणाओ अणइक्कमणिज्जा, निग्गंथे पावयणे णिस्संकिया णिक्कंखिया निव्वित्तिगिच्छा लद्धट्टा गहियट्टा पुच्छियट्टा अभिगयट्टा विणिच्छियट्टा अट्टिमिजपेमाणुरागरत्ता, अयमाउसो ! निग्गंथे

१. अतोयवतीं 'पणत्ता' पर्यन्तः पाठः अथ अनावश्यकः प्रतीयते, असौ चतुरशीतितमे सूत्रे प्रासंगिकोऽस्ति । किन्तु सर्वासु प्रतिपु कथमपि समागतसौ लभ्यते ।

२. पूर्ववाक्ये 'उववज्जिहिति' इति भविष्यत्कालीनं क्रियापदं युज्यते ।

३. सं० पा० — अण्णदा कदाइ वहिया जाव विहरइ । ०कयायि (क); अन्नया कयाइ (ख); अन्नया कयाइं (घ) ।

४. सं० पा०—अभिगयजीवाजीवे जाव पडि-लाभेमाणे ।

५. सं० पा०—जाया जाव पडिलाभेमाणी ।



'कोल्लाए सण्णिवेसे' नायकुलंसि' पोसहसालं पडिलेहिता, समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मपण्णत्ति उवसंपज्जित्ता णं विहरित्ताए—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं' •पाउप्पभायाए रयणीए जाव उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते ° विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं उवक्खडावेइ, उवक्ख-डावेत्ता मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परिजणं आमंतेइ, आमंतेत्ता ततो पच्छा ण्हाए' •कयवलिकम्मे कयकोउय-मंगल-पायाच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवर परिहिए ° अप्पमहग्घाभरणालं कियसरीरे भोयणवेलाए भोयण-मंडवंसि सुहासणवरगए, तेणं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परिजणेणं सद्धि तं विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं आसादेमाणे विसादेमाणे परिभाएमाणे परिभुंजेमाणे विहरइ । जिमियभुत्तुरागए णं आयंते चोक्खे परमसुद्धंभूए, तं मित्त'-•नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परिजणं विपुलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-गंधमल्लालंकारेण य सक्कारेइ सम्माणेइ, तस्सेव मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परिजणस्स ° पुरओ जेट्टपुत्तं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—एवं खलु पुत्ता ! अहं वाणियगामे नयरे व्हूणं' •जाव' आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, सयस्स वि य णं कुडुवस्स मेढी जाव' सव्वकज्जवड्ढावए, तं एतेणं वक्खेवेणं अहं नो संचाएमि समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्म-पण्णत्ति उवसंपज्जित्ता णं ° विहरित्ताए । तं सेयं खलु मम इदाणिं तुमं सयस्स कुडुवस्स मेढिं पमाणं आहारं आलं वणं चक्खुं ठावेत्ता', •तं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परिजणं तुमं च आपुच्छित्ता कोल्लाए सण्णिवेसे नायकुलंसि पोसहसालं पडिलेहिता समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मपण्णत्ति उवसंपज्जित्ता णं ° विहरित्ताए ॥

५. तए णं [से ?] जेट्टपुत्ते आणंदस्स समणोवासगस्स तह त्ति एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेत्ति ॥

५. तए णं से आणंदे समणोवासए तस्सेव मित्त'-•नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परिजणस्स ° पुरओ जेट्टपुत्तं कुडुवे" ठावेत्ति, ठावेत्ता एवं वयासी—मा णं

१. कोल्लागसण्णि ° (ग) ।

पुरओ ।

२. नातकुलंसि (ग) ।

६. सं० पा०—बहूणं राईसर जहा चितियं जाव विहरित्ताए ।

३. सं० पा०—कल्लं विउलं असणं । कल्लं विउलं तहेव जिमियभुत्तुरागए (क, ख) ।

७. उवा० १।१३ ।

४. सं० पा०—ण्हाए जाव अप्पमहग्घा ° ।

८. सं० पा०—ठावेत्ता जाव विहरित्ताए ।

५. सं० पा०—तं मित्त जाव विउलेणं पुप्फ ५ सक्कारेइ सम्माणेइ, रत्ता तस्सेव मित्त जाव

१०. सं० पा०—मित्त जाव पुरओ ।

११. कुडुवे (ग); कुडुवे (घ) ।





समयसि० धम्मजागरियं जागरमाणस्स अयं अज्झत्थियं चित्तिं पत्थियं  
मणोवाणं संकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं इमंणं' •एयाद्धेणं ओरालेणं  
विउलेणं पयत्तेणं पग्गहिणं तवोक्कम्मणं मुक्के लुगमे निम्मणे अट्ठिच्चम्मावणद्धे  
किड्ढिकिड्डियाभूणं किमे० धम्मणिसंतए जाणं । तं अत्थि ता' मे उट्ठाणे कम्मे  
वले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे सद्धा-धिइ-संवेगे, तं जावता मे अत्थि  
उट्ठाणे कम्मे वले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे सद्धा-धिइ-संवेगे, जाव 'य मे'  
धम्मायरिए धम्मोवएसए समणे भगवं महावीरे जिणे सुहत्थी विहरइ, तावता  
मे' सेयं कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव' उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि  
दिणयरे तेयसा-जलंते अपच्छिममारणंतियसंलेहणा-भूसणा-भूसियस्स भत्तपाण-  
पडियाइक्खियस्स, कालं अणवकंखमाणस्स विहरित्तए—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता  
कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा  
जलंते अपच्छिममारणंतिय'•संलेहणा-भूसणा-भूसिए भत्तपाण-पडियाइक्खिए०  
कालं अणवकंखमाणे विहरइ ॥

### आणंदस्स ओहिनाणुप्पत्ति-पदं

६६. तए णं तस्स आणंदस्स समणोवासगस्स अण्णदा कदाइ सुभेणं अज्झवसाणेणं,  
सुभेणं परिणामेणं, लेसाहि विसुज्झमाणीहि, तदावरणिज्जाणं कम्माणं  
खओवसमेणं ओहिणाणे समुप्पण्णे—पुरत्थिमे णं लवणसमुद्दे पंचजोयणसयाइ'  
खेत्तं जाणइ पासइ । "•दक्खिणे णं लवणसमुद्दे पंचजोयणसयाइ खेत्तं जाणइ  
पासइ । पच्चत्थिमे णं लवणसमुद्दे पंचजोयणसयाइ खेत्तं जाणइ पासइ० । उत्तरे  
णं जाव चुल्लहिमवंतं वासघरपव्वयं जाणइ पासइ । उड्ढं जाव सोहम्मं कप्पं  
जाणइ पासइ । अहे जाव इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए लोलुयच्चुत्तं" नरयं  
चउरासीतिवाससहस्सट्ठितियं जाणइ पासइ ॥

### गोयमस्स आगमण-पदं

६७. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे समोसरिए ॥  
६८. परिसा निग्गया जाव" पडिगया ॥

- |                                   |  |
|-----------------------------------|--|
| १. सं० पा०—इमेणं जाव धम्मणिसंतए । | ७. सुहेणं (क); सोभणेणं (ग) ।                 |
| २. जा (ग) ।                       | ८. ०समुद्दे ण (क) ।                          |
| ३. सयमेव (क) ।                    | ९. ०सतियं (क, ख); ०सइयं (ग) ।                |
| ४. णो (क) ।                       | १०. सं० पा०—एवं दक्खिणे णं पच्चत्थिमे णं च । |
| ५. उवा० ११५७ ।                    | ११. लोलुयं अच्चुत्तं (ख) ।                   |
| ६. सं० पा०—मारणंतियं जाव कालं ।   | १२. ओ० सू० ५२,७८-८० ।                        |



एवं वयासी—एवं खलु भंते ! अहं तुवभेहि अठ्ठमणुणाए<sup>१</sup> \*समाणे वाणियमाणे नयरे भिक्खायरियाए अठ्ठमाणे अहापज्जत्तं भत्तपाणं पडिग्गाहेमि, पडिग्गाहेत्ता वाणियगामाओ नयराओ पडिणिग्गच्छामि, पडिणिग्गच्छित्ता कोव्वायस्स सण्णिवेरास्स अदूरसामंतेणं वीईवयमाणे बहुजणसाहं निसामेमि । बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ, एवं भागइ, एवं पण्णवेइ, एवं परुवेइ—एवं खलु देवाणुप्पिया ! रामणस्स भगवओ महारवीस्स अंतेवासी आणदे नामं समणोवासए पोसहसालाए अपच्छिममारणंतियसंभेहणा-भूसणा-भूसिए भत्तपाण-पडियाइक्खिए कालं अणवकंखमाणे विहरइ ।

तए णं मम बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म अयमेयाक्खे अज्भत्तियए च्चितिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—तं गच्छामि णं आणदं समणोवासयं पासामि—एवं संपेहेमि, संपेहेत्ता जेणेव कोव्वाए सण्णिवेसे, जेणेव पोसहसाला, जेणेव आणदे समणोवासए तेणेव उवागच्छामि ।

तए णं से आणदे समणोवासए ममं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता हट्टुट्ठ-च्चित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाणहियए ममं वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी --एवं खलु भंते ! अहं इमेणं ओरालेणं विउलेणं पयत्तेणं परगहिएणं तवोकम्मणेणं सुक्के लुक्खे तिम्मंसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए किसे धमणिसंतए जाए, णो संचाएमि देवाणुप्पियस्स अंतियं पाउवभवित्ता णं तिकखुत्तो मुद्धाणेणं पादे [सु ?] अभिवंदित्तए । तुवभे णं भंते ! इच्छक्कारेणं अणभिओगेणं इओ चेव एह, जेणं देवाणुप्पियाणं तिकखुत्तो मुद्धाणेणं पादेसु वंदामि णमंसामि ।

तए णं अहं जेणेव आणदे समणोवासए, तेणेव उवागच्छामि । तए णं से आणदे समणोवासए ममं तिकखुत्तो मुद्धाणेणं पादेसु वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी—अत्थि णं भंते ! गिहिणो गिहमज्झावसंतस्स ओहिणाणे समुप्पज्जइ ?

हंता अत्थि ।

जइ णं भंते ! गिहिणो गिहमज्झावसंतस्स ओहिणाणे समुप्पज्जइ, एवं खलु भंते ! मम वि गिहिणो गिहमज्झावसंतस्स ओहिणाणे समुप्पण्णे—पुरत्थिमे णं लवणसमुद्धे पंचजोयणसयाइं खेत्तं जाणामि पासामि । दक्खिणे णं लवणसमुद्धे पंचजोयणसयाइं खेत्तं जाणामि पासामि । पच्चत्थिमे णं लवणसमुद्धे पंचजोयणसयाइं खेत्तं जाणामि पासामि । उत्तरे णं जाव चुल्लहिमवतं वासधरपव्वयं जाणामि पासामि । उड्ढं जाव सोहम्मं कप्पं जाणामि पासामि । अहे जाव

१. सं० पा०—अठ्ठमणुणाए तं चेव सव्वं कहेइ जाव ।



विउट्टइ विसोहइ अकरणयाए अबुट्टइ अहारिहं पायच्छितं तवोकम्मं०  
पडिवज्जइ, आणंदं च समणोवासायं एयमट्टं खाभेइ ॥

भगवओ जणवयविहार-पदं

८३. तए णं समणे भगवं महावीरे अण्णदा कदाइ वहिया जणवयविहारं विहरइ ॥

आणंदस्स समाहिमरण-पदं

८४. तए णं से आणंदे समणोवासाए वहुहिं सील-उवय-गुण-वेरमण-पच्चवखाण-पोसहोववासेहिं अप्पाणं भावेत्ता, वीसं वासाइं समणोवासागपरियागं पाउणित्ता, एक्कारस य उवासागपडिमाओ सम्मं काण्णं फासित्ता, मासियाए संलेहणाए अत्ताणं भूसित्ता, सट्ठि भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता, आलोइय-पडिवकत्ते, समाहिपत्ते, कालमासे कालं किच्चा, सोहम्मे कप्पे सोहम्मवडेंसगस्सं महा-विमाणस्स उत्तरपुरत्थिमे णं 'अरुणाभे विमाणे' देवत्ताए उववण्णे । तत्थ णं अत्थेगइयाणं देवाणं चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता । तत्थ णं आणंदस्स वि देवस्स चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

८५. आणंदे' णं भंते ! देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता कहिं गच्छिहिइ ? कहिं उववज्जिहिइ ? गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ वुज्झिहिइ मुच्चिहिइ सच्चदुक्खाणमंतं काहिइ ॥

निकखेव-पदं

८६. \*एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं उवासागदसाणं पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्टे पण्णत्ते ० ॥

१. जणवतं विहारं (घ) ।

२. अप्पाणं (ग) ।

३. भत्ताति (क, ग) ।

४. \*वडिसगस्स (घ) ।

५. अरुणे विमाणे (क); अरुणेहि विमाणेहि (ख) ।

६. तत्थ णं आणंदे (क) ।

७. ततो (ख) ।

८. देवलोगलोगाओ (क) ।

९. सं० पा--निकखेवो पढमस्स ।



६. तस्स णं कामदेवस्स गाहावइस्स भद्दा नामं भारिया होत्था-- अहीण-पडिपुण्ण-पंचिदियसरीरा जाव' माणुस्साए कामभोग्ग पच्चणुभवमाणी विहरइ ० ॥

### महावीर-समवसरण-पदं

७. 'तेणं कालेणं तेणं समाणं समणे भगवं महावीरे जाव' जेणेव चंपा नयरी, जेणेव पुण्णभद्दे चेइए, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता अहापडिक्खं ओग्गहं ओगिण्हिता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥
८. परिसा निग्गया ॥
९. कूणिए राया जहा, तथा जियसत्तू निग्गच्छइ जाव' पज्जुवासइ ॥
१०. तए णं से कामदेवे गाहावई इमीसे कहाए लद्धट्टे समाणे—“एवं खलु समणे भगवं महावीरे पुब्बाणुपुव्वि चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमागए इह संपत्ते इह समोसहे इहेव चंपाए नयरीए वहिया पुण्णभद्दे चेइए अहापडिक्खं ओग्गहं ओगिण्हिता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥” तं महप्फलं खलु भो ! देवाणुप्पिया ! तहारूवाणं अरहंताणं भगवंताणं णामगोयस्स वि सवणयाए, किमंग पुण्ण अभिगमण-वंदण-णमंसण-पडिपुच्छण-पज्जुवासणयाए ? एगस्स वि आरियस्स धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए, किमंग पुण्ण विउलस्स अट्टस्स गहणयाए ? तं गच्छामि णं देवाणुप्पिया ! समणं भगवं महावीरं वंदामि णमंसामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासामि—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता ण्हाए कयवलिकम्मि कय-कोउय-मंगल-पायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवर परिहिए अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरे सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता सकोरेंटमल्ल-दामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं मणुस्सवग्गुरापरिखित्ते पादविहारचारेणं चंपं नयरिं मज्झमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छिता जेणामेव पुण्णभद्दे चेइए, जेणेव समणे भगवं महावीरे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता समणं भगवं महावीरं त्तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ णमंसइ, वदित्ता णमंसित्ता णच्चासण्णे णाइदूरे सुस्सूसमाणे णमंसमाणे अभिमुहे विणएणं पंजलिउडे पज्जुवासइ ॥
११. तए णं समणे भगवं महावीरे कामदेवस्स गाहावइस्स तीसे य महइमहालियाए परिसाए जाव' धम्मं परिकहेइ ॥
१२. परिसा पडिगया, राया य गए ॥

१. उवा० १।१४।

३. ओ० सू० १६,२२।

२. सं० पा०--समोसरणं जहा आणवो तथा निग्गओ। तहेव सावयधम्मं पडिवज्जइ। सा चैव वत्तव्वया जाव जेइपुत्तं।

४. ओ० सू० ५३-६६।

५. ओ० सू० ७१-७७।





कंवल-पायपुच्छणेणं ओसाह-भेराज्जेणं पाडिहारिएण य पोढ-फलग-सेज्जा-संथार-  
एणं पडिलाभेगाणी विहरइ ॥

### कामदेवस्स धम्मजागरिया-पदं

१८. तए णं तस्स कामदेवस्स समणोवासगस्स उच्चावाएहिं सील-व्वय-गुण-वेरमण-  
पच्चवखाण-पोसहोववासेहिं अप्पाणं भावेमाणस्स चोद्दम संवच्छराइं वीइवकं-  
ताइं । पण्णरसमस्स संवच्छरस्स अंतरा वट्टमाणस्स अण्णदा कदाइ पुव्वरत्ता-  
वरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स इमेयाह्वे अज्झत्थिए चितिए  
पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं चंपाए नयरीए वहूणं  
जाव' आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, सयस्स वि य णं कुडुं वस्स मेढी जाव'  
सव्वकज्जवड्ढावए, तं एतेणं वक्खेवेणं अहं नो संचाएमि समणस्स भगवओ  
महावीरस्स अंतियं धम्मपण्णत्ति उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए' ॥

१९. तए णं से कामदेवे समणोवासए° जेट्टपुत्तं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संवंधि-  
परिजणं च आपुच्छइ, आपुच्छित्ता° सयाओ गिहाओ पडिणिकखमइ,  
पडिणिकखमित्ता चंपं नयारि मज्झमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव  
पोसहसाला, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोसहसालं पमज्जइ, पमज्जित्ता  
उच्चार-पासवणभूमिं पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता दव्वभसंथारयं संथरेइ, संथरेत्ता  
दव्वभसंथारयं दुरुहइ, दुरुहित्ता पोसहसालाए पोसहिए वंभयारी उम्मुवकमणि-  
सुवण्णे ववगयमालावण्णगविलेवणे निक्खित्तसत्थमुसले एगे अवीए दव्वभसंथारो-  
वगए° समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मपण्णत्ति उवसंपज्जित्ता णं  
विहरइ ॥

### कामदेवस्स पिसायरूव-कय-उवसग्ग-पदं

२०. तए णं तस्स कामदेवस्स समणोवासगस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि एगे देवे  
मायी मिच्छदिट्ठी' अंतियं पाउव्वभूए ॥

२१. तए णं से देवे एगं महं पिसायरूवं विउव्वइ । तस्स णं दिव्वस्स' पिसायरूवस्स  
इमे एयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते—सोसं से गोकिलंज-संठाण-संठियं', सालि-

१,२. उवा० ११३ ।

३. पू०—उवा० ११७-५६ ।

४. सं० पा०—आपुच्छित्ता जेणेव पोसहसाला  
तेणेव उवागच्छइ, २ ता जहा' आणंदो जाव  
समणस्स ।

५. मिच्छा० (क,घ) ।

६. देवस्स (ख,घ) ।

७. पुस्तकान्तरे विशेषणान्तरमुपलभ्यते—  
'विगयकप्पयनिभं', 'क्वचित्तु, 'वियडकोप्पर-  
निभं' (वृ) ।



संठाण-संठिया दो वि तरस ऊरु, 'अज्जुण-गुट्टं' व तरस जाणुइ कुडिल-कुडि-  
लाइं विगय-त्रीभत्स-दंसणाइं, जंघाओ नवसडीओ लोमेहि उवचियाओ, अहरी-  
संठाण-संठिया दो वि तरस पाया, अहरी-लोढ-संठाण-संठियाओ पाएसु अंगु-  
लीओ, सिप्पि-पुडसंठिया से नखा' ॥

२२. लडह-मडह-जाणुए', विगय-भग्ग-भुग्ग-भुग्ग', अयदालय-वयण-विवर-  
निल्लालियग्गजाहं', सरड-कयमालियाग, 'उंदुरमाला-परिणद-सुकयचिंवे,  
नउल'-कयकण्णपूरे, सप्प-कयवेगच्छे', अप्पोडंते, अभिगज्जंते, भीम-मुक्कट्ट-  
हासे', 'नाणाविह-पंचवण्णेहि लोमेहि उवचिए' एगं महं नीलुप्पल-गवलगुलिय-  
अयसिकुसुमप्पगासं खुरधार असि गहाय जेणव पोसहसाला, जेणव कामदेवे  
समणोवासए, तेणव उवागच्छइ, उवागच्छिता आसुरत्ते' रुट्टे कुविए चंडिकिए  
मिसिमिसीयमाणे कामदेवं समणोवासयं एवं वयासी—हभां ! कामदेवा !  
समणोवासया ! अप्पत्तियपत्तिया" ! दुरंतं"-पंत-लक्खणा ! हीणपुण्णचाउद्-  
सिया ! सिरि-हिरि-धिइ-कित्ति-परिवज्जिया ! धम्मकामया ! पुण्णकामया !  
सग्गकामया ! मोक्खकामया ! धम्मकंखिया ! पुण्णकंखिया ! सग्गकंखिया !  
मोक्खकंखिया ! धम्मपिवासिया ! पुण्णपिवासिया ! सग्गपिवासिया !  
मोक्खपिवासिया ! नो खलु कप्पइ तव देवाणुप्पिया ! सीलाइं" वयाइं वेरम-  
णाइं पच्चवखाणाइं पोसहोववासाइं चालित्तए वा खोभित्तए वा खंडित्तए वा  
भंजित्तए वा उज्झित्तए वा परिच्चइत्तए वा, तं जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं"  
•वयाइं वेरमणाइ पच्चवखाणाइं० पोसहोववासाइं न छड्डेसि" न भंजेसि",  
'तो ते'" अहं अज्ज इमेणं नीलुप्पल"-•गवलगुलिय-अयसिकुसुमप्पगासेण  
खुरधारेण० असिणा खंडाखांडि करेमि, जहा णं तुमं देवाणुप्पिया" ! अट्ट-दुहट्ट-

- |  |                                       |
|--|---------------------------------------|
| १. अज्जुणागुट्टं (क) ।   | ८. भीममुक्कअट्टट्टहासे (ख,घ) ।        |
| २. नक्खा (ग,घ) ।   | ९. × (क) ।                            |
| ३. जण्णुए (क) ।  | १०. आसुहंते (क) ।                     |
| ४. इह अन्यदपि विशेषणचतुष्टयं वाचनान्तरे तु<br>अभिधीयते—मसिमूसगमहिसकालए भरिय-<br>मेहवन्ने लंबोट्टे निगयदंते (वृ) ।            | ११. °पत्थया (क) ।                     |
| ५. निहालिय अग्गजीहे (ख) ।  | १२. दुरंतं ४ जाव परिवज्जिया (क,ग) ।   |
| ६. णेउल (क) ।  | १३. जं सीलाइं (क्व) ।                 |
| ७. पाठान्तरेण—सप्पकयवेगच्छे मूसगकयभूम-<br>लए विच्छुयकयवेगच्छे सप्पकयजणोवईए<br>अभिन्नमुहनयणनखवरवरघचित्तकत्तिनियंसणे<br>(वृ) । | १४. सं० पा०—सीलाइं जाव पोसहोववासाइं । |
|  | १५. छड्डेसि (ख); छंडेसि (घ) ।         |
|  | १६. भंजसि (क) ।                       |
|  | १७. तो ते (क,ग,घ); तो (ख) ।           |
|  | १८. सं० पा०—नीलुप्पल जाव असिणा ।      |
|  | १९. ×(क,ख) ।                          |



राणियं पच्चोरावकइ, पच्चोराविकता पोसहसालाओ पडिणिव्वमइ, पडिणिव्व-  
मिता दिव्वं पिसायरूवं विप्पजहट्टं, विप्पजहिता एमं महं दिव्वं हित्थिरूवं  
विउव्वइ—सत्तंगपइट्ठियं सम्मं संठियं गुजातं पुरतो' उदग्गं पिट्ठतो वराहं  
अयाकुच्छि अलं वकुच्छि' पलं व-लं वोदरा धरकरं अट्ठभुग्गय-मउल-मल्लिया-  
विमल-धवलदंतं कंचणकोशी-पविट्ठदंतं आणामिय'-चाव-ललिय-संवेल्लियग्ग-  
सोडं कुम्म-पडिपुण्णचलणं वीसत्तिनखं' अरलीण-पमाणजुत्तपुच्छं मत्तं मेहमिव  
गुलुगुलेंतं' मण-पवण-जइणवेगं—दिव्वं हित्थिरूवं विउव्वित्ता जेणेव पोसह-  
साला, जेणेव कामदेवे समणोवासाए, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता काम-  
देवं समणोवासयं एवं वयासी -हंभो ! कामदेवा ! समणोवासया !  
•अप्पत्थियपत्थिया ! दुरंत-पंत-लक्खणा ! हीणपुण्णचाउट्टसिया ! सिरि-हिरि-  
धिइ-कित्ति-परिवज्जिया ! धम्मकामया ! पुण्णकामया ! सग्गकामया !  
मोक्खकामया ! धम्मकंखिया ! पुण्णकंखिया ! सग्गकंखिया ! मोक्खकं-  
खिया ! धम्मपिवासिया ! पुण्णपिवासिया ! सग्गपिवासिया ! मोक्खपिवा-  
सिया ! नो खलु कप्पइ तव देवाणुप्पिया ! सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चवखाणाइं  
पोसहोववासाइं चालित्तए वा खोभित्तए वा खंडित्तए वा भंजित्तए वा उज्झि-  
त्तए वा परिच्चइत्तए वा, तं जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं  
पच्चवखाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि ° न भंजेसि, तो' तं 'अहं अज्ज'  
सोडाए गेण्हामि, गेण्हित्ता पोसहसालाओ नीणेमि, नीणेत्ता उड्डं वेहासं उव्वि-  
हामि, उव्विहित्ता तिव्खेहिं दंतमुसलेहिं पडिच्छामि, पडिच्छित्ता अहे धरणि-  
तलंसि तिव्खुत्तो पाएसु लोलेमि, जहा णं तुमं देवाणुप्पिया ! अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे  
अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥

२९. तए णं से कामदेवे समणोवासए तेणं दिव्वेणं हित्थिरूवेणं एवं वुत्ते समाणे  
अभीए" •अतत्थे अणुव्विग्गे अखुभिए अचलिए असंभंते तुसिणीए धम्मज्झाणो-  
वगए ° विहरइ ॥

३०. तए णं से दिव्वे हित्थिरूवे कामदेवं समणोवासयं अभीयं" •अतत्थं अणुव्विग्गे

- |  |  |
|--|--|
| १. विप्पहयंति (क) सर्वत्र; विप्पयहती (ग) सर्वत्र । | ७. गुलुगुलेंतं (घ)                           |
| २. पुरतो (क) ।                                     | ८. सं० पा०—समणोवासया तहेव भणइ जाव न भंजेसि । |
| ३. वसहं (ग) ।                                      | ९. × (क, ख, ग, घ) ।                          |
| ४. × (क, ग); अइया (अजिया) कुच्छी (ना० १।१।१५६) ।   | १०. अज्ज अहं (क, ख, ग, घ) ।                  |
| ५. अणोमिय (क) ।                                    | ११. सं० पा०—अभीए जाव विहरइ ।                 |
| ६. °नखं (ग) ।                                      | १२. सं० पा०—अभीयं जाव विहरमाणं ।             |



फडाडोवकरणदच्छं लोहागर-धम्ममाण-धमधमेतधोगं अणामत्रियदिव्वपनंढरीसं-  
दिव्वं सप्परूवं विउध्वत्ता जेणेव पोसहरात्ता, जेणेव कामदेवे समणोवासए,  
तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कामदेवं समणोवासयं एवं वयासी—हंभो !  
कामदेवा ! समणोवासया ! अप्पत्तियपत्तिया ! दुरंत-गंत-नक्खणा !  
हीणपुण्णचाउट्टसिया । सिरि-हिरि-धिय-कित्ति-परिवज्जिया ! धम्मकामया !  
पुण्णकामया ! सग्गकामया ! मोक्खकामया ! धम्मकंसिया ! पुण्णकंसिया !  
सग्गकंसिया ! मोक्खकंसिया ! धम्मपिवासिया ! पुण्णपिवासिया !  
सग्गपिवासिया ! मोक्खपिवासिया ! नो खलु कप्पइ तव देवाणुप्पिया !  
सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं चालित्तए वा खाभित्तए  
वा खडित्तए वा भजित्तए वा उज्जित्तए वा परिच्चइत्तए वा, तं जइ णं तुम  
अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छुट्टेसि० न  
भंजेसि, तो ते अज्जेव अहं सरसरस्स कायं दुरुहामि, दुरुहिता पच्छिमेणं  
भाएणं तिव्वखुत्तो गीवं वेढेमि, वेढित्ता तिव्वखाहिं विसपरिगताहिं दाढाहिं उरंसि  
चेव निकुट्टेमि, जहा णं तुमं देवाणुप्पिया ! अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव  
जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥

३५. तए णं से कामदेवे समणोवासए तेणं दिव्वेणं सप्परूवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए'  
•अतत्थे अणुच्चिग्गे अखुभिए अचलिए असंभंते तुसिणीए धम्मज्झाणोवगए'  
विहरइ ॥

३६. 'तए णं से दिव्वे सप्परूवे कामदेवं समणोवासयं अभीयं अतत्थं अणुच्चिग्गं  
अखुभियं अचलियं असंभंतं तुसिणीयं धम्मज्झाणोवगयं विहरमाणं पासइ,  
पासित्ता दोच्चं पि तच्चं पि एवं वयासी—हंभो ! कामदेवा । समणोवासया !  
जाव' जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं  
न छुट्टेसि न भंजेसि, तो ते अज्जेव अहं सरसरस्स कायं दुरुहामि, दुरुहिता  
पच्छिमेणं भाएणं तिव्वखुत्तो गीवं वेढेमि, वेढित्ता तिव्वखाहिं विसपरिगताहिं  
दाढाहिं उरंसि चेव निकुट्टेमि, जहा णं तुमं देवाणुप्पिया ! अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे  
अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥

३७. तए णं से कामदेवे समणोवासए तेणं दिव्वेणं सप्परूवेणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं  
वुत्ते समाणे अभीए जाव'० विहरइ ॥

१. सं० पा० — समणोवासया जाव न भंजेसि ।

२. भंजेसि (क,ग) ।

३. विसमपरिगताइं (क) ।

४. सं० पा०—अभीए जाव विहरइ ।

५. सं० पा०—सो वि दोच्चं पि तच्चं पि  
भणइ, कामदेवो वि जाव विहरइ ।

६. उवा० २।२२ ।

७. उवा० २।२३ ।





एवं सानु देवानुप्पिया ! सक्के देविदे देवराया' \*सज्जवाणां पुरंदरे सयनक  
 सहस्सकमे सभवं पागमासणे दाहिणद्धुवोमाहिंवे वत्तीस-विमाण-नायसहस्सा  
 हिंवे एरावणवाहणे सुरिरे अर्यंवर-नरथभरे श्रामदय-मालमउडे नव-हेम-नाय  
 चित्त-चंचल-कुंडल-गिनिहिज्जमाणगंटे भागुरदंठी पत्तंभवणमाने सोहम्मं  
 कप्पे सोहम्मवडंसाए विमाणे सभाए सोहम्मए० सक्कंसि सोहम्मणं  
 चउरासीईणं सामाणियनाहस्सीणं', \*नायत्तीसाए तावत्तीसगणं, चउण  
 लोगपालाणं, अट्टण्हं अग्गमहिंसीणं सपरिवाराणं, तिण्हं परिसाणं, सत्तण  
 अणियाणं, सत्तण्हं अणियाहिंवेणं, चउण्हं चउरासीणं आयस्सव-देवसाहस्सीणं०  
 अण्णंसि च बहूणं देवाण य देवीण य मज्जभाए एवमाइकएइ, एवं भासइ, ए  
 पण्णवेइ, एवं परुवेइ—एवं सानु देवा ! जंनुदीवे दीवे भारहे वासे चंपा  
 नयरीए कामदेवे समणोवासए पांसह्सात्ताए पोसहिंए वंभचारी' \*उम्मुक  
 मणिसुवण्णे ववगयमालावण्णगविलेवणं निगित्तसत्थमूसले एमे अवी  
 दव्भसंथारोवगए समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मपण्णत्ति  
 उवसंपज्जित्ता णं विहरइ । नो खनु से सक्के' केणइ देवेण वा 'दाणवेण वा'  
 जक्खेण वा रक्खसेण वा किन्तरेण वा किंपुरिसेण वा महोरगेण वा गंधव्वेण  
 वा निग्गंथाओ पावयणाओ चालित्तए वा खोभित्तए वा विपरिणामेत्तए वा ।  
 तए णं अहं सक्कस्स देविदस्स देवरण्णो एयमट्ठं असट्ठह्माणे अपत्तियमाणे  
 अरोएमाणे इहं हव्वमाणए । तं अहो णं देवानुप्पियाणं इड्डी जुई जसो वल  
 वीरियं पुरिसक्कार-परक्कमे 'लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए ।' तं दिट्ठा ण  
 देवानुप्पियाणं इड्डी' \*जुई जसो वलं वीरियं पुरिसक्कार-परक्कमे लद्धे पत्ते०  
 अभिसमण्णागए । तं खामेमि णं देवानुप्पिया ! खमंतु णं देवानुप्पिया !  
 खंतुमरिहंति' णं देवानुप्पिया ! नाइं भुज्जो करणयाए त्ति कट्ठु पायवडिए  
 पंजलिउडे' एयमट्ठं भुज्जो-भुज्जो खामेइ, खामेत्ता जामेव दिसं पाउव्भूए  
 तामेव दिसं पडिगए ॥

### कामदेवस्स पडिमा-पारण-पदं

४१. तए णं से कामदेवे समणोवासए निरुवसग्गमिति कट्ठु पडिमं पारेइ ॥

१. देवराया सतक्कतु जाव सक्कंसि (क); देव-  
 राया सतक्कत्तं जाव सक्कंसि (ग);  
 सं० पा०—देवराया जाव सक्कंसि ।
२. सं० पा०—साहस्सीणं जाव अण्णंसि ।
३. सं० पा०—वंभचारी जाव दव्भसंथारोवगए ।
४. सक्का (क, ख, ग, घ) ।
५. दाणवेण वा जा गंधव्वेण वा (क); दाणवेण  
 वा गंधव्वेण वा (ग) ।
६. लद्धा पत्ता अभिसमण्णागया (क्व) ।
७. सं० पा०—इड्डी जाव अभिसमण्णागए ।
८. \*मरुहंती (क) ।
९. पंजलियडे (क) ।



४४. तए णं समणे भगवं गहावीरे कामदेवस्स समणोवासयस्स तीसे य' •महइमहा-  
लियाए परिसाए जाव' धम्मं परिकहेइ ° ॥

भगवया कामदेवस्स उवसग्ग-वागरण-पदं

४५. कामदेवाइ ! समणे भगवं गहावीरे कामदेवं समणोवासयं एवं वयासी—से  
नूणं कामदेवा ! तुअं पुअरत्तावरत्तकालसमयंसि एगे देवे अतियं पाउअभूए ।  
तए णं से देवे एगं महं दिव्वं पिसायरूवं' विअव्वइ, विअव्वित्ता आसुरत्ते ष्टे  
कुविए चंडिकिए मिसिमिसीयमाणे एगं महं नीलुप्पल'-•गवलगुलिय-अयसि-  
कुसुमप्पगासं खुरधारं ° अंसि गहाय तुमं एवं वयासी हंभो ! कामदेवा !  
•समणोवासया ! जाव' जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खा-  
णाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि न भंजेसि, तो तं अज्ज अहं इमेणं नीलुप्पल-  
गवलगुलिय-अयसिकुसुमप्पगासेण खुरधारेण असिणा खंडाखंडि करेमि, जहा  
णं तुमं देवाणुप्पिया ! अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव ° जीवियाओ ववरो-  
विज्जसि ।

तुमं तेणं दिव्वेणं पिसायरूवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव' विहरसि ।

•तए णं से दिव्वे पिसायरूवे तुमं अभीयं जाव' पासइ. पासित्ता दोच्चं पि  
तच्चं पि तुमं एवं वयासी—हंभो ! कामदेवा ! समणोवासया ! जाव' जइ णं  
तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि  
न भंजेसि, तो तं अहं अज्ज इमेणं नीलुप्पल-गवलगुलिय-अयसिकुसुमप्पगासेण  
खुरधारेण असिणा खंडाखंडि करेमि, जहा णं तुमं देवाणुप्पिया ! अट्ट-दुहट्ट-  
वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ।

तए णं तुमे तेणं दिव्वेणं पिसायरूवेणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे  
अभीए जाव' विहरसि ।

तए ण से दिव्वे पिसायरूवे तुमं अभीयं जाव' पासइ, पासित्ता आसुरत्ते ष्टे  
कुविए चंडिकिए मिसिमिसीयमाणे तिवलियं भिउडि निडाले साहट्टु तुमं

- 
- |   |                                       |
|---|---------------------------------------|
| १. सं० पा० — तीसे य जाव धम्म कहा सम्मत्ता । | ८. सं० पा० — एवं वण्णगरहिया तिण्णि वि |
| २. ओ० सू० ७१-७७ ।                           | उवसग्गा तहेव पडिउच्चारयेव्वा जाव देवो |
| ३. पिसातरूवं (ग) ।                          | पडिग्गओ ।                             |
| ४. सं० पा०—नीलुप्पल जाव अंसि ।              | ९. उवा० २।२४ ।                        |
| ५. सं० पा०—कामदेवा जाव जीवियाओ ।            | १०. उवा० २।२२ ।                       |
| ६. उवा० २।२२ ।                              | ११. उवा० २।२३ ।                       |
| ७. उवा० २।२३ ।                              | १२. उवा० २।२४ ।                       |



तए णं तुमे तं उज्जलं जाव' वेयणं सम्मं सहसि खमसि तितिकखसि अहियासेसि ।  
 तए णं से दिव्वे हत्थियस्सवे तुमं अभीयं जाव' पासइ, पासित्ता जाहे नो संचाएति  
 निग्गंथाओ पावयणाओ नालित्तए वा खोभित्तए वा विपरिणामित्तए वा, ताहे  
 संते तंते परित्तंते सणियं-सणियं पच्चोसवकइ, पच्चोराविकत्ता पोसहसालाओ  
 पडिणिवखमइ, पडिणिवग्गमित्ता दिव्वं हत्थियस्सवं विप्पजहइ, विप्पजहिता एणं  
 महं दिव्वं सप्परूवं विउव्वइ, विउव्वित्ता जेणेव पोसहसाला, जेणेव तुमं, तेणेव  
 उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तुमं एवं वयासी--हंभो ! कामदेवा ! समणोवा-  
 सया ! जाव' जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं  
 पोसहोववासाइं न छट्ठेसि न भंजेसि, तो ते अज्जेव अहं सरसरस्स कायं दुरुहामि,  
 दुरुहिता पच्छिमेणं भाएणं तिकखुत्तो गीवं वेढेमि, वेढित्ता तिकखाहिं विसपरि-  
 गताहिं दाढाहिं उरंसि चेव निकुट्टेमि, जहा णं तुमं देवाणुप्पिया ! अट्ट-दुहट्ट-  
 वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ।

तए णं तुमे तेणं दिव्वेणं सप्परूवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव' विहरसि ।  
 तए णं से दिव्वे सप्परूवे तुमं अभीयं जाव' पासइ, पासित्ता दोच्चं पि तच्चं पि  
 तुमं एवं वयासी--हंभो ! कामदेवा ! समणोवासया ! जाव' जइ णं तुमं  
 अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छट्ठेसि न  
 भंजेसि, तो ते अज्जेव अहं सरसरस्स कायं दुरुहामि, दुरुहिता पच्छिमेणं  
 भाएणं तिकखुत्तो गीवं वेढेमि, वेढित्ता तिकखाहिं विसपरिगताहिं दाढाहिं  
 उरंसि चेव निकुट्टेमि, जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ  
 ववरोविज्जसि ।

तए णं तुमे तेणं दिव्वेणं सप्परूपेणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे अभीए  
 जाव' विहरसि ।

तए णं से दिव्वे सप्परूवे तुमं अभीयं जाव' पासइ, पासित्ता आसुरत्ते छुं  
 कुविए चंडिकिए मिसिमिसीयमाणे तुव्वं सरसरस्स कायं दुरुहइ, दुरुहिता  
 पच्छिमेणं भाएणं तिकखुत्तो गीवं वेढेइ, वेढित्ता तिकखाहिं विसपरिगताहिं  
 दाढाहिं उरंसि चेव निकुट्टेइ ।

तए णं तुमे तं उज्जलं जाव' वेयणं सम्मं सहसि खमसि तितिकखसि अहियासेसि ।  
 तए णं से दिव्वे सप्परूवे तुमं अभीयं जाव' पासइ, पासित्ता जाहे नो संचाएइ

१. उवा० २।२७ ।
२. उवा० २।२४ ।
३. उवा० २।२२ ।
४. उवा० २।२३ ।
५. उवा० २।२४ ।

६. उवा० २।२२ ।
७. उवा० २।२३ ।
८. उवा० २।२४ ।
९. उवा० २।२७ ।
१०. उवा० २।२४ ।

1  
2  
3

अहियासेति, सबका पुणाइं अज्जो ! समणेहि निग्गंथेहि दुवालसंगं गणिपिडं  
अहिज्जमाणेहि दिव्व-माणुस-तिरिक्खजोणिए उवसग्गे सम्मं सहित्तए<sup>१</sup> \*खमि-  
त्तए तित्तिक्खित्तए ° अहियासित्तए ॥

४७. ततो ते बह्वे समणा निग्गंथा य निग्गंथीओ य समणस्स भगवओ महावीरस्स  
तह त्ति एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेंति ॥

कामदेवस्स पडिगमण-पदं

४८. तए णं से कामदेवे समणोवासए हट्ठुट्ठ<sup>१</sup> - \*चित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमण-  
स्सिए हरिसवस-विसप्पमाणहियए ° समणं भगवं महावीरं पसिणाइं पुच्छइ,  
अट्ठमादियइ, समणं भगं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ,  
करेत्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता जामेव दिसं पाउट्ठभूए, तामेव दिसं  
पडिगए ॥

भगवओ जणवयविहार-पदं

४९. तए णं समणे भगवं महावीरे अण्णदा कदाइ चंपाओ नयरीओ पडिणिक्खमइ,  
पडिणिक्खमित्ता वहिया जणवयविहारं विहरइ ॥

कामदेवस्स उवासगपडिमा-पडिवत्ति-पदं

५०. तए<sup>१</sup> णं से कामदेवे समणोवासए पढमं उवासगपडिमं उवसंपज्जित्ता णं  
विहरइ<sup>२</sup> ॥

५१. \*तए णं से कामदेवे समणोवासए पढमं उवासगपडिमं अहासुत्तं अहाकप्पं  
अहामग्गं अहातच्चं सम्मं काएणं फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ कित्तेइ आराहेइ ॥

५२. तए णं से कामदेवे समणोवासए दोच्चं उवासगपडिमं, एवं तच्चं, चउत्थं,  
पंचमं, छट्ठं, सत्तमं, अट्ठमं, नवमं, दसमं, एककारसमं उवासगपडिमं अहासुत्तं  
अहाकप्पं अहामग्गं अहातच्चं सम्मं काएणं फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ कित्तेइ  
आराहेइ ॥

५३. तए णं से कामदेवे समणोवासए इमेणं एयारूवेणं ओरालेणं विउलेणं पयत्तेणं  
पग्गहिएणं तवोकम्मेणं सुक्के लुक्खे निम्मसे अट्ठिच्चम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए  
किसे धमणिसंतए जाए ॥

कामदेवस्स अणसण-पदं

५४. तए णं तस्स कामदेवस्स समणोवासयस्स अण्णदा कदाइ पुव्वरत्तावरत्तकाल-

१. सं० पा०—सहित्तए जाव अहियासित्तए ।

३. तओ (क, ग, घ) ।

२. सं० पा०—हट्ठुट्ठ जाव समण ।

४. सं० पा०—विहरइ तएणं ।





अहियासेति, रावका पुणाइं अज्जो ! समणेहिं निग्गंथेहिं दुवालसंगं गणिपिडं  
अहिज्जमाणेहिं दिव्व-माणुस-तिरिक्खजोणिए उवसग्गे सम्मं सहित्तए<sup>१</sup> •खमि-  
त्तए तित्तिक्खत्तए ° अहियासित्तए ॥

४७. ततो ते बहवे समणा निग्गंथा य निग्गंथीओ य समणस्स भगवओ महावीरस्स  
तह त्ति एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेंति ॥

### कामदेवस्स पडिगमण-पदं

४८. तए णं से कामदेवे समणोवासए हट्ठतुट्ठ<sup>१</sup>-•चित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमण-  
स्सिए हरिसवस-विसप्पमाणहियए ° समणं भगवं महावीरं पसिणाइं पुच्छइ,  
अट्टमादियइ, समणं भगं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ,  
करेत्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता जामेव दिसं पाउट्ठभूए, तामेव दिसं  
पडिगए ॥

### भगवओ जणवयविहार-पदं

४९. तए णं समणे भगवं महावीरे अण्णदा कदाइ चंपाओ नयरीओ पडिणिवक्खमइ,  
पडिणिवक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ ॥

### कामदेवस्स उवासगपडिमा-पडिवत्ति-पदं

५०. तए<sup>१</sup> णं से कामदेवे समणोवासए पढमं उवासगपडिमं उवसंपज्जित्ता णं  
विहरइ<sup>२</sup> ॥

५१. •तए णं से कामदेवे समणोवासए पढमं उवासगपडिमं अहासुत्तं अहाकप्पं  
अहामग्गं अहातच्चं सम्मं काएणं फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ कित्तेइ आराहेइ ॥

५२. तए णं से कामदेवे समणोवासए दोच्चं उवासगपडिमं, एवं तच्चं, चउत्थं,  
पंचमं, छट्ठं, सत्तमं, अट्ठमं, नवमं, दसमं, एक्कारसमं उवासगपडिमं अहासुत्तं  
अहाकप्पं अहामग्गं अहातच्चं सम्मं काएणं फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ कित्तेइ  
आराहेइ ॥

५३. तए णं से कामदेवे समणोवासए इमेणं एयारूवेणं ओरालेणं विउलेणं पयत्तेणं  
पग्गहिएणं तवोकम्मेणं सुक्के लुक्खे निम्मसे अट्ठिच्चम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए  
किसे धमणिसंतए जाए ॥

### कामदेवस्स अणसण-पदं

५४. तए णं तस्स कामदेवस्स समणोवासयस्स अण्णदा कदाइ पुव्वरत्तावरत्तकाल-

१. सं० पा०—सहित्तए जाव अहियासित्तए ।

३. तओ (क, ग, घ) ।

२. सं० पा०—हट्ठतुट्ठ जाव समण ।

४. सं० पा०—विहरइ तएणं ।



## तइयं अज्भयण

### चुलणीपिता

#### उक्खेव-पदं

१. '०जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं सत्तमस्स अंगस्स उवासगदसाणं दोच्चस्स अज्भयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, तच्चस्स णं भंते ! अज्भयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ? ०

#### चुलणीपियगाहावइ-पदं

२. एवं खलु जंढू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं वाणारसी नामं नयरी । कोट्टए चेइए । जियसत्तू राया ॥
३. '०तत्थ णं वाणारसीए नयरीए चुलणीपिता' नामं गाहावई परिवसइ—अइढे जाव' बहुजणस्स अपरिभूए ॥
४. तस्स णं चुलणीपियस्स गाहावइस्स अट्ठ हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ अट्ठ हिरण्णकोडीओ वड्ढिपउत्ताओ, अट्ठ हिरण्णकोडीओ पवित्थरपउत्ताओ अट्ठ वया दसगोसाहस्सिएणं वएणं होत्था ॥
५. से णं चुलणीपिता गाहावई वड्ढणं जाव' आपुच्छणिज्जे, पडिपुच्छणिज्जे सयस्स वि य ण कुडुं वस्स मेढी जाव' सव्वकज्जवड्ढावए यावि होत्था ॥

१. सं० पा०—उक्खेवो ।

२. ना० १।१।७ ।

३. क्वचित् कोष्ठकं चैत्यमधीतं क्वचिन्महा-  
कामधनमिति (वृ) ।

४. सं० पा०—तत्थ णं वाणारसीए चुलणीपिया  
नामं गाहावई परिवसई अइढे सामा भारिया  
अट्ठ हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ अट्ठ

वड्ढिय ० अट्ठ पवित्थरप ० । अट्ठ वया दसगो-  
साहस्सिएणं वएणं जहा आणदो ईसर जाव  
सव्वकज्जवड्ढावए यावि होत्था ।

५. चुलणीपिता (ग, घ) ।

६. उवा० १।११ ।

७, ८. उवा० १।१३ ।



११. तए णं समणे भगवं महावीरे चुलणीपियस्स गाहावईस्स तीसि य महइमहा-  
लियाए परिसाए जाव' धम्मं परिकहेइ ॥

१२. परिसा पडिगया, राया य गए ॥

चुलणीपियस्स गिहिधम्म-पडिवत्ति-पदं

१३. तए ण से चुलणीपिता गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए वम्मं  
सोच्चा निसम्म हट्टतुट्ट-चित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-  
विसप्पमाणहियए उट्टाए उट्टेइ, उट्टेत्ता समणं भगवं महावीरं तिवकुत्तो आया-  
ह्णिण-पयाह्णिणं करेइ, करेत्ता वंदइ णमंसइ, वदित्ता णमंसित्ता एव वयासी—  
सट्टहामि णं भते ! निग्गथं पावयणं, पत्तियामि णं भंते ! निग्गथं पावयणं,  
रोएमि णं भंते ! निग्गथं पावयणं, अब्भुट्टेमि णं भंते ! निग्गथं पावयणं ।  
एवमेयं भंते ! तहमेयं भंते ! अविहमेयं भंते ! असदिद्धमेयं भंते ! इच्छिय-  
मेयं भंते ! पडिच्छियमेयं भंते ! इच्छिय-पडिच्छियमेयं भंते ! से जहेयं  
तुव्भे वदह । जहा णं देवाणुप्पियाणं अंतिए वट्टे राईसर-त्तलवर-माडविय-  
कोडुविय-इवभ-सेट्टि-सेणावइ-सत्थवाहएप्पभिइया मुंडा भवित्ता अगाराओ  
अणगारियं पव्वइया, नो खलु अहं तथा संचाएमि मुंडे भवित्ता अगाराओ  
अणगारियं पव्वइत्तए । अहं णं देवाणुप्पियाणं अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खा-  
वइयं—दुवालसविहं सावगधम्मं पडिवज्जिस्सामि ।

अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिवंधं करेहि ॥

१४. तए णं से चुलणीपिता गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए' सावय-  
धम्मं पडिवज्जइ ॥

भगवओ जणवयविहार-पदं

१५. तए णं समणे भगवं महावीरे अण्णदा कदाइ वाणारसीए नयरीए कोट्टयाओ  
चेइयाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता वहिया जणवयविहारं विहरइ ॥

चुलणीपियस्स समणोवासग-चरिया-पदं

१६. तए णं से चुलणीपिता समणोवासए जाए—अभिगयजीवाजीवे जाव' समणे  
निग्गथे फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-पडिग्गह-कंवल-  
पायपुंछणेणं ओसह-भेसज्जेणं पाडिहारिएण य पीढ-फलग-सेज्जा-संधारएणं  
पडिलाभेमाणे विहरइ ॥

१. ओ० सू० ७१-७७ ।

३. उवा० ११५५ ।

२. पू०—उवा० ११२४-५३ ।



सोणिएण य आइंचामि, जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥

३०. तए णं से चुलणीपिया समणोवासए तेणं देवेणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव' विहरइ ॥

३१. तए णं से देवे चुलणीपियं समणोवासयं अभीयं जाव' पासइ, पासित्ता आसुरत्ते रुट्टे कुविए चंडिविकए मिसिमिसीयमाणे चुलणीपियस्स समणोवासयस्स मज्झिमं पुत्त गिहाओ नीणेइ, नाणेत्ता अग्गओ घाएइ, घाएत्ता तओ मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अट्टहेइ, अट्टहेत्ता चुलणीपियस्स समणोवासयस्स गायं मसेण य सोणिएण य आइंचइ ॥

३२. तए णं से चुलणीपिता समणोवासए तं उज्जलं जाव' वेयणं सम्मं सहइ खमइ तितिवखइ अहियासेइ ॥

### ० कणीयसपुत्त

३३. तए णं से देवे चुलणीपियं समणोवासयं अभीयं जाव' पासइ, पासित्ता चुलणीपियं समणोवासयं एवं वयासी—हंभो ! चुलणीपिता ! समणोवासया ! जाव' जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छट्टेसि न भंजसि, तो ते अहं अज्ज कणीयसं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता तओ मंससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अट्टहेमि, अट्टहेत्ता तव गायं मसेण य सोणिएण य आइंचामि, जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥

३४. तए णं से चुलणीपिता समणोवासए तेणं देवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव' विहरइ ॥

३५. तए णं से देवे चुलणीपियं समणोवासयं अभीयं जाव' पासइ, पासित्ता दोच्चं पि तच्चं पि चुलणीपियं समणोवासयं एवं वयासी—हंभो ! चुलणीपिता ! समणोवासया ! जाव' जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छट्टेसि न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज कणीयसं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता तओ मंससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अट्टहेमि, अट्टहेत्ता तव गायं मसेण

१. उवा० २।२३ ।

२. उवा० २।२४ ।

३. उवा० २।२७ ।

४. उवा० २।२४ ।

५. उवा० २।२२ ।

६. उवा० २।२३ ।

७. उवा० २।२४ ।

८. उवा० २।२२ ।





तए णं अहं तेणं पुरिसेणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव' विहरामि ।

तए णं से पुरिसे ममं अभीयं जाव' पासइ, पासित्ता आसुरत्ते रुहे कुविए चंडिविकए मिसिमिसीयमाणे ममं जेट्टपुत्तं गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता मम अगगओ घाएइ, घाएत्ता तओ मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्देइ, अद्देत्ता ममं गायं मंसेण य सोणिएण य० आइंचइ ।

तए णं अहं तं उज्जलं \*जाव' वेयणं सम्मं सहामि खमामि तितिवखामि० अहियासेमि ।

\*एवं मज्झिमं पुत्तं जाव' वेयणं सम्मं सहामि खमामि तितिवखामि अहियासेमि ।

एवं कणीयसं पुत्तं जाव' वेयणं सम्मं सहामि खमामि तितिवखामि० अहियासेमि ।

तए णं से पुरिसे ममं अभीयं जाव' पासइ, पासित्ता ममं चउत्तं पि एवं वयासी—हंभो ! चुलणीपिया ! समणोवासया ! जाव" \*जइ णं तुमं अज्ज सोलाई वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छुहेसि० न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज जा इमा माया देवतं गुरु"—जणणी दुक्कर-दुक्करकारिया, तं साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अगगओ घाएमि, घाएत्ता तओ मंससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्देमि, अद्देत्ता तव गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचामि, जहा णं तुम अट्ट-दुहट्ट-वसट्ट अकाले चेव जोवियाओ० ववरोविज्जसि ।

तए णं अहं तेणं पुरिसेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव" विहरामि ।

तए णं से पुरिसे ममं अभीयं जाव" पासइ, पासित्ता दोच्चं पि तच्चं पि ममं एवं वयासी—हंभो ! चुलणीपिया ! समणोवासया ! जाव" जइ णं तुमं अज्ज" \*सीलाई वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छुहेसि नं

१. उवा० २।२३ ।

२. उवा० २।२४ ।

३. सं० पा०—उज्जलं जाव अहियासेमि ।

४. उवा० २।२७ ।

५. सं० पा०—एवं तहेव उच्चारेयव्वं सव्वं जाव कणीयसं जाव आइंचइ । अहं तं उज्जलं जाव अहियासेमि ।

६. उवा० ३।२७-३२ ।

७. उवा० ३।३३-३८ ।

८. उवा० २।२४ ।

९. सं० पा०—समणोवासया अप्पत्थियपत्थिया जाव न भंजेसि ।

१०. उवा० २।२२ ।

११. सं० पा०—गुरु जाव ववरोविज्जसि ।

१२. उवा० २।२३ ।

१३. उवा० २।२४ ।

१४. उवा० २।२२ ।

१५. सं० पा०—अज्ज जाव ववरोविज्जसि ।



निदइ गरिहइ विउट्टइ विसोहेइ अकरणमाए अठभुट्टेइ अहारिहं पायच्छितं  
तवोकम्मं ° पडिवज्जइ ॥

### चुलणीपियस्स उवासगपडिमा-पदं

४७. तए णं से चुलणीपिता समणोवासाए पढमं उवासगपडिमं उवसंपज्जिता णं  
विहरइ ॥
४८. °तए णं से चुलणीपिता समणोवासाए पढमं उवासगपडिमं अहामुत्तं अहाकप्पं  
अहामग्गं अहातच्चं सम्मं काएणं फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ कित्तेइ आराहेइ ॥
४९. तए णं से चुलणीपिता समणोवासाए दोच्चं उवासगपडिमं, एवं तच्चं, चउत्थं,  
पंचमं, छट्ठं, सत्तमं, अट्ठमं, नवमं, दसमं एक्कारसमं उवासगपडिमं अहामुत्तं  
अहाकप्पं अहामग्गं अहातच्चं सम्मं काएणं फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ कित्तेइ  
आराहेइ ° ॥
५०. तए णं से चुलणीपिता समणोवासाए तेणं 'ओरालेणं' °विउलेणं पयत्तेणं  
पग्गहिएणं तवोकम्मेणं सुक्के लुक्खे निम्मंसे अट्टिचम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए  
किसे धमणिसंतए जाए ॥

### चुलणीपियस्स अणसण-पदं

५१. तए णं तस्स चुलणीपियस्स समणोवासगस्स अण्णदा कदाइ पुव्वरत्तावरत्तकाल-  
समयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स अयं अज्झत्थिए चित्तिए पत्थिए मणोगए  
संकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं इमेणं एयारूवेणं ओरालेणं विउलेणं  
पयत्तेणं पग्गहिएणं तवोकम्मेणं सुक्के लुक्खे निम्मंसे अट्टिचम्मावणद्धे किडि-  
किडियाभूए किसे धमणिसंतए जाए । तं अत्थि ता मे उट्टाणे कम्मे वले वीरिए  
पुरिसक्कार-परक्कमे सद्धा-धिइ-संवेगे, तं जावता मे अत्थि उट्टाणे कम्मे वले  
वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे सद्धा-धिइ-संवेगे, जाव य मे धम्मायरिए  
धम्मोवएसए समणे भगवं महावीरे जिणे सुहत्थी विहरइ, तावता मे सेयं कल्लं  
पाउप्पभायाए रयणीए जाव उट्टियम्मि सूरे सहस्सरंस्सिम्मि दिणयरे तेयसा  
जलंते अपर्च्छिममारणंतियसंलेहणा-भूसणा-भूसियस्स भत्तपाण-पडियाइक्खि-  
यस्स, कालं अणवकंखमाणस्स विहरित्तए—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं  
पाउप्पभायाए रयणीए जाव उट्टियम्मि सूरे सहस्सरंस्सिम्मि दिणयरे तेयसा

१. सं० पा०—पढमं उवासगपडिमं अहामुत्तं ४  
जहा आणंदो जाव एक्कारस वि ।

३. सं० पा०—उरालेणं जहा कामदेवे जाव  
सोहम्मे ।

२. अस्य स्थाने १।६४ सूत्रे 'इमेणं एयारूवेणं'  
पाठो विद्यते ।

४. उवा० १।५७ ।



## चउत्थं अज्भयणं

### सुरादेवे

#### उक्खेव-पदं

१. 'जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं सत्तमस्स अंगस्स उवासगदसाणं तच्चस्स अज्भयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, चउत्थस्स णं भंते ! अज्भयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ० ?

#### सुरादेवगाहावइ-पदं

२. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं वाणारसी नामं नयरी । कीट्टए' चेइए । जियसत्तू राया ॥
३. 'तत्थ णं वाणारसीए नयरीए सुरादेवे नामं गाहावइ परिवसइ-- अइडे जाव' बहुजणस्स अपरिभूए ॥
४. तस्स णं सुरादेवस्स गाहावइस्स छ हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ, छ हिरण्णकोडीओ वड्ढिपउत्ताओ, छ हिरण्णकोडीओ पवित्थरपउत्ताओ, छ व्वया दसगोसाहस्सिएणं वएणं होत्था ॥
५. से णं सुरादेवे गाहावई वहूणं जाव' आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, सयस्स वि य णं कुडुवस्स मेढी जाव' सव्वकज्जवड्ढावए यावि होत्था ॥

१. सं० पा०—उक्खेवो ।

२. ना० १।१।७ ।

३. कामघनम् (वृषा) ।

४. सं० पा०—सुरादेवे गाहावइ अइडे । छ हिरण्णकोडीओ जाव छ व्वया दसगोसाहस्सिएणं वएणं तस्स धन्ना भारिया सामी समो-

सडे । जहा आणंदो तहेव पडिवज्जइ गिहि-

धम्मं । जहा कामदेवो जाव समणस्स ।

५. उवा० १।११ ।

६. उवा० १।१३ ।

७. उवा० १।१३ ।



### सुरादेवस्स गिह्मिधम्म-पडिवत्ति-पदं

१३. तए णं से सुरादेवे गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्टुत्तु-चित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणरिए हरिसवस-विसप्पमाण-हियए उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता समणं भगवं महावीरं तिग्गुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी—सद्दहामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, पत्तियामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, रोएमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, अब्भुट्टेमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं । एवमेयं भंते ! तहमेयं भंते ! अवितहमेयं भंते ! असंदिद्धमेयं भंते ! इच्छियमेयं भंते ! पडिच्छिय-मेयं भंते ! इच्छिय-पडिच्छियमेयं भंते ! से जहेयं तुव्भे वदह । जहा णं देवाणुप्पियाणं अंतिए वहवे राईसर-तलवर-माडंविद्य-कोडुंविद्य-इवभ-सेट्टि-सेणावइ-सत्थवाहप्पभिइया मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइया, नो खलु अहं तथा संचाएमि मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए । अहं णं देवाणुप्पियाणं अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं—दुवालसविहं सावगधम्मं पडिवज्जिस्सामि ।

अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिवंधं करेहि ॥

१४. तए णं से सुरादेवे गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए' सावयधम्मं पडिवज्जइ ॥

### भगवओ जणवयविहार-पदं

१५. तए णं समणे भगवं महावीरे अण्णदा कदाइ वाणारसीए नयरीए कोट्टयाओ चेइयाओ पडिणिकखमइ, पडिणिकखमित्ता वहिया जणवयविहारं विहरइ ॥

### सुरादेवस्स समणोवासग-चरिया-पदं

१६. तए णं से सुरादेवे समणोवासए जाए—अभिगयजीवाजीवे जाव<sup>३</sup> समणे निग्गंथे फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-पडिग्गह-कंवल-पायपुंछणेणं ओसहं-भेसज्जेणं पाडिहारिएण य पीढ-फलग-सेज्जा-संथारएणं पडिलाभेमाणे विहरइ ॥

### घन्नाए समणोवासिय-चरिया-पदं

१७. तए णं सा घन्ना भारिया समणोवासिया जाया—अभिगयजीवाजीवा जाव<sup>३</sup> समणे निग्गंथे फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-पडिग्गह-

१. पू०—उवा० १।२४-५३ ।

२. उवा० १।५५ ।

३. उवा० १।५६ ।





सिरि-हिरि-धिरि-कित्ति-परिवज्जया ! धम्मकामया ! पुण्णकामया ! सग्ग-  
कामया ! मोक्खकामया ! धम्मकम्मिया ! पुण्णकम्मिया ! सग्गकम्मिया !  
मोक्खकम्मिया ! धम्मपिवासिया ! पुण्णपिवासिया ! सग्गपिवासिया !  
मोक्खपिवासिया ! नो खलु कप्पइ तव देवानुप्पिया ! सीलाइं वयाइं वेरम-  
णाइं पच्चवखाणाइं पोसहोववासाइं चालित्तणं वा खोभित्तणं वा खंडित्तणं वा  
भंजित्तणं वा उज्जित्तणं वा परिच्चइत्तणं वा, तं जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं'  
•वयाइं वेरमणाइं पच्चवखाणाइं पोसहोववासाइं न छुहेसि ° न भंजेसि, तो  
ते अहं अज्ज जेट्टुपुत्तं साग्रो गिहाग्रो नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गग्रो घाएमि,  
घाएत्ता पंच मंससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेमि,  
अद्दहेत्ता तव गायं मंसेण य सोणिण्यं य आइंचामि, जहा णं तुमं 'अट्ट-दुहट्ट-  
वसट्टे' अकाले चैव जीवियाग्रो ववरोविज्जसि ॥

२२. 'तए णं से सुरादेवे समणोवासए तेणं देवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए अतत्ये  
अणुव्विग्गे अखुभिए अचलिए असंभंते तुसिणीए धम्मज्झाणोवगए विहरइ ॥

२३. तए णं से देवे सुरादेवं समणोवासयं अभीयं अतत्यं अणुव्विग्गं अखुभियं अच-  
लियं असंभंतं तुसिणीयं धम्मज्झाणोवगयं विहरमाणं पासइ, पासित्ता दोच्चं  
पि तच्चं पि सुरादेवं समणोवासयं एवं वयासी—हंभो ! सुरादेवा ! समणो-  
वासया ! जाव' जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चवखाणाइं  
पोसहोववासाइं न छुहेसि न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज जेट्टुपुत्तं साग्रो गिहाग्रो  
नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गग्रो घाएमि, घाएत्ता पंच मंससोल्ले करेमि, करेत्ता  
आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गायं मंसेण य सोणिण्यं  
य आइंचामि, जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चैव जीवियाग्रो ववरो-  
विज्जसि ॥

२४. तए णं से सुरादेवे समणोवासए तेणं देवेणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे  
अभीए जाव' विहरइ ॥

२५. तए णं से देवे सुरादेवं समणोवासयं अभीयं जाव' पासइ, पासित्ता आसुरत्ते  
रुट्टे कुविए चंडविकए मिसिमिसीयमाणे सुरादेवस्स समणोवासयस्स जेट्टुपुत्तं  
गिहाग्रो नीणेइ, नीणेत्ता अग्गग्रो घाएइ, घाएत्ता पंच मंससोल्ले करेइ, करेत्ता  
आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता सुरादेवस्स समणोवासयस्स गायं  
मंसेण य सोणिण्यं य आइंचइ ॥

१. सं० पा०—सीलाइं जाव न भंजेसि ।

चुलणीपियस्स, नवरं एककेक्के पंच सोल्लया ।

२. × (क, ख, ग, घ) ।

४. उवा० २।२२ ।

३. सं० पा०—एवं मज्झिमयं, कणीयसं, एकके-  
क्के पंच सोल्लया । तहेव करेइ, जहा

५. उवा० २।२३ ।

६. उवा० २।२४ ।



## ० कर्णायसपुत्त

३३. तए णं से देवे सुरादेवं समणोवासयं अभीयं जाव' पासइ, पासित्ता सुरादेवं समणोवासयं एवं वयासी—हंभो ! सुरादेवा ! समणोवासया ! जाव' जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पासहोववासाइं न छुट्टेसि न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज कर्णायसं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता पंच मंससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अदहेमि, अदहेत्ता तव गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचामि, जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चैव जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥
३४. तए णं से सुरादेवे समणोवासए तेणं देवेणं एवं वुत्ते समणे अभीए जाव' विहरइ ॥
३५. तए णं से देवे सुरादेवं समणोवासयं अभीयं जाव' पासइ, पासित्ता दोच्चं पि तच्चं पि सुरादेवं समणोवासयं एवं वयासी—हंभो ! सुरादेवा ! समणोवासया ! जाव' जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पासहोववासाइं न छुट्टेसि न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज कर्णायसं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता पंच मंससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अदहेमि, अदहेत्ता तव गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचामि, जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चैव जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥
३६. तए णं से सुरादेवे समणोवासए तेणं देवेणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समणे अभीए जाव' विहरइ ॥
३७. तए णं से देवे सुरादेवं समणोवासयं अभीयं जाव' पासइ, पासित्ता आसुरत्ते रुट्टे कुविए चंडिकिए मिसिमिसोयमाणे सुरादेवस्स समणोवासयस्स कर्णायसं पुत्तं गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता अग्गओ घाएइ, घाएत्ता पंच मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अदहेइ, अदहेत्ता सुरादेवस्स समणोवासयस्स गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचइ ।
३८. तए णं से सुरादेवे समणोवासए तं उज्जलं जाव' वेयणं सम्मं सहइ खमइ तित्तिक्खइ ० अहियासेइ ॥

१. उवा० २।२४ ।

२. उवा० २।२२ ।

३. उवा० २।२३ ।

४. उवा० २।२४ ।

५. उवा० २।२२ ।

६. उवा० २।२३ ।

७. उवा० २।२४ ।

८. उवा० २।२७ ।



भरियंसि कडाहयंसि अद्देह, अद्देत्ता ममं गायं मंसेण य सोणिण्ण य आइंचइ, जे णं ममं मज्झिमं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता मम अग्गओ घाएइ, घाएत्ता पंच मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्देह, अद्देत्ता ममं गायं मंसेण य सोणिण्ण य आइंचइ, जे णं ममं कणीयसं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता मम अग्गओ घाएइ, घाएत्ता पंच मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्देह, अद्देत्ता ममं गायं मंसेण य सोणिण्ण य० आइंचइ, जे वि य इमे सोलस रोगायंका, ते वि य इच्छइ मम सरीरंसि पक्खवित्तए, तं सेयं खलु ममं एयं पुरिसं गिण्हत्तए त्ति कट्ठ उद्धाविए, से वि य आगासे उप्पइए, तेण य खभे आसाइए, महया-महया सद्देणं कोलाहले कए ॥

### घन्नाए पसिण-पदं

४३. तए णं सा घन्ना भारिया कोलाहलसद्दं<sup>३</sup> सोच्चा निसम्म जेणेव सुरादेवे समणोवासए, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता एवं वयासी—किण्णं<sup>४</sup> देवाणुप्पिया ! तुभे णं महया-महया सद्देणं कोलाहले कए ?

### सुरादेवस्स उत्तर-पदं

४४. तए णं से सुरादेवे समणोवासए घन्नं भारियं एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिए ! न याणामि के वि पुरिसे<sup>५</sup> आसुरत्ते रुट्ठे कुविए चंडिकए मिसिमिसीयमाणे एगं महं नीलुप्पल-गवलगुलिय-अयसिकुमुमप्पगासं खुरधारं असि गहाय ममं एवं वयासी—हंभो ! सुरादेवा ! समणोवासया ! जाव<sup>६</sup> जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्ढेसि न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज जेट्ठपुत्तं साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता पंच मंससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्देहमि, अद्देत्ता तव गायं मंसेण य सोणिण्ण य आइंचामि, जहा णं तुमं अट्ठ-दुहट्ठ-वसट्ठे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि । तए णं अहं तेणं पुरिसेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव<sup>७</sup> विहरामि । तए णं से पुरिसे ममं अभीयं जाव<sup>८</sup> पासइ, पासिता ममं दोच्चं पि तच्चं पि

१. सरीरंसि (क) ।

२. कोलाहलं (क, ख, ग, घ); ३।४३ सूत्रे 'कोलाहलसद्दं' इति पाठो विद्यते । अत्रापि तथैव युज्यते । आदर्शेषु संक्षिप्तलेखने 'कोलाहलं' पाठो जातः इति प्रतीयते ।

३. किण्णं तुमं (ग) ।

४. सं० पा०—पुरिसे तद्देव कहेइ जहा चुलणी-पिया घन्ना वि पडिभणइ जाव कणीयसं ।

५. उवा० २।२२ ।

६. उवा० २।२३ ।

७. उवा० २।२४ ।



अत्ताणं भूसित्ता, सद्धि भत्ताइं अणसणाए, छेदेत्ता, आलोइय-पडिक्कते  
 समाहिपत्ते कालमारो कानं किञ्चा° सोह्ममे कप्पे अरुणकते विमाणे  
 उववण्णे । चत्तारि पलिओवमाइ टिई । महाविदेहे यासे मिज्जिह्मिइ वुज्जिह्मिइ  
 मुच्चिह्मिइ सव्वदुक्खणमंतं काहिइ ॥

### निक्खेच-पदं

५३. •'एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं उवाचगदशाणं चउत्थस्स  
 अज्जभयणस्स अयमद्वे पणत्ते° ॥





पडिपुण्ण-पंचिदियसरीरा जाव' माणुसाए कामभोग पच्चणुभवमाणी  
विहरइ ० ॥

### महावीर-समवसरण-पदं

७. 'तेणं कालेणं तेणं समाणं समणे भगवं महावीरे जाव' जेणेव आलभिया  
नयरी जेणेव संखवणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता अहापडिख्वं  
ओग्गहं ओगिण्हत्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥
८. परिसा निग्गया ॥
९. कुणिए राया जहा, तथा जियसत्तु निग्गच्छइ जाव' पज्जुवासइ ॥
१०. तए णं से चुल्लसयाए गाहावई इभीगे कहाए लद्धट्टे समाणे— "एवं खलु समणे  
भगवं महावीरे पुव्वाणुपुव्वि चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमागए इह  
संपत्ते इह समोसठे इहेव आलभियाए नयरीए वहिया संखवणे उज्जाणे  
अहापडिख्वं ओग्गहं ओगिण्हत्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।"  
तं महप्फलं खलु भो ! देवाणुप्पिया ! तहाख्वाणं अरहंताणं भगवंताणं णाम-  
गोयस्स वि सवणयाए, किमंग पुण अभिगमण-वंदण-णमंसण-पडिपुच्छण-  
पज्जुवासणयाए ? एगस्स वि आरियस्स धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए,  
किमंग पुण विउल्लस्स अट्टस्स गहणयाए ? तं गच्छामि णं देवाणुप्पिया !  
समणं भगवं महावीरं वंदामि णमंसामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाणं मंगलं  
देवयं चेइयं पज्जुवासामि—एवं सपेहेइ, सपेहेत्ता ण्हाए कयवलिकम्मे कय-  
कोउय-मंगल-पायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवर परिहिए अप्प-  
महग्घाभरणालकियसरीरे सयाओ गिहाओ पडिणिवखमइ, पडिणिवखमिता  
सकोरेंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं मणुस्सवग्गुरापखित्ते पादविहार-  
चारेणं आलभियं नयारि मज्झमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छिता जेणामेव संखवणे  
उज्जाणे, जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता समणं  
भगवं महावीरं तिवखुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ णमंसइ,  
वंदित्ता णमंसित्ता णच्चासण्णे णाइदूरे सुस्सुसमाणे णमंसमाणे अभिमुहे विणएणं  
पंजलिउडे पज्जुवासइ ॥
११. तए णं समणे भगवं महावीरे चुल्लसययस्स गाहावइस्स तीसे य महइमहालि-  
याए परिसाए जाव' धम्मं परिकहेइ ॥
१२. परिसा पडिगया, राया य गए ॥

१. उवा० २।२४ ।

२. सं० पा०—सामी समोसठे जहा आणंदो तथा  
गिहिधम्मं पडिवज्जइ । सेसं जहा कामदेवो  
जाव धम्मपण्णत्ति ।

३. ओ० सू० १९, २२ ।

४. ओ० सू० ५३-६६ ।

५. ओ० सू० ७१-७७ ।



कंचल-पायपुच्छणेणं श्रीसह-भेसज्जेणं पाडिहारिणं य पीट-फ.सग-रोज्जा-संयार-  
एणं पडित्ताभेमाणी विहरइ ॥

### चुल्लसयय-धम्मजागरिया-पदं

१८. तए णं तस्स चुल्लसययस्स समणोवासगस्स उच्चवावएहिं सील-व्वय-गुण-त्रेरमण-  
पच्चवखाण-पोसहोववासेहिं अण्णाणं भावेमाणस्स चोइया संवच्छराइं वीइवकं-  
ताइं । पण्णरसमस्स संवच्छरस्स अंतरा वट्टमाणस्स अण्णदा कदाइ पुव्वरत्ता-  
वरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स इमेयास्सुवे अज्झक्तियए चितिए  
परिथिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं तल्लु अहं आलभियाए नयरीए  
वहूणं जाव' आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, सयस्स वि य णं कुडुं वस्स मेढी  
जाव' सव्वकज्जवट्ठावए, तं एतेणं ववखेवेणं अहं नो संचाएमि समणस्स भगवओ  
महावीरस्स अंतियं धम्मपण्णात्ति उवसंपज्जित्ता णं विहरित्ताए' ॥

१९. तए णं से चुल्लसयए समणोवासए जेट्टपुत्तं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-  
परिजणं च आपुच्छइ, आपुच्छित्ता सयाओ गिहाओ पडिणिक्कमइ, पडिणिक्क-  
मित्ता आलभियं नयारि मज्झमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव पोसह-  
साला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोसहसालं पमज्जइ, पमज्जित्ता  
उच्चार-पासवणभूमि पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता दवभसंधारयं संथरेइ, संथरेत्ता  
दवभसंधारयं दुरुहइ, दुरुहित्ता पोसहसालाए पोसहिए वंभयारी उम्मुक्कमणि-  
सुवण्णे ववगयमालावण्णगविलेवणे निक्खित्तसत्थमुसले एगे अवीए दवभसंधा-  
रोवगए समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं ° धम्मपण्णात्ति उवसंपज्जित्ता णं  
विहरइ ॥

### चुल्लसयगस्स देव-कय-उवसग-पदं

२०. तए णं तस्स चुल्लसयगस्स समणोवासयस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि एगे  
देवे अंतियं ° पाउव्भए ॥

### °जेपुट्ट

२१. तए णं से देवे एगं महं नीलुप्पल-गवलगुलिय-अयसिकुसुमप्पगासं खुरवारं °  
असि गहाय एवं वयासी—हंभो ! चुल्लसयगा ! समणोवासया ! °अप्पत्थिय-  
पत्थिया ! दुरंत-पंत-लक्खणा ! हीणपुण्णचाउइसिया ! सिरि-हिरि-धिइ-  
कित्ति-परिवज्जिया ! धम्मकामया ! पुण्णकामया ! सग्गकामया ! मोक्ख-

१. उवा० १।१३ ।

२. उवा० १।१३ ।

३. पु०—उवा० १।५७-५९ ।

४. सं० पा०—अंतियं जाव असि ।

५. सं० पा०—समणोवासया जाव न भंजेति ।



० मज्झिमपुत्त

२७. तए णं से देवे चुल्लसयगं समणोवासयं अभीयं जाव' पासइ, पासित्ता चुल्ल-  
सयगं समणोवासयं एवं वयासी—हंभो ! चुल्लसयगा ! समणोवासया ! जाव'  
जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न  
छुट्टेसि न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज मज्झिमं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेमि,  
नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता मत्त मंससोले करेमि, करेत्ता आदाण-  
भरियंसि कडाहयंसि अद्देहमि, अद्देत्ता तव गायं मंसेण य सोणिएण य आइं-  
चामि, जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चैव जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥
२८. तए णं से चुल्लसयए समणोवासए तेणं देवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव'  
विहरइ ॥
२९. तए णं से देवे चुल्लसयगं समणोवासयं अभीयं जाव' पासइ, पासित्ता दोच्चं पि  
तच्चं पि चुल्लसयगं समणोवासयं एवं वयासी - हंभो ! चुल्लसयया ! समणो-  
वासया ! जाव' जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं  
पोसहोववासाइं न छुट्टेसि न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज मज्झिमं पुत्तं साओ  
गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता सत्त मंससोले करेमि,  
करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्देहमि, अद्देत्ता तव गायं मंसेण य सोणि-  
एण य आइंचामि, जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चैव जीवियाओ ववरो-  
विज्जसि ॥
३०. तए णं से चुल्लसयए समणोवासए तेणं देवेणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते  
समाणे अभीए जाव' विहरइ ॥
३१. तए णं से देवे चुल्लसयगं समणोवासयं अभीयं जाव' पासइ, पासित्ता आसुरत्ते  
रुट्ठे कुविए चडिविकए मिसिमिसीयमाणे चुल्लसयगस्स समणोवासयस्स  
मज्झिमं पुत्तं गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता अग्गओ घाएइ, घाएत्ता सत्त मंससोले  
करेइ, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्देइ, अद्देत्ता चुल्लसयगस्स  
समणोवासयस्स गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचइ ॥
३२. तए णं से चुल्लसयए समणोवासए तं उज्जलं जाव' वेयेणं सम्मं सहइ खमइ  
तित्तिक्खइ अहियासेइ ॥

१. उवा० २।२४ ।  
२. उवा० २।२२ ।  
३. उवा० २।२३ ।  
४. उवा० २।२४ ।

५. उवा० २।२२ ।  
६. उवा० २।२३ ।  
७. उवा० २।२४ ।  
८. उवा० २।२७ ।



विउदृष्टं विसोहेद अकरणयात् अन्भुद्रेद अहारिहं पागच्छितं तवोकम्मं पडिवज्जइ ॥

### चुल्लसयगस्स उवासगपडिमा-पदं

४७. तए णं से चुल्लसयए समणोवासाए पढमं उवासगपडिमं उवसंपज्जिताणं विहरइ ॥
४८. तए णं से चुल्लसयए समणोवासाए पढमं उवासगपडिमं अहामुत्तं अहाकणं अहामग्गं अहातच्चं सम्मं काएणं फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ कित्तेइ आराहेइ ॥
४९. तए णं से चुल्लसयए समणोवासाए दोच्चं उवासगपडिमं, एवं तच्चं, चउत्थं, पंचमं, छट्ठं, सत्तमं, अट्ठमं, नवमं, दसमं, एक्कारसमं उवासगपडिमं अहामुत्तं अहाकणं अहामग्गं अहातच्चं सम्मं काएणं फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ कित्तेइ आराहेइ ॥
५०. तए णं से चुल्लसयए समणोवासाए तेणं ओरालेणं विउलेणं पयत्तेणं पग्गहिएणं तवोकम्मेणं सुक्के लुक्खे निम्मसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए किसे धमणिसंतए जाए ॥

### चुल्लसयगस्स अणसण-पदं

५१. तए णं तस्स चुल्लसयगस्स समणोवासगस्स अण्णदा कदाइ पुव्वरत्तावरत्तकाल-समयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स अयं अज्भत्थिए चितिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं इमेणं एयारूवेणं ओरालेणं विउलेणं पयत्तेणं पग्गहिएणं तवोकम्मेणं सुक्के लुक्खे निम्मसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए किसे धमणिसंतए जाए । तं अत्थि ता मे उट्ठाणे कम्मे वले वीरिए पुरिसवकार-परक्कमे सद्धा-घिइ-संवेगे, तं जावता मे अत्थि उट्ठाणे कम्मे वले वीरिए पुरिसवकार-परक्कमे सद्धा-घिइ-संवेगे, जाव य मे धम्मायरिए धम्मोवएसए समणे भगवं महावीरे जिणे सुहत्थी विहरइ, तावता मे सेयं कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसं जलंते अपच्छिममारणंतियसंलेहणा-भूसणा-भूसियस्स भत्तपाण-पडियाइक्खि-यस्स कालं अणवकंखमाणस्स विहरित्तए—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते अपच्छिममारणंतियसंलेहणा-भूसणा-भूसिए भत्तपाण-पडियाइक्खिए कालं अणवकंखमाणे विहरइ ॥





१२. परिसा पडिगया, रागा य गण ॥

कुंडकोलियरस गिहियम्म-पडिवत्ति-पदं

१३. तए णं कुंडकोलिए गाहावई समणस्स भगवओ महावीररस अंतिए धम्म सोच्चा निसम्म हट्टुत्तु-नित्तमाणदिए पीडमणे परमसोमणरिसाए हरिसवस-विसण्ण-माणहियाए उट्टाए उट्टेइ, उट्टेत्ता समणं भगथं महावीरं तिलवुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमसित्ता एवं वगाशी—सहहामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, पत्तिगामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, रोएमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, अरुभुट्टेमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं । एवमेयं भंते ! तहमेयं, भंते ! अविताहमेयं भंते ! असंदिद्धमेयं भंते ! इच्छियमेयं भंते ! पडिच्छियमेयं भंते ! इच्छिय-पडिच्छियमेयं भंते ! से जहेयं तुव्भे वदह । जहा णं देवाणुप्पियाणं अंतिए बह्वे राईसर-तलवर-माउंविद्य-कोडुंविद्य-इत्थ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्यवाहूपभइया मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइया, नो खलु अहं तथा संचाएमि मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए । अहं णं देवाणुप्पियाणं अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं—दुवालसविहं सावग-धम्मं पडिवज्जिस्सामि ।  
अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिवंधं करेहि ॥

१४. तए णं से कुंडकोलिए गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए' सावय-धम्मं पडिवज्जइ ॥

भगवओ जणवयविहार-पदं

१५. तए णं समणे भगवं महावीरे अण्णदा कदाइ कंपिल्लपुराओ नयराओ सहस्संव-वणाओ उज्जाणाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता वहिया जणवयविहारं विहरइ ॥

कुंडकोलियस्स समणोवासग-चरिया-पदं

१६. तए णं से कुंडकोलिए समणोवासए जाए—अभिगयजीवाजीवे जाव' समणे निग्गंथे फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-पडिगह-कंवल-पायपुंछणेणं ओसहभेसज्जेणं पाडिहारिएण य पीढ-फलग-सेज्जा-संधारएणं पडिलाभेमाणे विहरइ ॥

पूसाए समणोवासिय-चरिया-पदं

१७. तए णं सा पूसा भारिया समणोवासिया जाया—अभिगयजीवाजीवा



राचवभावा, तुमे णं देवाणुप्पिया ! इमा एयारूवा दिव्वा देविद्धी दिव्वा देवज्जुई दिव्वे देवाणुभावे मित्ठणा' लद्धे ? क्किण्णा पत्ते ? क्किण्णा अभिसमण्णागए ? किं उट्ठाणेणं' •कम्मणेणं वलेणं वीरिएणं° अपुरिसक्कार-परक्कमेणं ? उदाहु अणुट्ठाणेणं' •अकम्मणेणं अवलेणं अवीरिएणं° अपुरिसक्कार-परक्कमेणं ?

### देवेण नियतिवाद-समत्थण-पद

२२. तए णं से देवे कुंडकोलियं समणोवासए एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! मए इमा एयारूवा' दिव्वा देविद्धी दिव्वा देवज्जुई दिव्वे देवाणुभावे अणुट्ठाणेणं अकम्मणेणं अवलेणं अवीरिएणं अपुरिसक्कार-परक्कमेणं 'लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए' ॥

### कुंडकोलिएण नियतिवाद-निरसण-पदं

२३. तए णं से कुंडकोलिएण समणोवासए तं देवं एवं वयासी—जइ णं देवाणुप्पिया ! तुमे 'इमा एयारूवा' दिव्वा देविद्धी दिव्वा देवज्जुई दिव्वे देवाणुभावे अणुट्ठाणेणं' •अकम्मणेणं अवलेणं अवीरिएणं° अपुरिसक्कार-परक्कमेणं 'लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए', जेसि णं जीवाणं नत्थि उट्ठाणे इ वा" •कम्मे इ वा वले इ वा वीरिए इ वा पुरिसक्कार°-परक्कमे इ वा, ते किं न देवा" ? 'अह तुब्भे'" इमा एयारूवा दिव्वा देविद्धी दिव्वा देवज्जुई दिव्वे देवाणुभावे उट्ठाणेणं" •कम्मणेणं वलेणं वीरिएणं पुरिसक्कार°-परक्कमेणं लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए, तो जं वदसि सुंदरी णं गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स धम्मपण्णती-नत्थि उट्ठाणे इ वा" •कम्मे इ वा वले इ वा वीरिए इ वा पुरिसक्कार-परक्कमे इ वा° णियता सव्वभावा, मंगुली णं समणस्स भगवओ महावीरस्स धम्म-

१. किणा (क) ।

२. सं० पा०—उट्ठाणेणं जाव पुरिसक्कार-परक्कमेणं ।

३. सं० पा०—अणुट्ठाणेणं जाव अपुरिसक्कार-परक्कमेणं ।

४. इमेयारूवा (क, ख, ग, घ) ।

५. सं० पा०—अणुट्ठाणेणं जाव अपुरिसक्कार-परक्कमेणं ।

६. लद्धा पत्ता अभिसमण्णागया (क्व) ।

७. इमेयारूवा (क, घ); इमे एयारूवा (ग) ।

८. सं० पा०—अणुट्ठाणेणं जाव अपुरिसक्कार-

परक्कमेणं ।

९. लद्धा पत्ता अभिसमण्णागया (क, ख, ग, घ) ।

१०. सं० पा०—उट्ठाणे इ वा जाव परक्कमे ।

११. 'क' प्रती अस्थानन्तरं—'अह ते एवं भवति, तो जं वदसि°' एवं पाठो विद्यते । 'ग' प्रती 'अह तुब्भे इमा एयारूवा दिव्वा देविद्धी इ उट्ठाणेणं जाव परक्कमेणं लद्धा इ । तं ते एवं न भवति, तो जं वदसि'° ।

१२. अह णं देवाणुप्पिया तुमे (ख, घ) ।

१३. सं० पा०—उट्ठाणेणं जाव परक्कमेणं ।

१४. सं० पा०—उट्ठाणे इ वा जाव णियता ।



से नृणं कृञ्कोलिया ! कर्मणं मुञ्चं पञ्चानामप्युक्तानामगमि' अगोपयिष्याए  
एमे देवे अत्रियं पाउभनित्था ।

ताए णं से देवे नाममुद्दमं च' •उत्तरारिउत्तमं च पुढचिरित्तापट्टयाओ गेण्हइ,  
गेण्हित्ता अंनलियमपाट्टयाणे सतिगिणिणियाइं पंनवण्णाइं वत्थाइं पवर परिहिए  
तुमं एवं वयासी—हंभो ! कृञ्कोलिया ! गमणोवासाया ! सुंदरी णं  
देवाणुप्पिया ! गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स धम्मपण्णत्ती नत्थि उट्टाणे इ वा  
कम्मो इ वा वत्थे इ वा वीरिए इ वा पुरिसवकार-परक्कमे इ वा नियता सव्व-  
भावा, मंगुली णं समणस्स भगवओ महावीरस्स धम्मपण्णत्ती—अत्थि उट्टाणे  
इ वा कम्मो इ वा वत्थे इ वा वीरिए इ वा पुरिसवकार-परक्कमे इ वा अणियता  
सव्वभावा ।

तए ण तुमं तं देवं एवं वयासी—जइ णं देवाणुप्पिया ! सुंदरी णं गोसालस्स  
मंखलिपुत्तस्स धम्मपण्णत्ती—नत्थि उट्टाणे इ वा जाव पुरिसवकार-परक्कमे  
इ वा नियता सव्वभावा, मंगुली णं समणस्स भगवओ महावीरस्स धम्म-  
पण्णत्ती—अत्थि उट्टाणे इ वा जाव पुरिसवकार-परक्कमे इ वा अणियता  
सव्वभावा, तुमे णं देवाणुप्पिया ! इमा एयाख्वा दिव्वा देविड्डी दिव्वा देवज्जुई  
दिव्वे देवाणुभावे किण्णा लद्धे ? किण्णा पत्ते ? किण्णा अभिसमण्णागए ?  
किं उट्टाणेणं जाव पुरिसवकार-परक्कमेणं ? उदाहु अणुट्टाणेणं जाव अपुरिसवकार-  
परक्कमेणं ?

तए णं से देवे तुमं एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! मए इमा एयाख्वा  
दिव्वा देविड्डी दिव्वा देवज्जुई दिव्वे देवाणुभावे अणुट्टाणेणं जाव अपुरिसवकार-  
परक्कमेणं लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए ।

तए णं तुमं तं देवं एवं वयासी जइ णं देवाणुप्पिया ! तुमे इमा एयाख्वा  
दिव्वा देविड्डी दिव्वा देवज्जुई दिव्वे देवाणुभावे अणुट्टाणेणं जाव अपुरिसवकार-  
परक्कमेणं लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए, जेसि णं जीवाणं नत्थि उट्टाणे इ वा  
जाव परक्कमे इ वा, ते किं न देवा ?

अह तुव्भे इमा एयाख्वा दिव्वा देविड्डी दिव्वा देवज्जुई दिव्वे देवाणुभावे  
उट्टाणेणं जाव परक्कमेणं लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए, तो जं वदसि सुंदरी णं  
गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स धम्मपण्णत्ती—नत्थि उट्टाणे इ वा जाव नियता  
सव्वभावा, मंगुली णं समणस्स भगवओ महावीरस्स धम्मपण्णत्ती—अत्थि  
उट्टाणे इ वा जाव अणियता सव्वभावा, तं ते मिच्छा । तए णं से देवे तुमं  
एवं वुत्ते समाणे संकिए कंखिए चित्तिगिच्छासमावण्णे कलुससमावण्णे नो

१. × (ख) ।

२. पुव्वावरण्ह° (ख, घ) ।

३. सं० पा०—नामुद्दमं च तहेव जाव पडिगए ।



मीद्वयस्यैव । पञ्चमस्यास्य सप्तमस्यैव क्वचन प्रत्यासन्नमप्युवासास्तत्र  
 \*तएणंसे कुंडकोलिए समणोवासाए पठमं उवासगपडिमं उवसंपज्जिता णं  
 चिहरइ ॥  
 कणित्तपुत्रं नमरं महणं जातं आणुवसिणं चो परिमुत्ताणित्तं, समस्स चि वने  
 कुट्टवस्स भेडीं भाणं सत्तवस्स वड्डाणं, सत्तमं वसन्तेणं तां सो मत्ताणि  
 समणस्स भगवस्यो महावीरस्स अत्तियं घम्मपण्णत्ति उवसंपज्जिता णं  
 चिहरइ ॥

३४. तए णं से कुंडकोलिए समणोवासाए जेट्ठपुत्रं मित्त-साह-जियण-सयण-संवेदि-  
 परिज्जणं च आणुवसिणं, आणुवसिणा मत्ताणीं विहाओ परिणवणमद, परिणव-  
 मित्ता कणित्तपुत्रं नमरं महासज्जेणं निगमंउड, निगमंउडत्ता जेणव पोह-  
 साला, सेणव उवागंउड, उवागं-उडत्ता पोसहसालाणं पमउड, पमउडत्ता  
 उच्चार-पासवणभूमिं पडिभेइ, पडिभेइवा दग्गसंभारयं नंदरेइ, नंदरेत्ता  
 दग्गसंभारयं दुग्गइ, दुग्गत्ता पोसहसालाए पौमहिणं वभसारा उम्मुक्कमनि-  
 सुवण्णे ववगयमालावण्णमधिलेयणे निगिदात्तासत्थमुससे एणं अवीणं दग्गसंवा-  
 रोवणाए समणस्स भगवस्यो महावीरस्स अत्तियं \* घम्मपण्णत्ति उवसंपज्जिता  
 णं चिहरइ ॥

**कुंडकोलियस्स उवासगपडिमा-पदं**

- ३५. \*तए णं से कुंडकोलिए समणोवासाए पठमं उवासगपडिमं उवसंपज्जिता णं चिहरइ ॥
- ३६. तए णं से कुंडकोलिए समणोवासाए पठमं उवासगपडिमं अहासुत्तं अहाकप्पं अहामग्गं अहातच्चं सम्मं काएणं फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ कित्तेइ आराहेइ ॥
- ३७. तए णं से कुंडकोलिए समणोवासाए दोच्चं उवासगपडिमं, एवं तच्चं, चउत्थं, पंचमं, छट्ठं, सत्तमं, अट्ठमं, नवमं, दसमं, एक्कारसमं उवासगपडिमं अहासुत्तं अहाकप्पं अहामग्गं अहातच्चं सम्मं काएणं फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ कित्तेइ आराहेइ ॥
- ३८. तए णं से कुंडकोलिए समणोवासाए इमेणं एयाह्वेणं ओरालेणं विउत्तेणं

---

१. सं० पा०—कदाइ जहा कामदेवो तथा जेट्ठ-  
 पुत्तं ठवेत्ता तथा पोसहसालाए जाव घम्म-  
 पण्णत्ति ।  
 २. उवा० १।१३ ।  
 ३. उवा० १।१३ ।  
 ४. पू०—उवा० १।५७-५६ ।  
 ५. सं० पा०—एवं एक्कारस उवासगपडिमाओ ।  
 तहेव जाव सोहम्मे कप्पे अहण्णत्ताए विमाओ  
 जाव अंतं काहिइ ।

..

4



## अग्निमित्ताए वंदणद्व-गमण-पदं

३३. तए णं मे सद्दालपुत्ते रामणोवासाए कौडुंविद्यपुरिसां सद्दवेइ, सद्दवेत्ता एव वयासी --सिप्पामेव भो ! देवाण्णिया ! लहुकरणजुत्त-जोइयं' ममवुखावि-  
हाण-समलिहियासिगएहिं जंजूणयामयकलावजुत्त-पइविनिट्टएहिं रययामयवंट-  
सुत्तरज्जुग-वरकंचणवच्चियं-नत्थयग्गहोमहिगएहिं' नीनुपलकयामेलएहिं  
पवरगोणजुवाणएहिं नाणामणिकणम-धंठियाजालपरियायं मुजायजुगजुत्त-  
उज्जुग-पसत्थमुधिरएयनिम्मियं पवरलवणणीववेयं जुत्तामेव धम्मियं जाणप्प-  
वरं उवट्टवेहे, उवट्टवेत्ता मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह ॥
३४. तए णं ते कौडुंविद्यपुरिसां \*सद्दालपुत्तेणं रामणोवासएणं एवं वृत्ता समाणा  
हट्टुट्ट-चित्तमाणदिया पीडमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-विसप्पमाणहियया  
करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलि कट्टु एवं सामि ! त्ति आणाए  
विणएणं वयणं पडिसुणंति, पडिसुणंता खिप्पामेव लहुकरणजुत्त-जोइयं जाव'  
धम्मियं जाणप्पवरं उवट्टवेत्ता तमाणत्तियं ° पच्चप्पिणंति ॥
३५. तए णं सा अग्निमित्ता भारिया ण्हाया' \*कयवलिकम्मा कय-कोउय-मंगल°  
पायच्छित्ता सुद्धप्पावेसाइं °मंगल्लाई वत्थाई पवर परिहिया° अप्पमहग्घा-  
भरणालंकिंयसरीरा चेडियाचक्कवालपरिकिण्णा धम्मियं जाणप्पवरं दुरुहंइ,  
दुरुहिता पोलासपुरं नयरं मज्झमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव  
सहस्संभवणे उज्जाणे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धम्मियाओ जाणप्प-  
वराओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहिता चेडियाचक्कवालपरिकिण्णा जेणेव समणे  
भगवं महावीरे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तिव्खुतो' °आयाहिण-  
पयाहिणं करेइ, करेत्ता ° वंदइ णंमंसइ, वंदित्ता णंमंसित्ता णच्चासण्णे णाइदूरे"  
°सुस्ससमाणा णंमंसमाणा अभिमुहे विणएणं° पंजलियडा" ठिइया केव  
पज्जुवासाइ ॥
३६. तए णं समणे भगवं महावीरे अग्निमित्ताए तीसे य महइमहालियाए परिसाए  
जाव" धम्मं परिकहेइ ॥

१. पुस्तकान्तरे यानवर्णको ह्यते (वृ) ।  
२. °खइय (ख) ।  
३. नत्थापग्गहो° (ख, ग) ।  
४. °कयामंलएहिं (ख); °कयमालएहिं (ग) ।  
५. सं°पा°—कौडुंविद्यपुरिसा जाव पच्चप्पिणंति ।  
६. उंवा° १।४७ ।  
७. सं° पा°—ण्हाया जाव पायच्छित्ता ।
८. सं° पा°—सुद्धप्पावेसाइं जाव अप्प-  
महग्घा° ।  
९. सं° पा°—तिव्खुतो जाव वंदइ ।  
१०. सं° पा°—णाइदूरे जाव पंजलियडा ।  
११. पंजलिउडा (ख, घ) ।  
१२. ओ° सू° ७१-७७ ।



निगमथे फागु-एसणिज्जेणं असाण-पाण-साइम-साइमेणं वत्तय-पडिगह-कंवल-  
पायपुंछणेणं ओसाह-भेसज्जेणं पाडिहारिएण य पीढ-फलग-सेज्जा-संधारएणं  
पडिलाभेमाणे विहरइ ॥

### अग्गिमित्ताए-समणोवासिय-चरिया-पवं

४१. तए णं सा अग्गिमित्ता भारिया समणोवासिया जाया—अभिगयजीवाजीवा जाव'  
समणे निगमथे फागु-एसणिज्जेणं असाण-पाण-साइम-साइमेणं वत्तय-पडिगह-  
कंवल-पायपुंछणेणं ओसाह-भेसज्जेणं पाडिहारिएण य पीढ-फलग-सेज्जा-  
संधारएणं पडिलाभेमाणी० विहरइ ॥

### गोसालस्स आगमण-पवं

४२. तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते इमीसे कहाए लद्धे समाणे—एवं खलु सद्दालपुत्ते  
आजीवियसमयं वमित्ता समणाणं निगमथाणं दिट्ठि पवण्णे', तं गच्छामि णं  
सद्दालपुत्तं आजीविओवासयं समणाणं निगमथाणं दिट्ठि वामेत्ता पुणरवि  
आजीवियदिट्ठि गेण्हावित्तए त्ति कट्टु—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता आजीवियसंध-  
परिवुडे जेणेव पोलासपुरे नयरे, जेणेव आजीवियसभा, तेणेव उवागच्छइ,  
उवागच्छित्ता भंडगनिकखेवं करेइ, करेत्ता कतिवएहि' आजीविएहि सद्धि  
जेणेव सद्दालपुत्ते समणोवासए, तेणेव उवागच्छइ ॥

४३. तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए गोसालं मंखलिपुत्तं एज्जमाणं पासइ,  
पासित्ता नो आढाति' नो परिजाणति', अणाढामाणे' अपरिजाणमाणे तुसिणीए  
संचिट्ठइ ॥

### गोसालेण महावीरस्स गुणकित्तण-पवं

४४. तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते सद्दालपुत्तेणं समणोवासएणं अणाडिज्जमाणे  
अपरिजाणिज्जमाणे पीढ-फलग-सेज्जा-संधारट्टयाए समणस्स भगवओ महा-  
वीरस्स गुणकित्तणं करेइ"—आगए णं देवाणुप्पिया ! इहं महामाहणे ?

४५. तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए गोसालं मंखलिपुत्तं एवं वयासी—के णं  
देवाणुप्पिया ! महामाहणे ?

तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते सद्दालपुत्तं समणोवासयं एवं वयासी—समणे  
भगवं महावीरे महामाहणे ।

१. उवा० १।५६ ।

२. पडिवण्णे (क, घ) ।

३. कतिवतेहि (क); कइवएहि (ख, घ) ।

४. अढाति (क, ग) ।

५. परिजाणाति (घ) ।

६. अणाढामीणे (क); अणाढायमाणे (ख, घ) ।

७. करेमाणे सद्दालपुत्तं समणोवासयं एवं वयासी  
(क्व) ।



के' णं देवाणुप्पिया ! महाधम्मकही ?

समणे भगवं महार्वीरे महाधम्मकही ।

से केणट्टेणं देवाणुप्पिया ! एवं वुच्चइ—समणे भगवं महावीरे महाधम्मकही ?  
एवं खलु देवाणुप्पिया ! समणे भगवं महावीरे महद्महालयंति संसारंसि बहवे  
जीवे नस्समाणे विणरसमाणे सज्जमाणे छिज्जमाणे भिज्जमाणे लुप्पमाणे  
विलुप्पमाणे उम्मग्गपट्टिवण्णे सण्हविण्णणट्टे मिच्छत्तवत्ताभिभूए अट्टविहकम्म-  
तमपडल'पडोच्छण्णे ब्रह्महि अट्टेहि ग' ०हेऊहि य पसिणेहि य कारणेहि य  
वागरणेहि य निप्पट्ट-पसिण'वागरणेहि य चाउरंताओ संसारकंताराओ  
साहत्थि नित्थारेइ । से तेणट्टेणं देवाणुप्पिया ! एवं वुच्चइ—समणे भगवं  
महावीरे महाधम्मकही ॥

४६. आगए णं देवाणुप्पिया ! इहं महानिज्जामए ?

के' णं देवाणुप्पिया ! महानिज्जामए ?

समणे भगवं महावीरे महानिज्जामए ।

से केणट्टेणं' ०देवाणुप्पिया ! एवं वुच्चइ—समणे भगवं महावीरे महानिज्जा-  
मए ? ०

एवं खलु देवाणुप्पिया ! समणे भगवं महावीरे संसारमहासमुदे बहवे जीवे  
नस्समाणे विणस्समाणे' ०खज्जमाणे छिज्जमाणे भिज्जमाणे लुप्पमाणे ०  
विलुप्पमाणे बुद्धमाणे निवुद्धमाणे उप्पियमाणे' धम्ममईए' नावाए निव्वाण-  
तीराभिगुहे साहत्थि संपावेइ । से तेणट्टेणं देवाणुप्पिया ! एवं वुच्चइ—समणे  
भगवं महावीरे महानिज्जामए ॥

विवाद-पट्टवणा-पसिण-पदं

५०. तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए गोसालं मंखलिपुत्तं एवं वयासी—तुव्भे' णं  
देवाणुप्पिया ! इयच्छेया' इयदच्छा इयपट्टा' इयनिउणा इयनयवादी इयउव-  
एसलद्धा' इयविण्णाणपत्ता । पभू णं' तुव्भे मम धम्मायरिएणं धम्मोवएसएणं  
समणेणं भगवया महावीरेणं सद्धि विवादं करेतए ?  
नो इणट्टे समट्टे ।

१. से के (क, ख, ग, घ) ।

८. धम्ममतीते (क, ग) ।

२. पडल (क) ।

९. तुव्भं (ग) ।

३. सं० पा०—अट्टेहि य जाव वागरणेहि ।

१०. इयच्छेयाओ (ख) ।

४. से के (क, ख, घ) ।

११. इयपत्तट्टा (वृषा) ।

५. सं० पा०—केणट्टेणं एवं ।

१२. अस्यानन्तरं वृत्तौ 'इयमेधाविणो' अस्य

६. सं० पा०—विणस्समाणे जाव विलुप्पमाणे ।

पाठान्तरस्य उल्लेखोक्ति ।

७. उप्पियमाणे (क) ।

१३. णं भंते ! (क, ग) ।



पडिगुणेता कुंभारावणेमु पाडिहारियं पीठ'-●फलम-गेज्जा-गंधारयं० ओगि-  
ण्हिता णं विहरइ ॥

५३. तए णं से भोसाने मंगलपुत्ते सद्दालपुत्तं समणोवासयं जाहिं नो संचाएइ बहूहि  
आघवणाहिं य पणवणाहिं य सणवणाहिं य विणवणाहिं य निग्गंवाओ  
पावयणाओ नालिन्तए वा सीभित्तए वा विपरिणामेत्तए वा, ताहे संते तंते  
परितंते पोलासपुराओ नयराओ पडिणिवत्तमइ, पडिणिवत्तमिता बहिया  
जणवयविहारं विहरइ ॥

सद्दालपुत्तस्स धम्मजागरिया-पदं

५४. तए णं तस्स सद्दालपुत्तस्स समणोवासयस्स बहूहि सील'-●व्वय-गुण-वेरमण-  
पच्चवखाण-पोसहोववासोहिं श्रप्पाणं० भावेमाणस्स चोहस संवच्छरा वीइ-  
वकंता । पण्णरसमस्स संवच्छरस्स अंतरा वट्टमाणस्स 'अण्णदा कदाइ'  
पुव्वरत्तावरत्तकाल'-●समयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स इमेयाह्वे अज्झ-  
त्थिए वित्थिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुपपज्जित्था--एवं खलु अहं पोलासपुरे  
नयरे बहूणं जाव' आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, सयस्स वि य णं कुडुंवस्स  
मेढी जाव' सव्वकज्जवड्ढावए, तं एतेणं ववखेवेणं अहं नो संचाएमि समणस्स  
भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मपण्णत्ति उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए ॥

५५. तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए जेट्टपुत्तं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संवंधि-परिजणं  
च आपुच्छइ, आपुच्छित्ता सयाओ गिहाओ पडिणिवत्तमइ, पडिणिवत्तमिता  
पोलासपुरं नयरं मज्झमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव पोसहसाला तेणेव  
उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोसहसालं पमज्जइ, पमज्जित्ता उच्चार-पासवण-  
भूमि पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता दब्भसंधारयं संथरेइ, संथरेत्ता दब्भसंधारयं दुरुहइ,  
दुरुहित्ता पोसहसालाए पोसहिए वंभयारी उम्मुक्कमणिसुवण्णे ववगयमाला-  
वण्णगविलेवणे निक्खित्तसत्थमुसले एगे अवीए दब्भसंधारोवगए० समणस्स  
भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मपण्णत्ति उवसंपज्जित्ता णं विहरइ ॥

१. सं० पा०—पीठ जाव ओगिण्हिता ।

२. विपरिणवित्तए (ग) ।

३. सं० पा०—सील जाव भावेमाणस्स ।

४. × (क, ख, ग, घ) ।

५. सं० पा०—पुव्वरत्तावरत्तकाले जाव पोसह-  
सालाए समणस्स । संक्षेपीकरणपद्धती प्रायो  
नेकरूपता लभ्यते । क्वचित् 'जाव' शब्दा-  
नन्तरं संक्षिप्तपाठस्य अन्तिमशब्दो निविद्यते

क्वचित्च पूर्ववत्तिशब्दः । अत्रापि इत्यमेव  
विद्यते । तेन द्वितीयाव्ययनस्याधारेणात्र  
'दब्भसंधारोवगए' इति पर्यन्तं पाठः पूरितः ।

६. उवा० १।१३ ।

७. उवा० १।१३ ।

८. पू०—उवा० १।५७-५९ ।

९. धम्मं (क) ।





५०६

६०. तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए तेणं देवेणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव' विहरइ ॥
६१. तए णं से देवे सद्दालपुत्तं समणोवासयं अभीयं जाव' पासइ, पासित्ता आगुरत्ते रुद्धे कुविए चंडिमिकाए मिसिमिसीयमाणे सद्दालपुत्तरसा समणोवासयस्स जेट्टपुत्तं गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता अग्गओ घाएइ, घाएत्ता नव मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता सद्दालपुत्तस्स समणोवासयस्स गायं मसेण य सोणिएण य आइंचइ ॥
६२. तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए तं उज्जलं विडलं कवकासं पगाढं चंडं दुक्खं दुरहियासं वेयणं सम्मं सहइ खमइ तितियखइ अहियासेइ ॥

० मज्झिमपुत्त

६३. तए णं से देवे सद्दालपुत्तं समणोवासयं अभीयं जाव' पासइ, पासित्ता सद्दालपुत्तं समणोवासयं एवं वयासी—हंभो ! सद्दालपुत्ता ! समणोवासया ! जाव' जइ णं तुमं अज्ज सीलाई वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छुट्टेसि न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज मज्झिमं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता नव मंससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गायं मसेण य सोणिएण य आइंचामि, जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥
६४. तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए तेणं देवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव' विहरइ ॥
६५. तए णं से देवे सद्दालपुत्तं समणोवासयं अभीयं जाव' पासइ, पासित्ता दोच्चं पि तच्चं पि सद्दालपुत्तं समणोवासयं एवं वयासी—हंभो ! सद्दालपुत्ता ! समणोवासया ! जाव' जइ णं तुमं अज्ज सीलाई वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छुट्टेसि न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज मज्झिमं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता नव मंससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गायं मसेण य सोणिएण य आइंचामि, जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥
६६. तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए तेणं देवेणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव' विहरइ ॥

१. उवा० २।२३ ।

२. उवा० २।२४ ।

३. उवा० २।२४ ।

४. उवा० २।२२ ।

५. उवा० २।२३ ।

६. उवा० २।२४ ।

७. उवा० २।२२ ।

८. उवा० २।२३ ।



७३. तए णं से देवे सद्दालपुत्तं समणोवासयं अभीयं जाव' पासइ, पासित्ता आसुरते रुद्धे कुविए ञ्जिणिकए गिरिीगिरिीयमाणे सद्दालपुत्तरस समणोवासयस्स कणीयसं पुत्तं गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता अग्गओ घाएइ, घाएत्ता नव मंससोत्ते करेइ, करेत्ता आदाणभरियसि कडाहयसि अद्देइ, अद्देत्ता सद्दालपुत्तस समणोवासयस गायं मंसेण य सोणिएण य० आइंचइ ॥
७४. 'तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासाए तं उज्जलं जाव' वेयणं सम्मं सहइ खमइ तित्तिक्खइ अहियासेइ ॥

### ० अग्गिमित्ताभारिया

७५. तए णं से देवे सद्दालपुत्तं समणोवासयं अभीयं जाव' पासइ, पासित्ता चउत्वं पि सद्दालपुत्तं समणोवासयं एवं वयासी—हंभो ! सद्दालपुत्ता ! समणोवासया ! जाव' •जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खणाणाइं पोसहोववासाइं न छुहेसि० न भंजेसि, 'तो ते' अहं अज्ज जा इमा अग्गिमित्ता भारिया धम्मसहाइया धम्मविइज्जिया धम्माणुरागरत्ता समसुहदुक्खसहाइया, तं साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता नव मंससोत्ते करेमि, करेत्ता आदाणभरियसि कडाहयसि अद्देमि, अद्देत्ता तव गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचामि, जहा णं तुमं अद्दे-दुहद्दे"-•वसट्टे अकाले चव जीवियाओ० ववरोविज्जसि ॥
७६. तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासाए तेणं देवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव" विहरइ ॥
७७. तए णं से देवे सद्दालपुत्तं समणोवासयं अभीयं जाव" पासइ, पासित्ता दोच्चं पि तच्चं पि सद्दालपुत्तं समणोवासयं एवं वयासी—हंभो ! सद्दालपुत्ता ! समणो-

१. उवा० २।२४ ।

२. पूर्ववर्ति क्रमानुसारेण (३।३८) स्वीकृतं सूत्रमत्र युज्यते, किन्तु आदर्शेषु नास्य संकेतः प्राप्नोस्ति । संभवतः संक्षेपीकरणे परित्यक्तमिदमभूत् । अस्य स्थाने आदर्शेषु निम्नप्रकारं सूत्रं लभ्यते—'तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासाए अभीए जाव विहरइ' । नैतद् अत्र उपयुक्तमस्ति ।

३. उवा० २।२७ ।

४. उवा० २।२४ ।

५. सं० पा०—समणोवासिया अप्पत्थियपत्थिया जाव न भंजसि ।

६. उवा० २।२२ ।

७. तओ (क, ख, ग, घ) ।

८. तं ते (क, ख, ग, घ) ।

९. × (क, ख, ग, घ) ।

१०. सं० पा०—दुहद्दे जाव ववरोविज्जसि ।

११. उवा० २।२३ ।

१२. उवा० २।२४ ।



मिसिमिसीयमाणे एमं महं नीनुणन-गवलगुलिय-अयसिनुमुमणगसां खुरधारं  
असि गहाय ममं एव वयासी—हंभो ! सहालपुत्ता ! समणोवासया ! जाव'  
जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चवगाणाइं पोसहोववासाइं न  
छुट्टेसि न भजेसि, तो ते अहं अज्ज जेट्टपुत्तं साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता  
तव अगमओ घाएमि, घाएत्ता नव मंससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियंसि  
कडाहयंसि अद्देमि, अद्देत्ता तव गायं मंसेण य सोणिण्ण य आइंचामि,  
जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जमि । तए णं  
अहं तेणं पुरिसेणं एव वुत्ते समाणे अभीए जाव' विहरामि । तए णं से पुरिसे  
ममं अभीयं जाव' पासइ, पासित्ता ममं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वयासी—  
हंभो ! सहालपुत्ता ! समणोवासया ! जाव' जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं  
वेरमणाइं पच्चवखाणाइं पोसहोववासाइं न छुट्टेसि न भजेसि, तो ते अहं अज्ज  
जेट्टपुत्तं साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अगमओ घाएमि, घाएत्ता नव  
मंससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्देमि, अद्देत्ता तव  
गायं मंसेण य सोणिण्ण य आइंचामि, जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले  
चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ।

तए णं अहं तेणं पुरिसेणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव'  
विहरामि ।

तए णं से पुरिसे ममं अभीयं जाव' पासइ, पासित्ता आसुरत्ते रुट्टे कुविए  
चंडिकिए मिसिमिसीयमाणे ममं जेट्टपुत्तं गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता मम अगमओ  
घाएइ, घाएत्ता नव मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि  
अद्देइ, अद्देत्ता ममं गायं मंसेण य सोणिण्ण य आइंचइ ।

तए णं अहं तं उज्जलं जाव' वेयणं सम्मं सहामि खमामि तितिकखामि  
अहियासेमि ।

एवं मज्झिमं पुत्तं जाव' वेयणं सम्मं सहामि खमामि तितिकखामि अहियासेमि ।

एवं कणीयसं पुत्तं जाव' वेयणं सम्मं सहामि खमामि तितिकखामि अहियासेमि ।

तए ण से पुरिसे ममं अभीयं जाव' पासइ, पासित्ता ममं चउत्थं पि एवं  
वयासी—हंभो ! सहालपुत्ता ! समणोवासया ! जाव' जइ णं तुमं अज्ज

१. उवा० २।२२ ।

२. उवा० २।२३ ।

३. उवा० २।२४ ।

४. उवा० २।२२ ।

५. उवा० २।२३ ।

६. उवा० २।२४ ।

७. उवा० २।२७ ।

८. उवा० ७।६२-६७ ।

९. उवा० ७।६६-७३ ।

१०. उवा० २।२४ ।

११. उवा० २।२२ ।



विषणणं पडिगुणेड, पडिगुणेत्ता तरस ठाणग्ग आलोण्ड पडिक्कमइ निंदइ गरिहइ विउट्टइ विरोहेड अकरणयाए अक्कभुट्टेड अहारिहं पायच्छित्तं तवोक्कमं पडिवज्जइ ॥

### सदालपुत्तस्स उवासगपडिमा-पदं

८३. तए णं से सदालपुत्ते समणोवासाए पढमं उवासगपडिमं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ ॥
८४. तए णं से सदालपुत्ते समणोवासाए पढमं उवासगपडिमं अहामुत्तं अहाक्कपं अहामग्गं अहातच्च सम्मं काएणं फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ कित्तेइ आराहेइ ॥
८५. तए णं से सदालपुत्ते समणोवासाए दोच्चं उवासगपडिमं, एवं तच्चं, चउत्थं पंचमं, छट्ठं, सत्तमं, अट्ठमं, नवमं, दसमं, एक्कारसमं उवासगपडिमं अहामुत्तं अहाक्कपं अहामग्गं अहातच्चं सम्मं काएणं फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ कित्तेइ आराहेइ ॥
८६. तए णं से सदालपुत्ते समणोवासाए तेणं ओरालेणं विउलेणं पयत्तेणं पग्गहिएणं तवोक्कमेणं सुक्के लुक्खे निम्मसे अट्टिचम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए किसे धमणिसंतए जाए ॥

### सदालपुत्तस्स अणसण-पदं

८७. तए णं तस्स सदालपुत्तस्स समणोवासयस्स अण्णदा कदाइ, पुव्वरत्तावरत्ताकाल-समयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स अयं अज्झत्थिए चित्थिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं इमेणं एयारूवेणं ओरालेणं विउलेणं पयत्तेणं पग्गहिएणं तवोक्कमेणं सुक्के लुक्खे निम्मसे अट्टिचम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए किसे धमणिसंतए जाए । तं अत्थि ता मे उट्ठाणे कम्मे वले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे सद्धा-धिइ-संवेगे, तं जावता मे अत्थि उट्ठाणे कम्मे वले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे सद्धा-धिइ-संवेगे, जाव य मे धम्मायरिए धम्मोवएसए समणे भगवं महावीरे जिणे सुहत्थी विहरइ, तावता मे सेयं कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव' उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते अपच्छिममारणंतियसंलेहणा-भूसणा-भूसियस्स भत्तापाणपडियाइक्खियस्स, कालं अणवकंखमाणस्स विहरित्तए—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते अपच्छिममारणंतियसंलेहणा-भूसणा-भूसिए भत्तापाण-पडियाइक्खिए कालं अणवकंखमाणे विहरइ ॥

### सदालपुत्तस्स समाहिमरण-पदं

८८. तए णं से सदालपुत्ते समणोवासाए वहूहिं सील-व्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं अप्पाणं भावेत्ता वीसं वासाइं समणोवासगपरियाणं पाडणिता,





## अट्ठमं अज्झयणं

### महासतए

#### उक्खेव-पदं

१. 'जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं सत्तमस्स अंगस्स उवासगदसाणं सत्तमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, अट्ठमस्सा णं भंते ! अज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ? ° -

#### महासतयगाहावइ-पदं

२. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नयरे । गुणसिलए वेइए । सेणिए राया ॥
३. तत्थ णं रायगिहे नयरे महासतए' नामं गाहावई परिवसइ—अइडे' •जाव' बहुजणस्स अपरिभूए ॥
४. तस्स णं महासतयस्स गाहावइस्स अट्ठ हिरण्णकोडीओ सकंसाओ निहाणपउत्ताओ, अट्ठ हिरण्णकोडीओ सकंसाओ वड्ढिपउत्ताओ, अट्ठ हिरण्णकोडीओ सकंसाओ पवित्थरपउत्ताओ, अट्ठ वया दसगोसाहस्सिएणं वएणं होत्था ॥
५. से णं महासतए गाहावई वहुणं जाव' आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, सयस्स वि य णं कुडुंवस्स मेढी जाव' सव्वकज्जवड्ढावए यावि होत्था ° ॥
६. तस्स णं महासतयस्स गाहावइस्स रेवतीपामोक्खाओ' तेरस भारियाओ होत्था—

१. सं० पा०—उक्खेवो ।

२. ना० १।१।७ ।

३. महासत्ते (क); महासययं (ख) ।

४. सं० पा०—अइडे जहा आणंदो नवरं अट्ठ

हिरण्णकोडीओ सकंसाओ निहाणपउत्ताओ

अट्ठ हि वड्ढि अट्ठ हि सकंसाओ पवि अट्ठवया

दसगोसाहस्सिएणं वएणं ।

५. उवा० १।११ ।

६,७. उवा० १।१३ ।

८. रेवई० (ख, घ) ।



१२. ताए णं समणे भगवं महावीरे महासतयस्स गाहावडस्स वीसे य महइमहालियाए परिसाए जाव' धम्मं परिकहेइ ॥  
 १३. परिसा पडिगया, राया य गाए ॥

### महासतयस्स गिहिधम्म-पडिवत्ति-पदं

१४. ताए णं महासतए गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोञ्चा निसम्म हट्टुट्टु-चित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाण-हियाए उट्टाए उट्टेइ, उट्टेत्ता समणं भगवं महावीरं तिकवुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी--सद्धामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, पत्तियामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, रोएमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, अट्टभुट्टेमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं । एवमेयं भंते ! तहमेयं भंते ! अविहमेयं भंते ! असंदिद्धमेयं भंते ! इच्छियमेयं भंते ! पडिच्छियमेयं भंते ! इच्छिय-पडिच्छियमेयं भंते ! से जहेयं तुंभे वदह । जहा णं देवाणुप्पियाणं अंतिए वट्टे राईसर-तलवर-माडविय-कोडुंविद्य-इवभ-सेट्टि-सेणावइ-सत्थवाहप्पभिइया मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पवइया, नो खलु अहं तहा संचाएमि मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पवइत्तए । अहं णं देवाणुप्पियाणं अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं—दुवालसविहं सावगधम्मं पडिवज्जिस्सामि ।

अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिवंधं करेहि ॥

१५. ताए णं से महासतए गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए<sup>१०</sup> सावयधम्मं पडिवज्जइ, नवरं—अट्ट हिरण्णकोडीओ सकंसाओ' । अट्ट वया । रेवतीपामोकखाहि तेरसहिं भारियाहिं अवसेसं मेहुणविहिं पच्चक्खाइ' । इमं च णं एयारुवं अभिग्गहं अभिगेण्हति—कल्लाकल्लि 'च णं'<sup>११</sup> कप्पइ मे वेदोणियाए' कंसपाईए हिरण्णभरियाए संववहरित्तए ॥

### महासतयस्स समणोवासग-चरिया-पदं

१६. ताए णं से महासतए समणोवासए जाए—अभिगयजीवाजीवे' जाव' •समणे निग्गंथे फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-पडिग्गह-कंबल-पायपुंछणेणं ओसहभेसज्जेणं पाडिहारिएण य पीढ-फलग-सेज्जा-संथारएणं पडिलाभेमाणे<sup>१२</sup> विहरइ ॥

१. ओ० सू० ७१-७७ ।

२. पू०—उवा० २४-४५ ।

३. सकंसाओ उच्चारेति (क, ख, ग) ।

४. पच्चक्खाइ सेसं सव्वं तहेव (क, ख, ग, घ) ।

५. × (ख) ।

६. पेदोणि० (क) ।

७. सं० पा०—अभिगयजीवाजीवे जाव विहरइ ।

८. उवा० १।५५ ।



मंसं ० अज्भोववण्णा वहुविहेहि मंसंहेहि सोल्लेहि य तल्लिएहि य भज्जिएहि य  
'सुरं च महं च मेरुं च मज्जं च सीधुं च पसणं च' आसाएमाणी विसाएमाणी  
परिभाएमाणी परिभुंजेमाणी विहरइ ॥

### अमाघाय-पदं

२१. तए णं रायगिहे नयरं अण्णदा कदाइ अमाघाए बुद्धे गाविं होत्था ॥  
 २२. तए णं सा रेवती गाहावइणी मंसलोनुया मंसमुच्छिपा मंसगडिया मंसगिद्धा  
 मंसअज्भोववण्णा कोलघरिए पुरिसे सदावेइ, सदावेत्ता एवं वयासी— तुब्भे  
 देवाणुप्पिया ! ममं कोलहरिएहितो वएहितो कल्लाकल्लिं दुवे-दुवे गोणपोयए  
 उद्वेहे, उद्वेत्ता ममं उवणंह ॥  
 २३. तए णं ते कोलघरिया पुरिसा रेवतीए गाहावइणीए तह त्ति एयमट्ठं विणएणं  
 पडिसुणंति, पडिसुणित्ता रेवतीए गाहावइणीए कोलहरिएहितो वएहितो  
 कल्लाकल्लिं दुवे-दुवे गोणपोयए वहेत्ति, वहेत्ता रेवतीए गाहावइणीए  
 उवणंति ॥  
 २४. तए णं सा रेवती गाहावइणी तेहि गोणमसेहिं सोल्लेहि य तल्लिएहि य  
 भज्जिएहि सुरं च महं च मेरुं च मज्जं च सीधुं च पसणं च आसाएमाणी  
 विसाएमाणी परिभाएमाणी परिभुंजेमाणी विहरइ ॥

### महासतगस्स धम्मजागरिया-पदं

२५. तए णं तस्स महासतगस्स समणोवासगस्स बहूहि सील-व्वयं<sup>१</sup>-<sup>२</sup>नुण-वेरमण-  
 पच्चक्खाण-पोसहोववासेहि अप्पाणं ० भावेमाणस्स चोइस संवच्छरा  
 वीइक्कंता<sup>३</sup> । <sup>४</sup>पण्णरसमस्स संवच्छरस्स अंतरा वट्टमाणस्स अण्णदा कदाइ  
 पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्भत्थिए  
 चित्तिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं रायगिहे नयरं  
 बहूणं जाव<sup>५</sup> आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, सयस्स वि य णं कुडुंवस्स मेढी  
 जाव<sup>६</sup> सव्वकज्जवड्ढावए, तं एतेणं वक्खेवेणं अहं नो संचाएमि समणस्स भगवओ  
 महावीरस्स अंतियं धम्मपण्णत्ति उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए<sup>७</sup> ॥

१. मंसेहि य (क, ख, ग, घ) ।

२. × (क, ग, घ) ।

३. × (घ) ।

४. सुरं च पसल्लं च (क) ।

५. वि (क) ।

६. धोलघरिए (क) ।

७. कोल्लं (घ) ।

८. गोणपोतलए (क) ।

९. उवहंति (ख); गंहिति (ग, घ) ।

१०. गोमंसेहि (क, ग) ।

११. सं० पा०—सीलव्वय जाव भावेमाणस्स ।

१२. सं० पा०—वीइक्कंता एवं तहेव जेट्टपुत्तं  
 ठवेइ जाव पोसहसालाए धम्मपण्णत्ति ।

१३. उवा० १।१३ ।

१४. उवा० १।१३ ।

१५. पू०—उवा० १।५७-५९ ।



३०. तए णं से महासतए समणोवासए रेवतीए गाहावडणीए दोच्चं पि तच्चं पि एवं वृत्ते समाणे पयमदुं ना आहाइ नी परिआणाइ<sup>०</sup>, अणाहाइज्जमाणे अपरियाणमाणे विहरइ ॥
३१. तए णं सा रेवती गाहावडणी महासतएणं समणोवासएण अणाहाइज्जमाणी अपरियाणिज्जमाणी जाभेव दिसं पाउअभूया ताभेव दिसं पडिगया ॥

### महासतगस्स उवासगपडिमा-पदं

३२. तए णं से महासतए समणोवासए पढमं उवासगपडिमं उवसंपज्जिता णं विहरइ ।
३३. <sup>१०</sup>तए णं से महासतए समणोवासए पढमं उवासगपडिमं अहामुत्तं अहाकप्पं अहामगं अहातच्चं सम्मं काएणं फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ कित्तेइ आराहेइ ॥
३४. तए णं से महासतए समणोवासए दोच्चं उवासगपडिमं, एवं तच्चं, चउद्वं, पंचमं, छट्ठं, सत्तमं, अट्ठमं, नवमं, दसमं, एक्कारसमं उवासगपडिमं अहामुत्तं अहाकप्पं अहामगं अहातच्चं सम्मं काएणं फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ कित्तेइ आराहेइ<sup>०</sup> ॥
३५. तए णं से महासतए समणोवासए तेणं ओरालेणं<sup>१</sup> •विउलेणं पयत्तेणं पग्गहि-एणं तवोकम्मेणं सुक्के लुक्खे निम्मसे अट्ठिचम्मावणद्वे किडिकिडियाभूए<sup>०</sup> किसे धमणिसंतए जाए ॥

### महासतगस्स अणसण-पदं

३६. तए णं तस्स महासतगस्स समणोवासयगस्स अण्णदा कदाइ पुव्वरत्तावरत्तकाले धम्मजागरियं जागरमाणस्स अयं अज्भत्थिए चित्थिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समु-प्पज्जित्था एवं खलु अहं इमेणं ओरालेणं<sup>१</sup> •विउलेणं पयत्तेणं पग्गहि-एणं तवो-कम्मेणं सुक्के लुक्खे निम्मसे अट्ठिचम्मावणद्वे किडिकिडियाभूए किसे धमणिसंतए जाए । तं अत्थि ता मे उट्ठाणे कम्मे वले वीरिए पुरिसक्कार-परकम्मे सद्धा-धिइ-संवेगे, तं जावता मे अत्थि उट्ठाणे कम्मे वले वीरिए पुरिसक्कार-परकम्मे सद्धा-धिइ-संवेगे, जाव य मे धम्मायरिए धम्मोवएसए समणे भगवं महावीरे जिणे सुहत्थी विहरइ, तावता मे सेयं कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव<sup>२</sup> उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते अपच्छिममारणंतियसंलेहणा-

१. सं० पा०—पढम अहामुत्त जाव एक्कारस्स वि ।

२. सं० पा०—उरालेणं जाव किसे ।

३. सं० पा०—उरालेण तवोकम्मेण जहा आणंदो तहेव अपच्छिम<sup>०</sup> ।

४. उवा० १।५७<sup>०</sup> ।





परियाणाद्, अणाढागमाणे अपरियाणमाणे तुसिणीम् वम्मज्झाणोवगए  
विहरइ ॥

४०. तए णं सा रेवती गाहावइणी महासतयं समणोवासयं दोच्चं पि तच्चं पि एवं  
वयासी—हंभो ! महासतया ! समणोवासया ! किं णं तुम्हं देवानुप्पिया !  
धम्मोण वा पुण्णेण वा सम्भेण वा मोक्खेण वा, जं णं तुमं मए सद्धि ओरालाई  
माणुस्सयाई भोगभोगां भुंजमाणं नो विहरसि ? °

महासतगस्स विक्खेव-पदं

४१. तए णं से महासतए समणोवासए रेवतीए गाहावइणीए दोच्चं पि तच्चं पि  
एवं वुत्ते समाणे आसुरत्ते' रुद्धे कुविए चंडिविकए मिसिमिनीयमाणे ओहिं  
पउंजइ, पउंजित्ता ओहिणा आभोएइ, आभोएत्ता रेवति गाहावइणि एवं  
वयासी— हंभो ! रेवती ! अप्पत्थियपत्थिए ! दुरंत-पंत-लक्खणे ! हीणपुण्ण-  
चाउट्टसिए ! सिरि-हिरि-धिइ-कित्ति-परिवज्जिए ! एवं खलु तुमं अंत  
सत्तरत्तस्स अलसएणं' वाहिणा अभिभूया समाणी अट्ट-दुहट्ट-वसट्टा असमाहिं-  
पत्ता कालमासे कालं किच्चा अहे इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए लोलुयच्चुए  
नरए चउरासीतिवाससहस्सट्ठिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए उववज्जिहिसि ॥

४२. तए णं सा रेवती गाहावइणी महासतएणं समणोवासएणं एवं वुत्ता समाणी—  
रुद्धे णं ममं महासतए समणोवासए ! हीणे णं ममं महासतए समणोवासए !  
अवज्झाया णं अहं महासतएणं समणोवासएणं, न नज्जइ णं' अहं केणविं  
कु-मारेणं मारिज्जिस्सामि—त्ति कट्टु भीया तत्था तसिया उव्विग्गा संजाय-  
भया सणियं-सणियं पच्चोसक्कइ, पच्चोसक्कित्ता जेणेव सए गिहे, तेणेव  
उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ओहयमणसंकप्पा' °चित्तासोगसागरसंपविट्ठा करयल-  
पल्हत्थमुहा अट्टज्झाणोवगया भूमिगयदिट्ठिया ° भियाइ ॥

४३. तए णं सा रेवती गाहावइणी अंतो सत्तरत्तस्स अलसएणं' वाहिणा अभिभूया  
अट्ट-दुहट्ट-वसट्टा कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए लोलुय-  
च्चुए नरए चउरासीतिवाससहस्सट्ठिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए उववण्णा ॥

१. पू०—उवा० ५१७ ।

२. आसुरत्त, (क, ख, ग, घ) ।

३. आलस्सएणं (क); आलस्सएणं (ख) ।

४. समाणी एवं च (क, ग, घ); समाणी एवं  
वयासी (ख); किन्तु प्रकरणानुसारेण नेवं  
युज्यते ।

५. × (ग, घ) ।

६. केणति (क); केण वि (ख, घ) ।

७. सं० पा०—ओहयमणसंकप्पा जाव भियाइ ।

८. आलस्सएण (क); आलसएणं (ख);  
अलस्सएणं (ग) ।



विसर्पमाण्डिगम् उट्टाम् उट्टेड, उट्टेता समणं भगवं महावीरं तिमगुतो ॥  
 तिण-पयाहिणं करेड, करेता वंदइ णगंसइ, वदित्ता णगंगित्ता एवं ववती  
 सहामि णं भं ! निगंथं पावयणं, परिगामि णं भंते ! निगंथं ॥५५  
 रोएमि णं भंते ! निगंथं पावयणं, अट्टभुट्टेमि णं भंते ! निगंथं पावयणं  
 एवमेयं भंते ! सहमेयं भंते ! अवित्रहमेयं भंते ! असद्विहमेयं भंते ! इच्छि-  
 मेयं भंते ! पडिच्छियमेयं भंते ! इच्छिय-पडिच्छियमेयं भंते ! से जहेयं पु-  
 वदह । जहा णं देवाणुप्पियाणं अतिए वहुवे राईसर-तलवर-भाडविय-कोडुविद  
 इवभ-रोट्टि-सेणावड-सत्थवाहणभइया मुंडा भविता अगाराओ अणगारिं  
 पव्वइया, नो खनु अहं तहा संचाएमि मुंडे भविता अगाराओ अणगारिं  
 पव्वइत्तए । अहं णं देवाणुप्पियाणं अतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं-  
 दुवालसविहं सावगधम्मं पडिवज्जिस्सामि ।

अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिववं करेहि ॥

१४. तए णं से लेतियापिता गाहावट्टे समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए<sup>१</sup> सावय-  
 धम्मं पडिवज्जइ ॥

भगवओ जणवयविहार-पदं

१५. तए णं समणे भगवं महावीरे अण्णदा कदाइ सावत्थीए नयरीए कोट्टयाओ  
 चेइयाओ पडिणिवखमइ, पडिणिवखमित्ता वहिया जणवयविहारं विहरइ ॥

लेतियापियस्स समणोवासग-चरिया-पदं

१६. तए णं से लेतियापिता समणोवासए जाए—अभिगयजीवाजीवे जाव<sup>२</sup> समणे  
 निगंथे फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-पडिगह-कंवल-  
 पायपुंछणेणं ओसह-भेसज्जेणं पाडिहारिएण य पीढ-फलग-सेज्जा-संधारएणं  
 पडिलाभेमाणे विहरइ ॥

फग्गुणीए समणोवासिय-चरिया-पदं

१७. तए णं सा फग्गुणी भारिया समणोवासिया जाया—अभिगयजीवाजीवा जाव<sup>३</sup>  
 समणे निगंथे फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-पडिगह-  
 कंवल-पायपुंछणेणं ओसह-भेसज्जेणं पाडिहारिएण य पीढ-फलग-सेज्जा-संधार-  
 एणं पडिलाभेमाणी विहरइ ॥

लेतियापियस्स धम्मजागरिया-पदं

१८. तए णं तस्स लेतियापियस्स समणोवासगस्स वहुहि सील-व्वय-गुण-वेरमण-

१. पू०—उवा० १।२४-५३ ।

३. उवा० १।५६ ।

२. उवा० १।५५ ।



समयोस धम्मजागरणं जागरणात्तरसं समं अज्जभस्सिणं विस्सिणं पत्थिणं, एतत्तं  
संकोणे समुत्पाज्जत्था—एवं एतत्तं उभेणं एवास्सवेणं श्रीरानेणं विउत्तेणं  
पयत्तेणं पयत्तिणं नवोक्कमेणं मुक्ते नुक्ते निम्ममे अट्टियम्मपयत्ते किडकिडि-  
याभूणं किमे धम्मणिसंसाणं जाणं । नं अत्थि मा मे उट्टाणे कम्मं वत्ते वीरिणं  
पुरिसानकार-परयकमे यत्ता-विट्-संवेणे, तं जावता मे अत्थि उट्टाणे कम्मं वत्ते  
वीरिणं पुरिसानकार-परयकमे यत्ता-विट्-संवेणे, जाव य मे धम्मार्थिणं  
धम्मोवणसाणं समणे भगवं महावीरे जिणे सुत्तयां विहरइ, तावता मे सेवं कत्तं  
पाउप्पभायाणं रयणीणं जाव' उट्टियम्मि सूरं सहसरारिस्सम्मि दिणयरे तेयसा  
जलंते अपच्छिममारणंतियसंलेहणा-भूसणा-भूसियरसा भत्तपाण-पट्टियाइविख-  
यस्सा, कालं अणवकंखमाणस्स विहरित्ताणं—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कत्तं  
पाउप्पभायाणं रयणीणं उट्टियम्मि सूरं सहसरारिस्सम्मि दिणयरे तेयसा जलंते  
अपच्छिममारणंतियसंलेहणा-भूसणा-भूसिणं भत्तपाण-पट्टियाइविखए कालं  
अणवकंखमाणे विहरइ ॥

### लेतियापियस्स समाहिमरण-पदं

२५. तए णं रो लेतियापिता समणोवासाए वट्ठहि सील-व्वय-मुण-वेरेमण-पच्चक्खाण-  
पोसहोववासेहि अप्पाणं भावेत्ता, वीसं वासाइं समणोवासगपरियायं पाउजित्ता,  
एवकारस य उवासगपडिमाओ सम्मं काएणं फासित्ता, मासियाए संलेहणाए  
अत्ताणं भूसित्ता, सट्ठि भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता, आलोइय-पडिक्कते  
समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा० सोहम्मं कप्पे अरुणकीले विमाणे  
देवत्ताए उववण्णे । तत्थ णं अत्थेगइयाणं देवाणं चत्तारि पलिओवमाइं ठिई  
पण्णत्ता । लेतियापियस्स वि देवस्स चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥
२६. से णं भंते ! लेतियापिता ताओ देवलोगाओ आउक्खाएणं भववखएणं  
ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता कहिं गमिहिइ ? कहिं उववज्जिहिइ ?  
गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्जिभहिइ बुज्जिभहिइ मुच्चिहिइ सव्वदुक्खाणमंतं  
काहिइं ॥

### निक्खेव-पदं

२७. एवं खलु जंवू ! समणे णं भगवया महावीरेणं उवासगदसाणं दसमस्स  
अज्जभयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ॥

१. उवा० १।५७ ।

२. अध्ययननिगमनानन्तरमादर्शेषु पाठान्तररूपेण  
स्वीकृतं संग्रहवाक्यमुपलभ्यते । वृत्त्यनुसारेण  
नैतत् संभाव्यते—दसण्हं वि पण्णरसमे

संवच्छरे वट्टमाणे णं चित्ता । दसण्हं वि  
वीसं वासाइं समणोवासगपरियाओ (क,  
ख, ग, घ) ।













६. एवं गन्तुं जंत्तु ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं अट्टमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं पढमस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पणत्ता, तं जहा—

### संगहणी-गाहा

१. गोयम २. समुद्द ३. सागर, ४. गंभीरे चैव होइ ५. धिमिए य ।  
 ६. अयले ७. कंणिल्ले खलु, ८. अक्खोभ ९. पसेणई १०. विण्हू ॥१॥  
 ७. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं अट्टमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं पढमस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पणत्ता, पढमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स अंतगडदसाणं समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं के अट्टे पणत्ते ?

### गोयम-पदं

८. एवं खलु जंत्तु ! तेणं कालेणं तेणं समएणं वारवई नामं नयरी होत्था—दुवालस-जोयणायामा नवजोयणवित्थिण्णा धणवत्ति-मइ'-णिम्मया चामीकर-पागारा नाणामणि-पंचवण्ण-कविसीसगमंडिया सुरम्मा अलकापुरि-संकासा' पमुदिय-पक्कीलिया पच्चक्खं देवलोगभूया पासादीया दरिसणिज्जा अभिह्वा पडि-ह्वा ॥  
 ९. तीसे णं वारवईए' णयरीए वहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए, एत्थ' णं रेवयए नामं पव्वए होत्था—वण्णओ' ॥  
 १०. तत्थ णं रेवयए पव्वए नंदणवणे नामं उज्जाणे होत्था - वण्णओ' ॥  
 ११. [तस्स णं उज्जाणस्स बहुमज्झदेसभाए ?] सुरप्पिए नामं जक्खायतणे होत्था - [चिराइए पुव्वपुरिस-पणत्ते ?] पोराने ॥  
 १२. से णं एगेणं वणसंडेणं [सव्वओ समंता संपरिक्खत्ते ?] ॥  
 १३. [तस्स णं वणसंडस्स बहुमज्झदेसभाए, एत्थ णं महं एगे ?] असोगवरपायवे ॥  
 १४. तत्थ णं वारवईए णयरीए कण्हे नामं वासुदेवे राया परिवसइ—महाराय-वण्णओ' ।  
 से णं तत्थ समुद्विजयपामोक्खाणं दसण्हं दसाराणं बलदेवपामोक्खाणं' पंचण्हं महावीराणं', पज्जुण्णपामोक्खाणं अट्टुट्ठाणं कुमारकोडीणं, संवपामोक्खाणं

१,२. ना० १।१।७ ।

३. × (क) ।

४. समा (क) ।

५. वारवती (क) ।

६. तत्थ (ख) ।

७. ना० १।१।३ ।

८. ना० १।५।४ ।

९. ओ० सू० १४ ।

१०. °पामुक्खाणं (ख) ।

११. नायाधम्मकहाओ १।५।६ सूत्रात् अस्य क्रमो भिन्नीस्ति ।



# तइओ वग्गो

## पढमं अज्भयणं

### अणीयसे

#### उक्खेव-पदं

१. जइ'णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं अट्टमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं दोच्चस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते तच्चस्स णं भंते ! वग्गस्स अंतगडदसाणं समणेणं भगवया महावीरेणं के अट्ठे पण्णत्ते ? °
२. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं अट्टमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं तच्चस्स वग्गस्स तेरस अज्भयणा पण्णत्ता, तं जहा—१. अणीयसे २. अणंतसेणे अजियसेणे ४. अणिहयरिऊ ५. देवसेणे ६. सत्तुसेणे ७. सारणे ८. गए ९. समुद्दे १०. दुम्मुद्दे ११. कूवए १२. दाए १३. अणाहिट्ठी ॥
३. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं अट्टमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं तच्चस्स वग्गस्स तेरस अज्भयणा पण्णत्ता, पढमस्स णं भंते ! अज्भयणस्स अंतगडदसाणं के अट्ठे पण्णत्ते ?

#### अणीयसादि-पदं

४. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं भद्दिलपुरे नामं नगरे होत्था—वण्णओ ॥
५. तस्स णं भद्दिलपुरस्स उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए सिरिवणे नामं उज्जाणे होत्था—वण्णओ ॥ जियसत्तू राया ॥

१. स० पा०—जइ तच्चस्स उक्खेवओ ।

२. देवजसे (क) ।

३. अणाहिट्ठे (क) ।

४. ओ० सू० १ ।

५. ना० १।१।४ ।



१४. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं अट्टमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं तच्चस्स वग्गस्स पढमस्स अज्जभयणरसं अयमट्ठे पण्णत्ते ॥

### २-६ अज्जभयणाणि

१५. एवं जहा अणीयसो । एवं रोसा वि । अज्जभयणा एवकगमा । वत्तीसओ दाओ । वीसं वासा परियाओ । चोद्दस पुब्बा । सेत्तुंजे सिद्धा ।

### सत्तमं अज्जभयणं

#### सारणे

#### सारण-पदं

१६. तेणं कालेणं तेणं समएणं वारवईए नयरीए, जहा पढमे, नवरं—वसुदेवे राया । धारिणी देवी । सीहो सुमिणे । सारणे कुमारे । पण्णासओ दाओ । चोद्दस पुब्बा । वीसं वासा परियाओ । सेसं जहा गोयमस्स जाव<sup>१</sup> सेत्तुंजे सिद्धे ।

### अट्ठमं अज्जभयणं

#### गए

#### उक्खेव-पदं

१७. जइ<sup>१</sup> णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं अट्टमस्स अंगस्स तच्चस्स वग्गस्स सत्तमस्स अज्जभयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते । अट्टमस्स णं भंते ! अज्जभयणस्स अंतगडदसाणं के अट्ठे पण्णत्ते ? °
१८. एवं खलु जंबू तेणं कालेणं तेणं समएणं वारवईए नयरीए, जहा पढमे जाव<sup>१</sup> अरहा अरिद्धनेमी समोसढे ॥

#### छण्हं अणगाराणं तव-संकप्प-पदं

१९. तेणं कालेणं तेणं समएणं अरहओ अरिद्धणेमिस्स अंतेवासी छ अणगारा भायरो<sup>५</sup> सहोदरा होत्था—सरिसया सरित्तया सरिव्वया नीलुप्पल-गवल-गुलिय-

१. पुब्बी (ग) ।

२. अं० १।२१-२४ ।

३. सं० पा०—जइ उक्खेवओ अट्टमस्स ।

४. अं० ३।१२ ।

५. भायरा (क, ख, ग) ।





१४. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं अट्टमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं तच्चरस वग्गस्स पढमस्स अज्जभयणरस अयमट्ठे पण्णत्ते ॥

### २-६ अज्जभयणाणि

१५. एवं जहा अणीयसे । एवं सेसा वि । अज्जभयणा एवकगमा । वत्तीसओ दाओ । वीसं वासा परियाओ । चौद्दस पुब्बा । सेत्तुंजे सिद्धा ।

### सत्तमं अज्जभयणं

#### सारणे

#### सारण-पदं

१६. तेणं कालेणं तेणं समएणं वारवईए नयरीए, जहा पढमे, नवरं—वसुदेवे राया । धारिणी देवी । सीहो सुमिणे । सारणे कुमारे । पण्णासओ दाओ । चौद्दस पुब्बा<sup>१</sup> । वीसं वासा परियाओ । सेसं जहा गोयमस्स जाव<sup>२</sup> सेत्तुंजे सिद्धे ।

### अट्ठमं अज्जभयणं

#### गए

#### उक्खेव-पदं

१७. जइ<sup>३</sup> णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं अट्टमस्स अंगस्स तच्चस्स वग्गस्स सत्तमस्स अज्जभयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते । अट्टमस्स णं भंते ! अज्जभयणस्स अंतगडदसाणं के अट्ठे पण्णत्ते ? ०

१८. एवं खलु जंबू तेणं कालेणं तेणं समएणं वारवईए नयरीए, जहा पढमे जाव<sup>४</sup> अरहा अरिद्धनेमी समोसडे ॥

#### छण्हं अणगाराणं तव-संकप्प-पदं

१९. तेणं कालेणं तेणं समएणं अरहओ अरिद्धणेमिस्स अंतेवासी छ अणगारा भायरो<sup>५</sup> सहोदरा होत्था—सरिसया सरित्तया सरिब्बया नीलुप्पल-गवल-गुलिय-

१. पुब्बी (ग) ।

२. अ० १।२१-२४ ।

३. सं० पा०—जइ उक्खेवओ अट्टमस्स ।

४. अ० ३।१२ ।

५. भायरा (क, ख, ग) ।



घरसमुदाणस्स' भिक्खायरियाए अडमाणे' वसुदेवरस रण्णो देवईए देवीए गेहे' अणुप्पविट्ठे ॥

२५. तए णं सा देवई देवी ते अणगारे एज्जमाणे पासइ, पासित्ता हट्ठु'कुट्ट-  
चित्तमाणंदिया पीडमणा परमसोमणस्सिया हरिसावस-विसप्पमाण °हियया  
आसणाओ अट्ठुट्ठेइ, अट्ठुट्ठेत्ता सत्तट्ठ पदाइ अणुगच्छइ, तिवसुत्तो आयाहिण-  
पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता जेणेव भत्तघरए तेणेव  
उवागया सीहकेसराणं मोयगाणं थालं भरेइ, ते अणगारे पडिलाभेइ, वंदइ  
नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता पडिविसज्जेइ ॥
२६. तयाणंतरं च णं दोच्चे संघाडए वारवईए' •नयरीए उच्च-नीय-मज्झिमाइं  
कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडमाणे वसुदेवस्स रण्णो देवईए देवीए  
गेहे अणुप्पविट्ठे ॥
२७. तए णं सा देवई देवी ते अणगारे एज्जमाणे पासइ, पासित्ता हट्ठुत्तुआ आसणाओ  
अट्ठुट्ठेइ, अट्ठुट्ठेत्ता सत्तट्ठ पदाइ अणुगच्छइ, तिवसुत्तो आयाहिण-पयाहिणं  
करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता जेणेव भत्तघरए तेणेव उवागया  
सीहकेसराणं मोयगाणं थालं भरेइ, ते अणगारे पडिलाभेइ, वंदइ नमंसइ,  
वंदित्ता नमंसित्ता ° पडिविसज्जेइ ॥
२८. तयाणंतरं च णं तच्चे संघाडए वारवईए नगरीए उच्च'-•नीय-मज्झिमाइं  
कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडमाणे वसुदेवस्स रण्णो देवईए देवीए  
गेहे अणुप्पविट्ठे ॥

### देवईए पुणरागमणसंका-पदं

२९. तए णं सा देवई देवी ते अणगारे एज्जमाणे पासइ, पासित्ता हट्ठुत्तुआ आसणाओ  
अट्ठुट्ठेइ, अट्ठुट्ठेत्ता सत्तट्ठ पदाइ अणुगच्छइ, तिवसुत्तो आयाहिण-पयाहिणं  
करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता जेणेव भत्तघरए तेणेव उवागया  
सीहकेसराणं मोयगाणं थालं भरेइ, ते अणगारे ° पडिलाभेइ, पडिलाभेत्ता  
एवं वयासी—किण्णं देवाणुप्पिया ! कण्हस्स वासुदेवस्स इमीसे वारवईए  
नयरीए नवजोयणवित्थिण्णाए जाव° पच्चक्खं देव्लोगभूयाए समणा निगंथा  
उच्च'-•नीय-मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए ° अडमाणा

१. °समुदाणस्स (ख, ग, घ) ।

२. अडमाणे २ (क) ।

३. गिहं (ख, ग) ।

४. सं० पा०—हट्ठु जाव हियया ।

५. सं० पा०—वारवईए उच्च जाव पडिवि-  
सज्जेइ ।

६. सं० पा०—उच्च जाव पडिलाभेइ ।

७. अं० १।५ ।

८. सं० पा०—उच्च जाव अडमाणा ।



## पुत्त-बोह-पवं

३१. तए णं तीसे देवईए देवीए अयमेयारुवे अजभत्थिए चितिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पण्णे—एवं खलु अहं पोलासपुरे नयरे अतिमुत्तेणं कुमारसमणेणं वालत्तणे वागरिआ—तुमण्णं देवाणुप्पिए ! अट्ट पुत्ते पयाइस्ससि' सरिसए जाव' नलकूवर-समाणे, नो चैव णं भरहे' वारे अण्णाओ अम्मयाओ तारिसए पुत्ते पयाइस्संति । तं णं मिच्छा । इमं णं पच्चवखमेव दिस्साइ—भरहे वासे अण्णाओ वि अम्मयाओ खलु' एरिसए' पुत्ते पयायाओ । तं गच्छामि णं अरहं अरिट्ठणेमि वंदामि, वंदित्ता इमं च णं एयाह्वं वागरणं पुच्छिस्सामीत्ति कट्ठ एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कोडुंविद्यपुरिसं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—'खिप्पा-मेव भो देवाणुप्पिया ! धम्मियं जाणप्पवरं जुत्तामेव उवट्ठवेह । ते वि तहेव° उवट्ठवेंति । जहा देवाणंदा जाव' पज्जुवासइ ॥

३२. तए णं अरहा अरिट्ठणेमी देवइं देवि एवं वयासी—से नूणं तव देवई ! इमे छ अणगारे पासित्ता अयमेयारुवे अजभत्थिए चितिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पण्णे—एवं खलु अहं पोलासपुरे नयरे अइमुत्तेणं कुमारसमणेणं वालत्तणे वागरिआ तं चैव जाव' निग्गच्छित्ता ममं अतियं हव्वमागया । से नूणं देवई ! अट्टे समट्टे ?

हंता अत्थि ॥

३३. एवं खलु देवाणुप्पिए ! तेणं कालेणं तेणं समएणं भदिलपुरे नयरे नागे नामं गाहावई परिवसइ—अड्ढे ॥

३४. तस्स णं नागस्स गाहावइस्स सुलसा नामं भारिया होत्था ॥

३५. तए णं सा सुलसा गाहावइणी वालत्तणे चैव नेमित्तिएणं वागरिया—एस णं दारिया णिदू भविस्सइ ॥

३६. तए णं सा सुलसा वालप्पभिइं चैव° हरि-णेगमेसिस्स पडिमं करेइ, करेत्ता कल्लाकल्लिं प्हाया° •कयवलिकम्मा कयकोउय-मंगल°-पायच्छित्ता उल्लपड-साडया महरिहं पुप्फच्चणं° करेइ, करेत्ता जण्णुपायपडिया पणामं करेइ, करेत्ता तओ पच्छा आहारेइ वा नीहारेइ वा चरइ° वा ॥

१. पयाइसिसि (घ) ।

८. अं० ३।३१ ।

२. अं० ३।१६ ।

९. जेणेव मम (क, ख, ग, घ) ।

३. भारहे (ख, ग, घ) ।

१०. चैव हरिणेगमेसी देवभत्ता यावि होत्था ।

४. X (क) ।

(ग, घ) ।

५. एदिसए जाव (क, ख, ग, घ) ।

११. सं० पा०—प्हाया जाव पायच्छित्ता ।

६. सं०पा०—लहुकरणजाणपवरं जाव उवट्ठवेंति ।

१२. पुप्फच्चणियं (क) ।

७. भ० ६।१४४, १४६ ।

१३. वरइ (व) ।



वंदित्ता नमंसित्ता जेणेव अरहा' अरिदृणोमी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अरहं अरिदृणोमि तिकगुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता तमेव धम्मियं जाणप्पवरं दुरहइ', दुरहित्ता जेणेव वारवई नयरी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वारवइं नयरी अणुप्पविसइ, अणुप्प-विसित्ता जेणेव साए गिहे जेणेव वाहिरिया उवट्टाणसाला तेणेव उवागया, धम्मियाओ जाणप्पवराओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता जेणेव साए वासघरे' जेणेव साए रायणिज्जे तेणेव उवागया सयंशि रायणिज्जंसि निमीयइ ॥

### देवईए पुत्ताभिलासा-पदं

४३. ताए णं तीरो देवईए देवीए अयं अज्जभत्थिए चित्तिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पण्णे—एवं खलु अहं सरिसाए जाव' नलक्खर-समाणे सत्त पुत्ते पयाया, नो चैव णं माए एगस्स वि बालत्तणए समणुब्भूए' । एस्स वि य णं कण्हे वासुदेवे छण्हं-छण्हं मासाणं ममं अंतियं पायवंदए हव्वमागच्छइ । तं धण्णाओ णं ताओ अम्मयाओ, पुण्णाओ णं ताओ अम्मयाओ, कयपुण्णाओ णं ताओ अम्मयाओ, कयलक्खणाओ णं ताओ अम्मयाओ, जासिं मण्णे णियग-कुच्छि-संभूयाइ' थणदुद्ध-लुद्धयाइं महुर-समुल्लावयाइं मम्मण-पजंपियाइं 'थण-मूला' कक्खदेस-भाग अभिसरमाणाइं' मुद्धयाइं' पुणो य कोमलकमलोवमेहिं हत्थेहिं गिण्हऊण उच्छगे' णिवेसियाइं देति समुल्लावए सुमहुरे पुणो-पुणो मंजुलप्पभणिए । अहं णं अधण्णा अपुण्णा अकयपुण्णा अकयलक्खणा एत्तो एकतरमवि ण पत्ता—ओहय" •मणसंकप्पा" करयलपत्तहत्थमुही अट्टज्जाणोवगया ° भियायइ ॥

### कण्हस्स चित्ताकारणपुच्छा-पदं

४४. इमं च णं कण्हे वासुदेवे ण्हाए" •कयवलिकम्मे कयकोउय-मंगल-पायच्छित्ते सव्वालंकार° विभूसिए देवईए देवीए पायवंदए हव्वमागच्छइ ॥

४५. ताए णं से कण्हे वासुदेवे देवइं देविं पासइ, पासित्ता देवईए देवीए पायगहणं करेइ, करेत्ता देवइं देविं एवं वयासी—अण्णया णं अम्मो ! तुब्भे ममं पासेत्ता

१. अरिहा (क) ।

२. द्रुहति (क) ।

३. वासघरए (ख, ग) ।

४. अं० ३।१६ ।

५. बालत्तए (ख) ।

६. समुब्भूए (ख, ग, घ) ।

७. संभूययाइं (ख, ग) ।

८. पजंपिराइं (क) ।

९. थणमूल (क, ग, घ) ।

१०. अतिसरमाणाइं (क, ख, ग, घ) ।

११. भवन्तीति गम्यते (वृ); मुद्धयाइं थणियं पियंति (ना० १।२।१२); पण्हयं पियंति (उ०४।६०) ।

१२. उच्छंग (ख, ग) ।

१३. सं० पा०—ओहय जाव भियायइ ।

१४. °संकप्पा भूमिगयदिट्ठीया (वृ) ।

१५. सं० पा०—ण्हाए जाव विभूसिए ।





परिणयमेत्ते जोव्वणग ० गणुप्पत्ते अरहत्तो अरिदुणेमिस्स अन्नियं मुंटे' • भवित्ता  
अगाराओ अणगारियं ० पव्वइस्सइ—कण्हं वामुदेवं दोच्चं पि तच्चं पि एवं  
वदइ, वदित्ता जामेव दिसं पाउव्वभूए ताभेव दिसं पडिगए ।

### कण्हेण देवईए आसासण-पदं

५१. तए णं से कण्हे वामुदेवे पोसहसालाओ पडिणिवत्तइ, पडिणिवत्तित्ता जेणेव  
देवई' देवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता देवईए देवीए पायग्गहणं करेइ,  
करेत्ता एवं वयासी—होहिइ णं अम्मो ! मम सहोदरं कणीयसे भाउए ति  
कट्टु देवइं देविं ताहिं इट्ठाहिं कंताइं पियाहिं मण्णुणाहिं मणामाहिं वग्गूहिं  
आसासेइ, आसासेत्ता जामेव दिसं पाउव्वभूए ताभेव दिसं पडिगए ॥

### गयसुकुमालस्स जम्म-पदं

५२. तए णं सा देवई देवी अण्णया कयाइं तंसि तारिसंगसि वासघरंसि जाव' सीहं  
सुमिणे पासित्ता पडिवुद्धा जाव' गव्वं परिवहइ ॥  
५३. तए णं सा देवई देवी नवण्हं मासाणं जासुमण-रत्तवंधुजीवय-लक्खारस्स-  
सरस्सपारिजातक-तरुणदिवायर-समप्पभं सव्वणयणकंत-सुकुमालपाणिपायं'  
जाव' सुरुवं गयतालुसमाणं दारयं पयाया । जम्मणं जहा मेहकुमारे जाव' जम्हा  
णं अम्मं इमे दारए गयतालुसमाणे, तं होउ णं अम्मं एयस्स दारगस्स नामघेज्जे  
गयसुकुमाले' ॥  
५४. तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो नामं कयं—गयसुकुमालो ति । सेसं जहा  
मेहे जाव' अलंभोगसमत्थे जाए यावि होत्था ॥

### सोमिलधूयाए कण्णतेउर-पक्खेव-पदं

५५. तत्थ णं वारवईए नयरीए सोमिले नाम माहणे परिवसइ—अड्ढे । रिउव्वेय  
जाव' वंभण्णएसु य सत्थेसु सुपरिणिट्ठिए यावि होत्था ॥  
५६. तस्स सोमिल-माहणस्स सोमिसिरी नामं माहणी होत्था—सूमालपाणिपाया ॥  
५७. तस्स णं सोमिलस्स धूया सोमिसिरीए माहणीए अत्तया सोमा नामं दारिया

१. सं० पा०—मुंटे जाव पव्वइस्सइ ।

२. देवती (क, ख) ।

३. जावपाढया (क) । भ० ११।१३३ ।

४. भ० ११।१३३-१४५ ।

५. सूमालं (वृ) ।

६. ओ० सू० १४३ ।

७. ना० १।१।७४-८१ ।

८. गयतालुय ० (क) ।

९. गयसुकुमाले, गयसुकुमाले (क, ख) ।

१०. ना० १।१।८२-८८ ।

११. ओ० सू० ६७ ।



### गयसुकुमालस्त पृथञ्जसासंकल्प-पदं

तए णं से गयसुकुमाले अरहं अरिदुनेमिस्स अंतिए धम्मं सोच्चा' •निसम्म हट्टुत्ते अरहं अरिदुनेमि निगणुत्तां आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसाइ, वंदित्ता नमंसात्ता एवं वयासी—महंतामि णं भंते ! निगंयं पावयणं, पत्तियामि णं भंते ! निगंयं पावयणं, रोणमि णं भंते ! निगंयं पावयणं, अब्भुत्तेमि णं भंते ! निगंयं पावयणं । पवमेयं भंते ! तहमेयं भंते ! अवितहमेयं भंते ! इच्छियमेयं भंते ! पडिच्छियमेयं भंते ! इच्छिय-पडिच्छियमेयं भंते ! से जहेयं तुभे वयह । नवरि देवाणुप्पिया ! अम्मापियरो आपुच्छामि । तओ पच्छा मुंडे भवित्ता णं अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तामि । अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिअं करेहि ॥

### गयसुकुमालस्त अम्मापिऊणं निवेदण-पदं

६४. तए णं से गयसुकुमाले अरहं अरिदुनेमि वंदइ नमंसाइ, वंदित्ता नमंसात्ता जेणामेव हत्थिरयणे तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता हत्थियखंधवरणए महयाभड-चडगर-पहकरेणं वारवदीए नयरीए मज्झमज्झेणं जेणामेव सए भवणे तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता हत्थियखंधाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता जेणामेव अम्मापियरो तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अम्मापिऊणं पायवडणं करेइ, करेत्ता एवं वयासी—एवं खलु अम्मयाओ ! मए अरहओ अरिदुनेमिस्स अंतिए धम्मं निसंते, से वि य मे धम्मं इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए ॥
६५. तए णं तस्स गयसुकुमालस्त अम्मापियरो एवं वयासी—धन्तोसि तुमं जाया ! संपुण्णोसि तुमं जाया ! कयत्थोसि तुमं जाया ! कयलक्खणोसि तुमं जाया ! जणं तुमे अरहओ अरिदुनेमिस्स अंतिए धम्मं निसंते से वि य ते धम्मं इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए ॥
६६. तए णं से गयसुकुमाले अम्मापियरो दोच्चं पि एवं वयासी—एवं खलु अम्मयाओ ! मए अरहओ अरिदुनेमिस्स अंतिए धम्मं निसंते, से वि य मे धम्मं इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए । तं इच्छामि णं अम्मयाओ ! तुभेहि अब्भणुण्णाए समाणे अरहओ अरिदुनेमिस्स अंतिए मुंडे भवित्ता णं अगाराओ अणगारियं पव्वइत्ताए ॥

१. सं० पा०—सोच्चा जं नवरं अम्मापियरो आपुच्छामि जहा मेहो महेलियावज्जं जाव वडिइयकुले ।



कालगएहि परिणमवाए नष्टिग-कुलवंसगतु-कज्जम्मि निरावयवमे अरहओ  
 अरिदुनेमिस्स अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइस्ससि ।"  
 एवं मल अम्मयाओ ! गाणसाए भवे यवूने अणितिए अगासाए वसणसाओव-  
 हवाभिमूते विज्जुलयावंनवे अणिवे जलवुच्चुगसमाणे कुसम्मजविदुसन्तिमे  
 संभट्ठभरागसरिगे सुविणदंसणोवमे सडण-पडण-विद्धंसण-धम्मे पच्छा पुरं च णं  
 अव्वराविणजहणिज्जे । से के णं जाणइ अम्मयाओ ! के पुंवि गमणाए के  
 पच्छा गमणाए ? तं इच्छामि णं अम्मयाओ ! तुव्भेहि अट्ठभणुण्णाए समाणे  
 अरहओ अरिदुनेमिस्स अंतिए मुंडे भवित्ता णं अगाराओ अणगारियं पव्व-  
 इत्तए ॥

७०. तए णं तं गयसुकुमालं कुमारं अम्मापियरो एवं वयासी—इमे य ते जाया !  
 अज्जय-पज्जय-पिउपज्जयागए सुवहु हिरण्णे य सुवण्णे य कंसे य दूसे य मणि-  
 मोत्तिय-संख-सिल-प्पवाल-रत्तरयण-संतसार-सावएज्जे य अलाहि जाव आसत्त-  
 माओ कुलवंसाओ पगामं दाउं पगामं भोत्तुं पगामं परिभाएउं । तं अणुहोही  
 ताव जाया ! विपुलं माणुस्सगं इड्डिसक्कारसमुदयं । तओ पच्छा अणुभूय-  
 कल्लाणे अरहओ अरिदुनेमिस्स अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं  
 पव्वइस्ससि ॥

७१. तए णं से गयसुकुमाले अम्मापियरं एवं वयासी—तहेव णं तं अम्मयाओ ! जं  
 णं तुव्भे ममं एवं वयह—' इमे ते जाया ! अज्जग-पज्जग-पिउपज्जयागए सुवहु  
 हिरण्णे य सुवण्णे य कंसे य दूसे य मणि-मोत्तिय-संख-सिल-प्पवाल-रत्तरयण-  
 संतसार-सावएज्जे य अलाहि जाव आसत्तमाओ कुलवंसाओ पगामं दाउं पगामं  
 भोत्तुं पगामं परिभाएउं । तं अणुहोही ताव जाया ! विपुलं माणुस्सगं इड्डि-  
 सक्कारसमुदयं । तओ पच्छा अणुभूयकल्लाणे अरहओ अरिदुनेमिस्स अंतिए  
 मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइस्ससि ।"

एवं खलु अम्मयाओ ! हिरण्णे य जाव सावएज्जे य अग्गिसाहिए चोरसाहिए  
 रायसाहिए दाइयसाहिए मच्चुसाहिए, अग्गिसामण्णे चोरसामण्णे रायसामण्णे  
 दाइयसामण्णे मच्चुसामण्णे सडण-पडण-विद्धंसणधम्मे पच्छा पुरं च णं अव्वस-  
 विप्पजहणिज्जे । से के णं जाणइ अम्मयाओ ! के पुंवि गमणाए के पच्छा  
 गमणाए ? तं इच्छामि णं अम्मयाओ ! तुव्भेहि अट्ठभणुण्णाए समाणे अरहओ  
 अरिदुनेमिस्स अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए ॥

७२. तए णं तस्स गयसुकुमालस्स अम्मापियरो जाहे तो संचाएति गयसुकुमालं  
 कुमारं वहुहि विसयाणुलोमाहि आघवणाहि य पण्णवणाहि य सण्णवणाहि य  
 विण्णवणाहि य आघवित्तए वा पण्णवित्तए वा सण्णवित्तए वा विण्णवित्तए वा  
 ताहे विसयपडिकूलाहि संजमभउव्वेयकारियाहि पण्णवणाहि पण्णवेमाणा एवं



महदमहालययाधो इद्रुगराशीधो एगमेमं इद्रुगं गन्नाय बहिया रत्थापहाधो  
अंतोगिहं अणुपविसमाणं' पासइ ॥

६६. तए णं से कण्हे वासुदेवे तस्स पुरिसस्स अणुपविसमाणं हदिवसंघवरणं चैव  
एमं इद्रुगं गेण्हइ, गेण्हत्ता बहिया रत्थापहाधो अंतोगिहं अणुपवेसेइ ॥
६७. तए णं कण्हेणं वासुदेयेणं एमाणं इद्रुगाणं गहियाणं समाणीणं अणेगेहिं  
पुरिससाएहिं से महालाणं इद्रुगस्स राशी बहिया रत्थापहाधो अंतोघरंसि  
अणुपवेसिए ॥

कण्हस्स गयसुकुमाल-दंसणाभिलासा-पदं

६८. तए णं से कण्हे वासुदेवे वारवर्द्धेणं नयरीए मज्झमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छत्ता  
जेणेव अरहा अरिद्विनेमी तेणेव उवागाए, उवागच्छित्ता' \*अरहं अरिद्विनेमि  
तिवखुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता° वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमसित्ता  
गयसुकुमालं अणगारं अपासमाणे अरहं अरिद्विनेमि वंदइ नमंसइ, वंदित्ता  
नमंसित्ता एवं वयासी—कहि णं भंते ! से ममं सहांदरे कणीयसे भाया गय-  
सुकुमाले अणगारे 'जं णं' अहं वंदामि नमंसामि ?

गयसुकुमालस्स सिद्धि-सूयणा-पदं

६९. तए णं अरहा अरिद्विनेमी कण्हं वासुदेवं एवं वयासी—साहिए णं कण्हा !  
गयसुकुमालेणं अणगारेणं अप्पणो अट्ठे ॥
१००. तए णं से कण्हे वासुदेवे अरहं अरिद्विनेमि एवं वयासी—कहणं' भंते !  
गयसूमालेणं अणगारेणं साहिए अप्पणो अट्ठे ?
१०१. तए णं अरहा अरिद्विनेमी कण्हं वासुदेवं एवं वयासी—एवं खलु कण्हा !  
गयसुकुमालेणं अणगारेणं ममं कल्लं पच्चावरण्हकालसमयंसि' वंदइ नमंसइ,  
वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—इच्छामि णं' \*भंते ! तुव्भेहिं अक्खणुणाए  
समाणे महाकालंसि सुसाणंसि एगराइयं महापडिमं उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए  
जाव' एगराइं महापडिमं° उवसंपज्जित्ता णं विहरइ ।  
तए णं तं गयसुकुमालं अणगारं एगे पुरिसे पासइ, पासित्ता आसुरुत्ते'  
\*गयसुकुमालस्स अणगारस्स मत्थए मट्ठियाए पालिं वंधइ, वधित्ता जलतीओ

१. अणुपविसमाणं (ख, ग) ।

२. अण्णेहिं (क) ।

३. सं० पा०—उवागच्छित्ता जाव वंदइ ।

४. जा णं (क, ख, ग); जेणं (ग) ।

५. कह णं (क, ख, ग) ।

६. पुव्वावरण्ह° (ग, घ) ।

७. सं० पा०—इच्छामि णं जाव उवसंपज्जित्ता ।

८. अं० ३।८८ ।

९. सं० पा०—आसुरुत्ते जाव सिद्धे । पू०—

३।८९ ।





कण्हा ! तुमे तस्स पुरिसस्स माहिज्जे दिण्णे, एवमेव कण्हा ! तेणं पुरिसेणं गयसुकुमालस्स अणगारस्स अणेगभव-सयसहस्स-सोनियं कम्मं उदीरमाणेणं बहुगम्मणिज्जस्स माहिज्जे दिण्णे ॥

१०५. तए णं से कण्हे वासुदेवे अरहं अरिद्धणेमि एवं वयासी—से णं अंते ! पुरिसे माए कहं जाणियत्थे ?
१०६. तए ण अरहा अरिद्धणेमी कण्हं वासुदेवं एवं वयासी—जे णं कण्हा ! तुमं वारवईए नयरीए अणुपविसमाणं पासेत्ता ठियए<sup>५</sup> चेव ठिइभेएणं कालं करिस्सइ, तण्णं तुमं जाणिज्जासि 'एस णं से पुरिसे' ॥
१०७. तए णं से कण्हे वासुदेवे अरहं अरिद्धणेमि वदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता जेणेव आभिसेयं हृदियरयणं तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता हृदियं दुहई<sup>६</sup>, दुहइत्ता जेणेव वारवई नयरी जेणेव साए गिहे तेणेव पहारेत्थे गमणाए ॥

### सोमिलस्स अकालमच्च-पदं

१०८. तए णं तस्स सोमिलमाहणस्स कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए<sup>७</sup> उट्टियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते अयमेयारुत्थे अज्भत्थिए चित्थिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पण्णे—एवं खलु कण्हे वासुदेवे अरहं अरिद्धणेमि पायवंदए निग्गए । तं नायमेयं अरहया, विण्णायमेयं अरहया, सुयमेयं अरहया, सिद्धमेयं अरहया भविस्सइ कण्हस्स वासुदेवस्स । तं न नज्जइ णं कण्हे वासुदेवे ममं केणइ<sup>८</sup> कु-मारेणं मारिस्सइ त्ति कट्ठु भीए तत्थे तसिए उव्विग्गे संजायभए सयाओ गिहाओ पडिणिवखमइ । कण्हस्स वासुदेवस्स वारवई नयरि अणुपविसमाणस्स पुरओ सपक्खि सपडिदिसि<sup>९</sup> ह्ववमागए ॥
१०९. तए णं से सोमिले माहणे कण्हं वासुदेवं सहसा पासेत्ता भीए तत्थे तसिए उव्विग्गे संजायभए ठियए चेव ठिइभेयं<sup>६</sup> कालं करेइ, धरणितलंसि सव्वगेहि<sup>७</sup> 'धस' त्ति सण्णिवडिए ॥
११०. तए णं से कण्हे वासुदेवे सोमिलं माहणं पासइ, पासित्ता एवं वयासी—एस णं भो ! देवाणुप्पिया ! से सोमिले माहणे अपत्थियपत्थिए जाव<sup>८</sup> सिरि-हिरि-धिइ-कित्ति-परिवज्जिए, जेणं ममं सहोयरे कणीयसे भायरे गयसुकुमाले अणगारे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविए त्ति कट्ठु सोमिलं माहणं पाणेहि<sup>९</sup> कड्ढुवेइ,

१. ठित्ते (क, घ) ।

२. द्रुहति (क) ।

३. पू०—ना० १।१।२४ ।

४. केणवि (ख, घ) ।

५. °दिसं (क, घ) ।

६. ६० सूत्रे 'ठिइभेएणं' इति पाठोस्ति । अत्र सम्भवतः कालस्य विशेषणं कृतं स्यात् ।

७. अं० ३।८६ ।



## चउत्थो वग्गो

### १-१० अज्जभयणाणि

#### उक्खेव-पदं

१. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं तच्चस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, चउत्थस्स वग्गस्स अंतगट्ठदसाणं समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?
२. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं चउत्थस्स वग्गस्स दस अज्जभयणा पण्णत्ता, तं जहा—

#### संगहणी-गाहा

१. जालि २. मयालि ३. उवयाली, ४. पुरिससेणे ५. वारिसेणे य ।
६. पज्जुण्ण ७. संव ८. अणिरुद्ध ९. सच्चणेमि य १०. दढणेमी ॥१॥
३. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं चउत्थस्स वग्गस्स दस अज्जभयणा पण्णत्ता, पढमस्स णं अज्जभयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?

#### जालिपभित्ति-पदं

४. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं वारवई नयरी । तीसे णं वारवईए नयरीए जहा पढमे जाव' कण्हे वासुदेवे आहेवच्चं जाव' कारेमाणे पालेमाणे विहरइ ॥
५. तत्थ णं वारवईए नगरीए वसुदेवे राया । धारिणी देवी—वण्णओ' जहा गोयमो', नवरं—जालिकुमारे । पण्णासओ दाओ । वारसंगी । सोलस वासा परियाओ । सेसं जहा गोयमस्स जाव' सेत्तुंजे सिद्धे ॥

१,२,३. ना० १११७ ।

६. ओ० सू० १५ ।

४. अं० ११६-१४ ।

७. अं० ११७ ।

५. अं० ११४ ।

८. अं० ११७-२४ ।



## पंचमो वग्गो

### पढमं अज्झयणं

#### पउमावई

#### उक्खेव-पदं

१. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं चउत्थस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, पंचमस्स वग्गस्स अंतगडदसाणं समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?
२. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं पंचमस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा—

#### संगहणी-गाहा

१. पउमावई य २. गोरी, ३. गंधारी ४. लवखणा ५. सुसीमा य ।
६. जंबवइ ७. सच्चभामा, ८. रुप्पिणी ९. मूलसिरि १०. मूलदत्ता वि ॥१॥
३. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं पंचमस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पण्णत्ता, पढमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?

#### पउमावई-पदं

४. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं वारवई नगरी । जहा पढमे जाव' कण्हे वासुदेवे आहेवच्चं जाव' कारेमाणे पालेमाणे विहरइ ॥
५. तस्स णं कण्हस्स वासुदेवस्स पउमावई नाम देवी होत्था—वण्णओ' ॥

१,२,३. ना० १११७ ।  
४. अ० ११५-१४ ।

५. अ० ११४ ।  
६. ओ० सू० १५ ।



- जातिपाभङ्गकृमाया जाव' पव्वइसा । अत्तणं अत्तणे जाव' तो तंवाए-  
अरहा अरिदुणेमिस्स अंतिए म्हे अविस्सा अगारायो अणमरिणं पव्वइसा ।  
नुणं माप्ता ! अत्थे मग्गणे ?
- इत्ता अत्थि । तं तो एव कप्ता ! एवं भूतं वा भव्वं वा अविस्सइ वा जणं  
वासुदेवा चइत्ता हिरण्यं जाव' पव्वइसा ॥
१३. से केणट्टेणं भंते ! एवं चुच्चइ 'न एतं भूतं ना' • भव्वं वा अविस्सइ वा जणं  
वासुदेवा चइत्ता हिरण्यं जाव' • पव्वइस्संति ?
१४. कण्हाइ ! अरहा अरिदुणेमी कण्हं वासुदेवं एवं वयासी—एवं खलु कप्ता !  
सत्थे वि य णं वासुदेवा पुव्वभणे निदाणकटा । से एत्तेणट्टेणं कप्ता ! एवं  
चुच्चइ 'न एतं भूतं' • वा भव्वं वा अविस्सइ वा जणं वासुदेवा चइत्ता हिरण्यं  
जाव' • पव्वइस्संति ॥
१५. तए णं से कण्हे वासुदेवे अरहं अरिदुणेमि एवं वयासी—अहं णं भंते ! इतो  
कालमासे कालं किच्चा कहिं गमिस्सामि ? कहिं उव्वज्जिस्सामि ?
१६. तए णं अरहा अरिदुणेमी कण्हं वासुदेवं एवं वयासी—एवं खलु कप्ता ! तुमं  
वारवईए नयरीए सुरग्गि<sup>१</sup>-दीवायण-कोव-निदइयाए' अम्मापिइ-नियग-विप्पहूणे  
रामेण वलदेवेण राद्धि दाहिणवेयालि अभिमुहे जुद्धिद्विल्लयामोक्खाणं पंचण्हं  
पंडवाणं पंडुरायपुत्ताणं पागं पंडुमहुरं संपत्थिण, कोसंबवणकाणणे' नग्गोहवर-  
पायवस्स अहे पुढविसिलापट्टए पीयवत्थ-पच्छाइय-सरीरे जराकुमारेणं तिवत्तेणं  
कोदंड-विप्पमुक्केणं' उसुणा वामे पादे चिट्ठे समाणे कालमासे कालं किच्चा  
तच्चाए वालुयप्पभाए पुढवीए उज्जलिए नरए नेरइयत्ताए उव्वज्जिहिंसि ॥
१७. तए णं से कण्हे वासुदेवे अरहओ अरिदुणेमिस्स अंतिए एयमट्टं सोच्चा निसम्म  
ओह्य'<sup>२</sup>मणसंकप्पे करतलपत्तहत्थमुहे अट्टज्झाणोवगए • भियाइ ॥
१८. कण्हाइ ! अरहा अरिदुणेमी कण्हं वासुदेवं एवं वयासी—मा णं तुमं देवाणु-  
प्पिया ! ओह्यमणसंकप्पे जाव'' भियाइ । एवं खलु तुमं देवाणुप्पिया !  
तच्चाओ पुढवीओ उज्जलियाओ नरयाओ अणंतरं उव्वट्टित्ता इहेव जंबुद्वीवे  
दीवे भारहे वासे आगमेसाए उस्सप्पिणीए पंडेसु जणवएसु सयदुवारे नगरे

१. अं० ५।११ ।

२. अं० ५।११ ।

३. ना० १।५।४५ ।

४. सं० पा०—भूतं वा जाव पव्वइस्संति ।

५. सं० पा०—भूतं जाव पव्वइस्संति ।

६. सुरदीवायण (क, ख, ग) ।

७. निदह्वाते (ख, ग) ।

८. कोसंबकाणणे (क, ख, ग, घ, वृषा) ।

९. मुक्केणं (क) ।

१०. सं० पा०—ओह्य जाव भियाइ ।

११. अं० ५।१७ ।





३७. ताम् णं सा गोरी जहा पउमावई नदा निगमंता जाव' सिद्धा ॥  
 ३८. एवं—गन्धारी, लज्जणा, मुग्धा, जंनवई, मन्वनामा, कपिणी । अट्ट वि  
 पउमावईसरिसायी ॥

### ६, १० अज्भयणाणि

#### मूलसिरी-मूलवत्ता-पदं

३६. तेणं कालेणं तेणं समएणं वारवईणं नयरीणं रेनयणं पठ्याणं नंदणवणे उज्जाणं  
 कण्हे वासुदेवे ॥  
 ४०. तत्त्वं णं वारवईणं नयरीणं कण्ठस्स वासुदेवस्स पुत्ते जंबवईणं देवीणं अत्तए  
 संवे नामं कुमारे होत्था—अहीणपडिपुण्णवचेंदियसरीरे ॥  
 ४१. तस्स णं संवस्स कुमारस्स मूलसिरी नामं भारिया होत्था—वण्णओ' ॥  
 ४२. अरहा समोसहे । कण्ठे निग्गाणं । मूलसिरी वि निग्गया, जहा पउमावई । जं  
 नवरं—देवाणुप्पिया ! कण्ठं वासुदेवं आपुच्छामि जाव' सिद्धा ।  
 ४३. एवं' मूलवत्ता वि ।

### छट्ठो वग्गो

#### १,२ अज्भयणाणि

#### उक्खेव-पदं

१. जइ' • णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं अट्टमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं  
 पंचमस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते । छट्ठस्स णं भंते ! वग्गस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?  
 २. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं अट्टमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं  
 छट्ठस्स वग्गस्स° सोलस अज्भयणा पण्णत्ता, तं जहा—

#### संगहणी-गाहा

१. मकाइ २. किकमे चेव, ३. मोग्गरपाणी य ४. कासवे ।  
 ५. खेमए° ६. धिइहरे चेव, ७. कोलासे ८. हरिचंदणे ॥१॥

१. अं० ५।२१-३२ ।

२. अं० ५।७, २१-३२ ।

३. ओ० सू० १५ ।

४. अं० ५।२१-३२ ।

५. अं० ५।३६-४२ ।

६. सं० पा०—जइ छट्ठस्स उक्खेवओ नवरं  
 सोलस ।

७. खेमे (ग) ।



- महं एमे पुष्कारामे होत्या—'कण्ठी जाव' महाभेहनिउरुवभूय दस ॥  
 कुमुमकुमुमिण पासाईण दर्शयिज्जे अभिस्ये पडिह्ये ॥
१४. तरस णं पुष्कारामस अदूरयाम्भे, एणं णं अज्जुणसरस मालागारस्स अज्जव  
 पज्जय-पिडपज्जयामणं अणिसकुलपुरिस-गरंणरामणं मोग्गरपाणिसस जक्खस  
 जक्खाययणे होत्या 'मोग्गं दिव्वा मच्चो प्रज्ञा पूण्यभदे' ॥
१५. तत्थ णं मोग्गरपाणिसस पडिमा एणं महं पलसहरसाणिपत्तणं अत्रोमयं मे ॥  
 गहाय चिट्ठइ ॥

### अज्जुणस्स जक्खपज्जुवासणा-पदं

१६. तए णं से अज्जुणए मालागारे कल्लणभिइं जेव मोग्गरपाणि-जक्खभत्ते' यावि  
 होत्या । कल्लाकल्लिण पच्छियपिडगाइं' गेण्हइ, गेण्हित्ता रायगिहाओ नयरओ  
 पडिणिकखमइ, पडिणिकखमिता जेणेव पुष्कारामे तेणेव उवागच्छइ,  
 उवागच्छित्ता पुप्फुच्चयं करेइ, करेत्ता' अग्गाइं वराइं पुष्काइं गहाय, जेणेव  
 मोग्गरपाणिसस जक्खसरस जक्खाययणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता  
 मोग्गरपाणिसस जक्खस्स महिरिहं पुप्फुच्चयं' करेइ, करेत्ता जण्णुपायपडिण  
 पणामं करेइ, तओ पच्छा रायमग्गंसि विस्ति कप्पेमाणे विहरइ ॥

### गोट्टीए अणाचार-पदं

१७. तत्थ णं रायगिहे नयरे ललिया नामं गोट्टी परिवसइ—अट्टा जाव' अपरिभूता जं  
 कयसुकया यावि होत्या ॥
१८. तए णं रायगिहे नगरे अण्णया कयाइ पमोदे घुट्टे यावि होत्या ॥
१९. तए णं से अज्जुणए मालागारे कल्लं पभूयतराएहि पुप्फेहि कज्जं इति कट्टइ  
 पच्चूसकालसमयंसि वंधुमईए भारियाए सद्धि पच्छियपिडयाइं गेण्हइ,  
 गेण्हित्ता सयाओ गिहाओ पडिणिकखमइ, पडिणिकखमिता रायगिहं नगरं  
 मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव पुष्कारामे तेणेव उवागच्छइ,  
 उवागच्छित्ता वंधुमईए भारियाए सद्धि पुप्फुच्चयं करेइ ॥
२०. तए णं तीसे ललियाए गोट्टीए छ गोट्टिल्ला पुरिसा जेणेव मोग्गरपाणिसस  
 जक्खस्स जक्खाययणे तेणेव उवागया अभिरममाणा चिट्ठंति ॥
२१. तए णं से अज्जुणए मालागारे वंधुमईए भारियाए सद्धि पुप्फुच्चयं करेइ,

१. ओ० सू० ४ ।

२. ओ० सू० २ ।

३. जक्खस्स भत्ते (घ) ।

४. पत्तिय० (क्व) ।

५. अतोत्रे १२ सूत्रे 'पत्तियं भरेइ, भरेत्ता' इति  
 पाठो लभ्यते ।

६. पुप्फुच्चयं (क) ।

७. ना० १।५।७ ।



### रायगिहे आतंक-पदं

२८. तए णं रायगिहे नगरे सिंघाडगं-निग-वडवक-वन्वर-वडरमुहं-महापहपहे  
वहुजणो अणमणस्स एवमाडवड एवं भामेड एवं पणवेड एवं पवेड-  
एवं खलु देवाणुणिया ! अज्जुणए मालागारे मोभरगणिणा अण्णाइ  
समाणे रायगिहे नगरे वहिया इरियसभे छ पुरिये घाएमाणे-घाए  
विहरइ ॥
२९. तए णं से शेणिए राया उमीगे कहाए खडट्टे समाणे कोडुवियपुरिसे सदावेड  
सदावेत्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुणिया ! अज्जुणए मालागारे जाव  
घाएमाणे-घाएमाणे विहरइ । तं मा णं तुम्भे केड कट्टस्स वा तणस्स वा  
पाणियस्स वा पुक्कफलाणं वा अट्टाए गडरं निग्गच्छइ । मा णं तस्स सरीरयस्स  
वावत्ती भविस्सइ त्ति कट्टु दोच्चं पि तच्चं पि घोसणयं घोसेह, घोसेत्ता  
खिप्पामेव ममेयं पच्चप्पिणह ॥
३०. तए णं ते कोडुवियपुरिसा जाव' पच्चप्पिणंति ॥
३१. तत्थ णं रायगिहे नगरे सुदंसणे नामं शेट्टो पस्विसइ—अइडे ॥
३२. तए णं से सुदंसणे समणोवासए याचि होत्था—अभियजीवाजीवे जाव'  
विहरइ ॥

### भगवओ समोसरण-पदं

३३. तेणं कालेणं समएणं समणे भगवं' •महावीरे पुव्वाणुपुव्वि चरमाणे गामाणु-  
गामं दूइज्जमाणे सुहंसुहेणं विहरमाणे जेणामेव रायगिहे नगरे गुणसिए  
चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरुवं ओगहं ओगिण्हित्ता  
संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे • विहरइ ॥
३४. तए णं रायगिहे नगरे सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापहपहेसु  
वहुजणो अणमणस्स एवमाइक्खइ जाव' किमंग पुण विपुलस्स अट्टस्स  
गहणयाए ?

### सुदंसणस्स वंदणट्ठं गमण-पदं

३५. तए णं तस्से सुदंसणस्स बहुजणस्स अंतिए एयं सोच्चा निसम्म अयं अज्जभित्थिए  
चित्तिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुपज्जित्था—एवं खलु समणे भगवं महावीरे

१. सं० पा०—सिंघाडग जाव महापहपहेसु ।

२. अं० ६।२८ ।

३. अं० ६।२९ ।

४. ना० १।५।४७ ।

५. सं० पा०—भगवं जाव समोसडे विहरइ ।

६. ओ० सू० ५२ ।



वीईवममाणं पासइ, पासिता आयुग्गे कट्टे कुमिणं चंदिचित्तणं मिसिमिसमाणे तं पलसहस्सणिप्फणं अघोमयं भोग्गरं उल्लालेमाणे-उल्लालेमाणे जेणेव सुदंसणे समणोवासए तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥

४१. तए णं से सुदंसणे समणोवासए भोग्गरपाणि जवणं एज्जमाणं पासइ, पासिता अशीए अतत्थे अणुच्चिग्गे अणुभुमिणं अचत्तिणं अशंभेत्ते वत्तंतेणं भूमि पमज्जइ, पमज्जित्ता करयलं\*परिग्गहिंयं दसणइ सिरगावत्तं मत्थाए अंजलि कट्टुं एवं वयासी-नमोत्थु णं अरहंताणं जाव सिद्धिगइनामवेज्जं ठाणं संपत्ताणं । नमोत्थु णं समणस्स भगवओ महावीरस्स जाव सिद्धिगइनामवेज्जं ठाणं संपाविउकामस्स । पुच्चि पि णं माए समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए थूलं पाणाइवाए पच्चक्खाए जावज्जीवाए, थूलं मुसावाए [पच्चक्खाए जावज्जीवाए ?], थूलं अदिग्गादाणे [पच्चक्खाए जावज्जीवाए ?], सदारसंतोसे कए जावज्जीवाए, इच्छापरिमाणं कए जावज्जीवाए । तं इदाणि पि णं तस्सेव अंतियं राघ्वं पाणाइवायं पच्चक्खामि जावज्जीवाए, मुसावायं अदत्तादाणं मेहुणं परिग्गहं पच्चक्खामि जावज्जीवाए, सच्चं कोहं जाव' मिच्छादंसणसल्लं पच्चक्खामि जावज्जीवाए, सच्चं असणं पाणं खाइमं साइमं चउच्चिहं पि आहारं पच्चक्खामि जावज्जीवाए । जइ णं एतो उवसगाओ मुच्चिस्सामि तो मे कप्पइ पारेत्तए । अहणं एतो उवसगाओ न मुच्चिस्सामि 'तो मे तहा' पच्चक्खाए चेव त्ति कट्टु सागारं पडिमं पडिक्कज्जइ ॥

४२. तए णं से भोग्गरपाणी जक्खे तं पलसहस्सणिप्फणं अघोमयं भोग्गरं उल्लाले-माणे-उल्लालेमाणे जेणेव सुदंसणे समणोवासए तेणेव उवागए । नो चेव णं संचाएइ सुदंसणं समणोवासयं तेयसा समभिपडित्तए ॥

### उवसगनिवारण-पदं

४३. तए णं से भोग्गरपाणी जक्खे सुदंसणं समणोवासयं सच्चओ समंता' परिघोले-माणे-परिघोलेमाणे जाहे नो चेव णं संचाएइ सुदंसणं समणोवासयं तेयसा समभिपडित्तए, ताहे सुदंसणस्स समणोवासयस्स पुरओ सपक्खि सपडिदिस्सि ठिच्चा सुदंसणं समणोवासयं अणिमिसाए दिट्ठीए सुच्चिरं निरिक्खइ, निरिक्खित्ता अज्जुणयस्सं मालागारस्स सरीरं विप्पजहइ, विप्पजहित्ता तं पलसहस्सणिप्फणं

१. सं० पा०—करयल ।

२. ओ० सू० २१ ।

३. ओ० सू० ११७ ।

४. तओ मे (क) ।

५. अघोमयं (ख) ।

६. सम्मंताओ (क, ख) ।





भते ! निम्नं पातयन्तं, यत्पुष्टिं न भते ! निम्नं पातयन्तं ।  
अहामुं देवाण्यपि ! मा पतिना करेत् ॥

५२. ताए ण मे अज्जुणाए अणगारे उत्तरं \*पुष्टिं देवाणामं अणवत्तमं, अयं  
भित्तां गमयेव प-पुष्टिं जीवं करेत्, करेत्ता जाव' अणगारे जाए', \*ते  
वासीसंरणकणे समतिणमण-वेदुं कं वणे मममुदुं वणे इत्तोम-परलोम-अ-  
डिवत्ते जीविय-मरण-निरवत्तणे मंगारणारगामी कम्मनिग्गायणट्टाए, एवं न पं  
विहरइ ॥

### अज्जुणअणगारस्त तित्तिशता-पयं

५३. ताए णं मे अज्जुणाए अणगारे जं देव दिवसं मुंटे' \*भित्ता अणाराओ अणग  
रियं° पव्वटाए तं चैव दिवसं समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वदित्ता  
नमसित्ता इमं पयास्सुं अभिगहं ओमेण्हइ -- कणउ मे जावज्जीवाए छट्टुं छट्टेणं  
अणिविखत्तेणं तवोकम्मणं अप्पाणं भावेमाणस्स विहरित्तए त्ति कट्टु अयमेवा-  
स्सुं अभिगहं, ओमेण्हइ ओमेण्हित्ता जावज्जीवाए' \*छट्टुं छट्टेणं अणिविखत्तेणं  
तवोकम्मणं अप्पाणं भावेमाणे° विहरइ ॥
५४. ताए णं से अज्जुणाए अणगारे छट्टुवत्तमणवारणयंसि गडमाए पोरिसीए' सज्जायं  
करेइ', \*वीयाए पोरिसीए भाणं भियाइ, तइयाए पोरिसीए जहा गोयमसामी  
जाव' रायगिहे नगरे उच्च-नीय-मज्झिमाइ कुलाइं घरसमुदाणस्स भिवखाय-  
रियं° अडइ ॥
५५. ताए णं तं अज्जुणयं अणगारं रायगिहे नगरे उच्च' - \*नीय-मज्झिमाइं कुलाइं  
घरसमुदाणस्स भिवखायरियाए° अडमाणं वहवे इत्थीओ य पुरिसा य इहरा  
य महल्ला य जुवाणा य एवं वयासी—इमेण मे पिता मारिए । इमेण मे माता  
मारिया । इमेण मे भाया भगिणी भज्जा पुत्ते घूया सुण्हा मारिया । इमेण मे  
अण्णयरे सयण-संबंधि-परियणे मारिए त्ति कट्टु अप्पेगइया अक्कोसंति, अप्पे-  
गइआ हीलंति निदंति खिसंति गरिहंति तज्जंति तालंति ॥

१. सं० पा०—उत्तर° ।

२. ना० १।५।३४, ३५ ।

३. सं० पा०—अणगारे जाए जाव विहरइ ।

पू०—ना० १।५।३५, ३६ ।

४. सं० पा०—मुंटे जाव पव्वइए ।

५. ओग्गहं (क, ख, ग) ।

६. × (क, ख, ग) ।

७. ओग्गहं (क, ख, ग) ।

८. 'अभिगहं ओमेण्हइ' इति द्विवक्तः पाठोस्ति ।

९. सं० पा०—जावज्जीवाए जाव विहरइ ।

१०. × (घ) ।

११. सं० पा०—करेइ जहा गोयमसामी जाव  
अडइ ।

१२. भ० २।१०७।१०८ ।

१३. सं० पा०—उच्च जाव अडमाणं ।



संप्रियुदे साश्री गिराओ पारिणिगमड, पारिणिगमिया जेणेव उरुदुगे तेणेव उवागए । तिहि वरुणः पारणः न संप्रियुदे अभिरममाणे-अभिरममाणे विहरड ॥

७८. तए णं भगवं गोयमे पोलासपुरे भगवे उचव'-\*नीव-मज्जिभमाई कुलाई परसमु-  
दाणस्य भिवगामरियाए ० अडमाणे उरुदुगस्य अडुसगामनेणं श्रीउचवड ॥
७९. तए णं से अइमुत्ते कुमारे भगवं गोयमं अडुसगामनेणं श्रीउचवमाणं पासड,  
पासित्ता जेणेव भगवं गोयमे तेणेव उवागए, भगवं गोयमं एवं वयासी—के णं  
भंते ! तुव्भे ? कि वा अडड ?
८०. तए णं भगवं गोयमे अइमुत्ते कुमारे एवं वयासी—अम्हे णं देवाणुप्पिया !  
समणा निग्गंथा हरियागमिया जाव' गुलावजपारी उचव'-\*नीव-मज्जिभमाई  
कुलाई घरसमुदाणस्य भिवगामरियाए ० अडामो ॥
८१. तए णं अइमुत्ते कुमारे भगवं गोयमं एवं वयासी—एए णं भंते ! तुव्भे जा णं  
अहं तुव्भं भिवखं दवावेमी त्ति कट्टु भगवं गोयमं अंगुलीए मेण्हइ, मेण्हिता  
जेणेव साए गिहे तेणेव उवागए ॥
८२. तए णं सा सिरिदेवी भगवं गोयमं एज्जमाणं पासड, पासित्ता हट्टुतुट्टा आसणाओ  
अव्भुट्टेइ, अव्भुट्टेत्ता जेणेव भगवं गोयमे तेणेव उवागया । भगवं गोयमं  
तिवखुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदड नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता  
विउलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं पडिलाभेइ, पडिलाभेत्ता पडिविसज्जेइ ॥
८३. तए णं से अइमुत्ते कुमारे भगवं गोयमं एवं वयासी—कहि णं भंते ! तुव्भे  
परिवसह ?
८४. तए णं से भगवं गोयमे अइमुत्तं कुमारं एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया !  
मम धम्मयारिए धम्मोवएसए' समणे भगवं महावीरे आइगरे जाव' सिद्धिगइ-  
नामधेज्जं ठाणं संपाविउकामे इहेव पोलासपुरस्स नगरस्स वहिया सिरिवणे  
उज्जाणे अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं \*तवसा अप्पाणं ० भावेमाणे  
विहरइ । तत्थ णं अम्हे परिवसामो ॥

अइमुत्तकुमारस्स पव्वज्जा-पदं

८५. तए णं से अइमुत्ते कुमारे भगवं गोयमं एवं वयासी—गच्छामि णं भंते ! अहं  
तुव्भेहिं सिद्धि समणं भगवं महावीरं पायवंदए ।  
अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिवंधं करेहि ॥

१. सं० पा०—उचव जाव अडमाणे ।

२. ना० १।१।१६४ ।

३. सं० पा०—उचव जाव अडामो ।

४. जेणेवहं (ख, घ) ।

५. धम्मोवएसए धम्मनेवरी (क); ० धम्मे  
नेतारी (ख, घ) ।

६. ओ० सू० १६ ।

७. सं० पा०—संजमेणं जाव भावेमाणे ।



जाणामि णं अम्मयाओ ! जहा मएहि कम्मयायणोहि जीवा नेरइय-<sup>०</sup> निरिक्ख  
जोणिय-भण्णया-इयेमु<sup>०</sup> उववज्जति ।

एवं तालु अह्म अम्मयाओ ! जं चेव जाणामि नं चेव न जाणामि, जं चेव  
जाणामि तं चेव जाणामि । नं इव्वआमि णं अम्मयाओ ! तुअभेहि अन्नपुण्णा  
जाव' पव्वइत्ताए ॥

६५. तए णं तं अइमुत्तं कुमारं अम्मयापियरो जाहे नो संचारंति बहूहि आववणाह  
•य पणवणाहि य सणवणाहि य विणवणाहि य आववित्तए वा पणवित्त-  
वा सणवित्तए वा विणवित्तए वा ताहे अकामकाइं चेव अइमुत्तं कुमारं ए-  
वयासो<sup>०</sup> — तं उच्छाओ ते जाया ! एगदिवसमवि रायसिंरि पासत्ताए ॥
६६. तए णं से अइमुत्ते कुमारे अम्मयापियणनणुयत्तमाणे तुसिणीए संचिट्ठइ  
अभिसेओ जहा महव्वलस्स<sup>०</sup> निक्खमणं जाव' सामाइयमाइयाइं इयकास  
अंगाइं अहिज्जइ । बहूइं वासाइं सामणपरियागं पाउणइ, गुणरयणं तवोकम्मं  
जाव' विपुले सिद्धे ॥

## सौलसमं अउभयणं

### अलक्के

#### अलक्क-पदं

६७. तेणं कालेणं तेणं समएणं वाणारसी नयरी, काममहावणे चेइए ॥  
६८. तत्थ णं वाणारसीए अलक्के नामं राया होत्था ॥  
६९. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे जाव' विहरइ । परिसा  
निग्गया ॥  
१००. तए णं अलक्के राया इमीसे कहाए लद्धे हट्ठुट्ठे जहा कोणिए जाव' पज्जुवा-  
सइ । धम्मकहा ॥

१. हं (ख) ।

२. सं० पा०—नेरइय जाव उववज्जति ।

३. अं० ६।९० ।

४. सं० पा०—आववणाहि<sup>०</sup> ।

५. महावलस्स (क, घ) । म० ११।१६८ ।

६. म० ११।१६८, १६९ ।

७. × (क, ख, ग) ।

८. अं० १।२३, २४ ।

९. अं० ६।३३ ।

१०. ओ० सू० ५४-६६ ।



# सत्तमो वग्गो

## १-१३ अज्झयणाणि

### उक्खेव-पदं

१. जइ णं भंते ! \*समणेणं भगवया महावीरेणं अट्टमस्स अंगस्स अंतगडदः छट्टस्स वग्गस्स अयमट्ठे पणत्ते, सत्तमस्स वग्गस्स के अट्ठे पणत्ते ?
२. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं अट्टमस्स अंगस्स अंतगडदः सत्तमस्स वग्गस्स ° तेरस अज्झयणा पणत्ता, तं जहा—

### संगहणी-गाहा

१. नदा तह २. नंदवई, ३. नंदुत्तर ४. नंदिसेणिया चैव
५. मरुता ६. सुमरुता ७. महमरुता ८. मरुदेवा य अट्टमा ॥१॥
९. भद्दा य १०. सुभद्दा य, ११. सुजाया १२. सुमणाइया
१३. भूयदिण्णा य वोव्वा, सेणियभज्जाण नामाई ॥२॥
३. जइ णं भंते ! \*समणेणं भगवया महावीरेणं अट्टमस्स अंगस्स अंतगडदः सत्तमस्स वग्गस्स ° तेरस अज्झयणा पणत्ता, पढमस्स णं भंते ! अज्झयणा अंतगडदसाणं के अट्ठे पणत्ते ?

### नंदादि-पदं

४. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नयरे । गुणसिए चैइ सेणिए राया—वण्णओ ॥
५. तस्स णं सेणियस्स रण्णो नंदा नाम देवी होत्था—वण्णओ । सामी . गोस परिसा निग्गया ॥
६. तए णं सा नंदा देवी इमीसे कहाए लद्धट्ठा हट्टुट्ठा कोडुंविपुुरिसे सद्दा सद्दावेत्ता जाणं दुरुहइ, जहा पउमावई जाव एक्कारस अंगाई अट्ठिज्ज वीसं वासाई परियाओ जाव सिद्धा ॥
७. एवं तेरम वि देवीओ नंदागमेणं नेयव्वाओ ॥

- 
- |   |                  |
|---|------------------|
| १. सं० पा० जइ णं भंते ! सत्तमस्स वग्गस्स उक्खेवओ जाव तेरस । | ५. ओ० सू० १५ ।   |
| २. नंदमती (क); नंदसती (ख) ।                                 | ६. अं० ५।२१-३१ । |
| ३. सं० पा०—जइ णं भंते ! तेरस ।                              | ७. अं० ५।३२ ।    |
| ४. ओ० सू० १४ ।  | ८. अं० ७।३-६ ।   |





## सत्तमो वग्गो

### १-१३ अज्झयणाणि

#### उक्खेव-पदं

१. जइ णं भंते ! •समणेणं भगवया महावीरेणं अट्टमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं छट्ठस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, सत्तमस्स वग्गस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?
२. एवं खलु जंजू ! समणेणं भगवया महावीरेणं अट्टमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं सत्तमस्स वग्गस्स ° तेरस अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा—

#### संगहणी-गाहा

१. नंदा तह २. नंदवई, ३. नंदुत्तर ४. नंदिसेणिया चैव
५. मरुता ६. सुमरुता ७. महमरुता ८. मरुदेवा य अट्टमा ॥१॥
९. भद्दा य १०. सुभद्दा य, ११. सुजाया १२. सुमणाइया
१३. भूयदिण्णा य वोव्वा, सेणियभज्जाण नामाई ॥२॥
३. जइ णं भंते ! •समणेणं भगवया महावीरेणं अट्टमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं सत्तमस्स वग्गस्स ° तेरस अज्झयणा पण्णत्ता, पढमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स अंतगडदसाणं के अट्ठे पण्णत्ते ?

#### नंदादि-पदं

४. एवं खलु जंजू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नयरे । गुणसिलए चेइए । सेणिए राया—वण्णओ ॥
५. तस्स णं सेणियस्स रण्णो नंदा नाम देवी होत्था—वण्णओ । सामी समोसढे । परिसा निग्गया ॥
६. तए णं सा नंदा देवी इमीसे कहाए लद्धट्ठा हट्टुट्ठा कोडुंवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता जाणं दुरुहइ, जहा पउमावई जाव एक्कारस अंगाई अहिज्जित्ता वीसं वासाई परियाओ जाव सिद्धा ॥
७. एवं तेरम वि देवीओ नंदागमेणं नेयव्वाओ ॥

- 
- |   |                  |
|---|------------------|
| १. सं० पा० जइ णं भंते ! सत्तमस्स वग्गस्स उक्खेवओ जाव तेरस । | ५. ओ० सू० १५ ।   |
| २. नंदमती (क); नंदसती (ख) ।                                 | ६. अं० ५।२१-३१ । |
| ३. सं० पा०—जइ णं भंते ! तेरस ।                              | ७. अं० ५।३२ ।    |
| ४. ओ० सू० १४ ।  | ८. अं० ७।३-६ ।   |



काली नामं देवी होत्या—व्रणग्रो' । जहा नंदा जाव' सामाड्यमाड्याई  
एवकारस अंगाई अहिज्जइ । वहीहिं चउत्थ'-•छट्टुम-दराम-दुवालसेहिं  
मासद्धमासखमणेहिं विविहेहिं तवोकम्मेहिं ० अष्पाणं भावेमाणी' विहरइ ॥

७. तए णं सा काली अज्जा अणण्या कयाइ जेणेव अज्जचंदणा अज्जा तेणेव उवा-  
गया, उवागच्छिता एवं वयासी—इच्छामि णं अज्जाओ ! तुव्भेहिं अब्भणुण्णाया  
समाणी रयणावलिं तवं उवसंपज्जिता णं विहरित्तए ।

अहासुहं देवाणुप्पिए ! मा पडिवंधं करेहिं ॥

८. तए णं सा काली अज्जा अज्जचंदणाए अब्भणुण्णाया समाणी रयणावलिं तवं  
उवसंपज्जिता णं विहरइ, तं जहा—

चउत्थं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
छट्टु	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
अट्टुमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
अट्टु छट्टाईं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
चउत्थं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
छट्टुं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
अट्टुमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
दसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
दुवालसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
चौद्दसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
सोलसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
अट्टारसमं <sup>१</sup>	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
वीसइमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
वावीसइमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
चउवीसइमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
छव्वीसइमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
अट्टावीसइमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
तीसइमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
वत्तीसइमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
चोत्तीसइमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
चोत्तीसं छट्टाईं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।

१. ओ० सू० १५ ।

२. अं० ७।५,६ ।

३. सं० पा०—चउत्थ जाव अष्पाण

४. भावेमाणा (ग) ।

५. अट्टारसं (क) ।



१०. तयाणंतरं च णं तच्चाए परिवाडीए चउत्थं करेइ, करेत्ता अलेवाडं पारेइ ।  
सेसं तहेव । नवरं अलेवाडं पारेइ ॥
११. एवं चउत्था परिवाडी । नवरं सव्वपारणए आर्यविलं पारेइ । सेसं तं चेव ॥  
संगहणी-गाहा

‘पढमंमि सव्वकामं, पारणयं’ विइयए विगइवज्जं ।

तइयंमि अलेवाडं, आर्यविलमो चउत्थम्मि ॥१॥

१२. तए णं सा काली अज्जा रयणावली-तवोकम्मं पंचहि संवच्छरेहि दोहि य  
मासेहि अट्टावीसाए य दिवसेहि अहासुत्तं जाव’ आराहेत्ता जेणेव अज्जचंदणा  
अज्जा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छत्ता अज्जचंदणं अज्जं वंदइ नमंसइ,  
वंदित्ता नमंसित्ता वहुहि चउत्थ जाव’ अप्पाणं भावेमाणी विहरइ ॥
१३. तए णं सा काली अज्जा तेणं ओरालेणं \*विउलेणं पयत्तेणं पग्गहिएणं  
कल्लाणेणं सिवेणं धण्णेणं मंगल्लेणं सस्सिरोएण उदग्गेणं उदत्तेणं उत्तमेणं  
उदारेणं महाणुभागेणं तवोकम्मेणं सुक्का लुक्खा निम्मंसा अट्ठिच्चम्मावणद्धा  
किडिकिडियाभूया क्किसा° धम्मणिसंतया जाया यावि होत्था ‘जीवंजीवेण  
गच्छइ जाव’ सुहुयहुयासणे’ इव भासरासिपलिच्छण्णा तवेणं, तेएणं, तवतेय-  
सिरीए अईव-अईव उवसोहेमाणी-उवसोहेमाणी चिट्ठइ ॥
१४. तए ण तीसे कालीए अज्जाए अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकाले अयमज्भत्थिए  
चित्थिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था, जहा खंदयस्स चित्ता जाव’  
अत्थिए उट्ठाणे कम्मे वले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे तावता मे सेयं कल्लं  
पाउप्पभायाए रयणीए जाव’ उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा  
जलते अज्जचंदणं अज्जं आपुच्छत्ता अज्जचंदणाए अज्जाए अब्भणुण्णायाए  
समाणीए सलेहणा-भूसणा-भूसियाए भत्तपाण-पडियाइविखयाए कालं अणव-  
कंखमाणीए विहरित्तए त्ति कट्ठु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं जेणेव अज्जचंदणा  
अज्जा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छत्ता अज्जचंदणं अज्जं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता  
नमंसित्ता एवं वयासी—इच्छामि णं अज्जो ! तुव्भेहि अब्भणुण्णाया समाणी  
संलेहणा°-भूसणा-भूसियाए भत्तपाण-पडियाइविखयाए कालं अणवकंख-  
माणीए° विहरित्तए ।  
अहासुहं ॥

१. पढमंसि सव्वकामपारणयंसि (क); पढमंसि  
सव्वगुणिए पारणकं (वृपा) ।

२. अं० ८।८।

३. अं० ८।६ ।

४. सं० पा०—उरालेणं जाव धम्मणिसंतया ।

५. अं० २।६४।

६. से जहा इंगाल जाव सुहुयहुयासणे (क, ख,  
ग, घ, ) ।

७. अं० २।६६ ।

८. ना० १।१।२४ ।

९. सं० पा०—संलेहणा जाव विहरित्तए ।



दुवालसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
चोहसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
सोलसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
चउत्थं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
दुवालसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
चोहसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
सोलसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
चउत्थं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
छट्ठं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
अट्ठमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
दसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।

एवकाए कालो अट्ठ मासा पंच य दिवसा । चउण्हं दो वासा अट्ठ मासा वीस य दिवसा । सेसं तहेव जाव' सिद्धा ॥

## अट्ठमं अज्झयणं

### रामकण्हा

रामकण्हाए भद्दोत्तरपडिमा-पदं

३०. एवं<sup>१</sup>—रामकण्हा वि, नवरं—भद्दोत्तरपडिमं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ, तं जहा—

दुवालसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
चोहसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
सोलसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
अट्ठारसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
वीसइमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
सोलसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
अट्ठारसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
वीसइमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
दुवालसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
चोहसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।









३५. तए णं तीसे महाभेणकण्हाए अज्जाए यणया कयाड पुण्यरत्तावरत्ताका  
चिता जहा खंदगरस जाव' अज्जनंदणं अज्जं प्राणुच्छड' ॥
३६. 'तए णं सा महाभेणकण्हा अज्जा अज्जनंदणाए अज्जाए अबभणुण्णाय  
समाणी संलेहणा-भूसणा-भूसिया भत्तपाण-गडियाइक्खिया० कालं अणवकंठ  
माणी विहरइ ॥
३७. तए णं सा महाभेणकण्हा अज्जा अज्जनंदणाए अज्जाए अंतिए सामादयमाव्य  
एवकारस अंगाइं अहिज्जित्ता, बहुपडिपुण्णाइं सत्तरस वासाइं परिया  
पालइत्ता, मासियाए संलेहणाए अणाणं' भूसित्ता, सट्ठि भत्ताइं अणसणा  
छेदित्ता जस्सट्ठाए कीरइ नग्गभावे जाव' तग्गट्ठं आराहेइ, आराहेत्ता चरिम  
उस्सासनिस्सामेहि' सिद्धा ॥

### संगहणी-गाहा

अट्ट य वासा आई, एवकोत्तरयाए जाव सत्तरस ।

एसो खलु परियाओ, सेणियभज्जाण नायव्वो ॥१॥

### निक्खेव-पदं

३८. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं अट्टमस्स अंगस्स  
अंतगडदसाणं अयमट्टे पणत्ते ॥

### परिसेसो

अंतगडदसाणं अंगस्स एगो सुयखंधो । अट्ट वग्गा । अट्टसु चेव दिवसेसु'  
उद्दिस्सति" । तत्थ पढमविइयवग्गे दस-दस उद्देसगा । तइयवग्गे तेरस उद्देसगा ।  
चउत्थपंचमवग्गे दस-दस उद्देसगा । छट्ठवग्गे सोलस उद्देसगा । सत्तमवग्गे  
तेरस उद्देसगा । अट्टमवग्गे दस उद्देसगा । सेसं जहा नायाधम्मकहाणं ॥

### ग्रन्थ परिमाण

कुल अक्षर—४००५१

अनुष्टुप् श्लोक—१२५१ अ० १६

१. अ० २।६६ ।

२. पू०—अ० ८।१४ ।

३. सं० पा०—जाव संलेहणा कालं ।

४. अत्ताणं (क) ।

५. ओ० सू० १५४ ।

६. चरिमउस्सासेहि (ख, ग) ।

७. ना० १।१।७ ।

८. उद्दिस्सिज्जति (व) ।







## संगहणी-गाहा

१. जालि २. मयालि ३. उवयाली, ४. पुरिसोणे य ५. धारिणे  
 ६. दीहदंते य ७. लट्टदंते य, ८. विहल्ले ९. वेह्णामे १०. अभाण उ य कुमारे ॥  
 ५. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं पढमस्स' वण  
 दस अउभयणा पणत्ता, पढमस्स णं भंते ! अउभयणरस अणुत्तरोववाइयदसा  
 समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं के अट्टे पणत्ते ?

## जालि-पदं

६. एवं खलु जंयू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नयरे—रिद्धिदिमियसमिद्धे  
 गुणसिलए चेइए । सेणिए राया । धारिणी देवी । सीहो गुमिणे । जा  
 कुमारे । जहा मेहो । अट्टट्टो दाओ' ॥  
 ७. •तए णं से जालाकुमारे उप्पि पासायवरगए फुट्टमाणेहि मुट्टंगमत्थणहि ॥  
 माणुस्सए कामभोग पच्चणुभवमाणे ° विहरइ ॥  
 ८. सामीं समोसडे । सेणियो निग्गओ । जहा मेहो तथा जालो वि निग्गओ । तहे  
 निक्खंतो जहा मेहो" । एक्कारस अंगाइ अहिज्जइ । गुणरयणं तवोकम्मं 'ज  
 खंदयस्स'" । एवं जा चेव खंदगस्स" वत्तव्वया, सा चेव चित्तणा, आपुच्छणा  
 थेरेहि सद्धि विउलं पव्वयं तहेव दुख्हइ, नवरं—सोलस वासाइं सामण्णा रिया  
 पाउणित्ता", कालमासे कालं किच्चा उड्ढं चंदिम-सूर-गहगण-नक्खत्त-त ए  
 रूवाणं" सोहम्मीसाण"-•सणंकुमार-माहिद-वंभ-लंतग-महासुवक-सह... ॥ २ ॥ य  
 पाणय °-आरणच्चुए कप्पे नवयगेवेज्जविमाणपत्थडे उड्ढं हूरं वीईवइत्त  
 विजयविमाणे देवत्ताए उववण्णे ॥  
 ९. तए णं ते थेरा भगवतो जालि अणगारं कालगयं जाणित्ता ए रायव्वा । वरि  
 काउस्सगं करंति, करेत्ता पत्त-चीवराइं गेण्हंति । तहेव उत्तरंति" जाव" इमे से  
 आयारभइए ॥

- |  |                                       |
|--|---------------------------------------|
| १. उवयालि (क, ख); ओवयाली (ग) ।           | महावीरे जाव (घ) ।                     |
| २. विहल्ले विहायसे (ग, घ, ) ।            | १०. ना० १११६६-१५१ ।                   |
| ३. अ० ३७५ ।                              | ११. × (क) । भ० २१६१-६३ ।              |
| ४. अणुत्तरोववाइयदसाणं पढमस्स (ख, ग, घ) । | १२. खंदय (क, ख, घ, ) । भ० २१६४-६६ ।   |
| ५. रिद्धि ° (ख, ग, घ, ) ।                | १३. पाउणिय (ख) ।                      |
| ६. पू०—न० १११६१-६२ ।                     | १४. पू०—ना० १११२११ ।                  |
| ७. सं० पा०—जाव उप्पि पासा विहरइ ।        | १५. सं० पा०—सोहम्मीसाण जाव आरणच्चुए । |
| ८. ना० १११६३ ।                           | १६. ओत्तरंति (ख) ।                    |
| ९. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं      | १७. भ० २१७० ।                         |





सर्वव्युत्पत्तिः । 'दोहृत्ते सन्वृत्तिः' उपक्रमेण मेधा । यभयो विजात् । मे  
पढमे ॥

निबलेव-पदं

१६. एवं खलु जन्तु ! समणेण भगवता महात्तरेण जाव' सत्तरेण अणुत्तरेण  
दसाणं पढमरस चग्गरस अयमट्टे पण्णत्तिं ॥

१. × (क) ।

२. पढमे । अभयस्स नाणत्त, रायगिहे नयरे  
सेणिए राया, नंदा देवी, सेसं तहेव [क, ख,  
ग] । असौ पाठो वाचनान्तरस्य प्रतीयते ।

अस्मिन् नानात्वस्य संकेतोऽस्ति,  
यन्नानात्वं प्रदर्शितं तत् सर्वं पूर्वमायातमेव  
३. अ० ३।७५ ।



कलाश्रो, नवरं—दीहृगोणां कुमारो सशोभ सभाभया जहा अर्जुनस्य ज्ञान  
काहिद् ॥

५. एवं तेरस वि रामगिहे नगरे । दोगिषो गिया । यारिषो माया । तेरस  
सोलस वासा परिषायो । शान्पुर्वोप विजय दीणि, मेजयते दोगिण,  
दोगिण, अपराजिण दोगिण, मेसा महादुमशेषमादी पव सव्यदुर्मिजे ॥

नियखेव-पदं

६. एवं खलु जंजू ! रामगोणं भगवता महानीरिणं ज्ञानं संगनीणं सपुत्रोयया  
दसाणं दोच्चस वग्गस अयमदु पण्णो ।  
मासियाण संलेहणाण दोमु वि वग्गेनु ॥



रिद्धस्त्विगियसमिद्धा' । सङ्गमं ववणे उज्ज्वाने सञ्जोडय-पुण्ड-पदा-समिद्धे' ।  
जियसत्तू राया ॥

५. तत्थ णं काकंसीए नयरीए भद्दा नामं सत्थवाही पत्थिससङ्ग- सत्ता जाव' वा भूया ॥
६. तीसे णं भद्दाए सत्थवाहीए पुत्तं धण्णं नाम दासए हांथा—सत्तोणवत्तिपु-  
पञ्चदियसरीरे जाव' सुह्वे । पत्थिससङ्गपरिग्राहए जहा मत्थवभो जाव' वा च  
कलाओ अहीए जाव' अलभोगसमन्थे जाए सावि होथा ॥
७. तए णं सा भद्दा सत्थवाही धण्णं दारयं उम्भुत्तकवावभावं जाव' अलभोगसम  
वा वि जाणित्ता वत्तीसं पासायवरसए कारेइ—अभुग्गयमूसाए जाव' तिहो.  
तेसि मज्जे एगं च णं महं भवणं कारेइ—अणेगगंभसगसण्णिविट्ठं वा  
पडिह्वं ॥
८. तए णं सा भद्दा सत्थवाही तं धण्णं दारयं वत्तीसाए इअभवत्तकण्णमाणं ए दिव  
सेणं पाणि गेण्हावेइ । वत्तीसओ दाओ" ॥
९. तए णं से धण्णे दारए उप्पि पासायवरसए पुट्टमाणोहि मुट्टगमत्थएहि जाव'  
विउले माणुस्सए कामभोगे पच्चणुभवमाणे विहरइ ॥

धण्णस्स पव्वज्जा-पदं

१०. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे समोसहे । परिसा निग्गया । राया  
जहा कोणियो 'तहा निग्गओ'" ॥
११. तए णं तस्स धण्णस्स दारगस्स तं महया"●जणसहं वा जाव'" जणसन्निवारयं वा  
सुणमाणस्स वा पासमाणस्स वा अयमेयारूवे अज्जभत्थिए चित्तिए पत्थिए मणो-

१. पू०—ओ० सू० १ ।

२. पू०—ना० १।५।४ ।

३. ना० १।५।७ ।

४. ओ० सू० १४३ ।

५. भ० ११।१५४-१५६; राय० सू० ८०४-  
८०७ ।

६. राय० सू० ८०८, ८०९; ओ० सू० १४७,-  
१४८ ।

७. राय० सू० ८१० ।

८. ना० १।१।८६ ।

९. ना० १।१।८६ ।

१०. पू०—ना० १।१।६०-६२ ।

११. ना० १।१।६३ ।

१२. × (क) । ओ० सू० ५४-६६ ।

१३. सं० पा०—जहा जमाली तहा निग्गओ ।

नवरं पायचारिणं । जाव जं नवरं अम्मयं

भद्दं सत्थवाहि आपुच्छामि । तए णं अहं

देवाणुप्पियाणं अत्तिए पव्वयामि जाव जहा

जमाली तहा आपुच्छइ । मुच्छिया ।

वुत्तपडिवुत्तया जहा महव्वले जाव जाहे नो

संचाएइ जहा थावच्चापुत्तस्स जियसत्तुं

आपुच्छइ । छत्तचामराओ । सयमेव जियसत्तुं

निदखमणं करेति जहा थावच्चापुत्तस्स

कण्हो जाव पव्वइए । अणगारे जाए—

इरियासमिए जाव गुत्तवंभचारी ।

१४. ओ० सू० ५२ ।



आपुच्छइ—इच्छामि ण देवाणुप्पिया ! भणमम दारमम निजमममाणमम  
मउड-नामरायो य विदिन्नायो ॥

१९. तए णं जिगसत् राया भद्दं गत्यवाहिं एवं ययासी—यच्छामि ण सुमं दे  
प्पिया ! मुनिव्वुन-वीसत्था, अहण्णं मयमेव भणमस्स दापयस्स निज  
सवकारं करिस्सामि । सगमेव जिगसत् निजममण करेड, जहा थावचनापु  
कण्हो' ॥
२०. तए णं से धण्णे दारए सयमेव पंचमुट्ठियं नोयं करेड जाव' पव्वडए ॥
२१. तए णं से धण्णे दारए अणगारे जाए—उरियासमिणं भासासमिणं पुण्ण  
आयाण-भंड-मत्त-णिकत्तेवणासमिणं उच्चार-पासवण-सेव-सिवाण-  
पारिट्ठावणियासमिणं भणममिणं वट्टममिणं नायममिणं मयमुत्ते वट्टमुत्ते का  
मुत्ते गुत्तिदिए° गुत्तवंभयारी ॥

### धणस्स तवचरिया-पदं

२२. तए णं से धण्णे अणगारे जं चेव दिवसं मुंडे भविता अगारायो अणगां  
पव्वइए, तं चेव दिवसं समणं भगवं महावीरं वंदइ नमसइ, वंदिता नमसि  
एव वयासी—इच्छामि' णं भंते ! तुव्भेहि अट्ठभणुण्णाए समणे . ॥४॥ जीव  
छट्ठंछट्ठेणं अणिकित्तेणं आयंविजपरिग्गहिणं तवोकम्मेणं अप्पाणं भावेमा  
विहरित्तए छट्ठस्स वि य णं पारणयंसि कप्पइ मे' आयंविजं पडिगाहेत्तए',  
चेव णं अणायविलं । तं पि य संसट्ठं, नो चेव णं असंसट्ठं । तं पि य ण उअम  
धम्मियं, नो चेव णं अणुज्झिय-धम्मियं । तं पि य जं अण्णे वहवे समणं । ॥  
अतिहि-किवण-वणीमगा नावकंसंति ।  
अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिवंधं करेहि ॥
२३. तए णं से धण्णे अणगारे समणेणं भगवया महावीरेणं अट्ठभणुण्णाए : ना  
हट्ठुट्ठे जावज्जीवाए छट्ठंछट्ठेणं अणिकित्तेणं आयंविजपरिग्गहिणं' तव  
कम्मेणं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥
२४. तए णं से धण्णे अणगारे पढम-छट्ठखमणपारणयंसि पढमाए पोरिसीए सज्जा'  
करेइ, जहा गोयमसामी तहेव आपुच्छइ, जाव' जेणेव काकंदी नयरी तेणे  
उवागच्छइ, उवागच्छित्ता काकंदीए नयरीए उच्च'-नीय-मज्झिमाइं कुला-

१. ना० १।५।२२-३३ ।

२. ना० १।५।३४ ।

३. एवं खलु इच्छामि (ख, ग) ।

४. भावेमाणस्स (ख, ग) ।

५. × (क, ख) ।

६. पडिगहित्तए (क) ।

७. × (क, ख, ग) ।

८. भ० २।१०७-१०९ ।

९. सं० पा०—उच्च जाव अट्ठमाणे ।

अध्याय-१० - अष्टांग योग - अष्टांग योग - अष्टांग योग - अष्टांग योग - अष्टांग योग

१०

११

१२

१३

१४

१५

१६

१७

१८

१९

२०

२१



मे जहानामए नित्तकट्टरे' इ वा भोगणवणे' इ वा सानियंठवणे' इ वा, एव  
 •धणस्स अणगारस्स उर-कडए मुक्का मुक्का निम्मंसा अट्ठि-चम्म-छि-  
 पणायति, नो चेव णं मंस-सोणियत्ताए ° ॥

४१. धणस्स णं अणगारस्स वाहाणं अयमेयाह्वे तव-ह्व-लावण्णे होत्या  
 जहानामए समिसंगलिया इ वा वाहायासंगलिया' इ वा 'अगस्सियमंग  
 इ वा,' एवामेव' •धणस्स अणगारस्स वाहायो मुक्कायो लुक्कायो निम्मं-  
 अट्ठि-चम्म-छिरत्ताए पणायति, नो चेव णं मंस-सोणियत्ताए ° ॥
४२. धणस्स णं अणगारस्स हत्थाणं अयमेयाह्वे तव-ह्व-लावण्णे होत्या  
 जहानामए सुक्कच्छगणिया' इ वा वटपत्ते' इ वा पलासपत्ते' इ वा, एव  
 •धणस्स अणगारस्स हत्था मुक्का लुक्का निम्मंसा अट्ठि-चम्म-छि-  
 पणायति, नो चेव णं मंस-सोणियत्ताए ° ॥
४३. धणस्स णं अणगारस्स हत्थंगुलियाणं अयमेयाह्वे तव-ह्व-लावण्णे होत्या  
 से जहानामए कलसंगलिया इ वा मुग्गसंगलिया इ वा माससंगलिय  
 वा तरुणिया छिण्णा आयवे दिण्णा सुक्का समाणी 'मिलायमाणी चिट्ठं  
 एवामेव' •धणस्स अणगारस्स हत्थंगुलिआयो सुक्कायो लुक्कायो निम्मंस  
 अट्ठि-चम्म-छिरत्ताए पणायति, नो चेव णं मंस-सोणियत्ताए ° ॥
४४. धणस्स णं अणगारस्स गीवाए अयमेयाह्वे तव-ह्व-लावण्णे होत्या  
 जहानामए करगगीवा इ वा कुंडियागीवा इ वा उच्चत्थवणए" इ वा, एवां  
 •धणस्स अणगारस्स गीवा सुक्का लुक्का निम्मंसा अट्ठि-चम्म-छि-  
 पणायति, नो चेव णं मंस-सोणियत्ताए ° ॥
४५. धणस्स णं अणगारस्स हणुयाए अयमेयाह्वे तव-ह्व-लावण्णे होत्या-  
 जहानामए लाउफले इ वा हकुवफले" इ वा अंवगट्ठिया" इ वा"•आयवे दि  
 सुक्का समाणी मिलायमाणी चिट्ठइ, एवामेव धणस्स अणगारस्स ह

१. चित्तपट्टरे (क); चित्तयकट्टरे (ख); ८. सं० पा०—एवामेव ° ।  
 चित्तयकट्टरे (ग) । ९. × (क, ख, ग); मिलायति (घ) ।
२. वीइण ° (ग); वीयणय ° (घ) विवण ° १०. सं० पा०—एवामेव ° ।  
 (वृ) । ११. उच्चट्ठवणए (क); काछवणए (ख) ।
३. सं० पा०—एवामेव ° । १२. सं० पा०—एवामेव ° ।
४. × (ख); पहाया ° (ग) । १३. हेकुव० हंकुव० हेकुच० हकुन० (क्व) ।
५. × (क) । १४. अंवगंठिया (क, घ) ।
६. सं० पा०—एवामेव ° । १५. सं० पा०—अंवगट्ठिया इ वा ° एवामेव
७. सुक्कच्छगलिया(क); सुक्कच्छगणिया(ख,ग) ।



• छिण्णे अणवे दिण्णे सुक्के समाने मिलागमाणे° चिट्ठइ, एवामेव भ०  
अणगारस्य सीसं सुक्कं' सुक्कं निम्मंमं अट्ठि-चम्म-छिरत्ताए पण्णायउ  
नेव णं मंस-सोणियत्ताए' ॥

५२. घण्णे णं अणगारे' सुक्केणं भुक्केणं पागजंघोक्का, विगय-नडि-करावेणं  
कड्डाहेणं, पिट्ठिमस्सिएणं' उदरभायणेणं, जोड्ज्जमाणेहिं पासुलिं-कड्ड  
'अक्खसुत्तमाला तिव' गणेज्जमाणेहिं पिट्ठिकरंडगसंधीहिं, गंग उरंय  
उरकड्डगदेसभाएणं, सुक्कसण्णसमाणाहिं वाहाहिं, सिद्धिलकड्डालीं 'विचलंते  
य अग्गहत्थेहिं, कंणवाड्ठो चिव वेवमाणीए सीसड्डीए पम्माणवयणक  
उवभड्डउमुहे उच्छुद्धणयणकोसे' जीवंजीवेणं गच्छइ, जीवंजीवेणं चिट्ठइ,  
भासित्ता गिलाइ, भासं भासमाणे गिलाइ, भासं भासिस्सामि त्ति गिलाइ  
जहानामए इंगालसगड्डिया इ वा'° कट्टसगड्डिया इ वा पत्तसगड्डिया इ  
तिलंडासगड्डिया इ वा एरंडसगड्डिया इ वा उण्हे दिण्णा सुक्का समानी  
गच्छइ, ससहं चिट्ठइ, एवामेव घण्णे अणगारे ससहं गच्छइ, ससहं  
उवचिए तवेणं, अचिए मंससोणिएणं°, हुयासणे इव मंससोणिएणं  
तवेणं तेएणं तवतेयसिरीए अईव-अईव उवसोभेमाणे-उवसोभेमाणे चिट्ठइ ॥

### सेणियस्स महाडुक्करकारय-पुच्छा-पदं

५३. तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नयरे गुणसिए चेइए । सेणिए राया ॥  
५४. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे समोसडे । परिस्सा नग्गए  
सेणिए निग्गए । धम्मकहा । परिस्सा पडिगया ॥  
५५. तए णं से सेणिए राया समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं से  
निसम्मं समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी

१. × (ख, ग) ।

२. 'मंस-सोणियत्ताए' अतोत्रे सर्वासु प्रतिसु  
'एवं सब्बत्थ । नवरं, उदरभायणं कण्णा  
जीहा उट्ठा एएसि अट्ठी न भणइ, चम्म-  
छिरत्ताए पण्णायइ त्ति भणइ इति पाठोस्ति ।  
परं अस्माभिस्सु सर्वत्र पूर्णः पाठः लिखितः,  
अतोनावश्यकत्वेनासी पाठान्तररूपेण  
स्वीकृतः ।

३. अणगारे णं (क, ख, ग, घ) ।

४. पट्ठी ° (क); पिट्ठमवस्सिएणं (वृ) ।

५. पांसुलि (ग, घ) ।

६. अक्खमाला तिवा (क); मालाविव (घ)  
° माला तिवा (घ) ।

७. × (क) ।

८. सडिल ° (क, ख, ग) ।

९. विचलंतेहिं (क); विचलंतेहिं (ख) ।

१०. पव्वात ° (क, ग); पम्माय ° (ख) ।

११. उच्छुद्धु ° (वव) ।

१२. सं० पा०—जहा खधओ तथा  
हुयासणे; स्कन्दकप्रकरणे(भ० २।६४) प्र  
'इंगालसगड्डिया' इति पाठो नास्ति । तेन  
पूर्तिः नायाधम्मकहाओ सूत्रात् कृता ।



तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिकवुत्तो आयाहिण-  
पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता जामेव दिसं पाउवभूए,  
तायेव दिसं पडिगए ॥

### धण्णस्स सव्वट्टुसिद्ध-गमण-पदं

५६. तए णं तस्स धण्णस्स अणगारस्स अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकाले धम्मजाग-  
रियं जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चित्थिए पत्थिए मणोगए संकप्पे  
समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं इमेणं थोरात्तेणं' तवोकम्मणं' धमणिसंतए जाए ।  
जहा खंदओ' तहेव चित्ता । आपुच्छणं । थेरेहिं सद्धिं विउलं पव्वयं दुरुहइ ।  
मासिया सलेहणा । नव मासा परियाओ जाव' कालमासे कालं किच्चा उड्डं  
चंदिम'—सूर-गहगण-नक्खत्त-तारारूवाणं जाव'० नवयगेवेज्जविमाणपत्थडे  
उड्डं दूरं वीईवइत्ता सव्वट्टुसिद्धे विमाणे देवत्ताए उववण्णे । थेरा तहेव ओयरंति  
जाव' इमे से आयारभंडए ॥

६०. भंतेति ! भगवं गोयमे तहेव आपुच्छति, जहा खंदयस्स भगवं वागरेइ जाव'  
सव्वट्टुसिद्धे विमाणे उववण्णे ॥

६१. धण्णस्स णं भंते ! देवस्स केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ?  
गोयमा ! तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

६२. से णं भंते ! ताओ देवलोगाओ कहिं गच्छिहिइ ? कहिं उववज्जिहिइ ?  
गोयमा ! महाविदेहे वासे सिद्धिभिहिइ बुद्धिभिहिइ मुच्चिहिइ परिनिव्वाहिइ  
सव्वदुक्खाणमंतं काहिइ ॥

### निकखेव-पदं

६३. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं पढमस्स अज्झय-  
णस्स अयमट्टे पण्णत्ते ॥

१,२. पू०—अ०३।३० ।

३. भ० २।६६-६६ ।

४. अ० १।५ ।

५. सं० पा०—चंदिम जाव नवय० ।

६. अ० १।५ ।

७. भ० २।७० ।

८. भ० २।७१ ।

९. अ० ३।७५ ।

8.

9.

तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता समणं भगवं महावीरं तिवग्गुत्तो आयाहिण-  
पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता जामेव दिसं पाउवभूए,  
तामेव दिसं पडिगए ॥

### घण्णस्स सव्वट्टुसिद्ध-गमण-पदं

५९. तए णं तस्स घण्णस्स अणगारस्स अणया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकाले धम्मजाग-  
रियं जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चित्थिए पत्थिए मणोगए संकण्णे  
समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं इमेणं ओरालेणं<sup>१</sup> तवोकम्मेणं<sup>२</sup> घमणिसंतए जाए ।  
जहा खंदओ<sup>३</sup> तहेव चित्ता । आपुच्छणं । थेरेहिं सद्धि विउलं पव्वयं दुरुहइ ।  
मासिया संलेहणा । नव मासा परियाओ जाव<sup>४</sup> कालमासे कालं किच्चा उड्ढं  
चंदिमं<sup>५</sup>—सूर-गहगण-नवखत्त-तारारूवाणं जाव<sup>६</sup> नवयगेवेज्जविमाणपत्थडे  
उड्ढं दूरं वीईवइत्ता सव्वट्टुसिद्धे विमाणे देवत्ताए उववण्णे । थेरा तहेव ओयरंति  
जाव<sup>७</sup> इमे से आयारभंडए ॥

६०. भंतेति ! भगवं गोयमे तहेव आपुच्छति, जहा खंदयस्स भगवं वागरेइ जाव<sup>८</sup>  
सव्वट्टुसिद्धे विमाणे उववण्णे ॥

६१. घण्णस्स णं भंते ! देवस्स केवइयं कालं ठिई पणत्ता ?  
गोयमा ! तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पणत्ता ॥

६२. से णं भंते ! ताओ देवलोगाओ कहिं गच्छहिइ ? कहिं उववज्जहिइ ?  
गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झहिइ वुज्झहिइ मुच्चिहिइ परिनिव्वाहिइ  
सव्वदुक्खाणमंतं काहिइ ॥

### निवखेव-पदं

६३. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव<sup>९</sup> संपत्तेणं पढमस्स अज्झय-  
णस्स अयमट्ठे पणत्ते ॥

१,२. पू०—अ० ३।३० ।

३. भ० २।६६-६६ ।

४. अ० १।८ ।

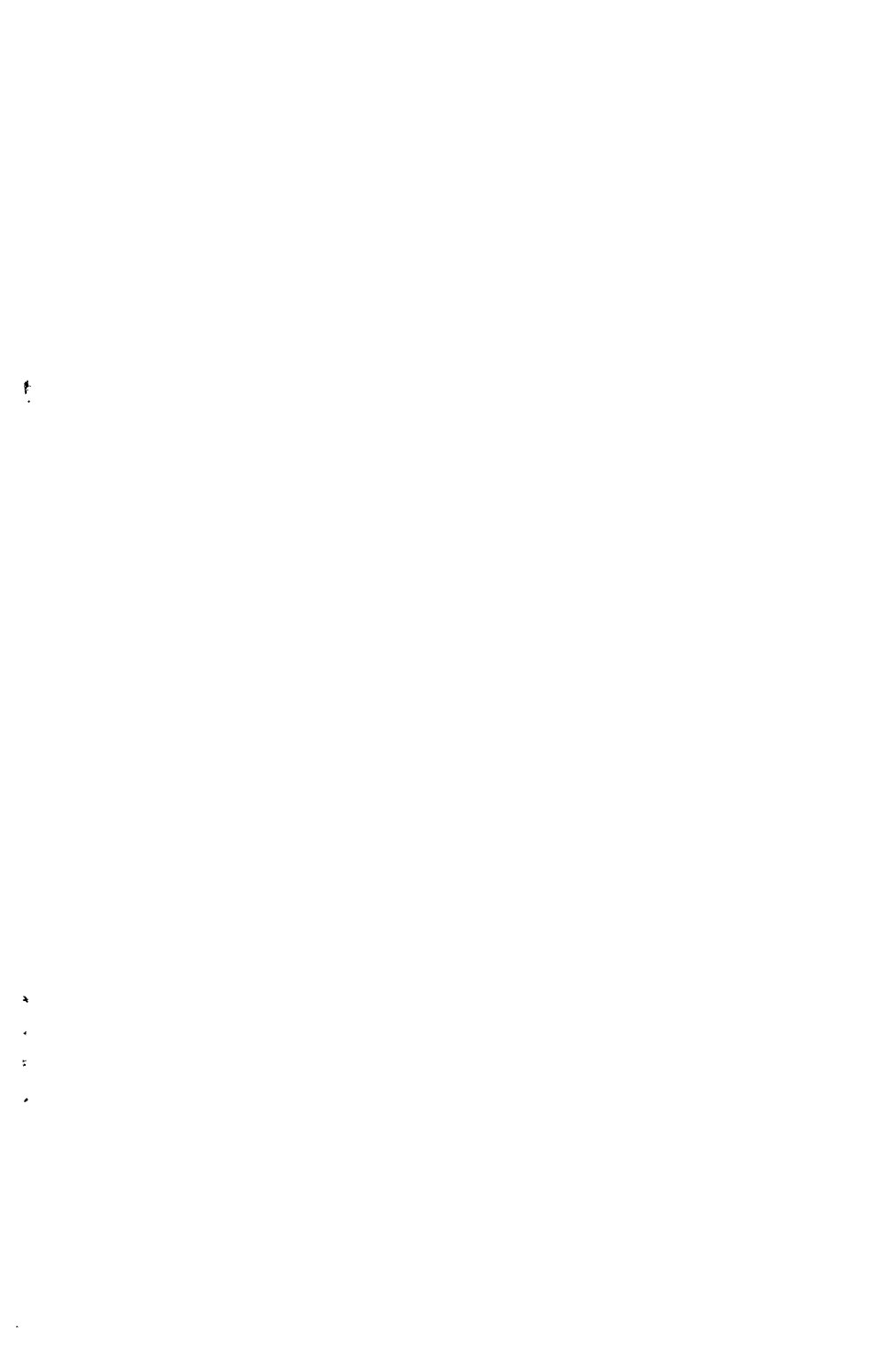
५. सं० पा०—चंदिम जाव नवय० ।

६. अ० १।८ ।

७. भ० २।७० ।

८. भ० २।७१ ।

९. अ० ३।७५ ।





७१. तए णं से सुणक्खत्ते अणगारं तेणं ओरालेणं' तवोकम्मेणं' जहा खंदयो' अईव-  
अईव उवसोभेमाणे चिट्ठइ ॥
७२. तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नयरे । गुणसिलए चंडए । मेणिए राया ।  
सामी समोसडे । परिसा निग्गया । राया निग्गयो । धम्मकहा । राया पडिगयो ।  
परिसा पडिगया ॥
७३. तए णं तस्स सुणक्खत्तस्स अणगारस्स अणया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकाले  
धम्मजागरियं जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चित्तिए पत्थिए मणोगए  
संकप्पे समुप्पज्जित्था, जहा खंदयस्स । वहु वासा परियाओ । गोयमपुच्छा ।  
तहेव कहेइ जाव' सव्वट्टुसिद्धे विमाणे देवत्ताए उववण्णे । तेत्तीसं सागरोवमाइं  
ठिई' । महाविदेहे वासे सिज्झिह्महिइ ॥

### ३-१० अज्झयणाणि

#### इसिदासादि-पदं

७४. एवं सुणक्खत्तगमेणं सेसा वि अट्ठ अज्झयणा भाणियव्वा, नवरं—आणुपुव्वीए  
दोण्णि रायगिहे, दोण्णि साकेते, दोण्णि वाणियग्गामे, नवमो हत्थिणपुरे, दसमो  
रायगिहे । नवण्हं भद्दाओ जणणीओ । नवण्ह वि वत्तीसओ दाओ । नवण्हं  
निक्खमणं थावच्चापुत्तस्स सरिसं' । वेहल्लस्स पिया करेइ' । छम्मासा वेहल्लए ।  
नव धण्णे । सेसाणं वहु वासा । मासं संलेहणा । सव्वट्टुसिद्धे । सव्वे महाविदेहे  
सिज्झिह्मस्सति ॥

#### निक्खेव-पदं

७५. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं आइगरेणं तित्थगरेणं सहसंबुद्धेणं  
लोगणाहेणं लोगप्पदीवेणं' लोगपज्जोयगरेणं अभयदएणं सरणदएणं चक्खुदएणं  
मग्गदएणं धम्मदएणं धम्मदेसएणं' धम्मवरचाउरंतचक्कवट्ठिणा अप्पडिहय-  
वरणाणदंसणधरेणं जिणेणं जाणएणं बुद्धेणं बोहएणं मुत्तेणं मोयएणं तिण्णेणं  
तारएणं सिवमयलमरुयमणंतमक्खयमव्वावाहमपुणरावत्तयं सिद्धिगइनामघेयं  
ठाणं संपत्तेणं अणुत्तरोववाइयदसाणं तच्चस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ॥

१,२. पू० ३।३० ।

३. भ० २।६४ ।

४. भ० २।६६-७१ ।

५. ठिई से णं भते (क, ख, ग, घ) ।

६. पू०—ना० १।५।२२-३३ ;

७. 'निक्खमणं' इति शेषः ।

८. × (ख) ।

९. × (क) ।







पंचविहो पण्णत्तो, जिणेहि उह् अण्णसो यणादीयो ।  
 हिंसा - मोसमदत्तं, अन्वंब - परिगहं चैव ॥२॥  
 जारिसओ, जंनामा, जह् य कओ जारिमं फलं देति ।  
 जेवि य करंति पावा, पाणवहं तं निगामेह् ॥३॥

### पाणवहस्स सरुव-पदं

२. पाणवहो नाम एस निच्चं जिणेहि भणियो—पावो चंडो रुद्धो खुद्धो साहसियो  
 अणारियो निघणो निस्संसी मह्भयो पद्धभयो अतिभयो वीहणयो तासणयो  
 अणज्जो उव्वेयणयो य निरवयवतो निद्धम्मो निप्पिवासो निक्कलुणो निरय-

अहापडिरुवं उगहं उगिण्हिता संजमेणं  
 तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरति । परिसा  
 निग्गया । घम्मो कहियो । जामेव दिंशि  
 पाउव्भूया तामेव दिंशि पडिग्गया ।

तेणं कालेणं तेणं समएणं अज्जसुहम्मस्स  
 थेरस्स अंतेवासी अज्जजंबू नामं अणगारे  
 कासव गोत्तेणं सत्तुस्सेहे जाव संखित्त-  
 विपुलतेयत्तेस्से अज्जसुहम्मस्स थेरस्स  
 अट्टरसामते उड्डंजाणू जाव संजमेणं तवसा  
 अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।

तए णं से अज्जजंबू जायसड्ढे जायसंसए  
 जायकोउहल्ले, उप्पण्णसड्ढे ३, संजायसड्ढे  
 ३, समुप्पण्णसड्ढे ३, उट्टाए उट्टेइ, उट्टेत्ता  
 जेणेव अज्जसुहम्मं थेरे तेणेव उवागच्छइ,  
 उवागच्छित्ता अज्जसुहम्मं थेरं तिवखुत्तो  
 आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ  
 नमंसइ, नमंसित्ता नच्चासन्ने ताइदूरे विणएणं  
 पंजलिपुडे पज्जुवासमाणे एवं वयासी—जइ  
 णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव  
 संपत्तेणं णवमस्स अंगस्स अणुत्तरोववाइय-  
 दसाणं अयमट्टे पण्णत्ते, दसमस्स णं अंगस्स  
 पण्हावागरणाणं समणेणं जाव संपत्तेणं के  
 अट्टे पण्णत्ते ?

जंबू ! दसमस्स अंगस्स समणेणं जाव  
 संपत्तेणं दो सुयक्खंघा पण्णत्ता अण्हमदारा  
 य संवरदारा य । पढमस्स णं भंते ! सुयक्खं-  
 घस्स समणेणं जाव संपत्तेणं कइ अज्जयणा  
 पण्णत्ता ?

जंबू ! पढमस्स णं सुयक्खंघस्स समणेणं  
 जाव संपत्तेणं पंच अज्जयणा पण्णत्ता ।  
 दोच्चस्स णं भंते ! एवं चैव । एएत्ति णं  
 भंते ! अण्हय-संवराणं समणेणं जाव  
 संपत्तेणं के अट्टे पण्णत्ते ?

ततेणं अज्जसुहम्मं थेरे जंबूनामेणं अणगारेणं  
 एवं वुत्ते समाणे जंबूअणगारं एवं वयासी—  
 जंबू ! इणमो इत्यादि ॥ (वृ) ।

३. विणिच्छियं (घ) ।

१. मोसादत्तं (क) ।

२. जण्णामा (क) ।

३. पाणिवहं (ग) ।

४. साहस्सिओ (ग) ।

५. व्याकरणदृष्ट्या 'अणज्जो' इति पदं युक्तं  
 स्यात् ।



१४. भाववत्काण य गुरुग-वायव-पत्तयेसरीर-नाम-साधारणे अणन्ते हृणन्ति अविजाणयो य परिजाणयो य जीवे इमेहि विविहेहि कारणेहि, 'किं ते' ?—  
करिसण-पोखरिणी-वावि-वण्णिण-कूव-सार-तालाग-चिति-वेदि-सातिय-आराम-  
विहार-शूभ-पागार-दार-गोडर-अट्टालग-चरित-मेतु-संकम-भासायविकण-  
भवण-घर-सरण-नेण-आवण-चेतिय-देवकुल-चित्तसभ-पत्र-आयतण-आवसह-  
भूमिघर-मंडवाण य काण, भायण-भंडोवगरणस्य विविहस्य य अट्टाए पुढवि  
हिसंति मंदबुद्धिया ॥
१५. जलं च मज्जणय-पाण-भोयण-वत्थधोवण-सोयमादिएहि ॥
१६. पयण-पयावण-जलावण-विदंसणेहि अगणि ॥
१७. सुप्प-वियण-तालयंट-पेहुण-मुह-करयल-सागपत्त वत्थमादिएहि अणिलं ॥
१८. अगार-परियार-भवख - भोयण - सयण - आसण-फलग-मुसल -उकवल-तत-वितत-  
आतोज्ज-वहण - वाहण-मंडव-विविहभवण-तोरण-विडंग-देवकुल- जालय-अद-  
चंद-निज्जूह-चंदसालिय-वेतिय" -णिस्सेणि-दोणि-चंगेरि-खील-मेदक-सभ-प्पव-  
आवसह-गंध-मल्ल - अणुलेवण-अंवर-जुय- नंगल-मइय"-कुलिय-संदण-सीया-रह-  
सगड-जाण-जोग - अट्टालग - चरित्र"- दार-गोपुर- फलिह-जंत-सूलिय"-लउड-  
मुसुंढि"-सतग्घि-वहुपहरण-आवरण-उववखराण कते" । अण्णेहि य एवमादिएहि  
वहूहि कारणसतेहि हिंसंति ते" तरुणणे, भणियाभणिए य एवमादी सत्ते  
सत्तपरिवज्जिया उवहणंति दढमूढा दारुणमती ॥
१९. कोहा माणा माया लोभा 'हस्य रती अरती सोय' वेदत्थ-'जीव-धम्म-अत्थ-  
कामहेउं',  
सवसा अवसा अट्टा अणट्टाए य तसपाणे थावरे य हिंसंति मंदबुद्धी ।  
सवसा हणंति, अवसा हणंति, सवसा अवसा दुहओ हणंति ।

१. किं तत् तद्यथेति वा (वृ) ।

२. पोखरिणी (क, ग) ।

३. वेति (क, ख) ।

४. गोपुर (क, ग) ।

५. संकमण (ख) ।

६. एतदादिभिः कारणैरिति प्रक्रमः (वृ) ।

७. जलण जलावण (ख, च) ।

८. तालाण्ट (क, घ); तालवण्ट (ख); तालविट (च) ।

९. विटंग (ख) ।

१०. निज्जूहग (घ) ।

११. वेदिय (क्व) ।

१२. मलिय (क) ।

१३. चरित (क, ग) ।

१४. सूलय (क, ख, घ, वृषा); मूसलय (ग) ।

१५. मुसुंढि (क, घ) ।

१६. कए (क, ग, घ) ।

१७. × (क, ग) ।

१८. इह पंचमीलोपो ह्ययः ।

१९. जीयकामस्यधम्महेउं (क, ख, घ, च) ।





खासिय मेहर' मरुद्ध' मुद्दिग आरव जौनिनग कुहण केकय हण रोमग  
मरुगा' चिलायविसगवामी य पावमविणी,

जलगर-थलयर-'सणहपग-उरग'-गहनर-संदासतीं-जीयोवयायजीवी, य  
य अराणिणी य पज्जत्ता अमुभनेरसपरिणामा ॥

२२. एते अण्णे य एवमादी करेनि पाणातिवाय-करणं, पाया पावाभिगमा पाव-  
पाणवहकयरती पाणवहस्वाणट्टाणा पाणवहकहागु यभिरमंसा तुट्टा न  
करेत्तु होंति य बहुण्णगारं ॥

### पाणवहस्स फलविवाग-पदं

२३. 'तस्स य पावस्स फलविवागं अयाणमाणा वडुहंति--मह्दभयं अविस्साम-वे-  
दीहकालवहुदुक्खसंकडं' नरय-तिरियग-जोणि । इमो आउक्खए पुय  
असुभकम्मवहुला उववज्जंति नरएगु हलितं--महालगु, वयरामय-कुडु  
निस्संधि - दारविरहियं - निम्मह्वं - भूमितल-खरामस्स"-विस्सम-नणरयव  
चारएसु", महोसिण-सयावतत्त"-दुग्गंघ-विस्स-उव्वेयणगेसु" वीभच्छ" ररिसा  
ज्जेसु, निच्चं हिमपडलसोयलेसु", कालोभासेसु" य, भीम-गंभीर-लोमहरिस-  
णिरभिरामेसु, निप्पडियार-वाहि-रोग-जरा-पीलिएसु", अतीवानच्चं वका  
तिमिसेसु, पत्तिभाएसु, ववगय-गह-चंद-सूर-णक्खत्त-जोइसेसु, मेयवस संसपड-  
पुच्चड-पूयरुहिरुक्खिण-विलीण-चिवकण-रसियावावण्ण-कुाहयचिवरल्लकद्धमे-  
कुकूलानलं"-पलित्त- जाल - मुम्मुर- असिक्खुरकरवत्तघार-पु नसिताविच्छुयडं-

१. मेहर (ख, ग, च) ।

२. मढा (वृषा) ।

३. एतानि च प्रायोलुप्तप्रथमावहुवचनानि ।

४. सणहफ्तोरग (क, ख, ग); सणफ्तोरग  
(घ, च) ।

५. °परिणामे (क, ख, घ) ।

६. पावरुती (ख, घ, च) ।

७. °दुक्खवेयणं (क) ।

८. 'तस्स' इति पदादारभ्य 'चुया' इति पदान्तः  
पाठः वृत्तिकारेण सर्वेषु आदर्शेषु नोपलब्धः,  
यथा—तस्सेत्यादि सूत्रं च क्वचिदेव दृश्यते  
(वृ) ।

९. पार ° (क, घ); यार ° (ग); वार ° (च) ।

१०. निमह्व (ख, ग, घ, च) ।

११. खरामसं (क, घ); खरामसं (ग, घ,  
खरामरिस (क्व) ।

१२. °नारएसु (ख) ।

१३. सइयतत्त (क) ।

१४. उव्वेयजणगेसु (क्व) ।

१५. विमत्थ (ख, ग) ।

१६. °सीयलेसु य (क, ग, घ, च) ।

१७. काला ° (क) ।

१८. जलपीलिएसु (क); जरपीलिएसु (ग, घ) ।

१९. तिमिएसु (क) ।

२०. कुक्कुला ° (क) ।



ता हंत' ! पिय इमं जलं निमलं शीमलं ति घंत्तुण ग नरयवाला' तन्निवं त  
रो दंति कलरोण अंजलीगु, ददूण य तं पवेनिगमं ग अंगुणगलं पपुवच्छ  
छिण्णा तण्हा' इयम्ह कलुणाणि' जंपमाणा, निप्पेवतांता दिरोदिसं, अत्ता  
असरणा अणाहा अवंधवा वंधुविण्णहणा विपलापति ग गिगा व वेगे  
भगुच्चिग्गा', घंत्तुण वला पलायमाणानं निरगुक्का मुहं विहाउत्तु लोहउत्तु  
कलकलं' णं वयणांसि छुभंति केइ जमकाइया हगंता ॥

२७. तेण य दट्ठा संता रसंति य भीमाइं विरसरारं, रुदंति' ग कलुणगाइं पारेवता  
व, एवं पलवित-विलाव-कलुणो कंदिग-वहुक्कन-रुदियराइं परिदेविय'-  
वद्धकारव-संकुलो णीसट्ठो "रसिय-भणिय-गुविय-उक्कइय-नरय' ॥१०॥ ताज्जय  
गेण्ह, वकम, पहर, छिद, भिद, उप्पाडेहि, उक्काणाहि", कत्ताहि, विकत्ताहि य  
भंज", हण, विहण, विच्छुभोच्छुभ", 'आकट्ट, विकट्ट", किं ण जंपसि"? सरा  
पावकम्माइं दुक्कयाइं"—एवं वयणमहण्णगइओ पट्टिगुयासइ-संकुलो तासओ'  
सया निरयगोयराण महाणगर-उज्जभाण-सरिसो निग्घोसो मुच्चए" अ. १६  
तहियं नेरइयाणं जाइज्जंताणं जायणाहि, किं ते ?—

असिवणदवभवणजंतपत्थरसूइतलखारवाविकलकलंतेवेयरणि कलंवावा लुयाजलिय  
गुहनिरुंभण-उसिणोसिणकटंइल्लदुग्गमरहजोयणतत्तलोहपहगमणवाहणाणि ॥

२८. इमेहि विविहेहिं आयुहेहिं, किं ते ?—

मोगगर मुसुंढि" करकच सत्ति हल गय मुसल चवक कोंत तोमर सूल लउ-  
भिडिमाल सव्वल" पट्टिस चम्मेट्ट" डुहण मुट्टिय असिखेडग खग्ग चाव न २१५

- |  |   |
|--|---|
| १. हंता (क्व) ।  | च, वृ); अत्र वृत्तेः पाठान्तरं मूलपाठेन                         |
| २. निरयवाला (क्व) ।  | स्वीकृतम् । 'भुज्जो' इति पदापेक्षया भंज                         |
| ३. तण्ह (क, ख, घ, च) ।                                       | इति पदं क्रियापदप्रयोगे प्राप्तञ्जिकमस्ति ।                     |
| ४. वचनानीति गम्यते (वृ) ।                                    | १३. विच्छुभोच्छुभ (क); विद्धुभउद्धुभ (वृ);<br>निद्धुभ० (वृपा) । |
| ५. ०दिसिं (क, घ) ।   | १४. आकट्ट विकट्ट (ख, ग, घ, च) ।                                 |
| ६. भउच्चिग्गा (क) -  | १५. जानासि (वृपा) ।   |
| ७. कलकल (ग, घ, च); त्रपुकमिति गम्यते ।                       | १६. विहणओ तासणओ पइवभओ अइवभओ(वृपा)                               |
| ८. रयंति (क, ग); र्वंति (घ); रोवंति (च) ।                    | १७. सुव्वए (ख, ग, घ) ।  |
| ९. ०वयगा (क, ग) ।  | १८. आउहेहिं ० (क, ग) ।  |
| १०. परिवेदिय (क, ख, घ); परिवेविय (वृपा) ।                    | १९. मुसुंढि (क) ।   |
| ११. उग्घाडेहुक्खणाहि (क); उप्पाडेहुक्खणाहि<br>(ख, ग, घ, च) । | २०. सदल (वृ) ।  |
| १२. भुज्जो; भुज्जो (क); भुज्जो (ख, ग, घ,                     | २१. चम्मेड (क, घ) ।   |



विष्णुयोग - सोयपरिपीलणाणि य, सत्यग्निविसाभिघाय' - गलगवलावलय-  
मारणाणि य, गलगजालुच्छिपणाणि' पडलण-विष्णुपणाणि य, जावज्जौविग-  
बंधणाणि पंजर-निरोहणाणि य, सज्जूह'-निद्राहणाणि घमणाणि दोहणाणि  
य, कुडंड'-गलबंधणाणि घाट'-परिवारणाणि' य, पंकजलनिमज्जणाणि वारिष्ण-  
वेसणाणि य, ओवायणिभंग-विसमणिवडण'-द्वग्निजान्न-दहणादयान् ॥

३१. एवं ते दुक्खसय-संपलित्ता नरगाओ आगया इहं सावसेसकम्मा तिरिक्ख-  
पंचेदिएसु पावन्ति पावकारी कम्माणि पमाद-शग-दोस-ब्रहुसंनियान् अतीव-  
अस्साय'-कक्कसाइ ॥
३२. भमर-मसग-मच्छियाइएसु' य जाई'-कुलकोडिसयसहस्सेहि नवहि चउरिदियाण  
तहि-तहि चैव जम्मण'-मरणाणि अणुभवन्ता कालं संखेज्जकं भमन्ति नेरइय-  
समाणतिव्वदुक्खा फरिस-रसण-घाण-चक्खुसहिया ॥
३३. तहेव तेइदिएसु—कुंथु'<sup>१</sup>-पिपीलिका-अवधिकाइकेसु" य जाती-कुलकोडिसय-  
सहस्सेहि अट्टहि अणूणएहि तेइदियाण तहि-तहि चैव जम्मण-मरणाणि अणुहवन्ता  
कालं संखेज्जकं भमन्ति नेरइयसमाणतिव्वदुक्खा फरिस-रसण'-घाण-संपउत्ता ॥
३४. 'तहेव वेइदिएसु'<sup>२</sup>-गंडूलय'<sup>३</sup>-जलुय'<sup>४</sup>-किमिय-चंदणगमादिएसु य जाती-कुलकोडि-  
सयसहस्सेहि सत्तहि अणूणएहि वेइदियाण तहि-तहि चैव जम्मण-मरणाणि  
अणुहवन्ता कालं संखेज्जकं भमन्ति नेरइयसमाणतिव्वदुक्खा फरिस-रसण-  
संपउत्ता ॥
३५. पत्ता एगिदियत्तणं पि य—पुढवि-जल-जलण-मारुय-वणप्फति-सुहुम-वायरं च  
पज्जत्तमपज्जत्तं पत्तेयसरीरणामसाहारणं च । पत्तेयसरीरजीविएसु य, तत्थवि  
कालमसंखेज्जगं भमन्ति, अणंतकालं च अणंतकाए फासिदियभाव-संपउत्ता  
दुक्खसमुदयं इमं अणिट्ठं पावन्ति<sup>५</sup> पुणो-पुणो तहि-तहि चैव परभव-तरुणगहणे<sup>६</sup>

१. ° विसघाय (क) ।

२. ° लुंछिपणाणि (क); ° छुपणाणि (ग);

° छिपणाणि (च) ।

३. सयूह (ग) ।

४. कुडंड (ख, ग, च) ।

५. वाडग (ग, घ, च) ।

६. परियालणाणि (क) ।

७. विसमपडण (क) ।

८. असाय (ग, च) ।

९. मच्छिमाइएसु (ख, घ); मच्छिगाइ ° (ग, च) ।

१०. जाइ (ग, च) ।

११. जणण (क) ।

१२. जंतु (क) ।

१३. अवहिकाइकेसु (ख, घ, च) ।

१४. रस (क) ।

१५. × (क, ख, घ) ।

१६. गंडूल (क, ग, घ, च) ।

१७. जलूय (ग) ।

१८. पावन्ति (ग); पावन्ति (च) ।

१९. तरुणगणे (वृ); तरुणगहणे (वृषा) ।



निष्पिवासो निवकलुणो निरगवास-गमण-निधणो' मोह-महामय-पयट्टयो' मरण  
वेमणसो' । पढमं अहम्मदारं समत्तं ।

—त्ति वेमि ॥

- 
१. निबंधणो (क) ।
  २. पयट्टो (क, ख); पयट्टो (ग, घ) ।
  ३. वेमणस्सो (ख, ग, घ, च); द्वितीयसूत्रवर्तीनि

एतानि विशेषणानि अत्र न सन्ति, वृत्तिकारे-  
णापि न व्याख्यातानि—साहसिओ पइभओ  
अत्तिभओ ।





वहुकादं किराणाणि य परिगृह्णन्ता परिगृह्णन्ति नित्यं यथा देवानि मर्त्या  
 तित्ति न तुष्टि उच्यतेभिः यन्मन्त्रिणामुक्तानांभिः भूषणानां ।  
 वाराहर-उगुगार-नट्टपवन-कृष्ण-रथमय-भाण-मूर्ध-सन्ध्यादिभिः-पवन-सक्ति-  
 दहपति-रतिकर-अजणकमेव-दहिमुहुरापापुपाय-कवचक-विना-विनि-  
 जमक-वरसिद्धि-कृष्णायी ॥

### मणुस्साणं परिगृह-पदं

४. वक्खार - अकम्मयभूमोगु, गुविभसाभादेशामु कम्मभूमिसु जेद्वि य मर  
 चाउरंतचक्कवट्टी वागुदेवा वलदेवा मंडलीया इमरा सववरा मणावती ५०५  
 सेट्टी रट्टिया पुरोदिया कुमारा इडणायमा माईयिया सत्थवाहा कोट्टियि  
 अमच्चा एए अण्णे य एवमादी परिगृहः मन्त्रिणि अण्णं असरणं दुरंतं अयुव  
 मणिच्चं असासयं पावकम्मनेम्मं अतिकरियव्वं विणाममूर्धं बहुवक्खारिकलेस  
 बहुलं अणंतसंकिलेसकरणं ते तं अण-कणन-रथण-निचयं पिडितां वेव लोप  
 घत्था संसारं अतिवयंति" सच्चदुक्ख-संनिलयणं ॥

### परिगृहत्थं सिक्खा-पदं

५. परिगृहस्सेव य अट्टाए सिप्परायं सिक्खाए बहुजणो कलाओ य वावत्तिरि सुनि-  
 पुणाओ लेहाइयाओ सउणरुयावसाणाओ गणियप्पहाणाओ, चउसट्टि च महिला-  
 गुणे रतिजणणे, सिप्पसेवं, असि-मसि-किसी-वाणिज्जं, ववहारं, अत्यसत्य-  
 ईसत्य-च्छरूपगयं, विविहाओ य जोगजुंजणाओ" य, अण्णंसु एवमादिएसु  
 वहुसु कारणसएसु जावज्जीवं नडिज्जए", संचिणंति मंदवुट्टी ॥

### परिगृहीणं पवित्ति-पदं

६. परिगृहस्सेव य अट्टाए करंति पाणाण वहकरणं अलिय-नियडि-साइ-संपओगे  
 परदव्व-अभिज्जा सपरदारगमणसेवणाए" आयास-विसूरणं कलह-भंडण-वेराणि  
 य अवमाण-विमाणणाओ इच्छ-महिच्छ-प्पिवास-सतततिसिया तण्ह-भेहि-लोभ-  
 घत्था अत्ताण-अणिग्गहिया करंति कोहमाणमायालोभे अकित्तणिज्जे ॥

१. °भूतसत्ता (च) ।

२. इवखुगार (ख, घ, च) ।

३. लवणसमुद् (क) ।

४. दहिमुहवातुप्पाय (क); °उवातुप्पाय (च) ।

५. × (क, ख, ग, घ) ।

६. अकिरियव्वं (क); अकिरियव्वं (घ) ।

७. मनंतं परि° (क) ।

८. मनसंकिलेस° (क) ।

९. पिडंता (ख) ।

१०. अविचयंति (ख, घ) ।

११. परिग्रहाय शिक्षत इति प्रतीतम् (वृ) ।

१२. बहुवचनार्थत्वादेकवचनस्य (वृ) ।

१३. × (ख, घ); °अभिगमण° (ग) ।



एणुहि पंचनि असंभरेति रममादिनिना' सणुसमयं ।  
 नडिविहमतिपेया, सणुसिद्धिनि संभरे ॥१॥  
 सव्यगर्भ - पंचगदे, कादेति सणुसणु सव्यगुणता ।  
 जे य ण गुणानि भग्म, सोऊण य जे पमासति ॥२॥  
 अणुसिद्धिनि नहुनिह, मिच्छादिष्टो णया अनुदीया ।  
 बद्धनिकाडयवग्मा, गुणानि भग्मं न य करेति ॥३॥  
 कि सवका काउं जे, जं णेच्छह सोमहं मुहा पाउं ।  
 जिणवयणं गुणमहुरं, निरेयणं सव्यदुग्गाणं ॥४॥  
 पंचेव' उजिभकणं, पंचेव य रसिमाऊण भविण ।  
 कम्मरय - विणममुक्ता, मिद्धिधरमणुत्तरं जनि ॥५॥

१. °अचिणित्तु (वृ) ।

२. अणुसद्धं (क, ग, घ); अणुसिद्धा (वृ) ।

३. पंचेव य (च) ।



दीवो ताणं सरणं गनी पडुद्धा  
 निव्वाणं<sup>१</sup> निव्वुई<sup>२</sup> समाही  
 सत्ती किन्ती कंती  
 रती य विरणी य गुयंग तिनी  
 दया विमुत्ती खंती गमत्तायाहणा  
 महंती वोही बुद्धी धिनी  
 समिद्धी रिद्धी विद्धी  
 ठिती पुट्टी नंदा भद्दा  
 विसुद्धी लद्धी विसिट्ठिविट्ठी  
 कल्लाणं भंगलं पमोओ विभूती ररता  
 सिद्धावामो अणासवो  
 केवलीणं ठाणं  
 सिव-समिई-सील-संजमो त्ति य  
 सीलपरिघरो<sup>३</sup> संवरो य गुत्ती ववसाओ  
 उस्सओ<sup>४</sup> य जणो, आयतणं जयणमप्पमाओ ।  
 आसासो वीसासो, अभओ सवूस्स वि अमाघाओ ।  
 चोवखपवित्ता<sup>५</sup> सुती पूया विमल-पभासा य निम्मलतर त्ति ।  
 एवमादीणि निययगुण-निम्मियाइं पज्जवणामाणि होंति अहिंसाए भगवतीए ॥

### अहिंसा-थुइ-पद

४. एसा सा भगवती अहिंसा, जा सा—

भीयाणं पिव सरणं, पक्खीणं पिव गयणं<sup>६</sup> ।  
 तिसियाणं पिव सलिलं, खुहियाणं पिव असणं ।  
 समुद्दमज्जे व पोतवहणं, चउप्पयाणं व आसमपयं ।  
 दुहट्टियाणं<sup>७</sup> व ओसहिवलं, अडवीमज्जे व सत्थगमणं ॥

५. एत्तो विसिट्ठतरिका अहिंसा, जा सा—

पुढवि-जल-अगणि - माख्य - वणप्फइ-वीज-हरित-जलचर-थलचर-खहचर-तसं-  
 थावर-सन्वभूय-खेमकरी ॥

१. नेव्वाणं (क) ।

२. नेव्वुई (क, ख) ।

३. सीलायारो (क); सीलघरो (ख, घ, च) ।

४. उस्सतो (क) ।

५. चोवखा पवित्ती (क) ।

६. गमणं (क, ग, वृ) ।

७. दुहट्टियाणं (च, ग) ।



## उच्छगधेसणा-पदं

७. इमं च पुहवि-रग-अगणि-भाष्य-नभय-रग-भाष्य-मदाभुय-संज्ञमदशुभाए, पु  
उच्छ गवेशियव्वं अकनमकारिमणाहयमणद्विष्ट, यत्तीवचनं, नगद्विष्ट कीदी  
गुपरिसुद्धं, दसाहि य दोमेहि विणममुक्तं, उग्गमद्वयवयणमणामुद्धं, वयमय-वु  
चइय'-नसदेहं च, फामुगं च ।  
न निमज्जकहापय्यामणमामुद्धावणीयं, न विगिच्छा-मंन-मूल-भेसज्जहेउं,  
लक्खणुप्पाय-गुमिण-जोडम-निमित्त-कह-कुहकणपउत्तं ॥
८. नवि उंभणाए, नवि रक्खणाते, नवि मासणाते, नवि उंभण-रक्खण-साभय  
भिव्वं गवेशियव्वं ॥
९. नवि वंदणाते, नवि माणणाते, नवि पूयणाते, नवि वंदण-माणण-पूयणा  
भिव्वं गवेशियव्वं ॥
१०. नवि हीलणाते, नवि निदणाते, नवि गरहणाते, नवि हीलण-निदण-गरहणा  
भिव्वं गवेशियव्वं ॥
११. नवि भेसणाते, नवि तज्जणाते, नवि तालणाते, नवि भेसण-तज्जण-तालणा  
भिव्वं गवेशियव्वं ॥
१२. नवि गारवेणं, नवि कुहणयाते, नवि वणीमयाते, नवि गारव-कुहण-वणीमय  
भिव्वं गवेशियव्वं ॥
१३. नवि मित्तयाए, नवि पत्थणाए, नवि सेवणाए, नवि मित्तत-पत्थण-सेवणा  
भिव्वं गवेशियव्वं ॥
१४. अण्णाए अगद्विए अदुद्धे अदीणे' अविमणे अकलुणे अविसाती' अ' रत्तंजोग  
जयण-घडण-करण-चरिय-विणय-गुण-जोगसंपउत्ते भिव्वु भिव्वेसणाते निरते
१५. इमं च सव्वजगजीव-रक्खणदयद्वुए पावयणं भगवया सुकहियं अत्ताह  
पेच्चाभावियं आगमेसिभदं सुद्धं नेयाउयं अकुडिलं अणुत्तरं स- उक्खण-  
विअोसमणं ॥

## अहिंसाए पंचभावणा-पदं

१६. तस्स इमा पंच भावणाओ पढमस्स वयस्स होंति ॥ तातवायवेरमण  
परिरक्खणद्वयाए ॥
१७. पढमं—ठाणगमणगुणजोगजुंजण-जुगंतरनिवातियाए दिट्ठीए इरियव्वं कीड

१. चयिय (क); चाविय (क्व) ।

३. अदीणे (वृ) ।

२. भेसज्जकज्जहेउं (क, ख, ग, घ, च) ।





मुञ्जनेणं, उगिन्टु संगर्भाञ्जकण गसायं कानं मत्तं कलानं, समुमिडुं प  
 अगहिणं अगर्हाणं अणनभोवणणे यथाहो अणुदे अणनभोवो डनु  
 यनवनवं अदुगमविवनिव' अहिंसाति जा तिगभायवे वाप पणसेणं व  
 संजोगमणिगालं च विगयदुम वातातं वण-गणनं वनभूयं मवमजणण  
 निमित्तं संजगभायवहणदुयाए अहेज्जा पाणभायवहणदुयाए संजग पं समिगं  
 एवं आहारगमिनिजागेण भाविशा भवति अवरणा, अणनवनसकि  
 निव्वण-चरित्तभावणाए अहिंसाण संजग मुसाहू ॥

२१. पंचमं —पौढ-कलम-निज्जा-गंवाएग-वाता-पत-कंसल-वण-वणदुरण-वो  
 मुहपोत्तिग-पायपुच्छणादी । एषंवि संजमेस उवयहणदुयाए कानावत-वैल  
 सोय-परिरक्खणदुयाए उवगरण रामदोमर्हाय परिहृत्तिव्वं मज्जेण  
 पडिल्लेहण-पप्फोउण-पमज्जणाए अहो य रायो ग अणमनंण हौए  
 निव्खवियव्वं च मिण्हयव्वं च भायण-भंठोवहि-उवगरण ।  
 एवं आयणभंडनिकवेवणासमितिजोगेण भाविशो भवति अतरणा, असक  
 किलिट्ट-निव्वण-चरित्तभावणाए अहिंसाण संजगे मुसाहू ॥

**निगमण-पदं**

- २२. एवमिणं संवरस्स दारं सम्मं संवरियं होति सुप्पणिहियं इमेहि पंचं  
 कारणेहि मण-वयण-काय-परिरक्खण्हि ॥
- २३. णिच्चं आमरणंतं च एस जोगो णेयव्वो धित्तिमया मत्तिमया अणासवो अक  
 अच्छिहो अपरिसावी असंकिलिट्ठो सुद्धो सव्वजिणमणुणातो ॥
- २४. एवं पढमं संवरदारं फासियं पालियं सोहियं तीरियं किट्टियं आराहियं ।  
 अणुपालियं भवति ॥
- २५. एवं नायमुणिणा भगवया पण्णवियं परुवियं पसिद्धं सिद्धं । संवरसा-  
 आघवितं सुदेसितं पसत्थं । पढमं संवरदारं समत्तं ।

—त्ति वे।

---

- १. अदुय० (च) ।
- २. मायनिमित्तं (क, ख, ग, घ) ।
- ३. ० रक्खणदुयाए (क) ।
- ४. उवगहणदुयाए (क, ख, च) ।
- ५. संजमेणं (ग) ।



८. बह्वन्धभिर्योगैरधोरेहि पशुर्धनि ग, यमिहाभज्जर्हादि निरति' यणत्वा  
सच्चवादी ॥
९. साधेव्याणि य धेवयायो करेति सच्चवयणै स्तान् ॥

### सच्चस्स धुङ्-पदं

१०. तं सच्चं' भगवं तित्यगरमुभाशियं यसायिदं चोदुमपुत्रोहि पादुज्जयिदि  
'महरिसीण ग समयणदिण्ण' अंनद-नारिद-भाशिपणं नेमार्णियसाहिणं मह  
मंतोसहिधिज्जसाहणट्टं नारणगण-समण-सिद्धनिज्जं मणयणणाणं न वंदणिज्ज  
'अमरणणाणं च अच्चणिज्जं अमुरगणाणं न पुयणिज्जं,"  
अणोगपामंड-परिमहियं, जं तं लोकाग्मि मारभूयं ।  
गंभीरतरं महासमुद्दाओ, यिरतरं मेगपव्वयाओ ।  
सोमतरं चंदमंडलाओ, दित्ततरं मूरमंडलाओ ।  
विमलतरं सरयनहयलाओ, सुरभितरं गंधमादणाओ ॥

११. जे वि य लोकाग्मि अपरिसैसा मंता जोगा जवा य विज्जा य जंभका य अत्याहि  
य सत्थाणि य सिक्खाओ य आगमा य सव्वाणि' वि तादं सच्चं पदट्टियाइं ॥

### सावज्जसच्च-पदं

१२. सच्चंपि य संजमस्स उवरोहकारकं' किञ्चि न वत्तत्वं—हिंसा-सावज्जसं उर  
भेय-विकहकारकं अणत्थवाय-कलहकारकं अणज्जं अववाय-विवायसंपउर  
वेलवं ओजधेज्जवहुलं निल्लज्जं लोयगरहणिज्जं दुद्धिं दुस्सुयं दुम्मणियं' ॥
१३. अप्पणो थवणा, परेसु निदा—

नसि' मेहावी, न तंसि धण्णो ।  
नसि पियधम्मो, न तं कुलीणो ।  
नसि दाणपती, न तंसि सूरो ।  
नसि पडिरूवो, न तंसि लद्धो ।  
न पंडिओ, न बहुस्सुओ, न वि य तं तवस्सी ।

१. नइति (क) ।
२. भगवंतं (क, ख, ग, घ, च) ।
३. °णइण्णं (वृ); महरिसिसमयपइण्णचिण्णं  
(वृपा) ।
४. × (क) ।
५. °सच्चाइं (ख, च) ।
६. अवरोहकारकं (ख) ।
७. अमुणियं (ख, ग, घ, च) ।
८. त्वमिति गम्यते (वृ) ।



एवं एवम् च एवमादियं भवेत्तु कर्त्तव्य-अभिव्यक्तौ, अथवा कोऽपि न भवेत्तु  
एवं मूर्त्तीए' भावित्यो भवति अंतरप्णा, संजय-कर-चरण-नयण-वयणो  
सच्चज्जवसंपणो ॥

१६. ततियं—लोभो न सेवियव्वो ।

लुद्धो लोलो भणेज्ज अलियं वेणुस्स व कण्ठस्स व कण्ठ ।

लुद्धो लोलो भणेज्ज अलियं किरीणं व सोभस्स व कण्ठ ।

लुद्धो लोलो भणेज्ज अलियं इद्धीणं व सोभस्स व कण्ठ ।

लुद्धो लोलो भणेज्ज अलियं भन्नास्स व पाणस्स व कण्ठ ।

लुद्धो लोलो भणेज्ज अलियं पीडस्स व फलास्स व कण्ठ ।

लुद्धो लोलो भणेज्ज अलियं सेज्जाणं व संयाण्णस्स व कण्ठ ।

लुद्धो लोलो भणेज्ज अलियं कथस्स व पत्तास्स व कण्ठ ।

लुद्धो लोलो भणेज्ज अलियं कंचरास्स व पाणपुच्छणस्स व कण्ठ ।

लुद्धो लोलो भणेज्ज अलियं सीसास्स व सिस्सिणीणं व कण्ठ ।

अण्णेषु' य एवमादिएसु बहूमु कारणमतेसु लुद्धो लोलो भणेज्ज अलियं, त  
लोभो न सेवियव्वो ।

एवं मुत्तीए' भाविओ भवति अंतरप्णा, संजय-कर-चरण-नयण-वयणो सु  
सच्चज्जवसंपणो ॥

२०. चउत्थं—न भाइयव्वं । भोतं सु भया अइति लहुयं, भोतो अवितिप्प  
मणूसो, भोतो भूतेहि व घेपेज्जा, भोतो अण्णं पि हु भेसेज्जा, भोतो तव-सं  
पि हु मुएज्जा, भोतो य भरं न नित्यरेज्जा, सप्पुरिसनिसेवियं च मगं भो  
न समत्थो अणुचरिउं । तम्हा न भाइयव्वं' भयस्स वा वाहिस्स वा रोगस्स  
जराए वा मच्चुस्स वा अण्णस्स व एवमादियस्स' ।

एवं घेज्जेण भाविओ भवति अंतरप्णा, संजय-कर-चरण-नयण-वयणो सु  
सच्चज्जवसंपणो ॥

२१. पंचमकं—हासं न सेवियव्वं । अलियाइं असंतकाइं जंपंति हासइत्ता । २।  
भवकारणं च हासं, परपरिवायप्पियं च हासं, परपीलाकारणं च हासं, भेदा  
मुत्तिकारकं च हासं, अण्णोण्णजणियं च होज्ज हासं, अण्णोण्णगमणं च हो  
मम्मं, अण्णोण्णगमणं च होज्ज कम्मं, कंदप्पाभिओगगमणं च होज्ज हा  
आसुरियं किंविस्सत्तं च जणेज्ज हासं, तम्हा हासं न सेवियव्वं ।

१. खंतीयं (ख); खंतीय (ग, घ, च) ।

२. संथारस्स (क) ।

३. लुद्धो लोलो भणेज्ज अलियं अण्णेषु (क, ख,  
ग, घ, च) ।

४. मुत्तीय (ख, घ) ।

५. भावितव्वं (क); भावितव्वं (ग) ।

६. एगस्स (वृ); एवमादियस्स (वृषा) ।



## अट्टमं अज्भयणं तद्वयं संवरदारं

उक्तेव-पदं

१. जंबू ! दत्ताणुण्णायसंवरौ' नाम होनि ततियं—गुण्वयं' महव्वयं गुण्वयं तस्य  
हरणपडिविरडकरणजुत्तं अपरिमियमणंतनण्णामण्णय-मण्णिव्व-मण्णवयणक-  
आयाणसुनिग्गहियं सुमंजमियमण-हृत्थ-पायनिहृत्थं निग्गयं षेट्ठिकं नि-  
निरासवं निव्वभयं विमुत्तं उत्तमनरवसभ-पवरवत्तवग-गुविहियजणसंमत्तं प-  
साहुधम्मचरणं ॥

अदत्तस्स अग्गहण-पदं

२. जत्थ य गामागर-नगर-निगम-खेड-कव्वड'-मडंवं-दोणमुह-संवाह ५ट्ठपासम'  
च किंचि दव्वं मणि-मुत्त-सिल-प्पवाल-कंस-दूस-रयय-वरकणग-रयणम  
पडियं पम्हुट्ठं विप्पणट्ठं न कप्पति कस्सति' कहेउं वा गेण्हिउं वा । आह'  
सुवण्णिकेण समलेट्ठुकंचणेणं अपरिग्गहसंबुडेणं लोर्गमि विहरियव्वं ॥
३. जं पि य होज्जा हि दव्वजातं 'खलगतं खेत्तगत रण्णमंतरगतं व' किंचि  
फल-तय-प्पवाल-कंद-मूल-तण-कट्ठ-सक्कराइं अप्पं व वहुं व अणुं व थूलगं वा  
कप्पति ओग्गहे अदिण्णमि गिण्हिउं जे ॥

१. दत्तमणुण्णायं ° (क); दत्तमणुण्णाय °  
(ख, ग, घ, च) ।

२. सुव्वत (क, ख, ग, घ, च); वृत्तिकारेण  
'सुव्वय' इति पाठो लब्धः, तेन 'हे सुव्वत'  
इति सम्बोधनत्वेन व्याख्यातः । वस्तुतोऽत्र  
'सुव्वयं महव्वयं गुणव्वयं' एतानि त्रीण्यपि

पदानि एकरूपाणि सन्ति । ५ ति  
कचचित्प्रयुक्तादर्शो 'सुव्वयं' इति १०

लब्धः । तेनासौ पाठः स्वीकृतः ।

३. खव्वड (क)

४. कासती (क, घ) ।

५. वाचनान्तरे—जलथलगयं खेत्तमंतरगयं(व)





अवत्तादाणवेरमणस पंगभावजा-पंग

८. तस्य इमा पंग भावणा वसिष्ठस्य यथायं श्लोकं वदन्तः।  
रत्नमण्डुयाए ॥
९. पठ्यं - देवकान्त-सभ-पणा-सायसा - कवचमुच-सायसा-कंदरा - अणार-गिरिगुहा  
'कम्मं-उज्जाण'-जाणसाय-कणितमाय-संघ - मृगणार - मुग्गाय-वेण - मण  
अण्णांमि य एवमादिपंग द्यमद्विग-वी-ह-ही-ग-वगपाण-असंगतो अद्वय  
फामुए विवित्तं परतो उवस्सए होइ विवित्तं ॥  
आहाकम्मं-वहुने य जे से आनिता-संमज्जिधीमित्त-मोहिण-अणण-दुमण-नंन  
अणुलिपण-जलण-भंडनालण', अतो वहि न अमंजमो जल्य यद्वुत्तो', संजय  
अद्वु 'वज्जेयव्वे हु उवस्सए' से नारिशाए मुग्गाय-कट्टे ।  
एवं विवित्तवारावसाहिसमित्तजोगेण भावितो भवति अंतरप्पा, निच्चं अहिकरण-कर  
करण-कारावण-पावकम्मविरतो दत्ताणुण्णाय-ओग्गहृद्धं ॥
१०. वित्तियं - आरागुज्जाण-काणण-नणण-पेशभागे जं किनि इवकटं व कट्टिणं  
जंतुं व 'परा-मेरा' - कुच्च - कुस - डवभ - पलाल - मृगम - वल्लय' - पुण - फ  
तय-पवाल-कांद-मूल-तण-कट्ट-सगकराई गेण्हइ सेज्जोवहिस्स अद्वु, न कम्म  
ओग्गहे अदिण्णांमि गेण्हइं जे । ह्णिह्णि ओग्गहं अणुणविय गेण्हियवं ।  
एवं ओग्गहसमित्तजोगेण भावितो भवति अंतरप्पा, निच्चं अहिकरण-कर  
कारावण-पावकम्मविरते दत्ताणुण्णाय-ओग्गहृद्धं ॥
११. तत्तियं - पीढ-फलग-सेज्जा-संथारगद्वयाए रक्खा न छिदियव्वा, न य छेदणेण  
भेयणेण य सेज्जा कारेयव्वा ।  
जस्सेव उवस्सए वसेज्ज सेज्जं तत्थेव गवेसेज्जा, न य विसमं समं करेज्जा,  
निवाय' - पवाय-उस्सुकत्तं, न डसमसगेसु खुभियव्वं, अग्गी धूमो य न कायव्वो  
एवं संजमवहुले संवरवहुले संवुडवहुले समाहिवहुले वीरे काएण फासयते सयय  
अज्भप्पज्भाणजुत्ते समिए एगे चरेज्ज धम्मं ।

१. वसहि (क, ख, घ) ।

२. गिरिगुहा (च) ।

३. कम्मंतुज्जाण (क, ग, घ), कम्मं उज्जाण  
(ख, च) ।

४. लयण (ख) ।

५. °मद्विया (ख, घ) ।

६. एतेपां सभाहारद्वन्द्वः विभक्तिलोपश्च दृश्यः  
(वृ) ।

७. वट्टति (च) ।

८. वज्जेयव्वो हु उवस्सओ (ग) ।

९. दत्तमणुण्णाय (क, ख, ग, घ, च); सर्वत्र ।

१०. °स्ती (क, ग) ।

११. परमेरा (क); परंमेरा (ख); परमेरा (घ) ।

१२. पव्वय (ख, घ); चत्वजः तृणविशेषः (वृ) ।

१३. छेदण (ख, ग, घ, च) ।

१४. निवाय (ख) ।



## नवमं अञ्जमयगं

### चउत्थं संवरदारं

#### उक्तेव-पदं

१. जंत्रु ! पुत्तो य वंभेनेरं - उनाम-नव-नियम-गण-दंशण-नरित्त-सम्मत्त-विणः  
जम'-नियम-गुणप्पहाणजुत्तं हिमवत-गहं-तेममंतं पसत्थ-गंभीर-विमित्त-म  
अज्जवसाहुजणाचरितं मोनसमगं विसुद्ध-सिद्धिगति-निलयं 'सा जवमव्वावाह  
पुणवभवं पसत्थं सोमं सुहं सिवमचलमवखयकरं' जतिवर-मारवित्तयं' सुधा  
सुसाहियं' नवरि मुणिवरेहि महापुरिस-धीर'-सूर-धम्मिय-धितिमंताण य  
विसुद्धं भव्वं भव्वजणाणुच्चिण्णं' निस्संकियं' निवभयं नित्तुसं निरायासं' नव्वं  
निव्वुत्तिघरं नियम-निप्पकंपं तवरंजममूलदलिय-णंम्मं पंचमहव्वयमुत्त  
समितिगुत्तिगुत्तं भाणवरकवाडसुकयं' अज्जमयदिण्णफलिहं' संघदोत्तय  
दुग्गइपहं' सुगत्तिपहदेसगं' लोगुत्तमं च वयमिणं पउमसरत्तागपालि  
महासगडअरगतुं वभूयं महाविडिमरुक्खवत्तं वभूयं महानगरजागरकवाडफलिहं  
रज्जुपिणद्धो व इंदकेत्तु विसुद्धणेगगुणसंपिणद्धं ॥

#### वंभेनेरमाहप्प-पदं

२. जमि य भगंमि होइ सहसा सव्वं संभग्ग-मथिय-चुण्णिय-कुसत्ति' :९९.

१. यम (ग, घ) ।

२. सासयमपुणवभवं पसत्थं सोमं सुहं सिवमचल-  
यकरं (वृ); सासयमव्वावाहमपुणवभवं पसत्थं  
सोमं सुहं सिवमचलमवखयकरं (वृपा) ।

३. संरवित्तयं (ख) ।

४. सुभासियं (ग) ।

५. वीर (क, ख, घ) ।

६. भव्वजणसमुच्चिण्णं (क, ख) ।

७. नीसंके (ख) ।

८. °सुकयिरकखणं (च) ।

९. सण्णद्ववद्धोच्चइय °(च) ।

१०. °देसगं च (क, ख, ग, घ, च) ।



गणेषु जह् नन्दपवर्णं पयसं,  
 दुभेषु जह् जंशुं मृदंगणा सोमपुत्राणां श्रीमे शर्मिष्ठा य अयं दीर्घा,  
 सुरमगती गमयती रहती नरमयी जह् जौगुणं यम राया,  
 रक्षिणं नीच जहा महारक्षणे ।

एवमपेया गणा अलीणा भयनि एककीष वचनेरे ॥

२. जंमि य आराहियमि याराहियं नयमिण मय्यं ।

शीलं तवो य विणयो य, सजभो य रती गुरो मुशी ।

तहेव इहलोइय-पारलोइय-असो य किरती य पञ्चयो य ।

तम्हा निहुण्ण वचनेरं चरिययं सव्वयो विमुद्धं जतवज्जीयाए जाय सेय  
 संजओत्ति—एवं भणियं वयं भगवया ।

तं च इमं—

पंचमहव्वय-मुव्वयमूलं, समणमणाइलसाहुमुविण्णं ।

वेरविरामण-पज्जवसाणं, सव्वसमुद्ध-मज्झोदधितियं ॥१॥

तित्थकरेहि गुदेसियमग्गं, नरयतिरिच्छविवज्जियमग्गं ।

सव्वपवित्त-मुनिम्मियसारं, सिद्धिविमाण-अयंगुवदारं ॥२॥

देवनरिदनमंसियपूयं, सव्वजगुत्तममंगलमग्गं ।

दुद्धरिसं गुणनायगमेवकं, मोक्खपहसस वडिसकभूयं ॥३॥

जेण सुद्धचरिएण भवइ सुवंधणो सुसमणो सुसाहू । स इत्थी स मुणी स सं  
 स एव भिक्खू, जो सुद्धं चरति वंधेरे ॥

### बंधचेरथिरीकरण-पदं

४. इमं च रति-राग-दोस-मोह'-पवड्डणकरं किमज्झ-पमायदोसं सत्यसीलकर  
 अब्भंगणाणि य तेल्लमज्जणाणि य अभिक्खणं कयलसी करचर पवदणवेचं  
 संवाहण-गायकम्म-परिमहण-अणुलेवण-चुण्णवास-धूवण - सरीरपरिमंडण-व-  
 सिक-हसिय-भणिय-नट्टगीयवाइयनडनट्टकजल्लमल्लपेच्छण-वेलंवकं जाणि  
 सिंगारागाराणि य अण्णाणि य एवमादियाणि तव-संजम-बंधचेर-ध तोव ।  
 याइं अणुचरमाणेणं बंधचेरं वज्जेयव्वाइं सव्वकालं । भावेयव्वो भवइ  
 अंतरप्पा इमेहिं तव-नियम-सील-जोगेहिं निच्चकालं, किं ते ?—  
 अण्हाणक-उदंतधोवणं - सेयमलजल्लधारण - मूणवय-केसलोय-खम-दम-अचेल  
 खुप्पिवास - लाघव - सितोसिण-कट्टसेज्ज-भूमिनिसेज्ज-परघरपवेस ॥ ६ ॥

१. संमोह (क, च) ।

वर्जयितव्या इति योगः (वृ) ।

२. छान्दसत्वाच्च प्रथमावहुवचनलोपो ह्यः, ३. अदंतधोवण (च) ।



एवं इत्योऽप्यविरतिमितिजोणेण भावितो भवति अंतरणा, आरयमण  
विरतगामधम्मे जिईदिए वंभचेरगुत्ते ॥

१०. चउत्तं पुव्वरय-पुव्वकीलिय-पुव्वसमंय-संय-संयुत्ता ये ते सापाह-विणो  
नोल्लकेमु य निथिमु जण्णेमु उयमेमु य मिणारणार-वाक्येसादि इत्योऽपि  
दाव-भाव-पाननिय - विवमेय<sup>१</sup> - विजाय माविपीहि यण्णुपेम्मिकाहिं<sup>२</sup> स  
अणभूया मयण-संपशोया, उदमुह-परकुमुम-सुरभिवरण-मुग्गिणवरे-नाम-पुण  
सुहफारिस-वत्थ-भूमणगणोक्केया, यमणिउवाओउव-मेउत्त<sup>३</sup>-पउत्तवउ-मउत्त-क-  
मल्ल-मुट्टिक-वेलेवग - कल्लग - पवग - तागग - याउत्तग - संग - संग-पुणउ  
तुंववीणिय-तालावर-पकरणणि य महणि मउरवर-नीव-मुग्गराउ, अण्णाय  
य एवमाइयाउं तव-संजम-संभनेर-पानोवनातिवाउं अण्णवरमाणेण वंभचेरे-  
ताइं समणेण लउभा दउत्तं न कहेत्तं नयि मुमरिउं जे ।

एवं पुव्वरयपुव्वकीलियविरतिसमितिजोणेण भावितो भवति अंतरणा  
आरयमण-विरतगामधम्मे जिईदिए वंभचेरगुत्ते ॥

११. पंचमगं—आहारपणीथ-निद्धभोयण-विक्कजण संजते मुगाहू ववगयसीर-दहि  
सप्पि-नवनीय-तेल्ल-गुल-खंड-मच्छंडिक-महु-मज्ज-संश-सज्जक-विगत-परिचत  
कयाहारे न दप्पणं<sup>४</sup> न बहुसो न नितिकं न सायमुपाहिकं न सद्धं, वह  
भोत्तव्वं जह से जायामाता य भवति, न य भवति विक्कमो भंसणा  
धम्मस्स ।

एवं पणीयाहारविरतिसमितिजोणेण भावितो भवति अंतरणा, आरयमण  
विरतगामधम्मे जिईदिए वंभचेरगुत्ते ॥

### निगमण-पदं

१२. एवमिणं संवरस्स दारं सम्मं संवरियं होइ सुप्पणिहितं इमेहि पंचहि वि  
कारणेहि मण-वयण-काय-परिरक्खिएहि ॥

१३. णिच्चं आमरणंतं च एसं<sup>५</sup> जोगो णेयव्वो<sup>६</sup> धितिमता मतिमता अणासवो  
अकलुसो अच्छिहो अपरिस्सावी<sup>७</sup> असंकिलिट्ठो सुद्धो सव्वजिणमणुण्णाओ ॥

१. °संगंय (ख, ग, घ, च) ।

२. X (ख, ग, घ, च); स्त्रीभिरिति गम्यते (वृ) ।

३. विच्छेव (क, ख, घ, च) ।

४. °पेम्मकाहि (क) ।

५. सुगध<sup>०</sup> (क, ख, ग, घ, च) ।

६. नेय (ग) ।

७. आहारं भुंजीतेतिशेषः (वृ) ।

८. एसो (क, ख, ग, घ) ।

९. णायव्वो (ख, घ) ।

१०. अपरिस्सादी (क); अपरिस्साती (ख, घ, च) ।





सामान्यतया-जीव-व-उत्थेति निपातमिति-इति जिनकी-इति एव जीवो वा  
विदुः न कल्पते' अण्णिममुत्थेति-व, अण्णिममुत्थेति-व सामान्यतया ॥

### असण्णहि-पदं

६. जंपि य ओटण-गुण्णाग मय-सण्ण-मय-भरित्त-वज-व-म-स-दु-वि-ने-दि-म-  
सरके-नूणकोसग - पिद - सिद्धिणि - म-स-मो-म-स-वि-द-स-णि-न-नी-व-के-  
मुट-खंड-मच्छेत्ति मय-मज्ज-मं-म-म-म-म-म-म-म-म-म-म-म-म-म-म-म-म-म-म-  
परधरे व रणे न कल्पति तंपि सण्णहि काळणं मुनिदिपायं ॥

### अकप्पभोयण-पदं

७. जंपि य उट्टिदु-अविय-रनिनाम-गज्जवजाप-मकिण्ण-पाउत्तरण-मामिस्सं, मी-  
कीयकड-पाहुटं वा, दाणट्ट-गुण्णागमदं, समण-नणीमगट्टयाणं व कयं, पच्छाय  
पुरेकम्मं नितिकं मक्खियं अतिररं मोहुरं चं व सयंगाहमाहुं मट्टिआवदि  
अच्छेज्जं चैव अणीसट्टं, जं तं तिहीनुं जण्णं मु उयवेमु स अतो व्व वदि व हो  
समणट्टयाणं ठवियं, हिमा-सावज्ज-मपडतां न कल्पति तंपि य परिधेत्तुं ॥

### कप्पभोयण-पदं

८. अह केरिसयं पुणाइ कप्पति ?

जं तं एककारसापिडवायमुद्धं किण्ण-ज्ञण-पयण-कयकारियाणुभोयण-  
कोडीहि सुपरिसुद्धं, दसहि य दोमिहि विण्णमुक्कं, उग्गम-उप्पायणे, । २  
ववगय-चुय-चइय-चत्तदेहं च फासुयं च ववगयसंजोगमणिगालं, विगय-  
छट्टाण-निमित्तं, छक्कायपरिरक्खणट्टा हणिहणिं फासुकेण भिक्खेण व ८ २५

### रोगायंकेवि असण्णहि-पदं

९. जंपि य समणस्स सुविहियस्स उ रोगायंके बहुप्पकारंमि समुप्पण्णे, वाता त  
पित्तसिभाइरित्तकुविय-तहसण्णवायजाते, उदयपत्ते उज्जल-अल-विउल-तित्त  
कवखड-पगाढ-दुक्खे, असुभ-कडुय-फरुस-चंडफलविवागे महवभये जीवियंतक  
सव्वसरि-परित्तावणकरे न कप्पति' तारिसे वि तह अप्पणो परस्स वा अ  
भेसज्जं भत्त-पाणं च तंपि सण्णहिकयं ॥

१. कप्पती (क, ग, घ, च) ।
२. विसारके (क) ।
३. गुल (ग, घ, च) ।
४. काड (ग) ।
५. सयगाह° (घ, च) ।

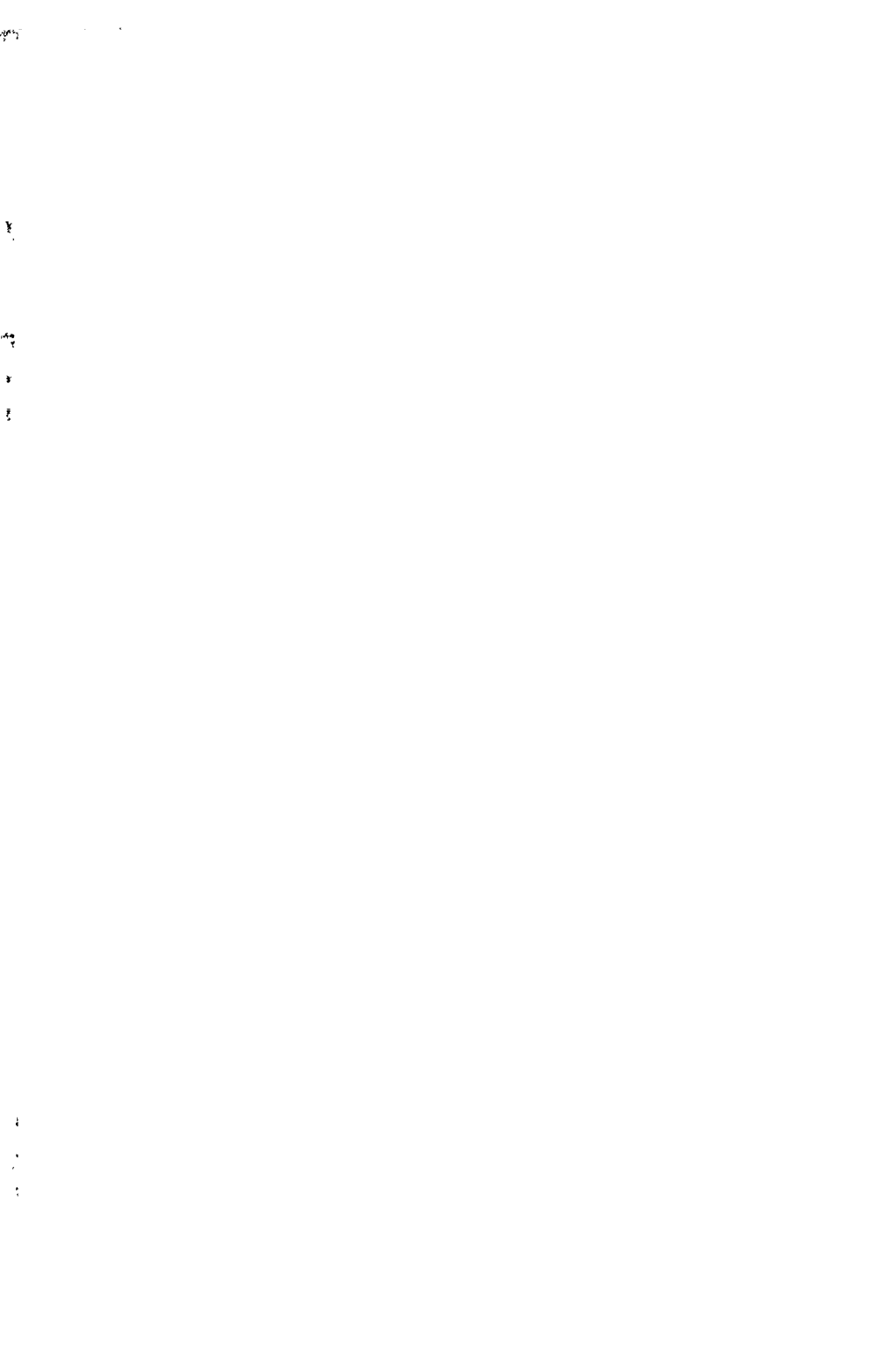
६. तिहिमु (क, च) ।
७. चयिय (क); चविय (घ) ।
८. हणि-हणि (क, ग, घ) ।
९. °जाते व्व (क, ग, घ, च) ।
१०. कप्पती (क) ।



चंदो इव सोमभावयाए',  
 मूरो व्व विहाणेए,  
 अन्ने जह मंजरे विम्वरे,  
 अन्तोभे मागरो व्व विम्वरे,  
 पुढवीव' सव्वपागमहे,  
 तवयावि' य भासगमिच्छन्ने व्व अन्तोभेए,  
 जलियहुयासणो विव मेयसा जत्तवे,  
 गोसीसचंदणं विव सीयत्ते मुगंघे य,  
 हरयो' विव समियभावे,  
 उघसिय मुनिम्मन्नं व आर्यममंउत्तत्तं पागवभावेण मुद्धभावे,  
 सांडीरे कुंजरे' व्व,  
 वसभे व्व जायशामे,  
 'सीहे वा' जहा मिगाहिवे ह्योत्ति दुप्पभरिसे,  
 सारयसलिलं व मुद्धहियए,  
 भारंडे चेव अप्पमत्ते,  
 खग्गिविसाणं व एगजाते,  
 खाणुं चेव उद्धकाए,  
 सुन्नागारे व्व अप्पडिकम्मे,  
 सुन्नागारावणस्संतो निवायसरणप्पदीवज्जाणमिव निप्पकंपे,  
 जहा खुरो चेव एगधारे,  
 जहा अही चेव एगदिट्ठी,  
 आगासं चेव निरालंघे,  
 विहणे' विव सव्वओ विप्पमुक्के,  
 कय-परनिलये जहा चेव उरए,  
 अपडिवद्धे अनिलो व्व,  
 जीवो व्व अप्पडिहयगती,

१. सोमताए (वृ); सोमभावयाए (वृषा);  
 ओवाइयसुत्ते (सू० २७) 'चंदो इव सोमलेसा'  
 तथा कप्पसुत्ते 'चंदो इव सोमलेसे' आयारो  
 तह आयारचूला परिशिष्ट ३, पृ० १६  
 तथा जंबुहीवपणत्तीए 'चंदो इव सोमदंसणे'  
 इति पाठो विद्यते, आयारो तह आयारचूला  
 परिशिष्ट ३, पृ० १७ ।

२. पुढवी विव (घ, च) ।  
 ३. ०इ (ख, ग, घ, च) ।  
 ४. हरतो (ख, घ, च) ।  
 ५. कुंजरो (ग, च) ।  
 ६. सीहे व्व (क); सीहो वा (ख, घ,  
 व्व (च) ।  
 ७. विहणे (ख, च) ।



१५. त्रितयं—मनगर्ह्याण पासिय रुवादि मणुष्णान् भद्रगाइ, श्वित्सां  
 मीसकाटं-कुट्ट पोणे य तिसकमे विणपदमे मने य दवकमे य,  
 यणोदि धणमगंठाण-गडिगाइ, मणिम-वेदिम-पुणिय-मंघातिमाणि य म  
 चहुविहाणि य अदिम नमण-मणमुत्तराइ, मणमद पवणे य मामापरम  
 म गुरिम-पुनगरणि-नायो-दीहिम-गुजाणिय-मरसरणेनिय-मागर-पव  
 सासिय'-नदि-सर-तलाग-वापणी-गुणुणस-पलम-परिमोडिवाभिरामे,  
 सउणगण-मिहुणविचारण, नरमदन-निविहभण-गौरण-वेतिस-देवकु-  
 प्पवावसह-गुणयसायणासाण-सीग-रह-सामइ-जाण-जुम-संरण-नरनारिणे  
 सोमपडिरुयदरसाणज्जे, थलकियाविभूयिण, पुवत्तयवत्तपभावासांहरसां  
 नट-नट्टग-जल्ल-मल्ल-मुट्टिम-धेलवम-कहक-पवम-नासम-आइमम-पंज  
 तूणल्ल-तुंवोणिय-तालावर-पकरणाणि य वट्टणि मुकरणाणि, अ  
 एवमादिणमु रुवेसु मणुष्ण-भद्राणु न तेसु सामणेण सउज्जयव्वं न रज्जि  
 गिडिभयव्वं न मुज्जिभयव्वं न विणिग्घायं आयज्जियव्वं न सुभियव्वं न  
 न हसियव्वं न सइ" च मइं च तत्थ कुज्जा ।

पुणरवि चक्खिदिण पासिय रुवाइं अमणुष्ण-पावकाइं, किं ते ? —

गंडि-कोटिक-कुणि-उदरि-कच्छुल्ल-पइल्ल-कुज्ज - पंगुल-वामण-अंधिल्लम  
 चक्खुविणिहय-सप्पिसल्लग-वाहिरोगपीलियं, विगयाणि य मयकफलेव  
 सकिमिणकुहियं च दव्वरासिं, अण्णंसु य एवमादिणसु अमणुष्ण-पावतेसु  
 समणेण रुसियव्वं ° न हीलियव्वं न निदियव्वं न खिसियव्वं न छवि  
 भिदियव्वं न वहेयव्वं ° न दुगुंछावत्तिया व लव्भा उप्पातेउं ।

एवं चक्खिदियभावणाभावितो भवति अंतरप्पा', °मणुष्णाजमणु' ।  
 दुविभ-रागदोस-पणिहियप्पा साहू मण-वयण-कायगुत्ते संवुडे ः।।हं  
 चरेज्ज धम्मं ।।

१६. ततियं—घाणिदिण अग्घाइय गंधाति मणुष्ण-भद्रगाइं, किं ते ? —  
 जलय-थलय-सरसपुष्फफलपाणभोयण-कोट्ट'-तगर-पत्त-चोय-दमणक-मख्य  
 रस-पिवकमंसि'-गोसीस-सरसचंदण-कप्पूर - लवंग-अगरु-कुंकुम - कककोल  
 सेयचंदण-सुगंधसारंगजुत्तिवरधूववासे उउय'-पिडिम-णिहारिम-गंधिणसु,

- |  |                                  |
|--|----------------------------------|
| १. खादिय (क, ग) ।                      | ६. सं० पा०—अंतरप्पा जाव चरेज्ज । |
| २. पउमसंड (ख, घ) ।                     | ७. कुट्ट (क, ग) ।                |
| ३. रज्जियव्वं जाव न सइं (क, ख, ग, घ) । | ८. पक्कमंसि (ख) विक्कमंसि (च) ।  |
| ४. मतक० (ख, घ, च) ।                    | ९. उउय (क, घ) ।                  |
| ५. सं० पा०—रुसियव्वं जाव न ।           |                                  |

10

11

12

13

14

एवमंश्व-शार-भोगचंदन-गीतवर्गमनाम - विविक्तुमुसमापर-बोमीर - मुनि  
 मुणाम-सोमिणा पेहणउवनेनम-वातिपेह-बोगमम-अणिदसूदमोये म  
 गिरहकामे, मुसुतागणि म महीणि मयजाणि कामजाणि म, पाउरएणुं  
 सिगिरकाने थंगार-मतायका म आमव निज-मउय-मीव-प्रमिण-नहुका  
 उदमुहफामा थंगमुह-मिणुइकराते', अण्णसु म एवमादिएसु फासेसु म  
 अण्णसु न तेसु समणेण सज्जियव्वं न सज्जियव्वं न सिज्जियव्वं न सुज्जि  
 न निणिग्गामं आवज्जियव्वं न तुभियव्वं न शरभोववज्जियव्वं' न तुमिय  
 हसियव्वं न सति च मति च तत्त कुज्जा ।

पुणरवि फासिदिएण फासिय फासानि अमणुण्ण-पावकाउं, कि ते ? —  
 अण्णेगबंध-वह-तालणकण-अतिभारारोहणम, अमभंजण-मूर्दनगणदेस-  
 पच्छणण'-लवत्तरा-सारातोवन-कककलताउ-सीसक'-कालनोहसिणण - हडिं  
 रज्जु-निगल-संकल-हृथंदुय'-कुभिपाक-वहण - सीहणुच्छण - उव्वंघण - मूल  
 गयचलणमलण - करचरणकण्णनासांठुसीसंघेयण'-जिहमंछण - वसणनयणहिं  
 दंतभंजण'-जोत्तलयकसप्पहार - पादपण्णजाणुपत्तरनियाग - पीलण - कवि  
 अण्ण-विच्छुयडक-वायातवदंसमसकनिवाते, 'दुट्ठणिसेज्जा दुनिसीहि  
 कवखड'-गुरु-सीय-उसिण-लुवसेसु वहविहेसु, अण्णसु म एवमादिएसु प  
 अमणुण्ण-पावकेसु न तेसु समणेण हसियव्वं न हीसियव्वं न निदियव्वं  
 गरहियव्वं न सिंसियव्वं न छिदियव्वं न भिदियव्वं न वहेयव्वं न दुगुं  
 च लवभा उप्पाएउं ।

एवं फासिदियभावणाभावितो भवति अंतरप्पा, मणुण्णामणुण्ण-मुदिभदु  
 रागदोस-पणिहियप्पा साह मण-वयण-कायगुत्ते संवडे पणिहित्तिदिए च  
 धम्मं ॥

**निगमण-पदं**

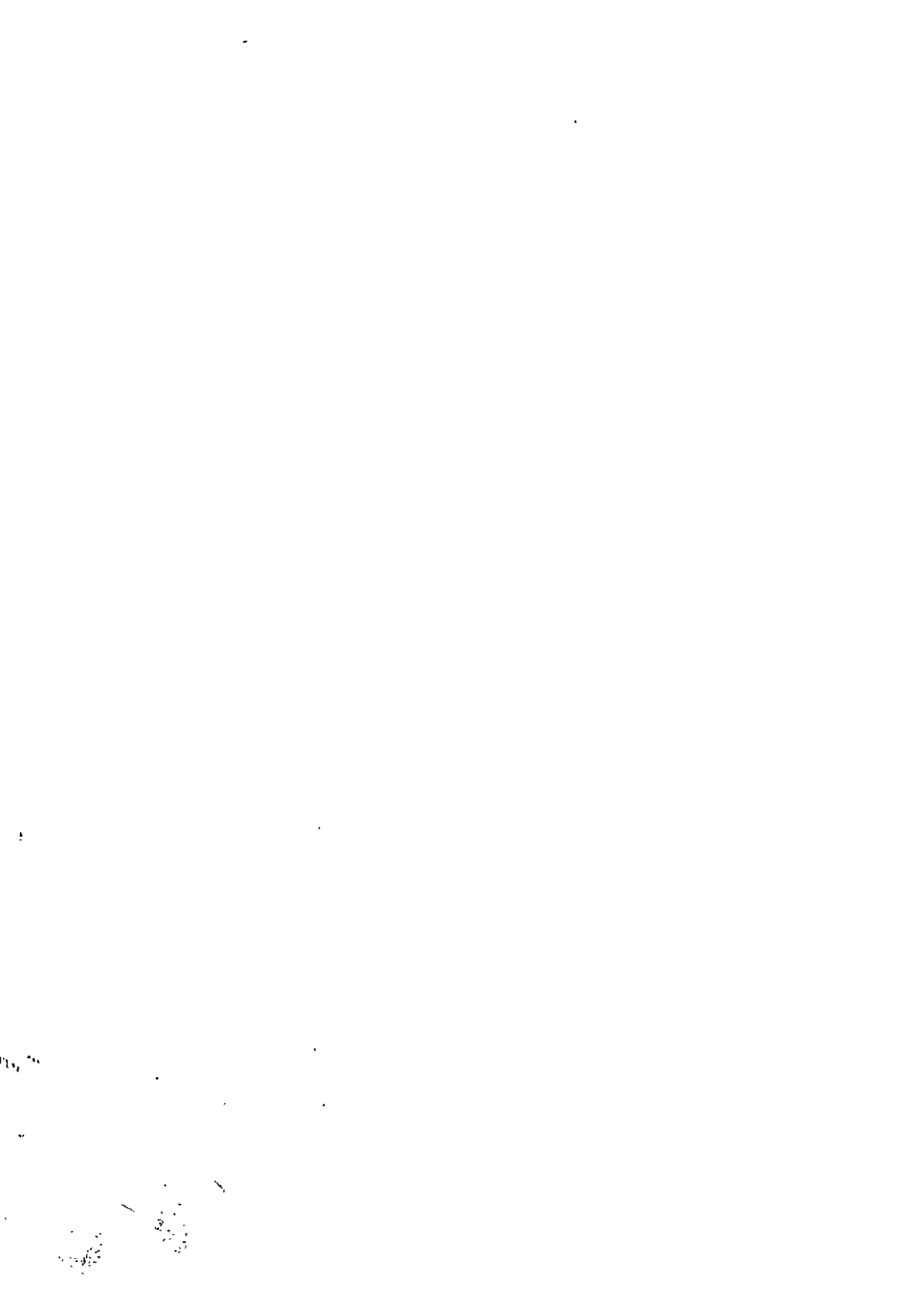
- १६. एवमिणं संवरस्स दारं सम्मं संवरियं होइ सुप्पणिहियं इमेहि पंचहिवि प  
 मण-वयण-काय-परिरविखएहि ॥
- २०. निच्चं आमरणंतं च एस जीगो णेयव्वो धितिमया मतिमया अणावसो अक

---

१. तान् स्पृष्ट्वा इति प्रकृतम् (वृ) ।  
 २. पूर्ववत्पि १४-१७ सूत्रेषु एतत् पदं नास्ति ।  
 तत्र लिपिकाले श्रुतितमथवात्र अतिरिक्त-  
 मस्ति ।  
 ३. °पच्छण (क, घ) ।  
 ४. सिंसक (क, ख, ग, घ, च) ।  
 ५. हृथंदुय (ख, ग) ।  
 ६. कण्णनासोठुं (क, ग, घ) ।  
 ७. °हिययदंत (क, ग); °हियएदंत °  
 ८. दुट्ठणिसेज्जदुनिसीहिय (क, ख, ग, घ,  
 ९. कककड (क) ।









सोऽप्येवमेषां मियादेवी भगवन् गोयम एव जगतां पायड, पार्थिव्या हृदय<sup>१</sup>ि  
नगरं मूढभ्रंमज्जभेण जेणं मियादेवीं मिहे जेणव पत्ताम कड्ड ॥

२६. तए णं सा मियादेवी भगवन् गोयम एव जगतां पायड, पार्थिव्या हृदय<sup>१</sup>ि  
माणदिगा पीडमणा परमसोमल्लिगणा इरिसि वम-निमत्तमाक<sup>२</sup> श्रिया वास<sup>३</sup>  
अवभुट्टेड, अवभुट्टेसा मत्तट्टुपायड यण्णम कड्ड, यण्णमिच्छता मियादेवी याणा  
पयाहिणं करेड, वड्ड भगवड, अदिना भगविसिना एव वयासी—सदिम  
देवानुप्पिया ! मियागमणणओमण ?
३०. तए णं से भगवं गोयमे मियं देवि एवं वयासी यहे णं देवानुप्पिए ! तव  
पासिउं ह्ववमाणए ॥
३१. तए णं सा मियादेवी मियापुत्तस दारगस यण्णमजजाणए चत्तारि  
सव्वालंकारविभूसिए करेड, करेता भगवयो गोयमस पाण्णु पाडेड, ए  
एवं वयासी—एए णं भंते ! मम पुत्ते पायड ॥
३२. तए णं से भगवं गोयमे मियं देवि एवं वयासी नो मल्लु देवानुप्पिए ! त  
तव पुत्ते पासिउं ह्ववमाणए । तत्थ णं जे से तव जेठु पुत्ते मियापुत्ते दारग  
अंधे जायअंधारुवे, जं णं तुमं र्हस्सियंसि भूमिघरंसि र्हस्सिएणं मत्त  
पडिजागरमाणी-पडिजागरमाणी विहरसि, तं णं अहं पासिउं ह्ववमाणए ।
३३. तए णं सा मियादेवी भगवं गोयम एव वयासी—से के णं गोयमा ! से  
नाणी वा तवस्सी वा, जेणं एसमट्टे मम ताव र्हस्सीकए<sup>४</sup> तुवभं ह्ववम  
जओ णं तुवभे जाणह ?
३४. तए णं भगवं गोयमे मियं देवि एवं वयासी—एवं खल्लु देवानुप्पिए ! मम य  
रिए समणं भगवं<sup>५</sup> \*महावीरे तहारुवे नाणी वा तवस्सी वा, जेणं एस  
ताव र्हस्सीकए मम ह्ववमवखाते<sup>६</sup>, जअओ णं अहं जाणामि । जावं  
मियादेवी भगवया गोयमेण सद्धि एयमट्टं संलवइ, तावं च णं मयाप  
दारगस भत्तवेला जाया यावि होत्था ॥
३५. तए णं सा मियादेवी भगवं गोयम एव वयासी—तुवभे णं भंते ! 'इहं  
चिट्ठह, जा णं अहं तुवभं मियापुत्तं दारगं उवदंसेमि त्ति कट्टु जेणेव  
तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता वत्थपरियट्टयं<sup>७</sup> करेइ, करेत्ता कठ<sup>८</sup>

१. सं० पा०—हृदयहियया ।

२. जेणं तव (क, ख, ग, घ); प्रतिपु एतत् पदं  
लिपिदोपात् समुल्लिखितं प्रतिभाति । अग्रे  
तुवभं इति पाठदर्शनात् ।

३. र्हस्सकडे (क) ।

४. सं० पा०—भगवं जाव जअओ णं [ख, ग];

भगवं जओ णं (क); महावीरे जाव  
(घ) ।

५. इहच्चेव (क) ।

६. भत्तपाणघरण (घ) ।

७. °परियट्टं (वृ) ।

८. कट्टुसगडि (ग) ।



ना । पनापणं रावु अणं पुण्ये निरयाणित्थिणं विपणं वेत्तिं नि कट्टं  
 देवि आपुच्छद, आपुच्छया भिगाणं वेत्तिं निरयाणो पत्तिनिरयाणद, पत्तिं  
 मित्ता भिगण्णामं नयं मज्जमज्जणं भिगण्णद, भिगण्णित्था वेत्तिं  
 भगवं महावीरे वेत्तिं उवागण्णद, उवागण्णित्था मज्जं भगवं महावीरे नि  
 आयाहिण-पनाहिणं कट्टं, पत्तेया मज्जं नयमद, निरयाणं नमसिण  
 वयासी—एवं रावु अणं पुण्येणि यत्तण्णणाणं मज्जाणं भिगण्णामं नयं  
 मज्जणं अण्णणविसाभि, वेत्तिं भिगण्णं वेत्तिं मित्ते वेत्तिं उवागण्ण । तण्  
 मियादेवी ममं एज्जमाणं पाणद, पासिथा मज्जा, तं वेत्तिं मज्जं जाव  
 सोणियं च आहारद । तण् णं मम उमेयास्से अत्तभत्थिणं निहिणं कण्णिणं  
 मणोगणं संकण्णं समण्णज्जित्था—अत्तो णं उमे दासणं पुरा' •पोराणाणं  
 ण्णाणं दुष्पट्ठिककंताणं अणुभाणं पावाणं कडाणं कम्ममाणं पावणं फलवित्ति  
 पच्चणुभवमाणे ० विहरद ॥

४२. से णं भंते ! पुरिये पुव्वभये के आसि ? कि नामणं वा कि गोत्ते'  
 'कयरंसि गामंसि वा नयरंसि वा' ? कि वा दच्चा कि वा भोच्चा  
 समायरित्ता, केसि वा पुरा' •पोराणाणं दुष्पट्ठिककंताणं अ  
 पावाणं कडाणं कम्ममाणं पावणं फलवित्तिवित्तेसं पच्चणुभवमाणे ० विहरद

भियापुत्तस्स एक्काइभव-वण्णण-पदं

४३. गोयमाइ ! समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एत्वं वयासी—एवं खलु गो  
 तेणं कालेणं तेणं समाणं इहेव जंबुद्वीपे दीवे भारहे वासे सयदुवारे नामं  
 होत्था - रिद्धत्थिमियसमिद्धे वण्णओ" ॥  
 ४४. तत्थ णं सयदुवारे नयरे धणवई नामं राया होत्था—वण्णओ" ॥  
 ४५. तस्स णं सयदुवारस्स नयरस्स अदूरसामंते दाहिणपुरत्थिमे दिसीभाए ।  
 वद्धमाणे नामं खेडे होत्था—रिद्धत्थिमियसमिद्धे ॥  
 ४६. तस्स णं विजयवद्धमाणस्स खेडस्स पंच गामसयाइ आभोए यावि होत्था  
 ४७. तत्थ णं विजयवद्धमाणे खेडे एक्काई" नामं रट्टुकूडे होत्था—अहम्मिए" :

१. वेत्ति (ख); वेयह (घ) ।

२. वि० १।१।२६-४० ।

३. सं० पा०—पुरा जाव विहरइ ।

४. गोए (घ) ।

५. कयरं गामं (क); कयरं गामं कि कए (ख) ।

६. सं० पा०—पुरा जाव विहरइ ।

७. ओ० सू० १ ।

८. ओ० सू० १४ ।

९. ०वद्धमाणस्स (क, ख, ग) सर्वत्र ।

१०. एकायि (क, ग) ।

११. सं० पा०—अहम्मिए जाव ३. ६५

Page 10 of 10

1

2

3

4

5

6

7

8

9

10

11

12

13

14

15







पादणाहि य मातणाहि य मातणाहि य मातणाहि वा पादित्तण वा पादित्तण वा पादित्तण वा  
 वा मादित्तण वा—एवं मणोद, मणोना भाहिण मातणाहि य मातणाहि  
 तूवत्तणि य गवभमातणाहि य पादणाहि य मातणाहि य मातणाहि  
 मातणाहि य पादित्तण वा पादित्तण वा पादित्तण वा पादित्तण वा  
 गालित्तण वा मादित्तण वा, भी चैव वा ये गवभे मातण वा पादण वा गवभे वा  
 मरइ वा ॥

६१. तए णं सा मियादेवी जाहे नो संवाणुड वा गवभं मादित्तण वा पादित्तण  
 गालित्तण वा मादित्तण वा माहे मना मना पत्तिवत्ता मत्तमिक्ता अमन्वत्ता  
 गवभं दुहुंदुहेणं पत्तिवत्त ॥
६२. तस्स ण दारगस्स गवभगयस्स चैव अट्टु नात्तीओ यत्तिभनरणवत्ताओ, अ  
 नात्तीओ वाहिरणवत्ताओ, अट्टु पूयणवत्ताओ, अट्टु सोणियवत्ताओ, दुवे दु  
 कण्णतरेणु, दुवे दुवे अच्छिअंतरेणु, दुवे दुवे नक्कतरेणु, दुवे दुवे धमणिअतरे  
 अभिवत्तणं-अभिवत्तणं पूयं च सोणियं च 'परिमवमाणीओ-परिमवमाणीओ  
 चैव' चिट्ठंति ॥
६३. तस्स णं दारगस्स गवभगयस्स चैव अग्गिणं नामं वाहो पाउच्चभूणं । जे णं  
 दारणं आहारेइ, से णं विण्णामेव विद्धंरामागच्छइ, पूयत्ताणं य सोणियत्ताणं  
 परिणमइ, तं पि य से पूयं च सोणियं च आहारेइ ॥
६४. तए णं सा मियादेवी अण्णया कयाइ नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं  
 पयाया—जातिअंधे •जातिमूए जातिवहिरे जातिपंगुजे हुंडे य वायव्वे । नति  
 णं तस्स दारगस्स हत्था वा पाया वा कण्णा वा अच्छो वा नासा वा । केव  
 से तेसि अंगोवंगणं आगिती ° आगितिमेत्ते ॥
६५. तए णं सा मियादेवी तं दारणं हुंडं अंधारुवं पासाइ, पासित्ता भोया त  
 तसिया उव्विग्गा संजायभया अम्मघाई सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी  
 गच्छह णं देवाणुप्पिया ! तुमं एयं दारणं एगंते उक्कुरुडियाए उज्जभाहि ॥
६६. तए णं सा अम्मघाई मियादेवीए तहत्ति एयमट्ठं पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता जे  
 विजए खत्तिए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयलपरिग्गहियं । सरस व  
 मत्थए अंजलि कट्टु एवं वयासी—एवं खलु सामी ! मियादेवी नवण्हं मासा  
 •बहुपडिपुण्णाणं दारणं पयाया—जातिअंधे जातिमूए जातिवहिरे

१. पीयमाणी (ख, ग, घ) ।

२. गवभंतर ° (क, ग); अगभंतर ° (ख) ।

३. परिस्सवमाणीओ (क) ।

४. X (क, घ) ।

५. जं (क) ।

६. विद्धंसेति (घ) ।

७. सं० पा०—जातिअंधे जाव आगितिमेत्ते ।

८. सं० पा०—मासाणं जाव आगितिमेत्ते ।



कालं किञ्चा इर्मामे रयणव्यभाए पुढवीए उवकोशेणं गीवमद्विइएमुं •नेरइएमुं  
नेरइयत्ताए० उववज्जिहिइ ।

से णं तथो अणंतरं उववद्विइता गिरोगवेमु उववज्जिहिइ । तथ णं कालं किञ्  
दोञ्चाए पुढवीए उवकोशेणं गिणिणं सागरोगवमं •द्विइएमुं नेरइएमुं नेरइयत्ता  
उववज्जिहिइ० ।

से ण तथो अणंतरं उववद्विइता पक्खीमु उववज्जिहिइ । तथ वि कालं १०  
तच्चाए पुढवीए सत्तं सागरोगवमं •द्विइएमुं नेरइएमुं नेरइयत्ता  
उववज्जिहिइ० ।

से णं तथो सीहेमु, तयाणंतरं चांथीए, उरगो, पंचमोए, इत्थीप्रो, छट्ठं  
मणुथो, अहेसत्तमाए । तथो अणंतरं उववद्विइता से जाइं इमाइं जलयरपीं  
दियतिरिक्खजोणियाणं मच्छ-कच्छभ-गाह-भगर-सुंमुमाराइणं अरुते  
जाइकुलकोडिजोणियमुहसयसहस्साइं, तथ णं एगभेगमि जोणिविहायं  
अणेगसयसहस्सखुत्तो उदाइत्ता-उदाइत्ता तथेव भुज्जो-भुज्जो प- पाइय  
से णं तथो अणंतरं उववद्विइता चउपएमु उरगरिसणंमु भुमपरिसणंमु उवव  
चउरिदिएसु तेइदिएसु वेइदिएसु वणफट-कट्टययकोसु कट्टयद्विदिएसु वाउ  
आउ-पुढवीसुं अणेगसयसहस्सखुत्तो •उदाइत्ता-उदाइत्ता तथेव भुज्जो-भु-  
पच्चायाइस्सइ० ।

से णं तथो अणंतरं उववद्विइता सुपइट्टपुरे नयेरं गोणत्ताए पच्चायाहिइ ।

से णं तथ उम्मुक्कवालभावे अणया कयाइ पढमपाउससि गंगाए महाप  
खलीणमद्वियं खंणमाणे तडीए' पेल्लिए समाणे कालगए तथेव सुपइट्टपुरे  
सेट्टिकुलंसि पुत्तत्ताए' पच्चायाइस्सइ ॥

से णं तथ उम्मुक्क •वालभावे विणय-परिणयमेत्ते० जोव्वं गुं  
तहारूवाणं थेराणं अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म मुंडे भवित्ता अण र  
अणगारियं पव्वइस्सइ ।

से णं तथ अणगारे भविस्सइ—इरियासमिए' •भासासमिए' सण ।  
आयाण-भंड-मत्त-निक्खेवणासमिए उच्चार-पासवण-खेल-सिघाण  
पारिट्ठावणियासमिए मणगुत्ते वयगुत्ते कायगुत्ते गुत्ते गुत्तिदिए गुत्तं वंभ ।

१. सं० पा०—•द्विइएमुं जाव उववज्जिहिइ ।

२. सं० पा०—सागरोगवम० ।

३. सं० पा० सागरोगवम० ।

४. पुढवी (क, ख, ग, घ) ।

५. सं० पा०—•खुत्तो० ।

६. तडीए पडीए (घ) ।

७. पुमत्ताए (ख) ।

८. सं० पा०—उम्मुक्क जाव जोव्वणग० ।

९. रियासमिते (क); सं० पा०—इरिया स  
जाव वंभयारी ।

2.

3.

4.

5.

6.

नमामिन्ना एव नवामो—उत्तरार्धे न भवे ! सुभक्ति अस्मत्पुण्यम् भव  
 छट्टनममणपारणमसि नाणियमामे भवते उत्तम-नीय-मज्जिमाडं कुमाडं पर  
 समुदाणस्स भिक्खायस्सियाए सुदिशाए ।

अहागुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिविंथ ॥

१४. तएण भगवं गोयमे समणेणं भगवत्ता महावीरेणं अस्मत्पुण्यम् समणे समण  
 भगवओ महावीरस्स अनियाओ दूउपसागारो रज्जागारो पडिनिवत्तमा  
 पडिनिवत्तमिन्ना अतुरियमनवत्तमभवे जुगत्तयत्तमोयणाए सिद्धीए पुरयो रि  
 सोहेमाणे-सोहेमाणे ° जेणेव वाणियमामे नयरे तेणेव उवामच्छेड, उवामच्छि  
 वाणियमामे नयरे उत्तम-नीय-मज्जिमाडं कुमाडं परसमुदाणस्स भिक्खायस्सिया  
 अडमाणे जेणेव रायमग्गे तेणेव ओगाटे ।

तत्थ णं बहवे हत्थो पासड—सण्णद्ध-वद्धवम्मिय-गुडिए उप्पीलियसारासणपट्टी  
 घटे नाणामणिरयण-विविह-गंवेज्जउत्तरकन्हुडग्गे पडिकणिए भगवडागव  
 पंचामेल-आरूढहत्थारोहे गहियाडहणहरणं ।

अण्णे य तत्थ बहवे आगे पासड—सण्णद्ध-वद्धवम्मिय-गुडिए आविद्धगु  
 ओसारियपक्खरे उत्तरकन्हुडय-ओचूलामुहचंजाधर'-नामर-थासण-परिमंडिय  
 कडीए आरूढअस्सारोहे गहियाडहणहरणं ।

अण्णे य तत्थ बहवे पुरिसे पासड-सण्णद्ध-वद्धवम्मियकवए उप्पीलियसारासणपट्टी  
 पिणद्धगेवेज्जे' विमलवरवद्ध-चिघपट्टे गहियाडहणहरणं ।

तेसि च णं पुरिसाणं मज्जगयं एगं पुरिसं पासड अस्मोडयवंदणं उक्खत्त  
 कण्णनासं नेहत्तुप्पियगतं वज्ज-करकाडि-जुयनियच्छं कंठेगुणरत्त-मल्लद  
 चुण्णगुडियगतं चुण्णयं वज्जपाणपीयं तिलं-तिलं चैव छिज्जमाणं कागणिमंसा  
 खावियंतं पावं खक्खरसएहि' हम्ममाणं अणेगनर-जारी-संपरिवुडं चच्चरे  
 चच्चरे खंडपडहएणं उग्घोसिज्जमाणं इमं च णं एयारूढं उग्घोसणं सुणेइ' -न  
 खलु देवाणुप्पिया ! उज्जिभयगस्स दारगस्स केइ' राया वा रायपुत्तो व  
 अवरज्जइ, अप्पणो से सयाइं कम्माइं अवरज्जंति ॥

१५. तए णं भगवओ गोयमस्स तं पुरिसं पासित्ता अयमेयारूवे अज्जत्थिए चिं  
 कप्पिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्या अहो णं इमे पुरिसे ° पुर  
 पोरणाणं दुच्चिण्णाणं दुप्पडिक्कंताणं असुभाणं पावाणं कडाणं कम्मा

१. चूला ° (ख) ।

२. पिणद्ध ° (क, ख, ग) ।

३. उक्खत्त (क, ख, ग); उक्कत्त (घ) ।

४. वद्ध (क, ख) ।

५. कक्खरग ° (क, ग); कक्कर ° (ख, घ) ।

६. पडिसुणेइ (क्व) ।

७. केयी (क, घ) ।

८. सं ° पा०—पुरिसे जाव निरयपडिहवियं ।



४४. तए णं से गोरासे कूडगमहि दोन्नाए पुडयोए सण्णारं उण्णट्टिता उणे वाणि  
गामे नगरे विजयमित्तस्य सत्यवाहस्य सुभद्दाए भारियाए कुण्डियसि पुण  
उववण्णे ॥
४५. तए णं सा सुभद्दा सत्यवाही अण्णया कयाड नयण्हं मासाणं वट्ठपडिउ  
दारणं पयाया ॥
४६. तए णं सा सुभद्दा सत्यवाही तं दारणं जायमेत्तए चैव एगंते उण्णपुण्डि  
उज्झवेइ, उज्झवेत्ता दोच्चं वि गिण्णामेड, गिण्णामेत्ता अण्णपुण्डेणं सारयाणं  
संगोवेमाणो संबड्ढेइ ॥
४७. तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो ठिइवडियं च चंदसूरदंसणं च जा  
च महया इट्ठीसवकारसमुदाणं करंति ॥
४८. तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो एवकारसमे दिवमे निव्वत्ते संपत्ते वा  
अयमेयाख्वं गोण्णं गुणनिष्फण्णं नामनेज्जं करंति—जम्हा णं अम्हं इमे  
जायमेत्तए चैव एगंते उण्णकुरिययाए उज्झए, तम्हा णं होड अम्हं  
उज्झयए नामेणं ॥
४९. तए णं से उज्झयए दारए पंचघाईपरिग्गहिए, [तं जहा—सोरघाईए  
घाईए मंडणघाईए कीलावणघाईए अंकघाईए] जहा दहपइण्णे जाव' नि  
निव्वाघाय-गिरिकंदरमल्लीणे व्व चंपगपायवे सुहंसुहेणं विहरइ ॥
५०. तए णं से विजयमित्ते सत्यवाहे अण्णया कयाइ गणिमं च धरिमं च भे  
पारिच्छेज्जं च—चउव्विहं भंडं गहाय लवणसमुद्दं पोयवहणेण उवागए ॥
५१. तए णं से विजयमित्ते तस्य लवणसमुद्दे पोयविवत्तोए निव्वुडुभंडसारे अ  
असरणे कालधम्मणा संजुत्ते ॥
५२. तए णं तं विजयमित्तं सत्यवाहं जे जहा वहवे ईसर-तलवर-माडविय-कोडु  
इवभ-सेट्टि-सत्यवाहा लवणसमुद्दपोयविवत्तियं निव्वुडुभंडसारं काल  
संजुत्तं सुणेति, ते तहा हत्थनिकखेवं च वाहिरभंडसारं च गहाय  
अवक्कमंति ॥
५३. तए णं सा सुभद्दा सत्यवाही विजयमित्तं सत्यवाहं व' समुद्दपोयव  
निव्वुडुभंडसारं कालधम्मणा संजुत्तं सुणेइ, सुणेत्ता महया पइसोएणं अ

१. उक्कुरिययाए (ग) ।

२. संबड्ढेमाणोति (क) ।

३. ठियपडिय (क); ठियपडिकम्मं (घ) ।

४. चंदसूरपासणियं (वृ) ।

५. इमेयाख्वं (घ) ।

६. असो कोण्ठकवती पाठः व्याख्यांशः ।

७. ओ० सू० १४४, वाचनान्तर पृ०  
१५२ ।

८. भंडगं (घ) ।

९. लवणसमुद्दे पोय० (क, ख, ग, घ) ।





कामज्जभयाए गणियाए मृणियाए गिद्धे गडिए सज्जोकरणे सज्जोकरणे  
 न र्हं न भिद्धं न सज्जोकरणे गणियाए मृणियाए गिद्धे गडिए सज्जोकरणे सज्जोकरणे  
 तगणियाकरणे तज्जोकरणाभावाए कामज्जभयाए गणियाए मृणियाए गिद्धे गडिए  
 छिद्वाणि य विवराणि य परिजामरमाणे-परिजामरमाणे विहरइ ॥

६३. तए णं से उज्झियए दारए अणया कयाइ 'कामज्जभयाए गणियाए' अणया  
 लभेत्ता कामज्जभयाए गणियाए गिद्धे गडिए सज्जोकरणे सज्जोकरणे  
 ज्जभयाए गणियाए सद्धि उरालाइ माणुस्सगाइ भोगभोगाइ भुज्जमाणे विहरइ ॥
६४. इमं च णं मित्ते राया ण्णाए कयवन्निकप्पे कयकोउम-मगल-तया  
 सव्वालंकारविभूसाए मणुस्सवग्गुरापरिगतं जेणेव कामज्जभयाए गिद्धे  
 उवागच्छइ, उवागच्छिता तद्य णं 'उज्झियए दारणं' कामज्जभयाए गिद्धे  
 सद्धि उरालाइ माणुस्सगाइ भोगभोगाइ भुज्जमाणे पासइ, पासिता अ-  
 रुद्धे कुविए चंडिकिए, मिसिमिगमाणे तियाल मिडिडि निडासे सा  
 उज्झियए दारणं पुरिमेहि गिण्हावेइ, गिण्हावेत्ता अट्टि-मुट्टि-जाणु-को-न-ए-ए  
 संभग्गं-महियगतं करेइ, करेत्ता अन्नोउम-वंगणं करेइ, करेत्ता एएणं ॥७७॥  
 वज्जं आणवेइ ॥
६५. एवं खलु गोयमा ! उज्झियए दारए पुरा' •पोराणाणं दुच्चिन्णाणं दुपडि-  
 ताणं असुभाणं पावाणं कडाणं कम्माणं पावणं फलवित्तिविशेसं प-पुमवम  
 विहरइ ॥

### उज्झिययस्स आगामिभव-वण्णग-पदं

६६. उज्झियए णं भंते ! दारए इओ कालमासे कालं किच्चा कहिं गाच्छति  
 कहिं उववज्जिहिइ ?  
 गोयमा ! उज्झियए दारए पणुवीसं वासाइ परमाउं पालइत्ता  
 तिभागावसेसे दिवसे सुलभिण्णे कए समाणे कालमासे कालं किच्चा इ-  
 रयणप्पभाए पुढवीए नेरइएसु नेरइयत्ताए उववज्जिहिइ ॥
६७. से णं तओ अणतरं उव्वट्टित्ता इहेव जंबुद्वीवे दीवे भारहे वासे वेयडुगि रि ॥  
 वाणरकुलंसि वाणरत्ताए उववज्जिहिइ ॥
६८. से णं तत्थ उम्मुक्कवालभावे तिरियभोगेसु मुच्छिए गिद्धे गडिए उज्ज-

१. कामज्जभयागणियं (घ) ।

२. अंतराणि (ख) ।

३. उज्झियए दारए (क, ख, ग, घ) ।

४. विहरमाणं (क, ख, ग) ।

५. भग्ग (क) ।

६. सं० पा०—पुरा जाव विहरइ ।

७. पणुवीसं (ग) ।



## तइयं अज्भयणं अभगसेणे

उक्खेव-पदं

१. 'जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं पुरि-  
दोच्चस्स अज्भयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, तच्चस्स णं भंते ! अज्भयणस्स  
भगवया महावीरेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?
२. तए णं से सुहम्मि अणगारे जंबू-अणगारं एवं वयासी ०—एवं खलु जंबू  
कालेणं तेणं समएणं पुरिमताले नामं नयरे होत्या—रिद्धत्थिमियसमिद्धे
३. तस्स णं पुरिमतालस्स नयरस्स उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए, एत्थ णं अ-  
उज्जाणे ॥
४. तत्थ णं अमोहदंसिस्स जक्खस्स आययणे होत्या ॥
५. तत्थ णं पुरिमताले नयरे महव्वले नामं राया होत्या ॥
६. तस्स णं पुरिमतालस्स नयरस्स उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए देसप्पंते अडि-  
एत्थ णं सालाडवी नामं चोरपल्ली होत्या—विसमगिरिकंदर-कोलंद-  
वंसीकलंक-पागारपरिक्खत्ता छिण्णसेल-विसमप्पवाय-फरिहोवगूढा अ-  
पाणीया सुदुल्लभजलपेरंता अणेगखंडी विदियजणदिन्न-निग्गमप्पवेसा सु-  
वि कुवियजणस्स दुप्पहंसा यावि होत्या ॥
७. तत्थ णं सालाडवीए चोरपल्लीए विजए नामं चोरसेणावई परिवसइ  
•अहम्मि अहम्मक्खाई अघम्माणुए अघम्मपलोइ अघम्मपलज्जणे अ-  
समुदायारे अघम्मेण चेव वित्ति कप्पेमाणे विहरइ—हण-छिद-भिद-व

१. सं० पा०—तच्चस्स उक्खेवो ।

२. ना० १।१।७ ।

३. पू०—ओ० सू० १ ।

४. सुवहुयस्स (क) ।

५. सं० पा०—अहम्मिए जाव लो १५



च जाइं च सीधुं च पसण्णं च आसाएमाणी वीसाएमाणी परिभाएमाणी परि  
माणे विहरइ ॥

२२. तए णं मे निग्गाए अंदवार्णियए एयकम्मो एयपपाणं एयवज्जे एयममायारे  
पावकम्मं समज्जिणत्ता एयं गाममाहरमं परमाडे पावइत्ता काणमासे  
किच्चा तच्चाए पुइवीए उवकीमेणं मससागरोवमदिइएमु नरएमु नेरउय  
उववण्णे ॥

### अभगसेणस्स वत्तमाणभव-वण्णग-पदं

२३. से णं तत्रो अणंतरं उव्वट्ठिता उद्वेय नात्ताइवीए चोरपल्लीए विजवस्स  
सेणावइस्स खंदसिरीए भारियाए क्खिन्दिमि पुत्तसाए उववण्णे ॥
२४. तए णं तीसे खंदसिरीए भारियाए अण्णया कयाइ तिण्हं मासाणं वहुपडि  
इमे एयाइवे दोह्ले पाउवभूण— धण्णाओ णं ताओ अम्मयाओ 'जाओ णं'  
मित्त-नाइ-नियग-सयण-संवधि-परियणमहिहाहि, अण्णाहि म चोरमहि  
सद्धि संपरिवुडा ण्हाया' •कयवलिकम्मा कयकोउय-मंगल°-पायच्चि  
सव्वालंकारविभूसिया विउलं असणं पाणं गाउमं साउमं मुरं च महं च मेर  
जाइं च सीधुं च पसण्णं च आसाएमाणी वीसाएमाणी परिभाएमाणी परि  
माणी विहरंति । जिमियभुत्तुत्तरागया' पुरिसनेवत्था' सण्णद्व-वद्ध°वा क  
उप्पीलियसरासणपट्टीया पिणद्वगेवेज्जा विमलवरवद्ध-चिचपट्टा गहियाउह  
हरणावरणा भरिएहि, फलएहि निक्कट्टाहि' असीहि. अंसागएहितोणेहि, सज्ज  
अंसागएहि धणूहि, समुक्खित्तेहि सरेहि, समुल्लालियाहि' दामाहि", ओस  
याहि" ऊरुवंटाहि, छिप्पतूरेणं वज्जमाणेणं" महया उक्किट्ठि"-•सीहणाय-  
कलकल-रवेणं पक्खुभियमहा°समुद्धरवभूयं पिव करेमाणीओ  
चोरपल्लीए सव्वओ समंता ओलोएमाणीओ-ओलोएमाणीओ आहिंडमाणं  
आहिंडमाणीओ दोहलं विणेति । तं जइ अहं पि जाव दोहलं वि ५ ।

१. उक्कोस (क); उक्कोसे (ख, ग, घ) ।

२. पू०—वि० १।२।२४ ।

३. जाणं (क, ख, ग, घ) ।

४. सं० पा०—ण्हाया जाव पायच्छित्ता ।

५. °गयाओ (ख, ग, घ) ।

६. °नेवत्तिया (क, ख, ग, घ) ।

७. सं० पा०—सण्णद्ववद्ध जाव प्पहरणा° ।

८. निक्किट्टाहि (ख) ।

९. समुल्लालियाहि (वृ) ।

१०. दामाहि दाहाहि (ख); दाहाहि (वृपा)

११. लंबियाहि (क, ग) ।

१२. वज्जमाणेणं २ (ख, ग, घ) ।

१३. सं० पा०—उक्किट्ठि जाव समुद्ध°; उ  
(ग) ।

१४. विणेज्जामि (क); विणेज्जामि (ख, ग,



५३. तए णं से कोडुवियपुसिंया सदा-करयल उवागच्छइ •परिग्महिं सिरसावत्तं मत्थए अंजलि कट्टुं एव मांमि । नि सदावत्तं विजएण नयणेणं परिग्मु पडिमुणेतता पुसिमनावाओ नयणेणं परिग्मिण्णमांमि, परिग्मिण्णमांमि नाइविक्कट्टेहिं वद्धावेत्ता मुत्तेहिं अग्गिण्णायणमांमि वेत्ता सत्तावत्तं नोरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइया अग्गिण्णायणं नोरेणोणावत्तं करयल •परिग्मि सिरसावत्तं मत्थए पंजलि कट्टुं एव नयणेणं एव मत्थु देवाणुणिए पुरिमताले नयरे महव्वलेण रण्णा उवणुत्ते जाइ उवणत्ता पमोण उवणोत्तं किं णं देवाणुणिया ! निउत्तं यमत्तं पाणं सत्तावत्तं माउत्तं पुत्त-मत्तं मल्लालंकारे य उत्तं महव्वमाणुत्तं उवागच्छइ सयमेव गच्छिइया ?
५४. तए णं से अग्गसेणे नोरेणोणावत्तं से कोडुवियपुसिंये एव नयणी— देवाणुणिया ! पुरिमताले नयरे सयमेव गच्छिइया । से कोडुवियपुसिंये नय सम्माणेइ पडिविमज्जेइ ॥
५५. तए णं से अग्गसेणे नोरेणोणावत्तं वद्धहिं निना •नाउ-निगग-नयण-म परिउणेहिं सद्धिं •परिवुट्टे ण्हाए •करयलिउत्तं मत्तकोउत्त-मंगल •नायं सव्वालंकारविभूसिए सत्तावत्तं नोरेणोणावत्तं परिग्मिण्णमांमि, पडिनिउत्तं जेणेव पुरिमताले नयरे, जेणेव महव्वले राया, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइ करयल •परिग्महिं सिरसावत्तं मत्थए अंजलि कट्टुं महव्वले रायं विजएणं वद्धावेइ, वद्धावेत्ता महत्थं •महत्थं महत्थं रायारिहं उवणेइ ॥
५६. तए णं से महव्वले राया अग्गसेणेणस नोरेणोणावत्तं तं महत्थं महत्थं रायारिहं पाहुडं पडिच्छइ, अग्गसेणेणं नोरेणोणावत्तं स सम्माणेइ विसज्जेइ, कूडागारसालं च से आवसहिं दलयइ ॥
५७. तए णं से अग्गसेणे नोरेणोणावत्तं महव्वलेणं रण्णा विसज्जिए तमाणे कूडागारसाला तेणेव उवागच्छइ ॥
५८. तए णं से महव्वले राया कोडुवियपुरिसे सदावेइ, सदावेत्ता एवं व

'उदाहु सयमेव गच्छिता उताहो स्वयमेव गमिष्यसि' । हस्तलिखितवृत्तौ—'गच्छित्वा स्वयमेव गमिष्यथ' इत्यस्ति ।

१. सं० पा०—करयल जाव पडिमुणेतति ।
२. नातिविक० (ख); नाइविग० (वृ) ।
३. सं० पा०—करयल जाव एवं ।
४. वि० १।३।५२ ।

५. सं० पा०—मित्त जाव परिवुडे ।
६. सं० पा०—ण्हाए जाव पायच्छित्तो
७. सं० पा०—करयल० ।
८. सं० पा०—महत्थं जाव पाहुडं ।
९. सं० पा०—महत्थं जाव पडिच्छइ ।
१०. वसहिं (क) ।





से णं तस्यो अणतरं उव्वट्टिता, एव संसारी जहा पढमे जाव' \*नाउ-सेउ-य  
पुढवीसु अणेगसयसहस्सगुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तस्येव भुज्जो-भुज्जो पच  
याइस्साइ । °

तस्यो उव्वट्टिता वाणारसीए नगरीए सुयरत्ताए पचनायाहिइ । से णं त  
सोयरिण्हि जीवियाओ ववरोविण्ण समाणं तस्येव वाणारसीए नगरीए सेट्टिकु  
पुत्तत्ताए पचनायाहिइ । से णं तस्य उम्मुनकवालभावो, एव जहा पढमे ज  
अंतं काहिइ ॥

### निषेखेव-पदं

६६. 'एवं खलु जंवू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं दुह्मि  
तइयस्स अजभयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ।

—त्ति वेमि ।

१. वि० १।१।७०; सं० पा०—जाव पुढवी ।

२. वि० १।१।७० ।

३. सं० पा०—निषेखेवस्यो ।

४. ना० १।१।७ ।



११. तेषां कालेणं तेषां समएणं समणस्स भगवओ महत्तीरे ममीरणिं । परिसा राप निग्गाए । धम्मो कहिओ । परिसा गया ॥

सगटस्स पुच्चभवपुच्छा-पदं

१२. तेषां कालेणं तेषां समएणं समणस्स भगवओ महत्तीरेररा जेट्ठे अंतेवासी उ रायमग्गं ओगाढे । तत्थ णं हत्थी, आसे, अण्णे य वड्ढे पुरिसे पासाइ । च णं पुरिसाणं गज्जभगयं पासाइ णं सदत्थियं पुरिसं अवरओउयवंधणं उक्खि कण्णनासं जाव' खंडपडहेण उग्घोसिज्जमाणं 'डमं न णं एयाह्वं उग्घो सुणेइ—नो खलु देवाणुप्पिया ! सगटस्स दारगग्ग कइ राया वा रायपुत्तो अवरज्जभइ, अप्पणो से सायाइं कम्ममाइं अवरज्जंति ॥

सगटस्स छन्नियभव-यण्णग-पदं

१३. तए णं भगवओ गोयमस्स<sup>०</sup> चिता तहेव जाव' भगवं वागरेइ—एवं ए गोयमा ! तेषां कालेणं तेषां समएणं इहेव जंबुद्वीवे दीवे भारहे वासे छगल नामं नयरे होत्था ॥
१४. तत्थ णं सीहगिरी नामं राया होत्था—महयाहिमवंतं-महंतं-मलय-महिदसारे ॥
१५. तत्थ णं छगलपुरे नयरे छन्निए नामं छागलिए परिवसइ—अड्ढे जाव' अपि अहम्मिए जाव' दुप्पडियाणंदे ॥
१६. तस्स णं छन्नियस्स छागलियस्स वहेवे [वहूणि ?] अयाण य एलयाण'<sup>१</sup> रोज्झाण य 'वसभाण य'<sup>२</sup> ससयाण य सूयराण य 'पसयाण य सिहाण य हरिणाण य मयूराण य महिसाण य सयवद्धाणि सहस्सवद्धाणि य जूहा वाडगंसि संनिरुद्धाइं<sup>३</sup> चिट्ठंति ।

१. समोत्तरणं (क, ख, घ) ।

२. वि० १।२।१२-१४ ।

३. रायमग्गे (ख, घ) ।

४. पू०—वि० १।२।१४ ।

५. उक्खत्त (ख); उक्कड (ग); उक्खत्त (घ) ।

६. वि० १।२।१४ ।

७. सं० पा०—उग्घोसिज्जमाणं जाव चिता ।

८. वि० १।२।१५, १६ ।

९. ओ० सू० १४१ ।

१०. वि० १।१।४७ ।

११. एलाण (क, ख, ग, घ) ।

१२. पसयाण य (क); × (ख, ग) ।

१३. सिहाण य (क); × (ख, ग); पसुयाण (घ) ।

१४. निरुद्धाइं (क); निरुद्धा (ख, ग) ।



जम्हा णं अम्हं इमे दारणं जागमेत्ताणं येव सगडस्य श्रेष्ठयो ठणिए, नम्हा  
अम्हं दारणं सगडे नामेणं । सेसं जम्हा उज्जिअणं । सुभहं कवणयासुहं ण  
माया वि कालगया । से वि सान्धो गिहाओ निच्छुडे ॥

२२. तए णं से सगडे दारणं सान्धो गिहाओ निच्छुडे समाणे •साहंजणीए न  
सिघाडग-तिग-चउगक-चउनर-चउम्मुह-महापहपहेमु जूयमलएमु वेस-  
पाणागारेसु य सुहंसुहेणं परिवदुद ॥
२३. तए णं से सगडे दारणं अणोहट्टए अणिवारिए सच्छंदमई सडर-  
मज्जप्पसंगी चोर-जूय-वेस-दारणसंगी जाए यावि होत्या ॥
२४. तए णं से सगडे अण्णया कयाइ • सुदरिसणाए गणियाए सद्धि संपलगे  
होत्या ॥
२५. तए णं से सुसेणे अमच्चे तं सगडं दारणं अण्णया कयाइ सुदरिसणाए ग  
गिहाओ निच्छुभावेइ, निच्छुभावेत्ता सुदरिसणं गणियं अद्धिभतरियं ८  
ठवेत्ता सुदरिसणाए गणियाए सद्धि उरालाइं माणुस्सगाइं भोगमे  
भुंजमाणे विहरइ ॥
२६. तए णं से सगडे दारणं सुदरिसणाए गणियाए गिहाओ निच्छुमे  
•सुदरिसणाए गणियाए मुच्छिए गिद्धे गट्टिए अज्जभोववण्णे अण्णत्य कत्थइ  
च रइं च धिइं च अलभमाणे तच्चित्ते तम्मणे तल्लेस्से तदज्जभवसाणे त  
वउत्ते तयप्पियकरणे तवभावणाभाविए सुदरिसणाए गणियाए बहूणि अंत-  
य छिद्दाणि य विवराणि य पडिजागरमाणे-पडिजागरमाणे विहरइ ॥
२७. तए णं से सगडे दारणं अण्णया कयाइ सुदरिसणाए गणियाए अंतरं ल  
लभेत्ता सुदरिसणाए गणियाए गिहं रहसियं • अणुप्पविसइ, अणुप्पवे-  
सुदरिसणाए सद्धि उरालाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ ॥
२८. इमं च णं सुसेणे अमच्चे ण्हाए जाव" विभूसिए मणुस्सवगुरापारिक्खत्ते" जे  
सुदरिसणाए गणियाए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सगडं द  
सुदरिसणाए गणियाए सद्धि उरालाइं भोगभोगाइं भुंजमाणं पासइ, य  
आसुरुत्ते जाव" मिसिमिसेमाणे तिवलियं भिउडिं निडाले साहट्टु स  
दारयं पुरिसेहिं गिण्हावेइ, गिण्हावेत्ता अट्टि" •मुट्टि-जाणु-कोप्पर : ह रसंम

१. वि० १।२।४६-५६ ।

२. सं० पा०—समाणे सिघाडग तहेव जाव  
सुदरिसणाए ।

३. ठावेइ (क) ।

४. सं० पा०—निच्छुभेमाणे अण्णत्य कत्थइ  
सुहं वा अलभ अण्णया कयाइ रहस्सियं

सुदरिसणाए गिहं ।

५. वि० १।२।६४ ।

६. मणुस्सवगुराए (ख, ग, घ) ।

७. वि० १।२।६४ ।

८. सं० पा०—अट्टि जाव महियगतं ।



३७. तण् णं से सगडे दारण मुदरिसणाए मधेण ग जोधणेण ग नायण्णेय ग म  
गिद्धे गट्टिए अज्झोववण्णे मुदरिसणाए भउणीए' मद्धि उरान्नादे माणु  
भोगभोगादं भुंजमाणे विहरिस्सइ ॥
३८. तण् णं से सगडे दारण अण्णया कयाइ सगमेव कूडग्गाहसं उवसंपज्जि  
विहरिस्सइ ॥
३९. तण् णं से सगडे दारण कूडग्गाहे भविस्सट्—अट्ठम्मिए जाव' दुण्डि  
एयकम्मि एयप्पहाणे एयविज्जे एयसमायारे सुवहुं पावकम्मं समज्जि  
कालमासे कालं किच्चा इमोरो रयणप्पभाग पुडवीए नेरइणसु नेरइ  
उववज्जिहिइ', संसारो तहेव जाव' •वाउ-नेउ-आउ-पुडवीसु अण्णसवस  
खुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चायाइस्सइ\* ।  
से णं तस्रो अणंतरे उव्वट्ठित्ता वाणारसीए नयरीए मच्छत्ताए उववज्जिहिइ  
से णं तत्य मच्छवंधिएहि व्हिए तत्थेव वाणारसीए नयरीए सेट्ठिकु  
पुत्तत्ताए पच्चायाहिइ । वोहिं, पव्वज्जा, सोहम्मि कप्पे, महाविदेहे  
सिज्जिभिहिइ ॥

### निकखेव-पदं

४०. \*एवं खलु जंवू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं दुह  
चउत्थस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ।

—त्ति वेमि'

१. भारियाए (क, ख); × (ग) ।

२. वि० १।१।४७ ।

३. उववन्ने (क, ख, ग, घ); अशुद्धं प्रतिभाति ।

४. वि० १।१।७०; सं० पा०—जाव पुडवी ।

५. सं० पा०—निकखेवो ।

६. ना० १।१।७ ।





गोयमेण बहस्सइदत्तरस पुब्बभवपुच्छा-पदं

१०. तेणं कालेणं तेणं समाएणं भगवं गोयमे नयेण जाणं रायममममोगाए नये-  
हत्थी, आरो, पुरिसामज्जे' पुरिसं । भिता । तहेणं' पुब्बउ पुब्बभवे  
वागरेइ—

बहस्सइदत्तस्स महेसरदत्तभच-वण्णग-पदं

११. एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समाएणं इत्थेव जंतुदीवे दीवे मा  
सव्वओभदे नामं नयरे होत्था—रिद्धस्थिमियसमिद्धे' ॥  
१२. तत्थ णं सव्वओभदे नयरे जियसत्तू नामं राया होत्था ॥  
१३. तस्स णं जियसत्तूस्स रण्णो महेसरदत्ते' नामं पुरोहिए होत्था—रिउ  
यज्जुव्वेय-सामवेय-अथव्वणवेयकुराले यावि होत्था ॥  
१४. तए णं से महेसरदत्ते पुरोहिए जियसत्तूस्स रण्णो रज्जवलविट्ठणट्ठयाए  
कल्लि' एगमेगं माहणदारयं, एगमेगं खत्तियदारयं, एगमेगं वइस्सदारयं, ए  
सुद्धदारयं गिण्हावेइ, गिण्हावेत्ता तेसि जीवंतगाणं चैव हिययउंडए गिण्  
गिण्हावेत्ता जियसत्तूस्स रण्णो संतिहोमं करेइ ॥  
१५. तए णं से महेसरदत्ते पुरोहिए अट्ठमीचाउदसीनु दुवे-दुवे माहण-खत्तिय-व  
सुद्धे, चउण्हं मासाणं चत्तारि-चत्तारि, छण्हं मासाणं अट्ठ-अट्ठ, संवच्छ  
सोलस-सोलस ।

जाहे-जाहे वि य णं जियसत्तू राया परवलेणं अभिजुज्जइ', ताहे-ताहे वि य  
महेसरदत्ते पुरोहिए अट्ठसयं माहणदारगाणं, अट्ठसयं खत्तियदारगाणं, अ  
वइस्सदारगाणं, अट्ठसयं सुद्धदारगाणं पुरिसेहि गिण्हावेइ, गिण्हावेत्ता  
जीवंतगाणं' चैव हिययउंडियाओ गिण्हावेइ, गिण्हावेत्ता जियसत्तूस्स र  
संतिहोमं करेइ । तए णं से परवले खिप्पामेव विद्धसेइ" वा पडिसेहिज्जइ वा

१६. तए णं से महेसरदत्ते पुरोहिए एयकम्मे एयप्पहाणे एयविज्जे एयसमायारे स  
पावकम्मं समज्जिणित्ता तीसं वाससयाइ परमाउं पालइत्ता कालमासे  
। किञ्चा पंचमाए" पुढवीए उक्कोसेणं सत्तरससागरोवमट्ठिए नरगे उव्वण्णे

१. वि० १।२।१२-१४ ।

२. × (घ) ।

३. पू०—वि० १।२।१४-१६ ।

४. पू०—ओ० सू० १ ।

५. महिस्सर० (क) ।

६. रिव्वेद (क) ।

७. कल्लं कल्लं (क); कल्ला कल्लं (ग) ।

८. अभिजुज्जइ (ख, ग) ।

९. जीवंतगाणं (क); जीवंताणं (ख) ।

१०. विद्धंसइ (ख, ग); विद्धंसिज्जइ (वव) ।

११. पंचमीए (ग) ।



अट्टि-मुट्टि-जाणु-कोप्परपहार-संभग्ग-महियगत्तं करेइ, करेत्ता अवओडगवंधणं करेइ, करेत्ता ° एएणं विहाणेणं वज्झं आणवेइ ॥

२८. एवं खलु गोयमा ! वहस्सइदत्ते पुरोहिए पुरा पोरानाणं<sup>१</sup> •दुच्चिण्णाणं दुप्प-  
डिक्कंताणं असुभाणं पावाणं कडाणं कम्माणं पावगं फलवित्तिविसेसं पच्चणु-  
भवमाणे ° विहरइ ॥

वहस्सइदत्तस्स आगामिभव-वण्णग-पदं

२९. वहस्सइदत्ते णं भंते ! पुरोहिए<sup>२</sup> इओ कालगए समाणे कहिं गच्छिहिइ ? कहिं  
उववज्जिहिइ ?

गोयमा ! वहस्सइदत्ते णं पुरोहिए चोसट्टि वासाइं परमाउं पालइत्ता अज्जेव  
तिभागावसेसे दिवसे सूलभिण्णे<sup>३</sup> कए समाणे कालमासे कालं किच्चा इमीसे  
रयणप्पभाए पुढवीए<sup>४</sup> •उक्कोससागरोवमट्टिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए  
उववज्जिहिइ ।

से णं तओ अणंतरं उव्वट्टित्ता, एवं संसारो जहा पढमे जाव<sup>५</sup> वाउ-तेउ-आउ-  
पुढवीसु अणेगसयसहस्सखुत्तो उदाइत्ता-उदाइत्ता तत्थेव भुज्जो-भुज्जो  
पच्चायाइस्सइ ° ।

तओ हत्थिणाउरे नयरे मियत्ताए पच्चायाइस्सइ । से णं तत्थ वाउरिएहिं वहिए  
समाणे तत्थेव हत्थिणाउरे नयरे सेट्टिकुलंसि पुत्तत्ताए<sup>६</sup> पच्चायाहिइ । वोहिं,  
सोहम्मै, महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ ॥

निक्खेव-पदं

३०. •एवं खलु जंवू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव<sup>७</sup> संपत्तणं दुह्विवांगाणं  
पंचमस्स अज्झयणस्स अयमट्टे पण्णत्ते ।

—त्ति वेमि ° ॥

१. सं० पा०—पोराणाणं जाव विहरइ ।

२. दारए (क, ख, ग, घ) ।

३. सूलिभिण्णे (घ) ।

४. सं० पा०—पुढवीए संसारो तहेव पुढवी ।

५. वि० १।१।७० ।

६. पुमत्ताए (क) ।

७. सं० पा०—निक्खेवो ।

८. ना० १।१।७ ।



६. तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसढे । परिसा निग्गया, राया निग्गमो जाव<sup>१</sup> परिसा पडिगया ॥

### गोयमेण नंदिवद्धणस्स पुच्चभवपुच्छा-पदं

७. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी जाव<sup>१</sup> रायमग्गमोगाढे । तहेव हत्थो, आसे, पुरिसे पासइ । तेसिं च णं पुरिसाणं मज्झगयं एणं पुरिसं पासइ जाव<sup>१</sup> नर-नारीसंपरिवुडं ॥

८. तए णं तं पुरिसं रायपुरिसा चच्चरंसि तत्तंसि अयोमयंसि समजोइभूयंसि सीहासणंसि निवेसावेत्ति ।

तयाणंतरं च णं पुरिसाणं मज्झगयं वहूहिं अयकलसेहिं तत्तेहिं समजोइभूएहिं, अप्पेगइया तंवभरिएहिं, अप्पेगइया तउयभरिएहिं, अप्पेगइया सीसगभरिएहिं, अप्पेगइया कलकलभरिएहिं, अप्पेगइया खारतेल्लभरिएहिं महया-महया रायाभिसेएणं अभिसिंचति ।

तयाणंतरं च तत्तं अयोमयं समजोइभूयं अयोमयं संडासगं गहाय हारं पिणद्धंति । तयाणंतरं च णं अद्धहारं •पिणद्धंति तिसरियं पिणद्धंति पालवं पिणद्धंति कडिसुत्तयं पिणद्धंति पट्टं पिणद्धंति मउडं पिणद्धंति ° । चित्ता तहेव जाव<sup>१</sup> वागरेइ—

### नंदिवद्धणस्स दुज्जोहणभव-वण्णग-पदं

९. एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुदीवे दीवे भारहे वासे सीहपुरे नामं नयरे होत्था—रिद्धत्थिमियसमिद्धे<sup>१</sup> ॥

१०. तत्थ णं सीहपुरे नयरे सीहरहे नामं राया होत्था ॥

११. तस्स णं सीहरहस्स रण्णो दुज्जोहणे नामं चारगपाले<sup>१</sup> होत्था—अहम्मिए जाव<sup>१</sup> दुप्पडियाणंदे ॥

१२. तस्स णं दुज्जोहणस्स चारगपालस्स इमेयारूवे चारगभंडे होत्था—

१३. तस्स णं दुज्जोहणस्स चारगपालस्स वहवे अयकुंडीओ—अप्पेगइयाओ तंवभरियाओ, अप्पेगइयाओ तउयभरियाओ, अप्पेगइयाओ सीसगभरियाओ, अप्पेगइयाओ कलकलभरियाओ, अप्पेगइयाओ खारतेल्लभरियाओ—अगणिकायंसि अद्धियाओ चिट्ठंति ॥

१. वि० १।२।११ ।

२. वि० १।२।१२-१४ ।

३. वि० १।२।१४ ।

४. सं० पा०—अद्धहारं जाव पट्टं मउडं ।

५. वि० १।२।१५, १६ ।

६. पू०—ओ० सू० १ ।

७. चारगपाले (घ) ।

८. वि० १।१।४७ ।



य खंडपट्टे' य पुरिसेहिं गिण्हावेइ, गिण्हावेत्ता उत्ताणए पाडेइ, लोह्वंदेणं मुहं विहाडेइ, विहाडेत्ता अप्पेगइए तत्ततंत्रं पज्जेइ, अप्पेगइए तउयं पज्जेइ, अप्पेगइए सीसगं पज्जेइ, अप्पेगइए कलकलं पज्जेइ, अप्पेगइए खारतेल्लं पज्जेइ, अप्पेगइयाणं तेणं चैव अभिरोगं करेइ ।

अप्पेगइए उत्ताणए पाडेइ, पाडेत्ता आसमुत्तं पज्जेइ, अप्पेगइए हत्थियमुत्तं पज्जेइ',  
•अप्पेगइए उट्टमुत्तं पज्जेइ, अप्पेगइए गोमुत्तं पज्जेइ, अप्पेगइए महिसमुत्तं पज्जेइ, अप्पेगइए अयमुत्तं पज्जेइ, अप्पेगइए ° एलमुत्तं पज्जेइ ।

अप्पेगइए हेट्टामुहए पाडेइ छडछडस्स' वम्मावेइ, वम्मावेत्ता अप्पेगइए तेणं चैव ओवीलं दलयइ । अप्पेगइए हत्थंडुयाइं' वंधावेइ, अप्पेगइए पायंडुए वंधावेइ, अप्पेगइए हडिवंधणं करेइ, अप्पेगइए नियलबंधणं करेइ, अप्पेगइए संकोडिय-मोडियए' करेइ, अप्पेगइए संकलबंधणं करेइ, अप्पेगइए हत्थच्छिण्णए करेइ',  
•अप्पेगइए पायच्छिण्णए करेइ, अप्पेगइए नक्कच्छिण्णए करेइ, अप्पेगइए उट्टच्छिण्णए करेइ, अप्पेगइए जिठभच्छिण्णए करेइ, अप्पेगइए सीसच्छिण्णए करेइ, अप्पेगइए ° सत्थोवाडियए करेइ ।

अप्पेगइए वेणुलयाहि य', •अप्पेगइए वेत्तलयाहि य, अप्पेगइए चिंचालयाहि य, अप्पेगइए छियाहि य, अप्पेगइए कसाहि य, अप्पेगइए ° वायरासीहि य हणावेइ ।

अप्पेगइए उत्ताणए कारवेइ, कारवेत्ता उरे सिलं' दलावेइ, दलावेत्ता तओ लउडं' छुहावेइ, छुहावेत्ता पुरिसेहिं उक्कंपावेइ" ।

अप्पेगइए तंतीहि य", •अप्पेगइए वरत्ताहि य, अप्पेगइए वागरज्जूहि य, अप्पेगइए वालय ° सुत्तरज्जूहि य हत्थेसु य पाएसु य वंधावेइ, अगडंसि 'ओचूलं वोलगं'" पज्जेइ" ।

अप्पेगइए असिपत्तेहि य", •अप्पेगइए करपत्तेहि य, अप्पेगइए खुरपत्तेहि य अप्पेगइए ° कलंवचीरपत्तेहि य पच्छावेइ, पच्छावेत्ता खारतेल्लेणं अठंग्गावेइ ।

१. खंडपट्टे (क, ख, ग, घ) ।

२. सं० पा०—पज्जेइ जाव एलमुत्तं ।

३. थलथलस्स (क, घ) ।

४. हत्थंडु° (ख); हत्थंड° (ख); हत्थियं (घ) ।

५. मोडिए (वृ) ।

६. सं० पा०—करेइ जाव सत्थोवाडियए ।

७. सं० पा०—वेणुलयाहि य जाव वायरासीहि ।

८. सिर (क) ।

९. लउलं (क, घ); नउलं (ख) ।

१०. ओकंपावेइ (क) ।

११. सं० पा०—तंतीहि य जाव सुत्तरज्जूहि ।

१२. ओलंवालगं (क); उचूलंपालगं (ख); उचूलंवालगं (ग) उचूलंपाणग (घ); ओचूल-वालगं (ह० वृ) ।

१३. पाययति खादयतीत्यादि लौकिकीभांषा कारयतीति तु भावार्थः (वृ) ।

१४. सं० पा०—असिपत्तेहि य जाव कलंवचीर-पत्तेहि ।





२८. तए णं से नंदिवद्धणे' कुमारे पंचघाईपरिवुडे जाव' परिवड्ढइ ॥
२९. तए णं से नंदिवद्धणे' कुमारे उम्मुक्कवालभावे' •विण्णय-परिणयमेत्ते जोव्वण-गमणुप्पत्ते° विहरइ जाव जुवराया जाए यावि होत्या ॥
३०. तए णं से नंदिवद्धणे' कुमारे रज्जे य जाव' अंतेउरे य मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववण्णे इच्छइ सिरिदामं रायं जीवियाओ ववरोवेत्ता सयमेव रज्जसिरि कारेमाणे पालेमाणे विहरित्तए ॥
३१. तए णं से नंदिवद्धणे' कुमारे सिरिदामस्स रण्णे वहुणि अंतराणि य छिद्दाणि य विरहाणि य पडिजागरमाणे विहरइ ॥
३२. तए णं से नंदिवद्धणे' कुमारे सिरिदामस्स रण्णे अंतरं अलभमाणे अण्णया कयाइ चित्तं अलंकारियं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—तुमं णं देवाणुप्पिया ! सिरिदामस्स रण्णे सव्वट्टाणेसु य सव्वभूमियासु य अंतेउरे य दिण्णवियारे सिरिदामस्स रण्णे अभिक्खणं-अभिक्खणं अलंकारियं कम्मं करेमाणे विहरसि, तं णं तुमं देवाणुप्पिया ! सिरिदामस्स रण्णे अलंकारियं कम्मं करेमाणे गीवाए खुरं निवेसेहि । तो' णं अहं तुमं अद्धरज्जियं करिस्सामि । तुमं अम्हेहिं सद्धि उरालाई भोगभोगाई भुंजमाणे विहरिस्ससि ॥
३३. तए णं से चित्ते अलंकारिए नंदिवद्धणस्स'कुमारस्स वयणं एयमट्टं पडिसुणेइ ॥
३४. तए णं तस्स चित्तस्स अलंकारियस्स इमेयारूवे" •अज्झत्थिए चित्तिए कप्पिए पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था जइ णं मम सिरिदामे राया एयमट्टं आगमेइ, तए णं मम न नज्जइ केणइ असुभेणं कु-मारेणं मारिस्सइ त्ति कट्टु भीए तत्थे तसिए उव्विणे संजायभए जेणेव सिरिदामे राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सिरिदामं'रायं रहस्सियगं करयल"•परिग्गहियं सिरिसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु° एवं वयासी—एवं खलु सामी ! नंदिवद्धणे" कुमारे रज्जे य जाव" अंतेउरे मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववण्णे इच्छइ तुब्भे जीवियाओ ववरोवेत्ता सयमेव रज्जसिरि कारेमाणे पालेमाणे विहरित्तए ॥
३५. तए णं से सिरिदामे राया चित्तस्स अलंकारियस्स अंतिए एयमट्टं सोच्चा निसम्म

१. नंदित्सेणे (क, ख, ग, घ) ।

२. वि० १।२।४६ ।

३. नंदित्सेणे (क, ख, ग, घ) ।

४. सं० पा०—उम्मुक्कवालभावे जाव विहरइ ।

५. नंदित्सेणे (क, ख, ग, घ) ।

६. वि० १।१।५७ ।

७. नंदित्सेणे (क, ख, ग, घ) ।

६. ता (ख, घ); तं (ग) ।

१०. नंदित्सेणस्स (क, ख, ग घ) ।

११. सं० पा०—इमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था ।

१२. सं० पा०—करयल जाव एवं ।

१३. नंदित्सेणे (क, ख, ग, घ) ।

१४. वि० १।१।५७ ।



## सत्तमं अजभयणं

### उंवरदत्ते

#### उक्खेव-पदं

१. जइ णं भंते' ! °समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं दुह्विवागाणं छट्टस्स अजभयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, सत्तमस्स णं भंते ! अजभयणस्स समणेणं भगवया महावीरेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?
२. तए णं से सुहम्मि अणगारे जंबू-अणगारं एवं वयासी °—एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं पाडलिसंडे नयरे । 'वणसंडे उज्जाणे' । 'उंवरदत्ते जक्खे' ॥
३. तत्थ णं पाडलिसंडे नयरे सिद्धत्थे राया ॥
४. तत्थ णं पाडलिसंडे नयरे सागरदत्ते सत्थवाहे होत्था—अड्ढे । गंगदत्ता भारिया ॥
५. तस्स णं सागरदत्तस्स पुत्ते गंगदत्ताए भारियाए अत्तए उंवरदत्ते नामं दारए होत्था—अहीण-पडिपुण्ण-पंचिदियसरीरे' ॥
६. तेणं कालेणं तेणं समएणं समोसरणं जाव' परिसा पडिगया ॥

#### गोयमेण उंवरदत्तस्स पुव्वभवपुच्छा-पदं

७. तेणं कालेणं तेणं समएणं भगवं गोयमे तहेव' जेणेव पाडलिसंडे नयरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छत्ता पाडलिसंडं नयरं पुरत्थिमिल्लेणं दुवारेणं अणुप्प-

१. सं० पा०—सत्तमस्स उक्खेवओ ।

५. पू०—ओ० सू० १४३ ।

२. ना० १।१।७ ।

६. वि०—१।२।११ ।

३. वणसंडं उज्जाणे (क, ख, ग) ।

७. पू०—वि० १।२।१२-१४ ।

४. उंवरदत्तो जक्खो (क) ।



११. तए णं भगवओ गोयमस्स तं पुरिसं पासित्ता ° इमेयारूवे अज्भत्थिए चितिए कप्पिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पण्णे—अहो णं इमे पुरिसे पुरा पौराणाणं ° दुच्चिण्णाणं दुप्पडिवकंताणं असुभाणं पावाणं कडाणं कम्माणं पावगं फलवित्ति-विसेसं पच्चणुभवमाणे विहरइ । न मे दिट्ठा नरगा वा नेरइया वा । पच्चक्खं खलु अयं पुरिसे निरयपडिरूवियं वेयणं वेएइ त्ति कट्टु जाव' समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता ° एवं वयासी—एवं खलु अहं भंते ! छट्ठक्खमणपारणगंसि जाव' रियंते जेणेव पाडलिसंडे नयरे तैणेव उवागच्छामि, उवागच्छित्ता पाडलिसंडं नयरं पुरत्थिमिल्लेणं दुवारेणं अणुपविट्ठे । तत्थ णं एगं पुरिसं पासामि कच्छुल्लं जाव' देहंवलियाए वित्ति कप्पेमाणं । 'तए णं' अहं दोच्चछट्ठक्खमणपारणगंसि दाहिणिल्लेणं दुवारेणं तहेव । तच्चछट्ठक्खमणपारणगंसि पच्चत्थिमिल्लेणं दुवारेणं तहेव । तए णं अहं चोत्थ-छट्ठक्खमणपारणगंसि उत्तरदुवारेणं अणुप्पविसामि, तं चेव पुरिसं पासामि कच्छुल्लं जाव देहंवलियाए वित्ति कप्पेमाण' । चित्ता ममं ॥
१२. °से णं भंते ! पुरिसे पुव्वभवे के आसि ? किं नामए वा किं गोत्ते वा ? कयरंसि गामसि वा नयरंसि वा ? किं वा दच्चा किं वा भोच्चा किं वा समायरित्ता, केसि वा पुरा पौराणाणं दुच्चिण्णाणं दुप्पडिवकंताणं असुभाणं पावाणं कडाणं कम्माणं पावगं फलवित्तिविसेसं पच्चणुभवमाणे विहरइ ?

### उंबरदत्तस्स घण्णंतरीभव-वण्णग-पदं

१३. गोयमाइ ! समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासी °—एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे विजयपुरे नामं नयरे होत्था—रिद्धत्थिमियसमिद्धे ॥
१४. तत्थ णं विजयपुरे नयरे कणगरहे नामं राया होत्था ॥
१५. तस्स णं कणगरहस्स रण्णे घण्णंतरी नामं वेज्जे होत्था—अट्ठंगाउव्वेयपाडए [ तं जहा—१. कुमारभिच्चं २. सालागे ३. सल्लहत्ते ४. कायतिगिच्छा ५. जंगोले ६. भूयविज्जे ७. रसायणे ८. वाजीकरणे ]<sup>६</sup> सिवहत्ये सुहहत्ये लहुहत्ये ॥
१६. तए णं से घण्णंतरी वेज्जे विजयपुरे नयरे कणगरहस्स रण्णे अंतउरे य, अण्णेसि च व्हूणं राईसर-तलवर-माडंविद्य-कोडुंविद्य-इव्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहाणं, अण्णेसि च व्हूणं दुव्वलाण य गिलाणाण य वाहियाण य रोगियाण य सणाहाण

१. सं० पा०—पौराणाणं जाव एवं ।

२. वि० १।२।१५ ।

३. वि० १।२।१३, १४ ।

४. वि० १।७।७ ।

५. तं (क, घ) ।

६. कप्पेमाणे विहरइ (क, ख, ग, घ) ।

७. सं० पा०—पुव्वभवपुच्छा वागरेइ ।

८. कोष्ठकवर्ती पाठो व्याख्यांशः प्रतीयते ।



मच्छकंटयं गलाओ नीहरित्तए, तस्स णं सोरियदत्ते विद्धनं अत्थसंपगामं दलयइ ॥

२२. तए णं ते कोडुंविद्यपुत्ता जाव' उग्घोमंति ॥

२३. तए णं ते वहवे वेज्जा य वेज्जपुत्ता य जाणुया य जाणुयपुत्ता य तेगिच्छिया य तेगिच्छियपुत्ता य इमं एयास्स उग्घोराणं' निरामंति, निरामेत्ता जेणेव सोरिय-दत्तस्स गेहे जेणेव सोरियदत्ते मच्छंधे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छत्ता वहीहि उप्पत्तियाहि य वेणइयाहि य कम्मियाहि य पारिणामियाहि य बुद्धीहि परि-णामेमाणा-परिणामेमाणा वमणेहि य छद्दुणेहि य ओवीलणेहि य कवलगाहिहि य सल्लुद्धरणेहि य विसल्लकरणेहि य इच्छंति सोरियदत्तरस मच्छंधस्स मच्छकंटयं गलाओ नीहरित्तए, नो संचाएंति नीहरित्तए वा विसोहित्तए वा ॥

२४. तए णं ते वहवे वेज्जा य वेज्जपुत्ता य जाणुया य जाणुयपुत्ता य तेगिच्छिया य तेगिच्छियपुत्ता य जाहे नो संचाएंति सोरियदत्तस्स मच्छंधस्स मच्छकंटयं गलाओ नीहरित्तए, ताहे संता तंता परितंता जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसं पडिगया' ।

२५. तए णं से सोरियदत्ते मच्छंधे वेज्जपडियाइक्खए परियारगपरिचत्ते निव्वि-ण्णोसहभेसज्जे तेणं दुक्खेणं अभिभूए समाणे सुक्के भुक्खे जाव' किमियकवले य वममाणे विहरइ ॥

२६. एवं खलु गोयमा ! सोरियदत्ते पुरा पोरणाणं' \*दुच्चिण्णाणं दुप्पडिकंताणं असुभाणं पावाणं कडाणं कम्माणं पावणं फलवित्तिवसेसं पच्चणुभवमाणे' विहरइ ॥

### सोरियदत्तस्स आगामिभव-वण्णग-पदं

२७. सोरियदत्ते णं भंते ! मच्छंधे इओ कालमासे कालं किच्चा कहिं गच्छिहिइ ? कहिं उववज्जिहिइ ?

गोयमा ! सत्तरिं वासाइं परमाउं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए नेरइएसु नेरइयत्ताए उववज्जिहिइ । संसारो तहेव' । हत्थिणाजरे नयरे मच्छत्ताए उववज्जिहिइ' । से णं तओ मच्छिएहिं जीवियाओ

१. वि० १।८।२१ ।

२. उग्घोसणं उग्घोसेज्जतं (ख, घ) ।

३. मच्छंधे (क, ख, ग, घ) ।

४. परिगया (क) ।

५. वि० १।८।८ ।

६. सं० पा०—पोराणाणं जाव विहरइ ।

७. वि० १।१।७० । तहेव जाव पुढवी (क) ।

८. उववण्णे (क, ख, ग, घ) । भाविप्रदत्त-प्रसंगत्वेन असौ पाठः असंगप्रति; प्रतिभाति ।





## नवमं अज्भयणं

### देवदत्ता

#### उक्खेव-पदं

१. जइ णं भंते । 'समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं दुहविवागाणं अट्टमस्स अज्भयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, नवमस्स णं भंते ! अज्भयणस्स समणेणं भगवया महावीरेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?
२. तए णं से सुहम्मे अणगारे जंवू-अणगारं एवं वयासी०—एवं खलु जंवू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रोहीडए' नामं नयरे होत्था—रिद्धत्थिमियसमिद्धे । पुढवीवडेंसए उज्जाणे । धरणो जक्खो । वेसमणदत्ते' राया । सिरी देवी । पूसनंदी कुमारे जुवराया ॥
३. तत्थ णं रोहीडए नयरे दत्ते नामं गाहावई परिवसइ—अड्ढे । कण्हसिरी भारिया ॥
४. तस्स णं दत्तस्स धूया कण्हसिरीए अत्तया देवदत्ता नामं दारिया होत्था—अहीण-पडिपुण्ण-पंचिदियसरीरा' ॥
५. तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसडे जाव' परिसा पडिगया ॥

#### देवदत्ताए पुव्वभवपुच्छा-पदं

६. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी छट्ठ-क्खमणपारणगंसि तहैव जाव' रायमग्गमोगाढे हत्थी आसे पुरिसे पासइ । तेसि
- 
- |   |                                      |
|---|--------------------------------------|
| १. सं० पा० — उक्खेवओ नवमस्स ।               | इति पाठोस्ति । वि० १।४।१० तथा        |
| २. ना० १।१।७ ।                              | १।४।३६ सूत्रानुसारेण पाठद्वयोमिश्रणं |
| ३. रोहीतके (क, ग) सर्वत्र ।                 | संभाव्यते । अस्माभिरत्र एको गृहीतः । |
| ४. वेसमणदत्तो (ख, घ) ।                      | ६. वि० १।४।११ ।                      |
| ५. सर्वासु प्रतिपु 'अहीण जाव उक्किट्टसरीरा' | ७. वि० १।२।१३, १४ ।                  |



गडि ए अजभोववण्णे अम्हं धूयाओ नो आढाड नो परिजाणइ, अणाढायमाणे अपरिजाणमाणे विहरइ । तं मेयं खलु अम्हं मामं देवि अगियअंगेण वा विसप्पओगेण वा सत्थप्पओगेण वा जीवियाओ ववरोवितए—एवं संपेहेत्ति, संपेहेत्ता सामाए देवोए अंतराणि य छिद्दाणि य विवराणि' य पडिजागरमाणीओ-पडिजागरमाणीओ विहरंति ॥

१६. तए णं सा सामा देवी इमीसे कहाए लद्धट्टा सवणयाए—“एवं खलु ममं [एगूणगाणं ?] पंचण्हं सवत्तीसयाणं [एगूणाइं ?] पंचमाइसयाइं इमीसे कहाए लद्धट्टाइं सवणयाए अणमण्णं एवं वयासी—एवं खलु सीहसेणे राया सामाए देवीए मुच्छिए जाव' पडिजागरमाणीओ विहरंति” तं न नज्जइ णं ममं केणइ कु-मारेणं मारिस्संती ति कट्टु भीया तत्था तसिया उव्विग्गा संजायभया जेणेव कोवघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ओहय' मणसंकप्पा करतलपल्हत्थ-मुही अट्टज्झाणोवगया भूमिगयदिट्ठीया ° भियाइ ॥

१७. तए णं से सीहसेणे राया इमीसे कहाए लद्धट्टे समाणे जेणेव कोवघरे, जेणेव सामा देवी, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सामं देवि ओहय' मणसंकप्पं करतलपल्हत्थमुहि अट्टज्झाणोवगयं भूमिगयदिट्ठीयं भियायमाणि ° पासइ, पासित्ता एवं वयासी - कि णं तुमं देवाणुप्पिए ! ओहय' मणसंकप्पा करतल-पल्हत्थमुही अट्टज्झाणोवगया भूमिगयदिट्ठीया ° भियासि ?

१८. तए णं सा सामा देवी सीहसेणेणं रण्णा एवं वुत्ता समाणा उप्फेणउप्फेणियं सीहसेणं रायं एवं वयासी—एवं खलु सामी ! ममं एगूणगाणं पंच सवत्तीसयाणं एगूणाइं पंच माइसयाइं इमीसे कहाए लद्धट्टाइं सवणयाए' अणमण्णं सदावेत्ता' एवं वयासी—“एवं खलु सीहसेणे राया सामाए देवीए मुच्छिए गिद्धे गडि ए अजभोववण्णे अम्हं धूयाओ नो आढाड नो परिजाणइ जाव” अंतराणि य छिद्दाणि य विवराणि य पडिजागरमाणीओ-पडिजागरमाणीओ विहरंति ॥” तं न नज्जइ णं सामी ! ममं केणइ कु-मारेणं मारिस्संती ति कट्टु भीया जाव” भियामि ॥

१. विरहाणि (क, ग, घ) ।

२. सवणयाए एवं वयासी (क, ग, घ); समाणी एवं वयासी (ख); अत्र थवणप्रसङ्गोऽस्ति, न तु कथनस्य । तेन 'एवं वयासी' इति पाठः प्रकृतो नास्ति, सम्भवती लिपिदोषेण जातः ।

३. वि० १।६।१५ ।

४. सं० पा०—ओहय जाव भियाइ ।

५. सं० पा०—ओहय जाव पासइ ।

६. सं० पा०—ओहय जाव भियासि ।

७. उप्फेणाउप्फेणियं (क) ।

८. समाणाइं (ख, ग); समाणाइं सवणयाए (घ) ।

९. सदावेत्ति २ (क, ख, ग, घ) ।

१०. वि० १।६।१५ ।

११. वि० १।६।१६ ।



२६. तए णं तासि एगूणगाणं पंचण्हं देवीसयाणं 'एगूणाइं पंच माइसयाइं' सव्वालंकारविभूसियाइं तं विउल अरणं पाणं साइमं साइमं गुरं च महं च मेरयं च जाइं च सीधुं च पसणं च आसाएमाणाइं बीसाएमाणाइं परिभाएमाणाइं परिभुंजेमाणाइं गंधवेहि य नाइएहि य उवगीयमाणाइं - उवगीयमाणाइं विहरति ॥

२७. तए णं से सीहसेणे राया अद्वरत्तकालसमयसि वहुहि पुरिसेहि सद्धि संपरिवुडे जेणेव कूडागारसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छता कूडागारसालाए दुवाराइं पिहेइ, पिहेत्ता कूडागारसालाए सव्वओ समंता अगणिकायं दलयइ ॥

२८. तए णं तासि एगूणगाणं पंचण्हं देवीसयाणं एगूणगाइं पंच माइसयाइं सीहसेणेणं रण्णा आलीवियाइं समाणाइं रोयमाणाइं कंदमाणाइं विलवमाणाइं अत्ताणाइं असरणाइं कालधम्मुणा संजुत्ताइं ॥

२९. तए णं से सीहसेणे राया एयकम्मे एयप्पहाणे एयविज्जे एयसमायारे सुवहं \*पावं कम्मं कलिकलुसं ° समज्जिणित्ता चोत्तीसं वाससयाइं परमाउं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा छट्ठीए पुढवीए उक्कोसेणं वावीससागरोवमट्ठिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए उववण्णे ॥

### देवत्ताए वत्तमाणभव-वण्णग-पदं

३०. से णं तओ अणंतरं उक्वट्ठित्ता इहेव रोहीडए' नयरे दत्तस्स सत्यवाहस्स कण्हसिरीए भारियाए कुच्छिसि दारियत्ताए उववण्णे ॥

३१. तए णं सा कण्हसिरी नवण्हं मासाणं' \*बहुपडिपुण्णाणं ° दारियं पयाया - सूमालं सुखवं ॥

३२. तए णं तीसे दारियाए अम्मापियरो निव्वत्तवारसाहियाए विउलं अरणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेत्ति, उवक्खडावेत्ता जाव' मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणस्स पुरओ नामधेज्जं करेत्ति—होउ णं दारिया देवदत्ता नामेणं ॥

३३. तए णं सा देवदत्ता दारिया पंचधाइपरिगहिया जाव' परिवड्डइ ॥

३४. तए णं सा देवदत्ता दारिया उम्मुक्कवालभावा' \*विण्णय-परिणयमेत्ता जोव्वण-गमणुप्पत्ता रूवेण जोव्वणेण लावण्णेण य ° अईव-अईव उक्किट्ठा उक्किट्ठसरीरा जाया यावि होत्था ॥

१. पंच माइसयाइं जाव (क, ख, ग, घ) ।

२. सं० पा०—सुवहं जाव समज्जिणित्ता ।

३. रोहीतए (क, ख, ग) ।

४. सं० पा०—मासाणं जाव दारियं ।

५. वि० १।३।३२ ।

६. वि० १।२।४६ ।

७. सं० पा०—उम्मुक्कवालभावा जोव्वणेण रूवेण लावण्णेण य जाव अईव ।



## दसमं अज्भयणं

### अंजु

#### उक्खेव-पदं

१. जइ णं भंते ! \*समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं दुह्विवागाणं नवमस्स अज्भयणस्स अयमट्ठे पणत्ते, दसमस्स णं भंते ! अज्भयणस्स समणेणं भगवया महावीरेणं के अट्ठे पणत्ते ?
२. तए णं से सुहम्मे अणगारे जंबू-अणगारं एवं वयासी° —एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं वड्डमाणपुरे नामं नयरे होत्था । विजयवड्डमाणे उज्जाणे । माणिभद्दे जक्खे । विजयमित्ते राया ॥
३. तत्थ णं धणदेवे नामं सत्थवाहे होत्था—अड्ढे । पियंगू नामं भारिया । अंजु दारिया जाव' उक्किट्टसरीरा । समोसरणं परिसा जाव' गया ॥

#### अंजूए पुव्वभवपुच्छा-पदं

४. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी जाव' अडमाणे विजयमित्तस्स रण्णे गिहस्स असोगवणियाए अट्ठरसामतेणं वीईवयमाणे पासइ एगं इत्थियं—सुक्कं भुक्खं निम्मंसं किडिकिडियाभूयं अट्ठिचम्मावणद्धं नीलसाडगनियत्थं<sup>१</sup> कट्ठाइं कलुणाइं वीसराइं<sup>२</sup> कूवमाणं पासइ, पासित्ता चित्ता तहेव जाव' एवं वयासी—सा णं भंते ! इत्थिया पुव्वभवे का आसिं ? वागरणं ॥

१. सं० पा०—दसमस्स उक्खेवओ ।

२. ना० १।१।७ ।

३. वि० १।४।३६ ।

४. वि० १।४।११ ।

५. वि० १।२।१२-१४ ।

६. °नियच्छं (ख) ।

७. विस्तराइं (ख, घ); विसराइं (ग);

८. वि० १।२।१५ ।

९. पू०—वि० १।२।१६ ।





# वीओ सुयवखंधो

## पढमं अज्भयणं

### सुवाहू

#### उक्खेव-पदं

१. तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नयरे, गुणसिलए चेइए । सुहम्मे समोसढे । जंबू जाव' पज्जुवासमाणे' एवं वयासी—जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं दुहविवागाणं अयमट्टे पणत्ते, सुहविवागाणं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं के अट्टे पणत्ते ?
२. तए णं से सुहम्मे अणगारे जंबू-अणगारं एवं वयासी—एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं सुहविवागाणं दस अज्भयणा पणत्ता, तं जहा—

सुवाहू भद्दंदी य, सुजाए य सुवासवे ।

तहेव जिणदासे य, घणवई य महव्वले ॥

भद्दंदी महच्चंदे, वरदत्ते 'तहेव य" ॥ १॥

३. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं सुहविवागाणं दस अज्भयणा पणत्ता, पढमस्स णं भंते ! अज्भयणस्स सुहविवागाणं समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं के अट्टे पणत्ते ?

१. वि० १११३,४ ।

२. पज्जुवासइ (क, ख, ग, घ) ।

३. ना० १११७ ।

४. ना० १११७ ।

५. × (क, ख, ग, घ); मुद्रितप्रत्यनुसार

गृहीतीयं पाठः ।

६. ना० १११७ ।



१२. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे समोसाहे । परिमा निग्गया । अदीणसत्तु जहा कूणिणं तहा निग्गए । गुचाहं वि जहा जमानी तहा र्हेंणं निग्गए जाव' धम्मो कहिओ । रागा परिमा गया ॥
१३. तए णं से सुवाहुकुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्टुत्ते उट्टाए उट्टेइ जाव' एवं वयासी -सट्टहामि णं भंते ! निग्गयं पावयणं । जहा णं देवाणुप्पियाणं अंतिए वद्धे राईसर<sup>१</sup>-•तलवर-माडंवि-कोडुंवि-इठ्ठभ-सेट्ठि-मेणावट-सत्थवाहण्णभियओ मंटे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वयंति ° नो खलु अहं तहा संचाएमि पव्वइत्ताए, अहं णं देवाणुप्पियाणं अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं—दुवालसविहं गिहिधम्मं पडिवज्जामि । अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिवंधं करेह ॥
१४. तए णं से सुवाहू समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं—दुवालसविहं गिहिधम्मं पडिवज्जइ, पडिवज्जित्ता तमेव चाउघटं आसरहं दुरुहइ, दुरुहित्ता जामेव दिसं पाउट्भूए तामेव दिसं पडिगए ॥

### सुवाहुस्स पुव्वभवपुच्छा-पदं

१५. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूई जाव' एवं वयासी—अहो णं भंते ! सुवाहुकुमारे इट्ठे इट्ठरूवे कंते कंतरूवे पिए पियरूवे मणुण्णे मणुण्णरूवे मणामे मणामरूवे सोमे सोमरूवे सुभगे सुभगरूवे पियदंसणे सुरूवे ।
- वहुजणस्स वि य णं भंते ! सुवाहुकुमारे इट्ठे इट्ठरूवे कंते कंतरूवे पिए पियरूवे मणुण्णे मणुण्णरूवे मणामे मणामरूवे सोमे सोमरूवे सुभगे सुभगरूवे पियदंसणे सुरूवे ।
- साहुजणस्स वि य णं भंते ! सुवाहुकुमारे इट्ठे इट्ठरूवे °कंते कंतरूवे पिए पियरूवे मणुण्णे मणुण्णरूवे मणामे मणामरूवे सोमे सोमरूवे सुभगे सुभगरूवे पियदंसणे ° सुरूवे ।
- सुवाहुणा भंते ! कुमारेणं इमा<sup>१</sup> एयारूवा उराला माणुसिड्डी<sup>२</sup> किण्णा लद्धा ? किण्णा पत्ता ? किण्णा अभिसमण्णागया ? के वा एस आसि पुव्वभवे<sup>३</sup> ? •किं

१. समोसरणं (क, ख, ग, घ) ।

२. ओ० सू० ५५-६६ ।

३. भ० ६।१५८-१६३ ।

४. ना० १।१।१०१ ।

५. पू०—राय० सू० ६६५ ।

६. सं० पा०—राईसर जाव नो खलु अहं ।

७. वि० १।१।२४, २५ ।

८. सं० पा०—इट्ठरूवे जाव सुरूवे ।

९. इमे (क, ख) ।

१०. माणुस्सिड्डी (ख); माणुस्सरिड्डी (घ) ।

११. सं० पा०—पुव्वभवे जाव अभिसमण्णागया ।



२३. तए णं तस्स सुमुहस्स' गाहावड्ढग्ग भेणं पव्वसुद्धेणं 'दायगसुद्धेणं दानगसुद्धेणं'  
तिविहेणं तिकरणसुद्धेणं मग्गं अणगारं भवित्ताभियं सनार्थं संसारे परिस्तीकए',  
मणुस्साउए, निवड्ढे, गेहसि ग भे इमाए पन विव्वाए पाउउभूगाइ, [तं जहा—  
वसुहारा बुद्धा, दसद्धवणं कुमुभे निवानिने, भेलुगोभे काए, आहवाओ देवदुंहु-  
भीओ, अतरा वि य णं आगामासि 'अहो धाणे अहो धाणे' धुंहु गे'।] हत्थिणाउरे  
सिघाडग'—० तिग-चउतक-चउत्तर-नउम्मुह-महागह ० पहेणु वहुजणी अणमण्णस्स  
एवं आइवखइ एवं भासिइ एवं पण्णवेइ एवं पस्सेइ ० अण्णे णं देवाणुप्पिया !  
सुमुहे गाहावई' ० पुण्णे णं देवाणुप्पिया ! सुमुहे गाहावई एवं—कयत्थे णं  
कयलवखणे ण सुलद्धे णं सुमुहरस गाहावड्ढस्स जम्मजीवियफले, जस्स णं इमा  
एयारूवा उराला माणुस्सिद्धी लद्धा पत्ता अभिसमण्णागया ० ॥  
तं धण्णे णं देवाणुप्पिया ! सुमुहे गाहावई पुण्णे णं देवाणुप्पिया ! सुमुहे  
गाहावई एवं—कयत्थे णं कयलवखणे णं सुलद्धे णं सुमुहस्स गाहावड्ढस्स जम्म-  
जीवियफले, जस्स णं इमा एयारूवा उराला माणुस्सिद्धी लद्धा पत्ता अभि-  
समण्णागया ॥

२४. तए णं से सुमुहे गाहावई वहुइं वाससयाइं आउयं पालेइ, पालइत्ता कालमासे  
कालं किच्चा इहेव हत्थिसीसे नयरे अदीणसत्तुस्स रण्णो धारिणीए देवीए  
कुच्छिसि पुत्तत्ताए उववण्णे ॥

२५. तए णं सा धारिणी देवी सयणिज्जंसि सुत्तजागरा ओहीरमाणी-ओहीरमाणी  
तहेव सीहं पासइ, सेसं तं चेव जाव' उप्पि पासए विहरइ । तं एवं खलु गोयमा !  
सुवाहुणा इमा एयारूवा माणुस्सिद्धी लद्धा पत्ता अभिसमण्णागया ॥

२६. पभू णं भंते ! सुवाहुकुमारं देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंहे भवित्ता अगाराओ  
अणगारियं पव्वइत्तए ?  
हंता पभू ॥

२७. तए णं से भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता  
संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥

२८. तए णं समणे भगवं महावीरे अण्णया कयाइ हत्थिसीसाओ नयराओ  
पुप्फकरंडयउज्जाणाओ कयवणमालपियजक्खाययणाओ पडिनिक्खमइ,  
पडिनिक्खमित्ता वहिया जणवयविहारं विहरइ ॥

१. 'तस्स सुमुहस्स' ति विभक्तिपरिणामात्

'तेन सुमुहेने' ति द्रष्टव्यम् (वृ) ।

२. दायगसुद्धेणं पडिगासुद्धेणं (घ) ।

३. परिस्तीकए (घ) ।

४. निवाडिए (क्व) ।

५. अहोदाणं २ (घ) ।

६. कोष्ठकवर्ती पाठः व्याख्यांशः प्रतीयते ।

७. सं० पा०—सिघाडग जाव पहेसु ।

८. सं० पा०—गाहावई जाव तं धण्णे ।

९. वि० २।१।६-११ ।



अज्भक्तियं जाव' वियाणित्ता पुव्वाणुपुट्टिव' •नरमाणे गामाणुगामं°  
दूइज्जमाणे जेणेव हत्थिसीरे नयरे जेणेव पुप्फकरंउयउज्जाणे जेणेव कयवण-  
मालपियस्स जक्खस्स जक्खाययणं तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिखं  
श्रोमहं श्रोणिहत्ता संजमेणं तवसा अण्णाणं भावेमाणे विहरइ । परिसा राया  
निग्गए ॥

३३. तए णं तस्स सुवाहुस्स कुमारस्स तं महया'•जणसाहं वा जाव' जणसण्णियायं  
वा सुणमाणस्स वा पासमाणस्स वा अयमेयारुवे अज्भक्तियए चितिए कप्पिए  
पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं जहा जमाली तथा° तिग्गओ ।  
धम्मो कहिओ । परिसा राया पडिगया ॥
३४. तए णं से सुवाहुकुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा  
निसम्म हट्टुट्टे जहा मेहो तथा अम्मापियरो आपुच्छइ । निक्खमणाभिसेओ  
तहेव जाव' अणगारे जाए इरियासमिए' जाव' गुत्तवंभयारी ॥

सुवाहुकुमारस्स आगामिभव-वण्णग-पदं

३५. तए णं से सुवाहू अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स तहारूवाणं थेराणं  
अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ, अहिज्जित्ता व्हूहिं चउत्थ-  
छट्टुट्टमतवोवहारणेहिं अण्णाणं भावेत्ता, व्हूइं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणित्ता,  
मासियाए सलेहणाए अण्णाणं भूसित्ता, सट्ठि भत्ताइं अणसणाए छेएत्ता  
आलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे देवत्ताए  
उववण्णे ॥
३६. से णं तओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता  
माणुस्सं विग्गहं लभिहिइ, केवलं वोहिं वुज्जिभहिइ, तहारूवाणं थेराणं अंतिए  
मुंडे भवित्ता° अगाराओ अणगारियं° पव्वइस्सइ ।  
से णं तत्थ व्हूइं वासाइं सामण्णं पाउणिहिइ । आलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते  
कालगए सणकुमारे कप्पे देवत्ताए उववज्जिहिइ° ।  
से णं ताओ माणुस्सं, पव्वज्जा, वंभलोए । माणुस्सं, महासुक्के । माणुस्सं,  
आणए । माणुस्सं, आरणे । माणुस्सं सव्वट्टसिद्धे ।  
से णं तओ अणंतरं उव्वट्टित्ता महाविदेहे वासे जाइं कुलाइं भवन्ति अड्ढाइं

१. वि० २।१।३१ ।

२. सं० पा०—पुव्वाणुपुट्टिव जाव दूइज्जमाणे ।

३. सं० पा०—तं महया जहा पढमं तथा ।

४. भ० ६।१५८ ।

५. ना० १।१।१०-१-१५१ ।

६. रियासमिए (क) ।

७. वि० १।१।७० ।

८. अत्ताणं (ख) ।

९. सं० पा०—भवित्ता जाव पव्वइस्सइ ।

१०. उववण्णे (क, ख, ग, घ) ।





## वीयं अज्भयणं महनंदी

१. वित्तियस्स उक्खेवओ ।  
एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं उसाभपुरे नयरे । धूभकरंडग  
उज्जाणं । धणो जवखो । धणावहो राया । सरस्सई देवी ।  
सुमिणदंसणं कहणा, जम्मं वालत्तणं कलाधो य ।  
जोव्वणं पाणिग्गहणं, दाओ पासाय भोगा य ॥१॥  
जहा सुवाहुस्स, नवरं—भहनंदी कुमारे । सिरिदेवीपामोक्खा णं पंचसया ।  
सामीसमोसरणं । सावगधम्मं । पुव्वभवपुच्छा । महाविदेहे वासे पुंडरीगिणी<sup>१</sup>  
नयरी । विजए कुमारे । जुगवाहू तित्थयरे<sup>२</sup> पडिलाभिए । मणुस्साउए निवद्धे ।  
इह उप्पण्णे । सेसं जहा सुवाहुस्स जाव<sup>३</sup> महाविदेहे वासे सिज्झिह्हिइ  
वुज्झिह्हिइ मुच्चिह्हिइ परिणिव्वाहिइ सव्वदुक्खाणमंतं काहिइ ।  
निकखेवओ ॥

## तच्चं अज्भयणं सुजाए

१. तच्चस्स उक्खेवओ ।  
वीरपुरं नयरं । मणोरमं उज्जाणं । वीरकण्हमित्ते<sup>४</sup> राया । सिरी देवी । सुजाए  
कुमारे । वलसिरीपामोक्खा पंचसया । सामीसमोसरणं । पुव्वभवपुच्छा ।  
उसुयारे नयरे । उसभदत्ते गाहावई । पुप्फदंते अणगारे पडिलाभिए ।  
मणुस्साउए निवद्धे । इहं उप्पण्णे जाव<sup>५</sup> महाविदेहे वासे सिज्झिह्हिइ  
वुज्झिह्हिइ मुच्चिह्हिइ परिणिव्वाहिइ सव्वदुक्खाणमंतं काहिइ ।  
निकखेवओ ॥

१. पुंडरिगिणी (क); पुंडरिगिणी (घ) ।  
२. तित्थंकरे (ख) ।  
३. वि० २।१।६-३६ ।

४. वीरकण्ह० (क) ।  
५. वि० २।१।६-३६ ।



## सत्तमं अज्भयणं

### महव्वले

१. सत्तमस्स उक्खेवओ ।

महापुरं नयरं । रत्तासोगं उज्जाणं । रत्तपाओ जक्खो । वले राया । सुभदा देवी । महव्वले कुमारे । रत्तवईपामोक्खा पंचसया । तिथयरागमणं जाव पुव्वभवो । मणिपुरं नयर । नागदत्ते गाहावई । इंदपुत्ते अणगारे पडिलाभिए जाव' सिद्धे ॥

## अट्ठमं अज्भयणं

### भट्टनंदी

१. अट्ठमस्स उक्खेवओ ।

सुघोसं नयरं । देवरमणं उज्जाणं । वीरसेणो<sup>३</sup> जक्खो । अज्जुणो राया । तत्तवई देवी । भट्टनंदी कुमारे । सिरिदेवीपामोक्खा पंचसया जाव पुव्वभवे । महाघोसे नयरे । धम्मघोसे गाहावई । धम्मसीहे अणगारे पडिलाभिए जाव' सिद्धे ॥

## नवमं अज्भयणं

### महच्चंदे

१. नवमस्स उक्खेवओ ।

चंपा नयरी । पुण्णभट्टे उज्जाणे । पुण्णभट्टे जक्खे । दत्ते राया । रत्तवती देवी । महच्चंदे कुमारे जुवराया । सिरिकंतापामोक्खा णं पंचसया जाव पुव्वभवो । तिगिच्छी नयरी । जियसत्तू राया । धम्मवीरिए अणगारे पडिलाभिए जाव' सिद्धे ॥

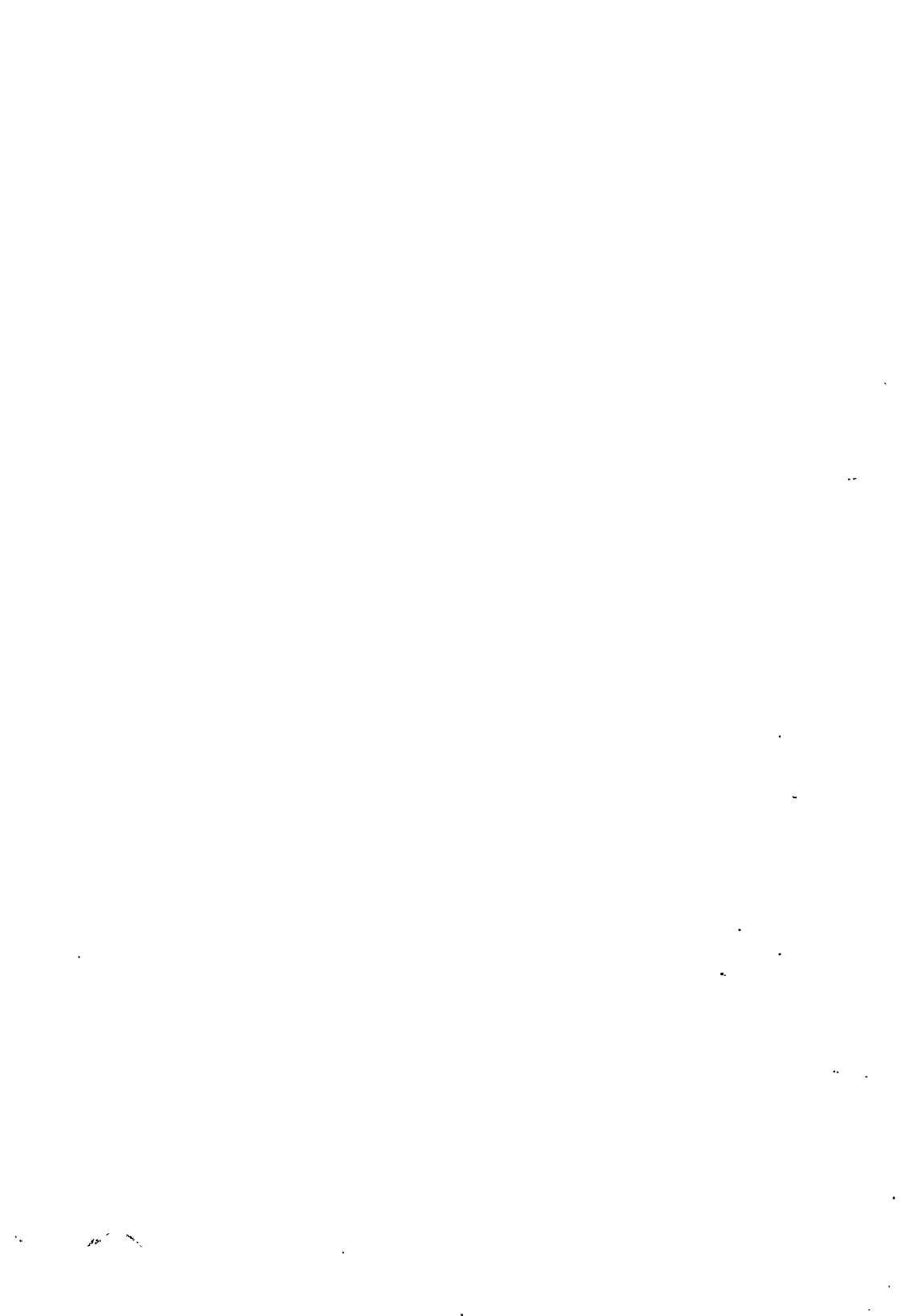
१. वि० २।१।६-३३ ।

२. वेरसेणो (क) ।

३. वि० २।१।६-३६ ।

४. वि० २।१।६-३६ ।







अणंते जाव समुष्णणे	११८१२५	वृत्ति
अणंते णाणे समुष्णणे जाव गिदा	११९३३२४	११५८४
अणगारवण्णओ भाणियच्चो	११११९४	ओ० सू० १६४
अणगारे जाव इहमागत	११५१६८	ओ० सू० ५२
अणगारे जाव पज्जवासमाणे	२१११४	१११७
अणिट्टतराए चेव जाव गंघेणं	११९२१३	१८५२
अणिट्ठा जाव अमणामा	११९६१६७	१११४६
अणिट्ठा जाव दंसणं	११९४१४३	११९४३६
अणिट्ठा जाव परिभोगं	११९४१५०	११९४३६
अणुत्तरे पुणरवि तं चेव जाव तओ		
पच्छा भुत्तभोगी समणस्स भगवओ		१११११२
जाव पव्वइस्ससि	१११११३	१८१२०५
अण्णं च तं विउलं	११८१२०७	११५५३
अण्णमण्णं जाव समणे	११९३१३८	ओ० सू० ६८
अत्यत्थिया जाव ताहि इट्ठाहि जाव अणवरयं	१११११४३	११९६११
अत्यामा जाव अधारणिज्ज०	११९६१२५३	११५१२२२
अपत्थिय जाव परिवज्जिए	११८१२२८	उवा० १२१२२
अपत्थियपत्थिए जाव वज्जिए	११५११२२	११५१२२२
अपत्थियपत्थिया जाव परिवज्जिया	११८१७४	११९६१८
अपुष्णाए जाव निवोलियाए	११९६१२५	११११०४
अवभणुष्णाए जाव पव्वइत्तए	११९२१३६	११५१२२४
अवभुज्जएणं जाव विहरित्तए	११५१११८; ११९१२८	११५१६६
अवमुट्ठेसि जाव वंदसि	११५१६७	११११९६१
अभिसिचइ जाव पडिगए	११९६१२८०	१११११७-११९
अभिसिचइ जाव राया जाए विहरइ	११५१६३-६५	११२१७
अमच्चे जाव तुसिणीए	११९२११५	११११०७
अम्मयाओ जाव पव्वइत्तए	११११०९	१११३३
अम्मयाओ जाव सुलद्धे	११११२	१११४८
अयमेयारूवे जाव समुष्पज्जित्था	११५१६५	११८१६४
अरहण्णग जाव वाणियगाणं	११८१६७	११८१६६
अरहण्णग संज्जत्तगा	११८१८४	११९६१३३४
अरिट्ठेनेमि जाव गमित्तए	११९६१३२०	११११०६
अरिट्ठेनेमिस्स जाव पव्वइत्तए	११५१२०	११९६११
अवंगुणेइ जाव पडिगए	११९६१६५	





आएहि य जाव परिणामेमाणा	११८१०४	११८१६८
आउक्खएणं जाव चइत्ता	११९६१२३	११९२१२
आढंति जाव पज्जुवासंति	११९६१८८	११९६१८६
आढाइ जाव तुसिणीए	११९२१७;११९६१५	११८१७०
आढाइ जाव तुसिणीया	२११३६	११८१७०
आढाइ जाव नो पज्जुवासइ	११९६१९०	११९६१८६
आढाइ जाव भोगं	११९४६१	११९४६०
आढाइ जाव संचिट्ठइ	११९६३०	११८१७०
आढायंति °	११९१५५	११९१५४
आढायंति जाव संलवेंति	११९१५४	११९१५४
आपुच्छइ जाव पडिगए	११९६२००	११९१६१
आपुच्छणिज्जं जाव वड्ढावियं	११७४२	११७६
आपुच्छामि जाव पव्वयामि	११९२३८	११९१०१
आपुच्छामि तएणं जाव पव्वयामि	११९६१२	११९१०१
आरोग्तुट्ठी जाव दिट्ठे	११९२६	११९२०
आलवे वा जाव भविस्सइ	११९६३१२	११८१८६
आलिघरएसु य जाव कुसुमघरएसु	१३१९६	वृत्ति
आलोएहि जाव पडिज्जाहि	११९६११५	वृत्ति
आसयंति वा जाव तुयट्ठंति	११७२२	११७२२
आसाएइ जाव अणुपरियट्ठिस्सइ	११९६४२	१६४४
आसाएमाणीओ जाव परिभुंजेमाणीओ	१२११७	११८१
आसाएमाणी जाव विहरइ	१२११४	११८१
आसाएमाणे जाव विहरइ	११२१२२	११८१
आसायणिज्जं जाव सन्विदिय०	११२१२०	११२१४
आसायणिज्जे जाव सन्विदिय०	११२११६	११२१४
आसिय जाव गंधवट्ठिभूयं	११५६७	११३३
आसिय जाव परिगीयं	१११७६	वृत्ति
आसुरुत्ता जाव मिसिमिसेमाणा	११९६२८	११९१६१
आसुरुत्ते जाव तिवलियं	५१८१५६	११८१०६
आसुरुत्ते जाव तिवलियं एवं	११९६२८६	११८१०६
आसुरुत्ते जाव पउमनाभं	११९६२८०	११८१०६
आसुरुत्ते जाव मिसिमिसेमाणे	११५१२२	११९१६१
आहारे वा जाव पव्वयामो	११८१३	११५६०
आहेवच्चं जाव अभिरमेत्था	११९१६७	११९१५७
आहेवच्चं जाव पालेमाणे	११५६	११९१८



उम्मुक्कवालभावे जाव जोव्वणग०	११४१२२	१११२०
उरालस्स क सि घ मं जाव गुमिणस्स	११११६	११११६
उरालाई जाव भुंजमाणा	११२१४०	११६११३३
उरालाई जाव विहरइ	१११४१२०	११२१४०
उरालाई जाव विहरिज्जामि	११२६११३३	११२६११३३
उरालाई जाव विहरिस्सइ	११२६१२०४	११२६११३३
उराले जाव तेयलेस्से	११२६१२२	१११६
उरालेणं तहेव जाव भासं	१११२०४	१११२०२
उव्वेए जाव फासेणं	११२१४	११२१३
उव्वत्तिज्जमाणे जाव टिट्टियावेज्जमाणे	११३१२२	११३१२१
उव्वत्तेइ जाव टिट्टियावेइ	११३१२६	११३१२१
उव्वत्तेति जाव दंतेहि निव्वखुडेति जाव करेत्तए	११४११६	११४१११
उव्वत्तेति जाव नो चेव णं संचाएति करेत्तए	११४१२२	११४१११
एगदिस्सि जाव चाणियगा	११५१६७	११५१६२
एगयओ जहा अरहन्नेए जाव लवणसमुद्धं	१११७५	११५१६६
एज्जमाणि जाव निव्वेसेह	११५१७१	१११४५; ११६११३१
एवं अत्थेणं दारेणं दासेहि पेसेहि परियणेणं	१११४१७७	१११४७७
एवं कुलत्था वि भाणियव्वा । नवरं इमं		
नाणत्तं—इत्थिकुलत्था य धन्नकुलत्था य ।		
इत्थिकुलत्था तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—		
कुलवहुयाइ य कुलमाउयाइ य कुलघ्नयाइ या		
धन्नकुलत्था तहेव	११५१७४	११५१७३
एवं जहा मल्लिणाए	११२६१२००	११५१५४
एवं जहा विजओ तहेव सब्वं जाव रायगिहस्स	११२५३१, ३२	११२५२०, २२
एवं जहा सूरियाभस्स जाव एवं	२१११५	राय० सू० ६६५
एवं जहेव तेयलिणाए सुव्वयाओ तहेव		
समोसढाओ तहेव संघाडओ जाव अणुपविट्ठे		
तहेव जाव सूमालिया	११२६१६४-६७	१११४४०-४३
एवं जहेव राई तहेव रयणी वि	२११५७-६०	२११४७-५०
एवं जाव घोसस्स	२१३१११	ठाणं २३५६-३६२
एवं जाव सागरदत्तस्स	११२६१५५-६१	११२६१६३-६६
एवं पत्तियामि णं रोएमि णं	११११०१	११११०१
एवं पाएहि सीसे पोट्टे कायंसि	११११५३	११११५३
एवं पायंगुलियाओ पायंगुट्टए वि		
कण्णसवकुलीओ वि नासापुडाई	१११४१२१	१११४१२१



कणग जाव दलयइ	१११६।१६८	१११।६१
कणग जाव पडिमाए	१।८।१८०	१।८।४१
कणग जाव सायएज्जं	१११८।३८	१११।६१
कणग जाव सिलप्पवाले	१११८।३३	१११।६१
कयकोउय जाव सब्वालंकारविभूसिया	१११।८१	११२।२६
कयस्थे जाव जम्म०	१११३।२५	११२।२५
कयवलिकम्मं जाव सब्वालंकारविभूसियं	१११६।७३	१११।८१
कयवलिकम्मा जाव पायच्छित्ता	१११।२७	१११।३३
कयवलिकम्मा जाव विपुलाइं जाव विहरइ	१११।३२	११२।६६
कयवलिकम्मे जाव रायगिहं	११२।५८	१११।८१
कयवलिकम्मे जाव सरिरे	१११।६६	१११।२७
कयवलिकम्मे जाव सब्वालंकार०	१११।४७	१११।८१
करयल०	१।५।६८, १२३; १।८।७३, ८१, ६८,	
	१५८, १६०; १।६।३१; १।१।४।३१, ५०	१११।१६
करयल०	१।८।२०३, २०४; १।१६।१३७, १६१,	
	२१६, २६४; १।१७।११	१११।२६
करयल०	१११६।२४६	१११।३६
करयल अंजलि	१११।५८, ६०	१११।१६
करयल जाव एवं	१११।३०; १।१६।१७०, २६२;	
	१।१६।१३, ४६; २।१।२०	१११।२६
करयल जाव एवं	१।६।१७; १।१।४।२७, २८; १।१६।४३	१११।२१
करयल जाव कट्टु	१११।११८; १।१६।१३३; २।१।११	१११।२६
करयल जाव कट्टु तहेव जाव समोसरह	१।१६।१४२	१११।१३२
करयल जाव कण्हं	१।१६।१३८	१११।१३७
करयल जाव पच्चप्पिणंति	१।८।१६६	१।८।१६५
करयल जाव पडिसुणेइ	१।८।१६५	१।१।२६
करयल जाव वद्धावेइ	१।१५।१८	१।१।४८
करयल जाव वद्धावेति	१।१६।२३६	१।१।४८
करयल जाव वद्धावेति	१।१७।२६	१।१।३६
करयल जाव वद्धावेत्ता	१।८।१३१; १।१६।२४४	१।१।४८
करयल जाव वद्धावेहि	१।८।१०७	१।१।४८
करयल तं चैव जाव समासोरह	१।१६।१३४	१११।१३२
करयल तहत्ति जेणेव	१।१।४।१३	१।५।१३
करयलपरिगहियं जाव अंजलि	१।१।२१	१।१।१६



खंतीए जाव बंगेचेरवासोणं	१११०१५	१११०३
खिज्जणाहि य जाव एममट्टं	१११०१४	१११०१०
खीरधाईए जाव गिरिकंदरमल्लीणा	१११६१३६	आधारभूता १५११४
गंध जाव उम्मुक्तं	११०८४	१११३०
गंध जाव पडिविसज्जेइ	१११६११६६	११०१६०
गंध जाव सक्कारेत्ता	११०१६	१११३०
गंधवेहि य जाव विहरंति	१११६११५२	१११६१५०
गज्जियं जाव थणियसट्ठे	११६१६	११०१७१
गणनायग जाव आमत्तेति	१११०११	१११२४
गणिमस्स जाव चउव्विहभंडगस्स	११०१६६	११०६६
गन्धस्स जाव विणेति	११२११७	११२११७
गय०	११०१६३	१११६७
गवलगुलिय जाव खुरधारेणं	११६११६	उवा० २१२२
गवल जाव एडेमि	११६१३७	११६१६६
गहाय जाव पडिगए	१११०३६	११०३००
गामघां वा जाव पंथकोट्टि	१११०२४	११०३००
गामागर जाव अणुपविससि	१११६२२६	११०३००
गामागर जाव आहिडह	१११४१४३; १११७११७	११०३००
गिण्हामि जाव मग्गणगवेसणं	११२२६	११२२७, २६
गुणे० किं चालेइ जाव नो परिच्चयइ	११०१७६	११०७४
घडएसु जाव संवसावेइ	१११२११६	११२११६
चउत्थ जाव भावेमाणे	११०११६	११११६५
चउत्थ जाव विहरइ	११५१०१; २११३३	११११६५
चउत्थ जाव विहरंति	११०१७, २५	११११६५
चउत्थस्स उक्खेवओ	२१४११	२१२११
चंपगपायवे०	१११०४६	११११०५
चच्चर जाव महापहपहेसु	११११६७	१११३३
चरगा वा जाव पच्चप्पिणंति	१११५१७	१११५६
चरमाणा जाव जेणेव	११२१६६	११११४
चरमाणे जाव जेणेव	११५११०	११११४
चरमाणे जाव जेणेव सुभूमिभागे जाव		
विहरइ	११५११००	११११४
चवलं० नहेहि	११४११७	११४११४
चारगसोहणं जाव ठिइपडियं	१११४३३, ३४	१११७६-७६





जिमिय जाव सूदभूया	११२१४	१११८१
जिमियभुत्तुत्तरागयं जाव सुहासण०	१११६१२१६	११२१४
जोव्वणेण य जाव नो एत्तु	११८१५४	११८६०
भोडा जाव मिलायमाणा	११११४	११११२
ठवेति जाव चिट्ठति	१११७२२	१११७२२
डिभएहि य जाव कुमारियाहि	११२१२७	११२२५
ण्हाए जाव पायच्छित्ते	१११४६४	१११२७
ण्हाए जाव सरणं उवेइ २ करयल एवं व	१११६१२६५	१११६२६४
ण्हाए जाव सुद्धप्पावेसाइं	११२१७१	११११२४
ण्हायं जाव पुरिससहस्सवाहिणीयं	१११४१५३	१११४१८
ण्हाया जाव पायच्छित्ता	११२१६६;११८१७६	१११२७
ण्हाया जाव वड्ढहिं	११८१६८	११८१७६
ण्हाया जाव सरीरा	११३१११	१११२७
ण्हायाणं जाव सुहासण०	१११६१८	११७१६
तइयज्जयणस्स उक्खेवओ	२११५६	२११५६
तइयवग्गस्स निक्खेवओ	२१३१२२	२११६३
तएणं से दूए एवं वयासी जहा वासुदेवे		
नवरं भेरी नत्थि जाव जेणेव	१११६११४३,१४४	१११६१३४-१४१
तं इक्खामि णं जाव पव्वइत्तए	११११११	११११०४
तं चेव जाव निरावयक्खे समणस्स		
जाव पव्वइत्तसि	११११०७	११११०६
तं चेव सव्वं भणइ जाव अत्थस्स	१११८५२	१११८५१
तं रयाणि च णं चोइस महासुमिणा		
वण्णओ	११८१२६	कल्पसूत्र ४
तक्करे जाव गिद्धे विव आमिसभक्खी	११२१३३	११२१११
तच्चं दूयं चंपं नयरिं । तत्थ णं तुम		
केण्णं अंगरायं सल्लं नंदिरायं करयल		
तहेव जावं समोसरह । चउत्थं दूयं		
सोत्तिमइं नयरिं । तत्थ णं तुमं सिमु-		
पालं दमघोससुयं पंचभाइसय-संपरिचुडं		
करयल तहेव जावं समोसरह । पंचमं		
दूयं हत्थिसीसं नयरिं । तत्थ णं तुमं		
दमदंतरायं करयल जावं समोसरह ।		
छट्ठं दूयं महुरं नयरिं । तत्थ णं तुमं		



तुरुष्क जाव गंधवट्टिभूयं	११२६।१५५	१११२२
तेसि जाव वहूणि	१११७।६	११।७१
थलय०	११।४६	११।३०
थलय जाव दसद्धवणं	११।३१	११।३०
थलय जाव मल्लेणं	११।३२	११।३०
थावच्चापुत्ते जाव मुंडे	११।५०	११।३४
थेरागमणं इंदकुंभे उज्जाणे समोसढा	११।५	११।१२
थेरा जाव आलित्ते	११२६।३१५	११११४६
दंडणाणि जाव अणुपरियट्टइ	११।१५	सूय० २।२।७५
दंडणाणि य जाव अणुपरियट्टइ	११।२४	११।२४
दसमस्स उक्खेवओ एवं खलु जंबू जाव अट्ट	२।१०।१,२	२।२।१,२
दाणधम्मं च जाव विहरइ	११।१४१ १५२	११।१४०
दारियं जाव भियायमाणि	११२६।६४	११२६।६२
दासचेडियाहि जाव गरहिज्जमाणी	११।१४७	११।१४६
दाहिणद्धुभरहस्स जाव दिसं	११२६।२६६	११२६।२६७
दिट्ठे जाव आरोग्ग	११।२०	११।२०
दित्ते जाव विउलभत्तपाणे	११।२।७	वृत्ति
दीहमद्धं जाव वीईवइस्सइ	११।७६	११।६७
दुपयस्स वा जाव निव्वत्तेइ	११।१२६	११।११६
दुरुहइ जाव पच्चोरुहइ	११२७।१३	११।१०२
दुरुहति जाव कालं	११२६।३२३	११२६।३२३
दुरूढा जाव पाउव्ववति	११।१४	११।६१
दुइज्जमाणा जाव जेणेव	११२६।३२१	११।१४
दुइज्जमाणे जाव विहरइ	११२६।३२०	११।१४;११२६।३१६
देवकन्ना	११।१५४	११।५६
देवकन्ना वा जाव जारिसिया	११।५६,१११	वृत्ति
देवयभूयाए जाव निव्वत्तिए	११।१२५	११।१२६
देवलोगाओ जाव महाविदेहे	११२६।२४	११।२१२
देवाणुप्पिया जाव कालगए	११२६।३२३	११२६।३२२
देवाणुप्पिया जाव जीवियफले	११।७६	उत्ता० २।४०
देवाणुप्पिया जाव नाइ	११२६।२६५	११।१२३
देवाणुप्पिया जाव पव्वत्तिए	११२६।३४	११।२१६
देवाणुप्पिया जाव साहराहि	११२६।२४२	११२६।२४०
देवाणुप्पिया जाव सुलद्धे	११२६।२६	११२६।२६
देवी जाव पंडुस्स	११२६।३०१	११२६।२६२



नाइ चउण्ह य कुल जाव विहराहि	१७०२५	१७०६
नाइ जाव आमंतेइ	११४५३	१७०६
नाइ जाव नगरमहिलाओ	१२११६	१२१२२
नाइ जाव परियणं	११४१६	११५११
नाइ जाव परियणेण	११६४८	११५११
नाइ जाव परिवुडे	११६५०	१५१२०
नाइ जाव संपरिवुडे	११३१५; ११४५३	१५१२०
नामं वा जाव परिभोगं	११६१६७	११४३६
नाम जाव परिभोगं	११४३७	११४३६
नासाानीसासवायवोज्झं जाव		
हंसलकखणं	१११२८	आयारचूला १५१२८
निक्खेवओ	२४१६	२१४५
निक्खेवओ अज्झयणस्स	२२१८	२१४५
निक्खेवओ चउत्यवग्गस्स	२४१६	२१६३
निक्खेवओ दसमवग्गस्स	२१०१७	२१६३
निक्खेवओ पढमज्झयणस्स	२३१८	२१४५
निक्खेवओ विइयवग्गस्स	२२११०	२१६३
निग्गंथा जाव पडिसुणेंति	११६१२३	११२६
निग्गंथाणं जाव विहरित्तए	१५१२४	१५११४
निग्गंथी वा	११८६१	१२१६८
निग्गंथी वा जाव पव्वइए	१७०२७; ११०१३; १११३, ५	१२१६८
निग्गंथे वा जाव पव्वइए	१२१७६	१२१६८
निग्गंथो वा	११७०२५, ३६	१२१६८
निग्गंथी वा जाव पंचसु	११५१४	१३१२४
निग्गंथो वा २ जाव विहरिस्सइ	१५१२६	१२१७६
निट्ठियं जाव विज्जायं	१११६८	१११६३
निप्पाणे जाव जीवविप्पजडे	११८५४	१२३२
नियगं	१७०६	११५११
निव्वत्तिनामधेज्जे जाव चाउदंते	१११६७	१११५६
निव्वाघायंसि जाव परिवुड्डइ	११६३६	रायं सू० ८०४
निसंते जाव अब्भणुणाया	११४५०	१११०४
निसम्मं जं नवरं महव्वलं कुमारं		
रज्जे ठावेमि	११८८	१५१८७
निसीयइ जाव कुसलोदंतं	११६१६८	११६१८७



पतिवया जाव अपासमाणी	११९६।६२	११९६।५६
पत्ति ए जाव सल्लइयपत्तइए	११७।१५	११७।१४
पत्तिया जाव चिट्ठंति	११११।२	११११।२
पत्तेयं जाव पहारेत्थ	११९६।१७१	११९६।१४६
पमाएयव्वं जाव जामेव	११५।३३	१११।१४८
परलोए नो आगच्छइ जाव वीईवइस्सइ	१११५।१४	११२।७६
परिग्गहि ए जाव परिवसित्तए	११८।१३१	११८।१०७
परिणमंति तं चेव	१११२।१७	१११२।६
परिणममाणा जाव ववरोवेति	१११५।१५	१११५।११
परिणामेणं जाव जाईसरणे	१११३।३५	१११।६०
परिणामेणं जाव तयावरणिज्जाणं	१११४।८३	१११।१६०
परितंता जाव पडिगया	१११३।३१	११४।१६
परिपेरत्तेणं जाव चिट्ठंति	१११७।२२	१११७।२२
परियागए जाव पासित्ता	११३।१६	११३।५
परियाणह जाव मत्थयंसि	१११।४८	१११।४८
पल्लंसि जाव विहरंति	११७।२०	११७।१६
पवर जाव पडिसेहिया	१११६।२५६	११८।१६५
पवर जाव भीए	१११८।४४	१११८।२२
पवरविवडिय जाव पडिसेहिया	१११६।२५३	११८।१६५
पव्वए जाव सिद्धे	११५।१०४, १०५	११५।८३, ८४
पव्वावेइ जाव उवसंपज्जित्ता	२।१।३०, ३१	१११।१५०, १५१
पव्वावेइ जाव जायामायाउत्तियं	१११।१६२	१११।१५०
पसन्थदोहला जाव विहरइ	११८।३३	१११।६८, ६९
पाणाइवाएणं जाव मिच्छदंसणसल्लेणं	१।६।४	१११।२०६
पाणाणुकंपयाए जाव अंतरा	१११।१८६	१११।१८१
पाणाणुकंपयाए जाव सत्ताणुकंपयाए	१११।१८२	१११।१८१
० पामोक्खे जाव वाणियगा	११८।८१	११८।६६
० पामोक्खे जाव वाणियगे	११८।८३	११८।६६
पायसंघट्टाणाणि य जाव रयरेणुमुंडणाणि	१११।१८६	१११।१५३
पावयणं जाव पव्वइए	११२।७३	१११।१०१; भ० ६।१५०, १५१
पावयणं जाव से जहेयं	१११।२।३५	१११।१०१
पासाईए जाव पडिरूवे	१११।८६	१११।८६
पासित्ता जाव नो वंदसि	११५।६७	११५।६६
पियं जाव विविहा	१११।२०६	भ० २।५२





भगवओ जाव पव्वइत्ताए	१११११३	११११०४
भड०	११५१८४	११५१७
भवणवइ० तित्थयर०	११५१३६	कल्पमूत्र महावीरजन्म प्रकरण
भवित्ता जाव चोद्दसपुव्वाइं	११४१८२	११५१८०
भवित्ता जाव पव्वइत्ताए	११५१२०४; २११२७	११११०४
भवित्ता जाव पव्वइस्सामो	११२२१४०	११११०१
भवित्ता जाव पव्वयामो	११५१८६; ११६१३१०	११११०१
भाणियव्वाओ जाव महाघोसस्स	२१४१८	टाणं० २:३५५-३६२
भारहाओ जाव हत्थिणाउरं	११६१२४०	११६१२५४
भाव जाव चित्तेउं	११५११८	११५११७
भासासमिए जाव विहरइ	११५१३५-३७	वृत्ति
भीए जाव इच्छामि	११२१३६	११५१२१
भीए जाव संजायभए	११४१६६	११११६०
भीया जाव संजायभया	११६१२५, २७	११११६०
भीया वा	११५१७६	११५१७३
भीया संजायभया	११५१७२	११११६०
भुंजावेति जाव आपुच्छंति	११५१६६	११५१६६
० भुत्तुत्तरागए जाव सुइभूए	११२१४	११२१४
भेसज्जेहिं जाव तेगिच्छं	११६१२२	११५११०
भोगभोगाइं जाव विहरइ	११११६६	११११७
भोगभोगाइं जाव विहरति	११६११८३	१११३२
भोगभोगाइं जाव विहराहि	११६१२०८	१११३२
मइविकप्पणाहिं जाव उवणेति	११६१२४७	ओ० सू० ५७
मज्झमज्जेणं जाव सयं	११६११६६	११६१२१८
मट्टियाए जाव अविग्घेणं	११५१४३	११५१६०
मट्टियालेवे जाव उप्पत्तित्ता	११६१४	११६१४
मणुण्णे तं चेव जाव पल्हायणिज्जे	११२१८	११२१४
मत्थयच्छिहुाए जाव पडिमाए	११५११, ४२	११५११
मयूरपोयगं जाव नदुल्लगं	११३१२८	११३१७
महत्थं०	११५११	११५११
महत्थं जाव उवणेति	११५१४	११५११
महत्थं जाव तित्थयराभिसेयं	११५१२०५	१११११६
महत्थं जाव निक्कमणाभिसेय	११५१६८	१११११६
महत्थं जाव पडिच्छइ	११७११७	११५१२



रहमहया	११६।१४७	१।५।५७
राईसर जाव गिहाइं	११४।४३	१।५।५८
राईसर जाव विहरइ	१।५।१४६	१।५।१४०
रायाहीणा जाव रायाहीणकज्जा	११४।५६	११४।५६
रिउव्वेय जाव परिणिट्टिया	१।५।१३६	ओ० सू० ६७
रुट्टा जाव मिसिमिसेमाणी	१।२।५७	१।१।१६१
रूवेण य जाव उक्किट्टसरीरा	११६।२००	१।५।६०
रूवेण य जाव लावण्णेण	११६।१६०	१।५।३८
रूवेण य जाव सरीरा	११४।११	१।५।६०
रोयमाणा य जाव अम्मापिऊण	११८।१३	१।१।५।६
रोयमार्णि जाव नावयक्खसि	१।६।४०	१।६।४०
रोयमाणे जाव विलवमाणे	१।२।३४	१।२।२६
रोयमाणे जाव विलवमाणे	१।६।४७	१।६।४०
लद्धमईए जाव अमूढदिसाभाए	११७।१३	११७।१२
लवण जाव ओगाहित्तए	१।६।६	१।६।४
लवण जाव ओगाहेह	१।६।५	१।६।४
लवणसमुद्धे जाव एडेमि	१।६।२०	१।६।१६
लोइयाइं जाव विगयसोए	११८।५७	१।६।४८
वंदामो जाव पज्जुवासामो	११३।३८	ओ० सू० ५२
वंदित्तए जाव पज्जवासित्तए	२।१।१२	राय० सू० ६ वृत्ति
वण्णहेडं वा जाव आहारेइ	११८।४८	१।१।५।६१
वण्णेणं जाव अहिए	१।१०।४	१।१०।२
वण्णेणं जाव फासेणं	१।१२।३	१।१२।१२
वत्थ जाव पडिविसज्जेइ	११४।१६	१।५।१६०
वत्थ जाव सम्माणेत्ता	११६।५४	१।७।६
वत्थस्स जाव सुद्धेणं	१।५।६१	१।५।६१
वत्थे जाव तिसंभं	१।७।३३	१।७।६
वयासी जाव के अन्ने आहारे जाव पव्वयामि	१।१२।४५	१।५।६०
वयासी जाव तुसिणीए	११६।१६, १७	११६।१४, १५
वरतरुणी जाव सुरुवा	१।१।१३७	१।१।१३४
ववरोवेह जाव आभागी	१।१।५३	१।१।५२
वाइय जाव रवेणं	१।५।२०२	१।१।११८
वाणियमाणं जाव परियणा	१।५।६७	१।५।६६
वावाहं वा जाव छविच्छेयं	१।४।२०	१।४।११



सकोरेंट ह्यगय	११६११५७	११८५७
सवका जाव नन्नत्थ	११५१२५	११५१२४
सखिखिणियाइं जाव वत्थाइं	११८१२०३	११८१७६
सगज्जिया जाव पाउससिरी	११११६४	१११५६
सज्जइ जाव अणुपरियट्टिस्सइ	१११५११६	११३१२४
सण्णद्ध०	१११६१२४८	११२३२
सण्णद्ध जाव गहिया	१११६११३४;१११८१३५	११२३२
सण्णद्ध जाव पहरणा	१११६१२५१	११२३२
सण्णद्धवद्ध जाव गहियाउह०	१११६१२३६	११२३२
सत्तट्ट जाव उप्पयइ	११६१३७	११६१३६
सत्तट्टतलाइं जाव अरहन्नगं	११८१७७	११८१७३
सत्तमस्स वग्गस्स उक्खेवओ एवं खलु		
जंबू जाव चत्तारि	२१७११,२	२१२११,२
सत्तुस्सेहे जाव अज्जसुहम्मस्स	११११६	ओ० सू० ८२
सत्थवज्झा जाव कालमासे	१११६१३१	१११६१३१
सद्द जाव गंधाणं	४१११७१२	१११७१२२
सद्दफरिसरसंखुवगंधे जाव भुंजमाणे	११५१६	ओ० सू० १५
सद्दहंति जाव रोएति	१११५११३	११११०१
सद्दावेइ जाव जेणेव	११८१६६,१००	११८१६२,६३
सद्दावेइ जाव तं	११७११०	११७१७,७,६
सद्दावेइ जाव तहेव पहारेत्थ	११८११२२,११३	११८१६६,१००
सद्दावेइ जाव पहारेत्थ	११८११५५,१५६	११८१६६,१००
सद्दावेह जाव सद्दावेति	११११३६	११११३८
सद्देणं जाव अम्हे	११३११६	११३११८
समणस्स जाव पव्वइत्तए	१११११०७	१११११०४
समणस्स जाव पव्वइस्ससि	१११११०८,११२	१११११०६
समणाउसो जाव पंच	११७१३५,४३	११७१२७
समणाउसो जाव पव्वइए	१११०१५;११८१४८;१११६१४२,४७	११३१२४
समणाउसो जाव माणुस्सए	११६१५३	११६१४४
समणार्णं जाव पमत्ताणं	११५१११८	११५१११७
समणार्णं जाव वीईवइस्सइ	११३१३४	११२१७६
समणार्णं जाव सावियाण	१११७१३६	११२१७६
समणाण य जाव परिवेसिज्जइ	११८१२००	११८११६६,१६७
समत्तजालाकुलाभिरामे जाव अंजणगिरि०	१११६११४०	ओ० सू० ६३



सिञ्जिभहिइ जाव सन्वदुकताण०	१११६१४६	१११२१२
सिद्धे जाव प्पहीणे	११५१८४	ठाणं १२४६
सीलव्वय जाव न परिच्चयसि	११८१७४	११८१७४
सीलव्व तहेव जाव धम्मज्झाणोवगाए	११८१७७,७८	११८१७४,७५
सीहनाय जाव रवेणं	११८१६७	ओ०सू० ५२
सीहनाय जाव समुद्दरवभूयं	१११८१३५	११८१६७
सुइं वा०	११६१३७	११२१२६
सुइं वा जाव अलभमाणे	१११६१२१५	१११६१२१२
सुइं वा जाव लभामि	१११६१२२१	१११६१२१२
सुईं वा जाव उवलद्धा	१११६१२२६	१११६१२१२
सुकुमालपाणिपाए जाव सुरूवे	११५१८	ओ०सू० १४३
सुभरूवत्ताए	१११५११३	१११५१११
सुमिणपाढगपुच्छा जाव विहरइ	११८१२६	१११३२
सुमिणा जाव भुज्जो २ अणुव्वहति	१११३१	१११२६
सुरं च जाव पसन्नं	१११८१३३	१११६११४६
सुरट्टाजणवए जाव विहरइ	१११६१३१६	१११६१३१८
सुरूवा जाव त्रामहत्थेणं	१११६११६३	वृत्ति
सूमालं निव्वत्तवारसाहस्स इमं एयारूवं	१११६१३०५, ३०६	१११६१३३, ३४
सूमालिया जाव गए	१११६१८७	१११६१६२
से धम्मे अभिरुइए तए णं देवा पव्वइत्तए	१११६११३	११११०४
सेयवर ह्यगय महया भडचडगरपहकरेणं	१११६१२३७	११८१५७
सेसं जहा सागरस्स जाव सयणिज्जाओ	१११६१८१-८६	१११६१५६-६१
सोणियासवस्स जाव अवस्स०	१११८१६१	११११०६
सोणियासवस्स जाव विद्धंसणधम्मस्स	१११८१४८	११११०६
हए जाव पडिसेहिए	१११६१२५७	११८११६५
हट्ट जाव हियया	२११२०, २१, २४, २५	१११११६
हट्टतुट्ट जाव पच्चप्पिणंति	१११२३	१११११६, २२
हट्टतुट्ट जाव मत्थए	११५११३	१११२६
हट्टतुट्ट जाव हियए	१११२०; १११६१३३५	१११११६
हत्याओ जाव पडिनिज्जाएज्जासि	११७१६	११७१६
हत्थिखंध जाव परिवुडे	१११६११४६	१११६११४६
हत्थिखंधवरगए जाव सेयवरत्तामराहिं	११८११६३	११८१५७
हत्थिणाजरे जाव सरीरा	१११६१२०३	१११६१२००
हत्थी जाव छुहाए	११११८५	११११५७

1  
2  
3  
4  
5  
6  
7

8  
9  
10



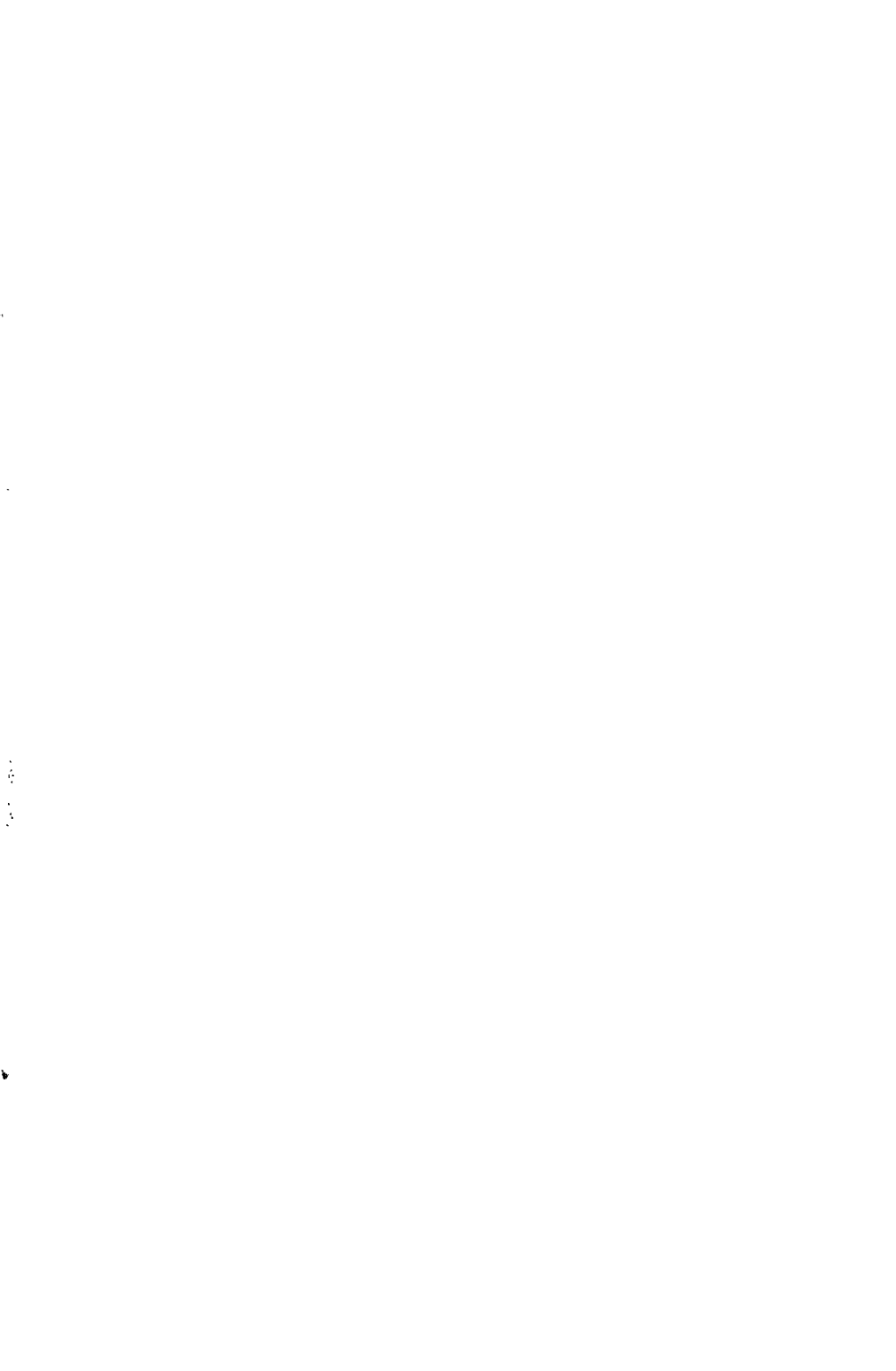
अग्निमित्ताए वा जाव विहरइ	७१२६	७१२६
अज्ज जाव ववरोविज्जसि	३१४४	२१२२
अज्जभवसाणेणं जाव खओवसमेणं	८१३७	११६६
अट्टेहि य जाव वागरणेहि	७१४८	६१२८
अट्टेहि य जाव निप्पट्टु०	६१२८	६१२८
अड्ढे चत्तारि	६१३,४;१०३,४	२१३,४
अड्ढे जहा आणंदो नवरं अट्टहिरण्णको- डीओ सकंसाओ निहाणपउत्ताओ अट्टहि वड्ढि अट्टहि सकंसाओ पवि अट्टवया दस गो साहस्सिएणं वएणं	८१३-५	११११-१३
अड्ढे जाव अपरिभूए	११११	ओ०सू० १४१
अणारिए जहा चुलणीपिया तथा चित्तेइ जाव कणीयसं जाव आईचइ	५१४२	३१४२
अणारिए जाव समाचरति	३१४४;४१४२	३१४२
अणुट्टाणेणं जाव अपुरिसक्कारपरक्कमेणं	६१२१,२२,२३;७१२३,२४	६१२०
अण्णदा कदाइ वहिया जाव विहरइ	११५४	ना० ११११६६
अपच्छिम जाव अणवकंखमाणे	११७२	११६५
अपच्छिम जाव भत्तपाण	८१४६	११६५
अपच्छिम जाव भूसियस्स	८१४६	११६५
अपच्छिम जाव वागरित्तए	८१४६	८१४६
अव्भणुण्णाए तं चेव सव्वं कहेइ जाव	११७६	११७१-७८
अभिगयजीवाजीवे जाव पडिलाभेमाणे	११५५	ओ० सू० १६२
अभिगयजीवाजीवे जाव विहरइ	८११६	ओ० सू० १६२
अभिगयजीवेजी णं जाव अणइक्कमणिज्जेणं	११३१	ओ० सू० १६२
अभीए जाव विहरइ	२१२६,३५; ३१२२	२१२३
अभीयं जाव धम्मज्झाणोवगयं	२१२४	२१२३
अभीयं जाव पासइ	२१४०;३१२३	२१२४
अभीयं जाव विहरमाणं	२१२८,३०	२१२४
अवहरइ वा जाव परिट्टवेइ	७१२६	७१२५
अस्सिणी भारिया । सामी सामासडे जहा आणंदो तहेव गिहिधम्मं पडिवज्जइ । सामी वहिया विहरइ	६१५-१५	२१५-१५
असोगवणिया जाव विहरसि	७११७	७१८
अहीण जाव सुरूवा	१११४	ओ० सू० १५
अहीण जाव सुरूवाओ	८१६	ओ० सू० १५



उप्यण्णणानदंसणधरे जाव तच्चकम्मसंपया	७।११,१८	७।१०
उप्यण्णणानदंसणधरे जाव महियपूइए		
जाव तच्च०	७।४५	७।१०
उरालाई जाव भुंजमाणे	८।२७	८।१६
उरालाई जाव विहरित्तए	८।१८	८।१८
उरालेणं जहा कामदेवे जाव सोहम्मे	३।५०-५२	२।५३-५५
उरालेणं जाव किसे	८।३५	१।६४
उरालेणं तवोकम्मेषं जहा आणंदो		
तहेव अपच्छिम०	८।३६	१।६५
एक्कारसमं जाव आराहेइ	१।६३	१।६२
एवं एक्कारस उवासगपडिमाओ तहेव जाव		
सोहम्मे कप्पे अरुणज्भए विमाणे जाव		
अंतं काहिइ	६।३५-४१	२।५०-५६
एवं तहेव उच्चारयेव्वं सव्वं जाव कणीयसं		
जाव आइंचइ । अहं तं उज्जलं जाव		
अहियासेमि	३।४४	३।२७-३८
एवं दक्खिणेषं पच्चत्थिमेणं च	१।६६; ८।३७	१।६६
एवं देवो दोच्चं पि तच्चं पि भणइ जाव		
ववरोविज्जसि	४।४१	४।३६
एवं मज्झिमयं, कणीयसं, एक्केक्के पंच		
सोल्लया । तहेव करेइ, जहा चुलणी-		
पियस्स, नवरं एक्केक्के पंच सोल्लया	४।२२-३८	३।२२-३८
एवं वण्णगरहिया तिण्णि वि उवसग्गा तहेव		
पडिउच्चारयेव्वा जाव देवो पडिगओ	२।४५	२।२४-४०
ओहयमणसंकप्पा जाव भियाइ	८।४२	रा० सू० ७६५
कज्जेसु य आपुच्छउ	१।५६	१।१३
कदाइ जहा कामदेवो तथा जेट्ठपुत्तं ठवेत्ता		
तथा पोसहसालाए जाव घम्मपण्णत्ति	६।३३, ३४	२।१८, १९
करएहि य जाव उट्टियाहि	७।७	७।७
करगा य जाव उट्टियाओ	७।२२	७।७
करेइ । सेसं जहा चुलणीपियस्स तथा		
भद्दा भणइ । एवं सेसं जहा चुलणीपियस्स		
निरवसेसं जाव सोहम्मे	४।४५-५२	३।४५-५२
कल्लं जाव जलंतै	१।५७; ७।१२	ओ० सू० २२



विहरइ । नवरं निरुवसगो एक्कारस्स वि		
उवासगपडिमाओ तहेव भाणियेव्वाओ एवं		
कामदेवगमेणं नेयव्वं जाव सोहम्मे	१०५-२५	२१५-१६,५०-५५
फलग जाव ओगिण्हत्ता	७१५१	११४५
फलग जाव संथारयं	७११६	११४५
वंभयारी जाव दब्भसंथारोवगए	२१४०	११६०
वंभयारी समणस्स	३११६	११६०
वहूहिं जाव भावेत्ता	२१५५	११८४
वहूणं राईसर जहा चित्तिं जाव विहरित्तए	११५७	११५७
वहूहिं जाव भावेमाणस्स	६१३३	२११८
भवित्ता जाव अहं	७१३७	११२३
भारिया जाव सम०	७१७८	७१७५
भोगा जाव पव्वइया	७१३७	ओ० सू० ५२
मंसमुच्छिया जाव अज्भोववण्णा	८१२०	वृत्ति
मत्ता जाव उत्तरिज्जयं	८१३८	८१२७
मत्ता जाव विकड्डुमाणी	८१४६	८१२७
महइ जाव धम्मकहा समत्ता	७११६	२१११
महावीरे जाव विहरइ	२१४२	१११७
महावीरे जाव विहरइ	२१४३;७११५	११२०
महावीरे जाव समोसरिए	१११७;७११२	ओ० सू० १६-२२
महासतयं तहेव भणइ जाव दोच्चं पि		
तच्चं पि एवं वयासी—हंभो तहेव	८१३८-४०	८१२७-२६
मारणंतिय जाव कालं	११६५	११६५
मित्त जाव जेट्ठपुत्तं	११५७	११५७
मित्त जाव पुरओ	११५६	११५७
मुंडे जाव पव्वइत्तए	११२३,५३	ओ० सू० ५२
मोहुम्माय जाव एवं वयासी तहेव जाव		
दोच्चं पि	८१४६	८१२७-२६
राईसर जाव सत्यवाहाणं	१११३	११२३
राईसर जाव सयस्स	११५७	११३३
लद्धट्टे जहा कामदेवो तथा निग्गच्छइ		
जाव पज्जुवासइ । धम्मकहा ।	६१२६,२७	२१४३,४४
वदणिज्जे जाव पज्जुवासणिज्जे	७११०	ओ० सू० २
वंदामि जाव पज्जुवासामि	७११५	ओ० सू० ५२



समणोवासया ! तहेव जाव ववरोविज्जसि	३।४१	३।३६
समणोवासया ! तहेव भणइ जाव न भंजेसि	२।२८	२।२२
समुप्पज्जित्था एवं जहा चुलणीपिया		
तहेव चित्तेइ	७।७८	३।४२
समोसरणं जहा आणंदो तहा निग्गओ ।		
तहेव सावयधम्मं पडिवज्जइ ।		
सात्थेव वत्तव्वया जाव जेट्टपुत्तं	२।७-१६	१।१७-२३, ५४-६०
सहइ जाव अहियासेइ	२।२७	वृत्ति
सहंति जाव अहियासेंति	२।४६	२।२७
सहित्तए जाव अहियासित्तए	२।४६	२।२७
साइमं जहा पूरणो जाव जेट्टपुत्तं	१।५७	भ० ३।१०२
सामी समोसडे । चुलणीपिया वि जहा आणंदो		
तहा निग्गओ । तहेव गिहिधम्मं पडिवज्जइ ।		
गोयम पुच्छा । तहेव सेसं जहा कामदेवस्स		
जाव पोसहसालाए	३।७-१६	२।७-१६
सामी समोसडे जहा आणंदो तहा गिहिधम्मं		
पडिवज्जइ । सेसं जहा कामदेवो जाव		
धम्मपण्णत्तिं	५।७-१६	२।७-१६
सामी समोसडे जहा कामदेवो तहा		
सावयधम्मं पडिवज्जइ । सा सव्वेव		
वत्तव्वया जाव पडिलाभेमाणी विहरइ	६।७-१७	२।७-१७
साहस्सीणं जाव अण्णेसि	२।४०	वृत्ति
सिंघाडग जाव पहेसु	५।३६	ओ० सू० ५२
सिंघाडग जाव विप्पइरित्तए	५।४२	५।३६
सीलव्वय-गुणेहिं जाव भावेत्ता	८।५३	१।८४
सील जाव भावेमाणस्स	७।५४	१।५७
सीलव्वय जाव भावेमाणस्स	८।२५	१।५७
सीलाइं जाव न भंजेसि	४।२१	२।२२
सीलाइं जाव पोसहोववासाइं	२।२२	२।२२
सीलाइं वयाइं न छड्ढेसि तो जीवियाओ	२।२४	२।२२
सुक्के जाव किसे	१।६४	भ० २।६४
सुद्धप्पावेसाइं जाव अप्पमहग्घा	७।१५, ३५	१।४६
सुरादेवे गाहावइ अड्ढे छ हिरण्णकोडीओ		
जाव छ व्वया दस गोसाहस्सिएणं वएणं		





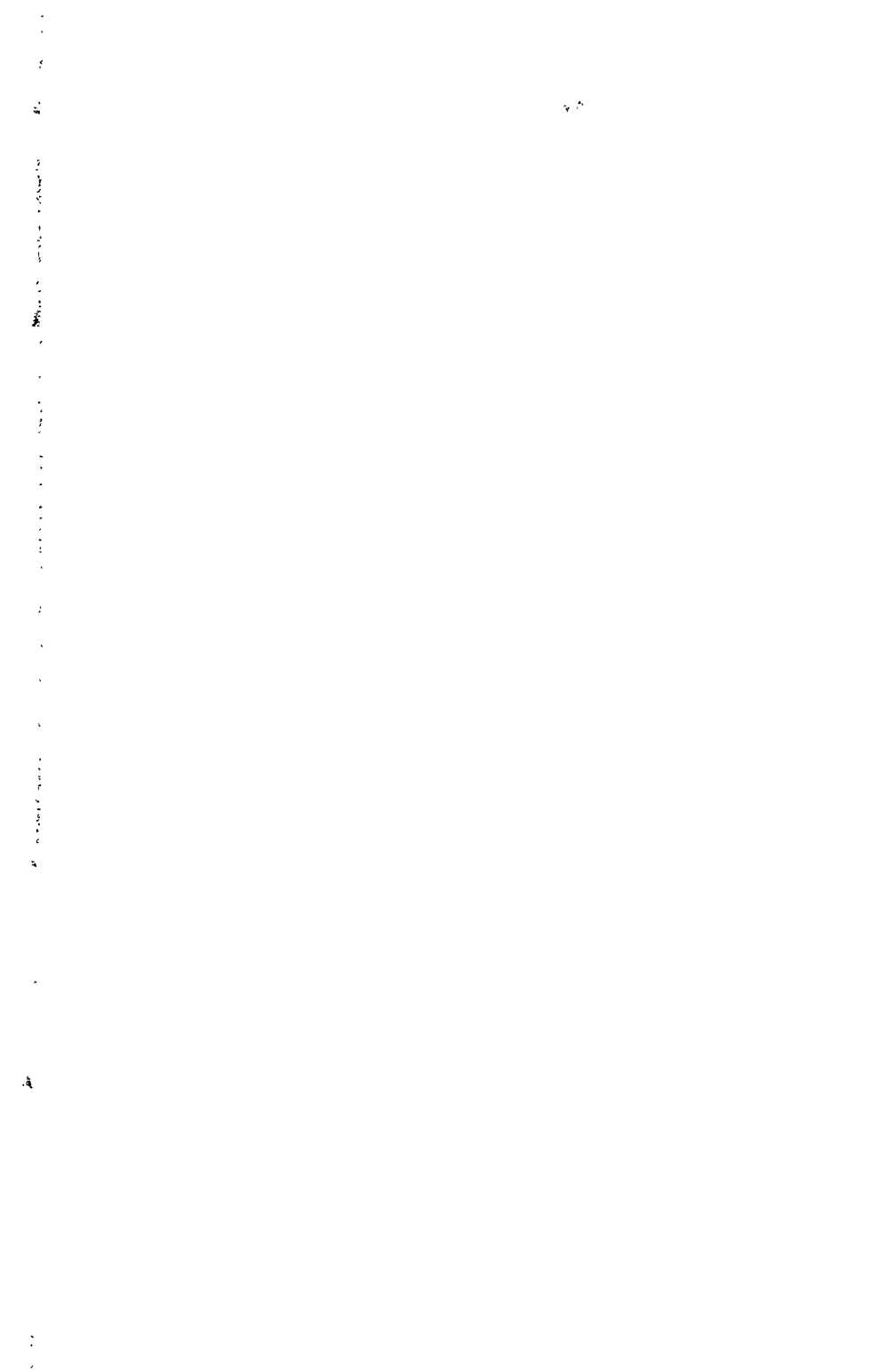
अणुत्तरे जाव केवल०	३१६२	वृत्ति
अतुरियं जाव अडंति	३१२३	भ० २११०८
अपत्तिय जाव परिवज्जिए	३१८६	उवा० २१२२
अपत्तियपत्तिए जाव परिवज्जिए	३११०२	३१८६
अरहवो मुंडे जाव पव्वाहि	३१७४	३१७०
अरिट्टनेमिस्स जाव पव्वइत्तए	५१११	३१७६
अहामुत्तं जाव आराहिया	८१८	ठा० ७११३
आघवणाहि०	६१६५	नाम १११११४
आपुच्छामि देवाणुप्पियाणं	१११६	ना० ११५१७
आसुएत्ते जाव सिद्धे	३११०१	३१८६-६२
आहेवच्चं जाव विहरइ	१११४	ना० ११५६
इच्छामि णं जाव उवसंपज्जित्ता	३११०१	३१८७,८८
ईसर जाव सत्थवाहाणं	१११४	ना० ११५६
उच्च जाव अडइ	६१७६	भ० २११०८
उच्च जाव अडमाणं	६१५५	भ० २११०६
उच्च जाव अडमाणा	३१२६,३०	३१२४
उच्च जाव अडमाणे	६१७८	२१२४
उच्च जाव अडामो	६१८०	३१२३
उच्च जाव पडिलाभेइ	३१२८,२६	३१२४,२५
उज्जाणे जाव पज्जुवासइ	३१६१	ना० १११६६
उज्जला जाव दुरहियासा	३१६०	ना० ११११६२
उत्तर०	६१५२	५१२६
उम्मुक्क जाव अणुप्पत्ते	३१५०	ना० १११२०
उरालेणं जाव घमणिसंतया	८११३	भ० २१६४
उवागए जाव पडिदसेइ	६१८७	६१५७
उवागच्छित्ता जाव वंदइ	३१६८	३१६१
ओहय जाव भियाइ	५११७	३१४३
ओहय जाव भियायइ	३१४३	ना० १११३४
करयल०	५१२२;६१३५,४१	ना० १११२६
करेइ जहा गोयमसामी जाव अडइ	६१५४	भ० २११०७,१०८
काएणं जाव दो वि पाए	३१८८	वृत्ति
कामा खेलासत्ता जाव विप्पजहियच्चा	३१७६	ना० ११११०६
कुमारस्स	१११६	राय० सू० ६८८
चउत्तय जाव अप्पाणं	८१६	५१३१



नेरइय जाव उववज्जंति	६।६४	६।६४
पउमावईए य धम्मकहा	५।८	राय०मू० ६६३
पव्वावेइ जाव संजमियव्वं	५।२८	ना० १।१।१५०
पारेइ जाव आराहिया	८।६	८।८
पावयणं जाव अब्भुट्टेमि	६।५१	ना० १।१।१०१
पुरिसं पाससि जाव अणुपवेसिए	३।१०४	३।६५
पोरिसीए जाव अडमाणा	३।३०	३।२२,२३
बहुयाहिं अणुलोमाहिं जाव आघवित्तए	३।७७	ना० १।१।११४
वारवईए उच्च जाव पडिविसज्जेइ	३।२६,२७	३।२४,२५
भगवं जाव समोसठे विहरइ	६।३३	ना० १।१।६४
भूतं जाव पव्वइस्संति	५।१४	५।१२
भूतं वा जाव पव्वइस्संति	५।१३	५।१२
मालागारे जाव घाएमाणे	६।३६	६।२८
मासियाए संलेहणाए वारस वासाइं		
परियाए जाव सिद्धे	१।२४	ना० १।५।८४
मुंडा जाव पव्वइया	३।३०;५।११	३।२०
मुंडा जाव पव्वयासि	५।२१,२२	३।२०
मुंडे जाव पव्वइए	६।५३	३।२०
मुंडे जाव पव्वइत्तए	५।१६	३।२०
मुंडे जाव पव्वइस्सइ	३।५०	३।२०
रज्जे य जाव अंतेउरे	५।११	ना० १।१।१६
रूवेणं जाव लावण्णेणं	३।५७	३।६०
लहुकरणजाणपवरं जाव उवट्टवेंति	३।३१	ना० १।१।१३३
विण्णवणार्हिं जाव परूवेत्तए	६।४५	६।४५
संजमेणं जाव भावेमाणे	६।८४	६।३३
संलेहणा जाव विहरित्तए	८।१४	८।१४
संलेहणाए जाव सिद्धे	३।१३	१।२४
समणेणं जाव छट्टस्स	६।१०२	४।७
समाणा जाव अहासुहं	३।३०	३।२०
समोसठे सिरिवणे उज्जाणे अहा जाव विहरइ	३।१२	ना० १।५।१०
सरिसया जाव नलकूवरसमाणा	३।३०	३।१६
सरिसियाणं जाव वत्तीसाए	३।१०	ना० १।१।६०
सिघाडग जाव उग्घोसेमाणा	५।१६	ना० १।५।२६



उक्कोस नेरइएमु	११३१६५	१११७०
उक्खित्त जाव सूले०	११६१६	११२११४
उक्खेवओ नवमस्स	११६११,२	११२११,२
उक्खेवओ सत्तमस्स	११७११,२	११२११,२
उग्घोसिज्जमाणं जाव चिंता	११४११२,१३	११२११४,१५
उज्जला जाव दुरहियासा	१११५६	वृत्ति
उम्मुक्क जाव जोव्वणग०	१११७०	वृत्ति
उम्मुक्कवालभावा जोव्वणेण रूवेण		
लावण्णेण य जाव अईव	११६१३४	११४१३६
उम्मुक्कवालभावे जाव विहरइ	११६१२६	११४१३५
उराले जाव लेस्से	२११२०	ओ० सू० ८२
उवगिज्जमाणे जाव विहरइ	११६१४८	ना० १११६३
उस्सुक्कं जाव दसरत्तं	११३१५२	वृत्ति
एवं पस्समाणे भासमाणे गेण्हमाणे जाणमाणे	१११५०	१११५०
ओह्य०	११२१२७	११२१२४
ओह्य जाव भियाइ	११२१२४;११६११६	वृत्ति
ओह्य जाव भियासि	११२१२५;११६११७	११२१२४
ओह्य जाव पासइ	११२१२५;११६११७	११२१२४
करयल०	११३१४०,५५,५६;११६१३८	१११६६
करयल०	११३१५०	११३१४०
करयल जाव एवं	११३१४४;११४१२८	११३१४०
करयल जाव एवं	११३१५२,५३;११६१३४	१११६६
करयल जाव पडिसुणेंति	११३१५३,६२;११६१३४;११६१२०,४०	ओ० सू० ५६
करयल जाव बद्धावेइ	११६१४५	११३१५५
करेइ जाव सत्थोवाडिए	११६१२३	वृत्ति
कुमारे जाव विहरइ	११६१३६	१११६६
०खुत्तो०	१११७०	१११७०
गंगदत्ता वि	११७१३३	११२१५५
गामागर जाव सण्णिवेसा	२११३१	ओ० सू० ८६
गाहावई जाव तं धण्णे	२११२३	वृत्ति
गिण्हावेइ जाव एएणं	११५१२७	११२१६४
घाएंति २	११३११४	११३११४
चउत्थं छट्ट उत्तरेणं इमेयारूवे	११७११०,११	११७१६;११२११५
चउत्थस्स उक्खेवओ	११४११,२	११२११,२



पम्हल०	१७२१	वृत्ति
पावं जाव समज्जिणइ	११७०	१११५१
पुढवीए संसारो तहेव पुढवी	१५२६	१३६५
पुप्फ जाव गहाय	१७२३	१७२१
पुरा जाव विहरइ	११४१,४२;१२६५	११४१
पुरिसे जाव निरयपडिरुवियं	१२१५	११४१
पुव्वभवपुच्छा वागरेइ	१७१२,१३	११४२,४३
पुव्वभवे जाव अभिसमण्णागया	२११५	वृत्ति
पुव्वाणुपुव्वि जाव जेणेव	११२	ना० १११४
पुव्वाणुपुव्वि जाव दूइज्जमाणे	२१३२	२१३१
पोराणाणं जाव एवं	१७११	१२१५
पोराणाणं जाव पच्चणुभवमाणे	११६६	११४१
पोराणाणं जाव विहरइ	१३६४;१४६१;१५२८;१७३७;१८८,२६;१९५८;	
	११०१८	११४१
फलएहि जाव छिप्पतूरेणं	१३४३	१३२४
फुट्टमाणेहि जाव विहरइ	२१११	ना० ११६३
वहूणं गोरुवाणं ऊहे जाव लावणेहि	१२२६	१२२४
वहूहि चुण्णप्पओगेहि य जाव आभिओगित्ता	११०७	१२७२
वहूहि जाव ण्हाया	१७२५	१७२३
भगवं जाव जओ णं	११३४	११३३
भगवं जाव पज्जुवासामो	११२१	ओ०सू० ५२
भवित्ता जाव पव्वइस्सइ	२१३५	२११३
भवित्ता जाव पव्वएज्जा	२१३१	२११३
मज्झंमज्झेणं जाव पडिदंसेइ	१२१५	म० २११०
महत्यं जाव पडिच्छइ	१३५६	१३४०
महत्यं जाव पाहुडं	१३५५	१३४०
महावीरे जाव समोसरिए	१११७	वृत्ति
महिय जाव पडिसेहेति	१३४६	वृत्ति
मासाणं जाव आगितिमेत्ते	११६६	११६४
मासाण जाव दारियं	१९३१	१२३१
मासाणं जाव पयाया	१७२६	१२३१
मित्त०	१३६०;१८१७	१२३७
मित्त०	१७२७	१७१६
मित्त जाव अण्णाहि	१३२८	१३२४
मित्त जाव परियणं	१९४७	१२३७
मित्त जाव परियणेण	१९५७	१२३७





## शुद्धि-पत्र मूलपाठ

पम्ह				
पावं				
पुढर्व				
पुप्फ				
पुरा				
पुरिसे				
पुव्व				
पुव्व				
पुव्वा				
पुव्वा	पृ०	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
पोरा	८	२०	० मणप्पत्ते	० मणुप्पत्ते
पोरा	५७	१२	जहेसु	ज्जेसु
पोरा	६०	२२	हीत्थ	हत्थी
	१७७	३	कट्ट	कट्टु
फलए	२०६	१०	विप्पइर-माण	विप्पइरमाण
फुट्टमा	३०६	१६	संकाणि	संकामणि
वहूणं	४२६	१६	वेरमणाइ	वेरमणाइं
वहूहि	४५५	१५	पज्जुवासणयाए	पज्जुवासणयाए
वहूहि	४६१	७	देवदेसंस	देवसंदेस
भगवं	५१६	१६	तुम	तुमं
भगवं	५५१	७	ताइ	ताइं
भवित्त	५७५	१६	० समुदएणं	० समुदएण
भवित्त	५६८	१२	सत्तिरीएण	सत्तिरीएणं
मज्झं	६१६	६	दसं	दस
महत्थं	७३०	२०	खणमाणे	खणमाणे
महत्थं	७३८	७	अप्पेगइयाण	अप्पेगइयाणं
महावी	७३६	१२	दुप्पडियाणदे	दुप्पडियाणंदे
मासाए				
मासाए			पाठान्तर	
मासाए	१६	पा० ६	पटटंसि	पट्टंसि
मित्त०	४८	पा० ४	पिणद्धति	पिणद्धेंति
मित्त०	५२२	पा० २	आसुरुत्त	आसुरुत्ते
मित्तः				
मित्तः			परिशिष्ट	
मित्तः	२८	२४	अभिगयजीवेजी णं	अभिगयजीवाजीवेण

